पूज्यश्रीजिनभद्रगणिक्षमाश्रमणविरचितं

जीतकल्पसूत्रम् ।

स्वोपज्ञभाष्येण भूषितम् ।

संशोधकः—

पूज्यपादप्रवर्त्तकश्रीकान्तिविजयशिष्य-

पूज्यवरश्रीचतुरविजयान्तिषद्

मुनिपुण्यविजयः

प्रकाशितमिदम्—

अहम्मदाबादवास्तव्य-श्रेष्ठिवर-श्रीदोलतचन्द्रात्मज-

श्रीप्रेमचन्द्रमोदीश्रेयोनिमित्तं तत्स्नेहि-पारेख-

उत्तमचन्द्रात्मज-बी. प. पल्. पल्. बी.

इत्युपाधिधारि-रा. ब. श्रीगीरधर-

लालसमर्पितद्रव्यसाहाय्येन ।

प्रथमावृत्ति ५००

वीर संवत् २४६४. विक्रम संवत् १९९४

प्रकाशक:—
भाईश्री ववलचंद्र केशवलाल मोदी
हाजापटेलनी पोळ,
अमदावाद.



श्री डायमंड ज्युबिली प्रिन्टींग प्रेसमां
परीख देवीदास छगनलाले छाप्युं.
सलापोस रोड—अमदावाद.

स्मरणाञ्जलि.

धर्मात्मा श्रीयुत वकील केशवलाल प्रेमचंद मोदीनी प्रेमभरी प्रेरणाने परिणामे प्रस्तुत ग्रन्थनुं सम्पादन में तेमना तरफथी स्वीकार्युं हतुं । आजे अत्यंत दीलगीरीनी वात छे के प्रस्तुत ग्रंथने अवलोकवा पहेलां तेओ आ दुनिआमांथी अदृश्य थया छे। वकील केशवलाल भाई ए बीजा वकीलोनी जेम असीलो साथे कूट गडमथल करी जाणनार वकील न हता पण प्रामाणिकपणे वर्तनार आदर्श वकील होवा उपरांत, तेओ धर्मात्मा, अपूर्व साहित्यप्रेमी अने साहित्यसेवक हता । भारतीय तेम ज पाश्चात्य साहित्यरसिक विद्वानोना तेओ मार्गदर्शक अने सहायक मित्र हता । पोताना जीवनमां तेमणे जैन साहित्यनी तेम ज जैन संघनी अनेक रीते सेवा बजावी छे । तेमना अभावथी जैन समाजने एक विरल साहित्यसेवीनी खोट पडी छे । हुं सद्गत वकील महाशयना आत्माने शान्ति इच्छी विरमुं छुं ।

मुनि पुण्यविजय.

॥ अर्हम् ॥

प्रस्तावना



हस्तलिखित प्रति—प्रस्तुत ग्रन्थना संशोधनमाटे पूज्यपाद प्रवर्तक श्री १००८ श्री कान्तिविजयजी महाराजना वडोदराना हस्तलिखित जैन ज्ञानभंडारनी नवी लखापेल मात्र एक ज प्रतिनो आधार लेवामां आव्यो छे। आ प्रतिने, लींबडीना जैन ज्ञानभंडारनी कोई विद्वाने सुधारेल प्राचीन प्रतिना आधारे में सुधारी हती। आ उपरांत, प्रस्तुत ग्रंथने सुधारवा माटे आवश्यकनिर्युक्ति, पिण्डनिर्युक्ति, ओघनिर्युक्ति, व्यवहारभाष्य, बृहत्कल्पभाष्य, पंचकल्पभाष्य वगेरे ग्रन्थोनो पण उपयोग करवामां आव्यो छे अने जेम बने तेम प्रस्तुत ग्रन्थने शुद्ध करवा माटे प्रयत्न करवामां आव्यो छे।

प्रस्तुत ग्रन्थनी हस्तलिखित प्रतिमां अमे बे खास विशेषताओ जोई छे। एक परसवर्णविषयक; अर्थात् अब्भङ्गिय देन्तो होन्ति अणहियासेन्तेहिं आ प्रमाणे घणे ठेकाणे प्राचीन समयथी करेला परसवर्णो छे। अने बीजी विशेषता—ज्यां ज्यां प्रस्तुत ग्रन्थनी जे जे सूत्रगाथानुं भाष्य समाप्त थाय छे त्यां ते ते गाथाना अंकने ताडपत्रीय प्रतोमां आवता पत्रांकदर्शक अक्षरांको द्वारा दर्शाववामां आव्यो छे। उपरोक्त परसवर्ण अने गाथादर्शक अक्षरांको आखा ग्रन्थमां करवामां आव्या हशे परंतु लेखकादिनी अज्ञानताने लीधे केटलेक ठेकाणे आ वस्तु कायम रही छे अने केटलेक ठेकाणे एमां परिवर्तन पण थयुं छे। अमे, आ उभय वस्तुओ अमारा पासेनी प्रतिमां जे प्रमाणे मळी छे ते रीते कायम ज राखी छे। आथी अमे पटलुं ज जणाववा इच्छीए छीए के—आ ग्रंथमां परसवर्ण वगेरे जे छे ते अमे हस्तलिखित प्रतिने आधारे ज करेला छे।

जीतकल्पभाष्य—प्रस्तुत भाष्यग्रंथ ए कल्पभाष्य, व्यवहारभाष्य, पंचकल्पभाष्य, पिण्डनिर्युक्ति वगेरे ग्रन्थोनी गाथाना

संग्रहरूप ग्रन्थ छे। कारण के आ ग्रन्थमां एवी ढगलाबंध गाथाओ छे जेने उपरोक्त ग्रन्थोमांनी गाथाओ साथे अक्षरशः सरखावी शकाय।

ग्रन्थकार—आ पुस्तकमां जीतकल्पसूत्र अने तेना भाष्यनो समावेश करवामां आव्यो छे। जीतकल्पसूत्रना प्रणेता भगवान् जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण छे ए निर्विवाद हकीकत छे। आ संबंधमां तेम ज भगवान् जिनभद्रगणिना समय निर्णय विषे विद्वद्वर्य श्रीमान् जिनविजयजीए पोते संपादन करेल चूर्णि सहित जीतकल्पसूत्रनी प्रस्तावनामां सविस्तर आलोचना करी छे। एटले आ विषयना जिज्ञासुओने ते प्रस्तावना जोवा भलामण छे। अहीं मारे मात्र एटलुं ज कहेवानुं छे के जीतकल्पभाष्यना कर्ता कोण छे ?। प्रस्तुत भाष्यमां कोई पण ठेकाणे भाष्यकारे पोताना नामनो उल्लेख कर्यो नथी, नथी चूर्णिकारे प्रस्तुत भाष्यनो पोताना ग्रन्थमां क्यांय उल्लेख कर्यो, तेम तेवो बीजो कोई एवो स्पष्ट उल्लेख पण मळतो नथी जेना आधारे भाष्यकारना नामनो चोक्कस निर्णय करी शकाय। तेम छतां प्रस्तुत जीतकल्पभाष्यनो

तिसमयहारादीणं, गाहाणऽट्ठण्ह वो सरूवं तु।
वित्थरयो वण्णेज्जा, जह हेट्ठाऽऽवस्सए भणियं ॥६१॥

आ गाथामांना "जह हेट्ठाऽऽवस्सए भणियं" ए पाठ तरफ ध्यान आपतां आपणने सहेजे एम थाय छे के-अहीं "जह आवस्सए भणियं" एटलो ज पाठ बस छतां भाष्यकारे वधारानो "हेट्ठा" शब्द शामाटे मूक्यो ?। "हेट्ठा" शब्द ए कोई पादपूरणार्थक शब्द नथी के आपणे तेम मानीने चलावी लईए। बाकी जोतां ग्रन्थकारो "हेट्ठा" अने "उवरिं" ए बे शब्दोने अनुक्रमे "पूर्वे" अने "अग्रे" अर्थमां ज वापरे छे। दा. त. "हेट्ठा भणियं" अर्थात् पूर्वं भणितम्; "उवरिं वोच्छं" अर्थात् अग्रे वक्ष्ये। आ उपरथी ए फलित थाय छे के-"प्रस्तुत जीतकल्प" ग्रंथना भाष्यकारे "तिसमयहार" अर्थात् "जावइया तिसमया-" (आव० निर्युक्ति गाथा ३०) इत्यादि आठ गाथाओनुं स्वरूप पूर्वे आवश्यकमां विस्तारथी वर्णव्युं छे"। आवश्यकनिर्युक्त्यन्तर्गत "आवइया तिसमया०" आदि गाथाओनुं

भाष्यग्रंथ द्वारा विस्तृत व्याख्यान करनार भगवान् जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण सिवाय बीजुं कोई ज नथी। एटले मारी ए दृढ मान्यता छे के-प्रस्तुत जीतकल्पभाष्यना प्रणेता भगवान् श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमण छे।

भाष्यकार तरीके बे आचार्यो जाणीता छे। एक भगवान् श्रीसंघदासगणि क्षमाश्रमण अने बीजा पूज्य श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। कल्पबृहद्भाष्य वगेरेना प्रणेता कोण छे? ए निर्णीत नथी, पण ए आ बे करतां कोई त्रीजा ज आचार्य छे एम अमे मानीए छीए। अस्तु, ए गमे ते हो, तो पण पूज्य श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणनी महाभाष्यकार तरीकेनी ख्याति होई प्रस्तुत भाष्यमां तेमना पूर्वे थई गएल भगवान् श्रीसंघदासगणि कृत भाष्यग्रन्थादिनी गाथाओ होवामां कोई पण प्रकारनो विरोध नथी।

विषय—प्रस्तुत ग्रन्थमां जैन निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थीओना जुदा जुदा अपराधस्थानविषयक प्रायश्चित्तोनुं जीतव्यवहारने आश्री निरूपण करवामां आव्युं छे। जे विषयानुक्रमणिका जोवाथी स्पष्ट रीते जाणी शकाशे।

अंतमां हुं एटलुं ज इच्छुं छुं के-प्रस्तुत ग्रन्थना संशोधनमां सावधानी राखवा छतां स्खलनाओ रहेवा पामी होय तेने विद्वानो क्षमापूर्वक सुधारीने वांचे।

निवेदक—

पुण्यविजय।



विषयानुक्रमणिका

विषय.	भाष्यगाथा.	पृष्ठ.
सूत्र गाथा १		१
मंगल अभिधेयादि		१
'प्रवचन' शब्दनो निरुक्तार्थ	१-३	१
'प्रायश्चित्त' शब्दनो निरुक्तार्थ	४-६	१
आगम, श्रुत, आज्ञा, धारणा अने जीत व्यवहार	७-८	२
आगमव्यवहार	९-५५९	२
'आगम' व्यवहारना भेद-प्रभेदो अने प्रत्यक्ष आगम परोक्ष आगम	९-१०	२
प्रत्यक्ष-परोक्ष आगमनुं स्वरूप	११	२
'अक्ष' शब्दनी व्युत्पत्ति	१२-१३	२
'अक्ष'ना अर्थ संबंधे अन्य मतनो निर्देश अने प्रतिषेध	१४-२२	२
'नोइन्द्रिय प्रत्यक्ष आगम'नी त्रिविधता: अवधि मनःपर्याय-केवल	२३-२४	३
अवधिज्ञान	२५-७३	३
अवधिज्ञाननी प्रकृतिओ	२५-३१	४
भवप्रत्ययिक अवधिज्ञान	३२-३३	४
गुणप्रत्ययिक अवधिज्ञान	३४	४
'अवधि' नुं स्वरूप	३५-३६	४
'अवधिज्ञान'ना छ भेदो	३७	४
आनुगामिक अवधि	३८-४६	४
अनानुगामिक अवधि	४७-४९	५
वर्धमानक अवधि	५०-६१	५
हीयमानक अवधि	६२	६
प्रतिपाती अवधि	६३-६४	७
अप्रतिपाती अवधि	६५-६७	७
द्रव्यावधि क्षेत्रावधि	६८-६९	७

कालावधि	७०-७१	७
भावावधि	७२-७३	७
मनःपर्यव ज्ञान	७४-८९	७
मनपर्यव ज्ञानना बे भेदः	७४	७
ऋजुमति-विमलमति		
द्रव्यमनःपर्यव	७५	८
क्षेत्रमनःपर्यव	७६-८१	८
कालमनःपर्यव	८२-८३	८
भावमनःपर्यव	८४-८५	८
'मनःपर्यव ज्ञान'नो विषय	८६-८८	८
ऋजुमति-विपुलमति	८९	९
केवलज्ञान	९०-१०९	९
केवलज्ञाननुं स्वरूप	९०-१०४	९
केवलज्ञानिमां मति वगेरे ज्ञाननो अभाव आदि	१०५-९	१०
परोक्षागमव्यवहारी	११०-१६	१०
'प्रायश्चित्त' नो न्यूनता-अधिकता संबंधी पृच्छा अने उत्तर	११७-२४	११
प्रायश्चित्तदानयोग्य	१२५-३१	१२
आलोचनाश्रवणनो क्रम	१३२-४८	१२
प्रायश्चित्त देनारनी योग्यता अयोग्यता संबंधी विचार	१४९-२४१	१४
प्रायश्चित्तनां अढार स्थानो	१४२-५४	१४
प्रायश्चित्तनां बत्रीश स्थानो	१५५-६०	१४
आठ संपदा	१६१-६२	१५
चार प्रकारनी आचारसंपदा	१६३-६६	१५
चार प्रकारनी श्रुतसंपदा	१६७-७०	१५
चार प्रकारनी शरीरसंपदा	१७१-७४	१६
चार प्रकारनी वचनसंपदा	१७५-७८	१६
चार प्रकारनी वाचनासंपदा	१७९-८४	१६
चार प्रकारनी मतिसंपदा	१८५-९१	१७

चार प्रकारनी प्रयोगमतिसंपदा	१९२-९७	१७
चार प्रकारनी संग्रहपरिज्ञासंपदा	१९८-२०६	१८
प्रायश्चित्तनां छत्रीश स्थानो	२०७-११	१९
चार विनयनी प्रतिपत्तिओ	२१२-१३	१९
चार प्रकारे आचारविनय	२१४-२२	१९
चार प्रकारे श्रुतविनय	२२३-२५	२०
चार प्रकारे विक्षेपणविनय	२२६-३३	२०
चार प्रकारे दोषनिर्घातविनय	२३४-४१	२१
आगमव्यवहारी	२४२-५४	२१
'आलोचना'ना दश गुणो	२५५	२२
प्रायश्चित्त आपनार योग्य ज्ञानिओनो अभाव थये प्रायश्चित्त केम संभवे ?	२५५-६२	२३
पछी शिष्यनो प्रश्न अने आचार्यनो उत्तर	२६३-७३	२३
दश प्रकारे प्रायश्चित्त	२७४	२४
प्रायश्चित्त देवानो विभाग	२७५-९०	२४
प्रायश्चित्तना करनाराओनुं अस्तित्व	२९१-९९	२६
सापेक्षपणे प्रायश्चित्त देवामां लाभ अने निरपेक्षपणे प्रायश्चित्त देवामां अलाभ	३००-११	२६
चारित्रना अस्तित्वनी सिद्धि	३१२-१८	२७
निर्यापकोनो अव्यवच्छेद	३१९-२१	२८
भक्तपरिज्ञानो विधि	३२२-५११	२८
निर्व्याघात अने सव्याघात एवी सपराक्रमभक्तपरिज्ञानुं स्वरूप	३२७	२९
द्वारगाथाओ	३२७-३१	२९
गणनिस्सरणद्वार	३३२-३७	२९
श्रितिद्वार	३३८-४०	३०
संलेखनाद्वार	३४१-५५	३०
अगीतद्वार	३५६-६९	३१
असंविग्नद्वार	३७०-७७	३२
एकद्वार	३७८-८०	३३

आभोगद्वार	३८१-८६	३३
अन्यद्वार	३८७-८८	३४
अनापृच्छाद्वार	३८९-९१	३४
परीक्षाद्वार	३९२-४०७	३४
आलोचनाद्वार	४०८-२३	३६
स्थान-वसतिद्वार	४२४-३२	३७
निर्यापकद्वार	४३३-३७	३८
द्रव्यद्वापनाद्वार	४३८-४७	३८
हानिद्वार	४४८-५०	३९
अपरितान्तद्वार	४५१-५२	३९
निर्जराद्वार	४५३-५७	४०
संस्तारकद्वार	४५८-६०	४०
उद्वर्तनाद्वार	४६१-६३	४०
स्मारणाद्वार	४६४-७५	४०
कवचद्वार	४७६-९०	४१
चिह्नकरणद्वार	४९१-९२	४३
यतनाद्वार	४९३-९७	४३
निर्व्याघात अने सव्याघात एवी अपराक्रमभक्तपरिज्ञानुं स्वरूप	४९८-५११	४३
इंगिनीमरण	५१२-१५	४५
पादपोपगमन	५१६-५९	४५
श्रुतव्यवहार	५६०-६४	४९
आज्ञाव्यवहार	५६५-६५४	४९
अपरिणत, अतिपरिणत अने परिणत शिष्योनी परीक्षा अथवा तेमनुं स्वरूप	५६५-८८	४९
दर्पना दश प्रकार	५८९-९९	५१
कल्पना चोवीश भेद	६००-१६	५२
दर्प कल्प आदि पदोना भांगाओ	६१७-५४	५४
धारणाव्यवहार	६५५-७४	५७

जीतव्यवहार	६७५-९४	५९
सावद्य अने असावद्य जीतव्यवहार	६८७-९४	६०
व्यवहारना स्वरूपनो उपसंहार	६९५-७०५	६०

सूत्र गाथा २-३

प्रायश्चित्तनुं माहात्म्य	७०६-१७	६१

सूत्र गाथा ४

प्रायश्चित्तना दश भेदो		६२
आलोचना	७१८	६३
प्रतिक्रमण	७१९	६३
मिश्र-आलोचना अने प्रतिक्रमण बन्ने	७२०-२१	६३
विवेक	७२२	६३
व्युत्सर्ग	७२३	६३
तप	७२४	६३
छेद	७२५	६३
मूल	७२६	६३
अनवस्थाप्य	७२७-२८	६३
पारांचिक	७२९-३०	६३

सूत्र गाथा ५-८

आलोचनाप्रायश्चित्तने योग्य अपराधस्थानो	७३१-८३	६४
'छद्म' नो अर्थ	७३५	६४

सूत्र गाथा ९-१२

प्रतिक्रमणप्रायश्चित्तने योग्य अपराधस्थानो		६८
गुप्तिओनुं स्वरूप	७८४-८६	६८
मनोगुप्ति विशे जिनदासनुं उदाहरण	७८७-९०	६९
वचनगुप्ति विशे कोई साधुनुं उदाहरण	७९१-९६	६९
कायगुप्ति विशे कोई साधुनुं उदाहरण	७९७-९९	७०
कायगुप्ति विशे बीजुं उदाहरण	८००-३	७०
समितिओनुं स्वरूप	८०४-१७	७०
ईर्यासमिति विशे अर्हन्नकनुं उदाहरण	८१८-१९	७१
भाषासमिति विशे कोई साधुनुं उदाहरण	८२०-२५	७१

एषणासमिति विशे वसुदेवना जीव नंदिवर्धननुं उदाहरण	८२६–४७	७२
आदाननिक्षेपणासमिति अने तेना विशे उदाहरण	८४८-५३	७४
पारिष्ठापनिकासमिति अने तेना विशे धर्मरुचिनुं उदाहरण	८५४–६०	७४
गुरुनी आशातनानुं स्वरूप	८६१–७१	७५
गुरु अने शिष्यनां वचनो	८६९-७१	७५
गुरुना विनयना भंगनुं स्वरूप	८७२–७७	७५
प्रकारान्तरे विनयभंगना सात प्रकारो	८७८	७६
इच्छाकारकरणनी व्याख्या	८७९-८१	७६
लघुस्वमृषावादनुं स्वरूप	८८२–९०५	७६
प्रतिक्रमणप्रायश्चित्तने योग्य अपराधस्थान-सूचक अविधि कास जृम्भा क्षुत वात असंक्लिष्टकर्म कन्दर्प हास्य विकथा कषाय विषयानुषंग स्खलना सहसा अनाभोग आभोग स्नेह भय शोक बाकुशिक आदि पदोनी व्याख्या	९०६–३२	७८

सूत्र गाथा १३–१५

आलोचना अने प्रतिक्रमण ए बन्ने प्रायश्चित्तने योग्य अपराधस्थानो		८१
संभ्रम भय आपत् अनात्मवशता दुश्चिन्तित आदि पदोनी व्याख्या	९३३–५४	८१

सूत्र गाथा १६–१७

विवेक प्रायश्चित्तने योग्य अपराधस्थानो		८१
पिंड उपधि शय्या कृतयोगी कालातीत अध्वातीत शठ अशठ उद्गत अनुद्गत कारणगृहीत आदि पदोनी व्याख्या	९५५ ७१	८४

सूत्रगाथा १८–२२

व्युत्सर्ग प्रायश्चित्तने योग्य अपराधस्थानो		८४

गमन आगमन विहार श्रुत साधर्म्यस्थन माथा-
नदीसन्तार अर्हत आदिपदोनो व्याख्या ९७२-९० ८४
'उच्छ्वास 'नुं प्रमाण वगेरे ९९१-९७ ८६

सूत्र गाथा २३-७९

तपःप्रायश्चित्तने योग्य अपराधस्थानो ८७

सूत्रगाथा २३-३४ ८७

'ज्ञान' ना आठ अतिचारो ९९८-१०३० ८७
'दर्शन' ना आठ अतिचारो १०३१-६८ ९०
छ व्रतरूप चारित्रना अतिचारो १०६९-८६ ९३

सूत्र गाथा ३५

चारित्रोद्गमनु स्वरूप १०८७-९४ ९५
उद्गमना सोल दोषो १०९५-९७ ९५
आधाकर्मनो विचार १०९८-११०५ ९६
संयमश्रेणि ११०६-१० ९६
औद्देशिकनो विचार ११९५-१२०२ १०३
पूतिकर्मनो विचार १२०३-१५ १०४
मिश्रजातनो विचार १२१६-१८ १०५
स्थापना दोषनो विचार १२१९-२३ १०५
प्राभृतिका दोषनो विचार १२२४-३७ १०६
प्रादुष्करण दोषनो विचार १२३८-४० १०७
क्रीत दोषनो विचार १२४१-४४ १०७
प्रामित्य दोषनो विचार १२४५-४६ १०८
परावर्तित दोषनो विचार १२४७-४८ १०८
अभ्याहृत दोषनो विचार १२४९-५५ १०८
उद्भिन्न दोषनो विचार १२५६-६८ १०८
मालाहृत दोषनो विचार १२६९-७३ १०९
आच्छेद्य दोषनो विचार १२७४ ११०
अनिसृष्ट दोषनो विचार १२७५-८२ ११०
अध्यवपूरक दोषनो विचार १२८३-८६ १११
कोटि शब्दनो अर्थ अने तेनुं स्वरूप १२८७-१३१२ १११

उत्पादनानुं स्वरूप	**१३१३-१८**	**११३**
उत्पादनाना निक्षेपो	१३१४	११३
उत्पादनाना सोल दोषो	१३१९-२०	११४
धात्रीदोष	१३२१-२४	११४
धात्रीना (धावमाताना) पांच प्रकार	१३२२	११४
दूतीदोष	१३२५-४०	११४
निमित्तदोष	१३४१-४९	११५
आजीवदोष	१३५०-६१	११६
वनीपकदोष	१३६२-८३	११७
चिकित्सापिण्ड	१३८४-९२	११९
क्रोध वगेरे दोषो	१३९३-९४	११९
क्रोधपिंड विशे क्षपकनुं उदाहरण	१३९५	१२०
मानपिंड विशे क्षुल्लकनुं उदाहरण	१३९६-९७	१२०
मायापिंड विशे आषाढभूतिनुं उदाहरण	१३९८-१४११	१२०
लोभपिंड विशे 'सिहकेसर' नामना मोदकने इच्छनार क्षपकनुं उदाहरण	१४१२-२०	१२१
संस्तवदोष	१४२१-३६	१२२
विद्या अने मन्त्रदोष	१४३७	१२३
विद्या अने मंत्रनो तफावत	१४३८	१२३
विद्या विशे भिक्षुपासकनुं-बौद्धउपासकनुं उदाहरण	१४३९-४४	१२३
मन्त्र विशे पादलिप्त अने मुरुंडराजनुं उदाहरण	१४४५-४७	१२३
चूर्णदोष, योगदोष अने मूलकर्म दोष	१४४८	१२४
चूर्णदोष बाबत बे क्षुल्लकनुं उदाहरण	१४४९-५७	१२४
योगदोष	१४५८-६०	१२५
योगविशे ब्रह्मद्वैपिक तापसोनुं उदाहरण	१४६१-६७	१२५
मूलकर्म	१४६८-७२	१२५
ग्रहणैषणानुं स्वरूप	**१४७३-७५**	**१२६**
ग्रहणैषणाना दश प्रकार	१४७६	१२६
शंकित दोष	१४७७-९०	१२६

शंका विषयक चतुर्भङ्गी	१४७८	१२६
म्रक्षित दोष	१४९१-१५११	१२७
निक्षिप्त दोष	१५१२-४५	१२९
पिहित दोष	१५४६-५७	१३१
संहृत दोष	१५५८-६७	१३२
दायक दोष	१५६८-८२	१३३
उन्मिश्र दोष	१५८३-८६	१३४
अपरिणत दोष	१५८७-९३	१३५
लिप्त दोष	१५९४-९९	१३५
छर्दित दोष	१६००-४	१३६
ग्रासैषणानुं स्वरूप	१६०५-१०	१३६
संयोजना दोष	१६११-२१	१३६
प्रमाण दोष	१६२२-४२	१३७
अंगार दोष	१६४३-४८	१३९
धूम दोष	१६४९-५५	१३९
कारण दोष	१६५६-७०	१४०
उपसंहारादि	१६७१-७९	१४१

सूत्र गाथा ३६–४४

पिण्डविशुद्धि विषयक अतिचारोने आपो प्रायश्चित्त	१६८०-१७१९	१४२

सूत्र गाथा ४५–५९

तपःप्रायश्चित्तने योग्य धावन डेपन संघर्ष गमन क्रीडा उत्कुट्टि गीत सेण्टिका जीवरुतादि पदोनुं स्वरूप	१७२०-२४	१४६
तपःप्रायश्चित्तने योग्य जघन्य मध्यम उत्कृष्ट उपधिने आपी विच्युत विस्मृत अप्रेक्षित अनिवेदन आदि पदोनुं स्वरूप	१७२५-४१	१४७
तपःप्रायश्चित्तने योग्य कालातीतकरण अध्वातीतकरण तत्परिभोग पाना-संवरण भूमित्रिकाप्रेक्षण आदि पदो	१७४२-५२	१४८

तप:प्रायश्चित्तने योग्य कायोत्सर्गभंग कायोत्सर्गअकरण वेगवन्दनादि रात्रिव्युत्सर्गादि दिवसशयनादि पदो	१७५३-६०	१५०
तप:प्रायश्चित्तने योग्य चिरकषाय आसव लशुनादि तर्णाविबन्धनादि पुस्तकपञ्चक-तृणपञ्चक-दूष्यपञ्चकाप्रतिलेखनादि स्थापनाकुलप्रवेशादि पदो	१७६१-७७	१५०
तप:प्रायश्चित्तने योग्य दर्प पञ्चेन्द्रियव्यपरोपण संक्लिष्टकर्म दोर्घाध्वकल्प ग्लानकल्प आदि पदो	१७७८-८७	१५२
तप:प्रायश्चित्तने योग्य छेदादि अश्रद्धानादि पदो	१७८८-९४	१५३

सूत्र गाथा ६०–७९

सामान्य अने विशेषपणे आपत्ति अने दानविषयक तपनो द्रव्य क्षेत्र काल भाव पुरुष प्रतिसेवना आदिने आश्री विभाग	१७९५–२२७९	१५४

सूत्र गाथा ६०–६३

तपप्रायश्चित्तने आश्री सामान्य अने विशेष आपत्ति अने दाननुं स्वरूप	१७९५-१८११	१५४

सूत्र गाथा ६४–६५

द्रव्यनुं स्वरूप अने तेने आश्री तपोदाननो विचार	१८१२-१९	१५६

सूत्र गाथा ६६

क्षेत्रनुं स्वरूप अने तेने आश्री तपोदाननो विचार	१८२०-२३	१५६

सूत्र गाथा ६७

कालनुं स्वरूप अने तेने आश्री तपोदाननुं विस्तृत वर्णन	१८२४-१९३३	१५७

सूत्र गाथा ६८

भाववनुं स्वरूप अने तेने आश्री तपोदाननुं स्वरूप	१९३४-३७	१६६

सूत्र गाथा ६९-७३

पुरुषना प्रकारो अने तेने आश्री तपोदाननुं स्वरूप	१९३८-२२६२	१६६

सूत्र गाथा ६९

गीतार्थ, अगीतार्थ, सहनशील, असहनशील, शठ, अशठ, परिणामी, अपरिणामी, अतिपरिणामी पुरुषोनुं स्वरूप	१९३८-५७	१६६

सूत्र गाथा ७०

धृतिसंहननोपेत अने हीन, आत्मतर, परतर, उभयतर, नोभयतर अने अन्यतर पुरुषो	१९५८-६४	१६८

सूत्र गाथा ७१

कल्पस्थित अने अकल्पस्थित आदि पुरुषोनुं वर्णन	१९६५-२१९५	१६९
स्थितशब्दना पर्यायार्थिको	१९६५-६६	१६९
छ प्रकारनी कल्पस्थिति	१९६७	१६९
दशप्रकारनो कल्प अने तेनो अवस्थित अनवस्थित तरीकेनो विभाग	१९६८-७४	१६९
आचेलक्यकल्पनुं स्वरूप	१९७५-८९	१६९
औद्देशिककल्पनुं स्वरूप	१९९०-९१	१७१
शय्यातरकल्पनुं स्वरूप	१९९२-९५	१७१
राजपिण्डकल्पनुं स्वरूप	१९९६-२०१२	१७१
कृतिकर्मकल्पनुं स्वरूप	२०१३-१६	१७३
व्रतकल्पनुं स्वरूप	२०१७-२१	१७३
पुरुषज्येष्ठकल्पनुं स्वरूप	२०२२-४८	१७३
प्रतिक्रमणकल्पनुं स्वरूप	२०४९-५५	१७५

मासकल्पनुं स्वरूप	२०५६-९३	१७६
पर्युषणाकल्पनुं स्वरूप आदि	२०९४-२१०९	१७९
परिहारकल्पनुं स्वरूप	२११०-५६	१८०
जिनकल्पनुं स्वरूप	२१५७-७८	१८४
स्थविरकल्पनुं स्वरूप	२१७९-८४	१८६
परिणत, अपरिणत, कृतयोगी, अकृतयोगी, तरमाण, अतरमाण पुरुषोनुं स्वरूपादि	२१८५-९२	१८६

सूत्र गाथा ७२

कल्पस्थितादि पुरुषोने आश्री तपोदान विभाग	२१९३-९५	१८७

सूत्र गाथा ७३

जीतयन्त्रविधि आदि	२१९६-२२६२	१८८

सूत्र गाथा ७४-७९

प्रतिसेवनानुं स्वरूप अने तेने आश्री तपोदाननो विभाग आदि	२२६३-७९	१९३

सूत्र गाथा ८०-८२

छेदप्रायश्चित्तने योग्य अपराधस्थानो	२२८०-८७	१९६

सूत्र गाथा ८३-८६

मूलप्रायश्चित्तने योग्य अपराधस्थानो	२२८८-२३००	१९६

सूत्र गाथा ८७-९३

अनवस्थाप्यप्रायश्चित्तने योग्य अपराधस्थानो	२३०१-२४६२	१९८
हस्ततालनुं स्वरूप	२३७१-८९	२०३
हस्तालंबनुं स्वरूप	२३९०-९२	२०५
हस्तादाननुं स्वरूप अने अवसन्नाचार्यनुं दृष्टान्त	२३९३-२४१०	२०५

सूत्र गाथा ९४-१०१

पारांचिकप्रायश्चित्तने योग्य अपराधस्थानो	२४६३-२५८५	२११

सूत्र गाथा ९४

तीर्थंकर प्रवचन श्रुत आचार्य आदिविषयक
आशातना पारांचिकनुं स्वरूप २४६३-७६ २११

सूत्र गाथा ९५

कषायदुष्ट अने विषयदुष्ट पारांचिकनुं
स्वरूप २४७७-२५२२ २१३

सूत्र गाथा ९६

स्त्यानर्द्धिप्रमत्तपारांचिक, अन्योन्यकुर्वाण-
पारांचिकनुं स्वरूप २५२३-३९ २१६

सूत्र गाथा ९७–१०१

लिंगपारांचिक, क्षेत्रपारांचिक, काल-
पारांचिक आदिनुं स्वरूप २५४०-८५ २१८

सूत्र गाथा १०२

अनवस्थाप्य अने पारांचिकनो सद्भाव
भद्रबाहु सुधी २५८६-८७ २२२

सूत्र गाथा १०३

जीतकल्पनो उपसंहार २५८८-२६०६ २२३
जीतशब्दनो अर्थ २५८८-८९ २२३
कल्पशब्दनो अर्थ २५९०-९३ २२३
जीतकल्पशास्त्रना अध्ययनना अधिकारी २५९४-२६०६ २२३



॥ ॐ नमो जिनाय ॥

आचार्यश्रीजिनभद्रगणिक्षमाश्रमणविरचितं

जीतकल्पसूत्रम्।

स्वोपज्ञभाष्येण भूषितम्।

सुत्तं–कयपवयणप्पणामो, वुच्छं पच्छित्त-दाणसंखेवं।
जीयव्ववहारगयं, जीवस्स विसोहणं परमं ॥१॥

पवयण दुवालसंगं, सामाइयमाइ बिंदुसारंतं। प्रवचनम्
अहव चउव्विह संघो, जत्थेव पइट्ठियं नाणं ॥१॥
अहवा पगयपसत्थं, पहाणवयणं व पवयणं तेण।
अहव पवत्तयतीई, नाणाई पवयणं तेणं ॥२॥
जीवाइपयत्था वा, उवदंसिज्जंति जत्थ संपुण्णा।
सो उवएसो पवयण, तम्मि करेत्ता णमोक्कारं ॥३॥
वोच्छं वक्खामि त्ती, पच्छित्तं दसह एय उवरिं तु। प्रायश्चित्तम्
वण्णेहामि सवित्थर, किं भणियं होति पच्छित्तं ? ॥४॥

पावं छिंदति जम्हा, पायच्छित्तं ति भण्णते तेणं। प्रायश्चित्तस्य निरुक्तम्
पायेण वा वि चित्तं, सोहयई तेण पच्छित्तं ॥५॥
पणगादी आवत्ती, णिव्विगइअमादि एत्थ दाणं तु।
संखेव समासो त्ति व, ओहो त्ति व होंति एगट्ठा ॥६॥

---

१ दुवालसंगं-द्वादशाङ्गं आचाराङ्गादि दृष्टिवादान्तम्। सामायिक-सूत्रं "करेमि भंते!" इत्यादिकम्। बिन्दुसार इति चतुर्दशं पूर्वम् ॥
२ पगयपसत्थं प्रकृते प्रशस्तम् ॥

आगमादिव्यवहारपञ्चकम्

किं अत्थी अण्णे वी, ववहारा जेण जीतगहणं तु ? ।
भण्णति चउरऽत्थऽण्णे, आगममादी इमे सुणसु ॥७॥
पंचविहो ववहारो, दुग्गइ-भवमूरएहिँ पण्णत्तो ।
आगम सुय आणा धारणा य जीए य पंचमए ॥८॥

आगमव्यवहारभेदप्रभेदाः

आगमओ ववहारो, सुणह जहा धीरपुरिसपण्णत्तो ।
पच्चक्खो य परोक्खो, सो विह दुविहो मुणेयव्वो ॥९॥
पच्चक्खो वि य दुविहो, इंदियजो चेव नोयइंदियजो ।
इंदियपच्चक्खो वि य, पंचसु विसएसु णायव्वो ॥१०॥

प्रत्यक्षपरोक्षयोर्लक्षणम्

जीवो अक्खो तं पति, जं वट्टइ तं तु होति पच्चक्खं ।
परओ पुण अक्खस्सा, वट्टंतं होइ पारोक्खं ॥११॥

'अक्ष'पदस्य निरुक्तम्

'असु वावण'धाऊओ, अक्खो जीवो उ भण्णए णियमा ।
जं वावयए भावे, णाणेणं तेण अक्खो त्ति ॥१२॥
'अस भोयणम्मि' अहवा, सव्वदव्वाणि भोगमेतस्स ।
आगच्छंती जम्हा, पालेइ य तेण अक्खो त्ति ॥१३॥

दर्शनान्तरीयाभिमतस्य प्रत्यक्षलक्षणस्य खण्डनम्

केसिंचि इंदियाइं, अक्खाइं तदुवलद्धि पच्चक्खं ।
तं तु ण जुज्जति जम्हा, अग्गाहगमिदियं विसए ॥१४॥
रूवादीविसयाणं, जीवो खलु इंदिएहिं उवलभगो ।
जम्हा मतम्मि जीवे, ण इंदिया उवलभे विसयं ॥१५॥

---

७ अत्थी सन्ति इत्यर्थः, "अत्थिस्त्यादिना" (सि० ८-४-१४८) इति सूत्रेण सर्वेष्वपि वचनेषु 'अत्थि'रूपभवनात् । दीर्घत्वं तु–"जीवा लोयमभूया, य आणिया दीह-विदु-दुक्भावा । अत्थं गमेंति तं चिय, जो तेसिं पुव्वमेवाऽऽसि ॥" इति वचनात् । एवमग्रेऽपि "वी, पासती, अक्खस्सा, आगच्छंती, अण्णत्था, सुणसू, वोच्छामी, सुत्तम्मी, कज्जस्सा" इत्यादिषु यत्र दीर्घत्वं "परवाइण, गोणसाइण" इत्यादिषु च यत्र ह्रस्वत्वं दृश्येत तत्रायमेव नियमो ज्ञेयः । चउरऽत्थऽण्णे चत्वारः सन्ति अन्ये इत्यर्थः ॥ ८ दुग्गइ-भवमूरएहिं दुर्गति-संसारभञ्जकैः तीर्थकरैः पूर्वर्षिभिर्वेत्यर्थः ॥ १५ मतम्मि मृते ॥

तम्हा विसयाणं खलु, अग्गाहगमिंदियं भवइ सिद्धं ।
जं इंदिएहिँ नज्जइ, तं नाणं लिंगियं होइ ॥१६॥
लिंगं चिंध निमित्तं, कारणमेगट्ठियाइँ एयाइं ।
जाणाइ इंदिएहिं, जीवो धूमेण अग्गिं व्व ॥१७॥
एवं खु इंदिएहिं, जं नज्जइ लिंगियं तयं नाणं ।
तम्हा सिद्धं अक्खो, न इंदिया पंच सोयाई ॥१८॥
एत पसंगाभिहितं, जहकण्हुइ इंदियाइँ पच्चक्खं ।
अहुणा उ इंदिएहिं, णातूणं ववहरे इणमो ॥१९॥
सोइंदिएण सोउं, तस्स व अण्णस्स वा वि पडिसेवं ।
चक्खिदिएण दट्ठुं, पडिसेविज्जंतमणयारं ॥२०॥
धूवादिगंधवासे, मूतिंगलियादियं व उद्दवियं ।
कंदाइ व खज्जंतं, गंधो वि रसो वि तत्थेव ॥२१॥
फासेणऽब्भक्खियमादि, फासतो अप्पगासे णाऊणं ।
इंदियपच्चक्खेणं, इय णाऊणं ववहरंति ॥२२॥ दारं ॥
णोइंदियपच्चक्खो, ववहारो सो समासतो तिविहो । नोइन्द्रियप्रत्यक्षागमव्यवहारस्य त्रैविध्यम्
ओहि मणपज्जवे या, केवलणाणे य पच्चक्खो ॥२३॥
अच्छउ ता ववहारो, ओहीमादीण लक्खणं तिण्हं ।
संखेवओ उ एयं, अस्सुन्नत्थं इमं वोच्छं ॥२४॥
तत्थोहिणाण पढमं, सामित्ता कम-विसुद्धिओ होइ । अवधिज्ञानम्
तो तं वोच्छ बहुविहं, केत्तिय भेया भवे तस्स ? ॥२५॥

---

१६ नज्जइ ज्ञायते ॥ १७ चिंध इति लुप्तविभक्त्यन्तं पदम् । ग्रन्थेऽस्मिन् स्थानस्थानेषु एताहंशि लुप्तविभक्त्यन्तानि पदानि समेष्यन्ति ॥ १९ जहकण्हुइ यथाकथञ्चित् ॥ २१ मूतिंगलिया पिपीलिका । अधुनातनप्राकृते यथा 'य'कारः श्रुत्यर्थमुपन्यस्यते तथा प्राचीनप्राकृते 'त'कारः श्रुत्यर्थमुपायुज्यत इति ज्ञेयम् ॥ २४ ओहीमादीण अवध्यादीनाम् । अत्र मकार आगमिकः, न तु लाक्षणिकः । अग्रेऽप्येवमेव बोध्यम् ॥

तत्थ जहण्णादी तू, जाव उ उक्कोस ओहिणाणं तु ।
वड्ढंते परिणामे, गाहाहिँ इमं तु वोच्छामि ॥५१॥
जावतिया तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणगजीवस्स ।
ओगाहणा जहण्णा, ओहीखेत्तं जहण्णं तु ॥५२॥
सव्वबहुअगणिजीवा, णिरंतरं जत्तियं भरेज्जंसु ।
खेत्तं सव्वदिसागं, परमोहीखेत्त णिद्दिट्ठो ॥५३॥
अंगुलमावलियाणं, भागमसंखेज्ज दोसु संखेजा ।
अंगुलमावलियंतो, आवलिया अंगुलपुहत्तं ॥५४॥
हत्थम्मि मुहुत्तंतो, दिवसंतो गाउयम्मि बोद्धव्वो ।
जोयण दिवसपुहत्तं, पक्खंतो पण्णवीसाए ॥५५॥
भरहम्मि अद्धमासो, जंबुद्दीवे य साहिओ मासो ।
वासं तु मणुयलोए, वासपुहत्तं च रुयगम्मि ॥५६॥
संखेज्जम्मि उ काले, दीव-समुद्दा उ होंति संखेज्जा ।
कालम्मि असंखेज्जे, दीव-समुद्दा वि भइयव्वा ॥५७॥
काले चउण्ह वुड्ढी, कालो भइयव्वो खेत्तवुड्ढीए ।
वुड्ढीएँ दव्व-पज्जव, भजितव्वा खेत्त–काला उ ॥५८॥
सुहुमो य होति कालो, तत्तो सुहुमयरयं हवति खेत्तं ।
अंगुलसेढीमेत्ते, ओसप्पिणीओ असंखेज्जा ॥५९॥
तिसमयहारादीणं, गाहाणऽट्ठण्ह वी सरूवं तु ।
वित्थरयो वण्णेज्जा, जह हेट्ठाऽऽवस्सए भणियं ॥६०॥
एवं तु वड्ढमाणो, ओही उ समासओ समक्खाओ ।
एत्तो परिहायंतं, ओहीणाणं इमं होति ॥६१॥
हीयमान-कोऽवधिः अज्झवसाठाणेहिं, अपसत्थेहिं वड्ढमाणचारित्ते ।
संकिस्समाणचित्ते, समंततो हायते ओही ॥६२॥

---

६२ अज्झवसाठाणेहिं अध्यवसायस्थानैः । 'अज्झवसा' इत्यत्र यकारलोपेऽवशिष्टो 'अ'कारः 'सा'मध्ये प्रविष्टः ॥

पडिवयमाणो ओही, अंगुलभागं तु [संखऽ]संखं वा । प्रतिपाती अवधिः
अंगुलमेव पुहत्तं, हत्थ धणू जोअणे तह य ॥६३॥
जोयणसयं सहस्सं संखमसंखा व जाव लोगं तु ।
पासित्ताण पडेज्जा, ओहीणाणेद पडिवाती ॥६४॥
से किं अप्पडिवार्ति, ओहिण्णाणं तु ? जो अलोगस्स । अप्रतिपाती अवधिः
आगासपएसं तू एगमवी पासती जाव ॥६५॥
असंखेज्जाइँ अलोएँ, पमाणमेत्ताइँ लोगखंडाइं ।
जाणइ पासति य तहा, खेत्तोही एसमक्खातो ॥६६॥
एसो अप्पडिवादी, ओही तु समासओ समक्खातो ।
सव्वं पेतं चउहा, दव्वादि समासतो वोच्छं ॥६७॥
रूवीदव्वे विसतो, दव्वोही खेत्ततो इमाऽऽहंसु । द्रव्यतः क्षेत्रतश्चावधिः
अंगुलअसंखभागं, उक्कोसेणं इमं वोच्छं ॥६८॥
असंखेज्जाइँ अलोगे, पमाणमेत्ताइँ लोगखंडाइं ।
जाणइ पासति य तहा, खेत्तोही एसमक्खातो ॥६९॥
कालतो ओहिण्णाणी, असंखभागं तु आवलीए उ । कालतोऽवधिः
सव्वजहण्णं जाणति, पासति या सो उ णियमेणं ॥७०॥
उस्सप्पिणि-ओसप्पिणिकालमतीतं अणागतं चेव ।
उक्कोसेण वि जाणति, पासइ या एस कालोही ॥७१॥
भावतो ओहिण्णाणी, अणंतभावे अणंतभागं च । भावतोऽवधिः
जाणति पासति य तहा, भावोही एसमक्खातो ॥७२॥
ओही भवपच्चतियो, खयोवसमियो य वण्णिओ दुविहो ।
तस्स उ बहू विगप्पा, दव्वे खेत्ते य कालादी ॥७३॥
तं मणपज्जवणाणं, दुविहं तु समासतो समक्खातं । मनःपर्यवज्ञानम्
उज्जुमती विमलमती, दव्वादि चउव्विहेक्केक्कं ॥७४॥

---

६४ ओहीणाणेद अवधिज्ञानमिदम् ॥ ६७ सव्वं पेतं सर्वमप्येतत् ॥

द्रव्यतो मनः-पर्यवम्

दव्वओ उज्जुमती तू, अणंतपएसे अणंतखंधा ऊ।
जाणइ पासति ते चिय, वितिमिरसुद्धे तु विउलमती ॥७५॥

क्षेत्रतो मनः-पर्यवम्

खेत्ततो उज्जुमती तू, ऽहेलोगे जाव रयणपुढवीए।
जाणइ पासति उवरिमहेट्ठिल्ले खुड्डपयरे तु ॥७६॥
एते चिय अब्भहिते, विउलतराए उ मुणइ पासति य।
सुद्धवितिमिरतराए, विउलमती उज्जुमतिणो उ ॥७७॥
उज्जुमती उड्ढे ऊ, जोतिसियाणं तु जाव सव्वुवरिं।
जाणइ पासइ ते चिय, वितिमिरसुद्धे तु विउलमती ॥७८॥
तिरितं उज्जुमती तू, उदहिदुए तह य दीव अद्धहिए।
पंचिंदियजीवाणं, सण्णीपज्जत्तयाणं तु ॥७९॥
भावे मणोगिहगए, सव्वं जाणइ मणिज्जमाणे तु।
ते चेव य विमलयरं, वितिमिरसुद्धं तु विउलमती ॥८०॥
णवर विसेसो तु इमो, अड्ढाइयअंगुलेहिं खेत्तं तु।
तिरिउड्ढमहं अहितं, वितिमिरसुद्धं तु विउलमती ॥८१॥

कालतो मनः-पर्यवम्

कालतो उज्जुमती तू, जहण्ण उक्कोसए वि पलियस्स।
भागमसंखेज्जइमं, अतीत एस्से व कालदुए ॥८२॥
जाणइ पासइ ते तू, मणिज्जमाणे उ सण्णिजीवाणं।
ते चेव य विउलमती, वितिमिरसुद्धे तु जाणइ यु ॥८३॥

भावतो मनः-पर्यवम्

भावतो उज्जुमती ऊ, अणंतभावे उ मुणति पासति य।
सव्वेसिं भावाणं, ते णवरमणंतभागे उ ॥८४॥
ते सव्वे विउलमती, विसुद्धतर वितिमिरं तु भावतया।
जाणति पासति य तहा, मणपज्जवणाण चउभेयं ॥८५॥

मनःपर्यवस्य विषयः

तं मणपज्जवणाणं, जेण विजाणाति सण्णिजीवाणं।
दट्ठुं मणिज्जमाणे, मणदव्वे माणसं भावं ॥८६॥
जाणति पिहुज्जणो वि हु, फुडमागारेहि माणसं भावं।
एमुवमा तस्स भवे, मणदव्वपगासिए अत्थे ॥८७॥

मणपज्जवणाणं पुण, जणमणपरिचिंतितत्थपागडणं ।
माणुसखेत्तणिबद्धं, गुणपच्चतितं चरित्तवतो ॥८८॥
उज्जुमती विउलमती, जे वट्टंती सुतंगवी धीरा ।
मणपज्जवणाणत्थे, जाणसु ववहारसोहिकरे ॥८९॥ ऋजुमतिः विपुलमतिश्च
पंकसलिले पसाओ, जह होति कमेण तह इमो जीवो ।
आवरणे झिज्जंते, विसुज्झति केवलं जाव ॥९०॥ केवलज्ञानम्
केवल संभिण्णं तू, लोगमलोगं तु पासती णियमा ।
तं णत्थि जं ण पासति, भूतं भव्वं भविस्सं च ॥९१॥
सव्वेहि जियपदेसेहिं, जुगवं जाणति पासई ।
दंसणेण य णाणेणं, पईवो अब्भमस्स वा ॥९२॥
अंबरे व कतो संतो, तं सव्वं तु पगासती ।
एवं तु उवणतो होति, संभिण्णं तु जं वयं ॥९३॥
तं च लोगमलोगं च, सव्वतो पुव्वमादिसु ।
सव्वं सव्वे तु जे भावा, दव्वतो खेत्त-कालतो ॥९४॥
भावतो चेव जे भावा, णत्थि जे तु ण पासती ।
अभावा णत्थि ताए तु, जाणती पासती वि य ॥९५॥
अह सव्वदव्वपरिणामभावविण्णत्तिकारणमणंतं ।
सासयमव्वाबाहं, एगविहं केवलण्णाणं ॥९६॥
सव्वं णेयं चतुहा, एतस्स परूवणट्ठयाए तु ।
गाहासुत्तं वुत्तं, अह त्ति जं वण्णितं हेट्ठा ॥९७॥
भिण्णग्गहणं खलु कालतो तु सो घेप्पती तु एतेसिं ।
दव्वादीण चउण्हं, परिणामो पज्जया जाणे ॥९८॥
जीवाण अजीवाण य, उप्पाय-व्वय-धुवत्तपज्जाया ।
परपच्चएण तिण्हं, धम्मादीयाण परिणामो ॥९९॥

---

८८ गाथेयमावश्यकनिर्युक्तौ ७६ तमा ॥
९६ गाथेयमावश्यकनिर्युक्तौ ७७ तमा ॥

गति-ठिति-अवगाहेहिं, संजोग-वियोगओ य सो होइ ।
ओदइयादीयाणं, परिणामो होइ भावाणं ॥१००॥

एतेसिं चिय दव्वादियाण कालो तु होति परिणामो ।
कालं पति पतिसुहुमादिएसु वण्णादिपरिणामो ॥१०१॥

दव्वादीपरिणामं, सव्वं जाणाति केवली अखिलं ।
किं भवती परिणामो ?, एयस्स उ कारणं इणमो ॥१०२॥

वीससपयोगे अब्भातियाण खंधाण वीससुप्पायो ।
पण्णरसहा पयोगो, तिविहे कालम्मि परिणामो ॥१०३॥

जो केवली मणूसो, ण सो तु बाहं करेऽण्णसत्ताणं ।
णियमेण अणाबाहं, पावइ मोक्खं खविय सेसं ॥१०४॥

केवलिनि मत्यादिज्ञानानामभावः

जं छउमत्थियणाणं, केवलिणो ण खलु विज्जए तं तु ।
जम्हा खयोवसमिए, वट्टंते छाउमत्था उ ॥१०५॥

भावे केवलणाणं, वट्टति णियमेण खाइए णिच्चं ।
ण उ अक्खीणे मीसे, खाइयभावस्स उप्पत्ती ॥१०६॥

तम्हा एगविहं खलु, केवलणाणं तु होति उववण्णं ।
जेणाऽऽइ केवलम्मि, छपुणाऽणामोहता (?) तेसिं ॥१०७॥

आदिगरा धम्माणं, चरित्त-वरणाण-दंसणसमग्गा ।
सव्वत्तगणाणेणं, ववहारं ववहरंति जिणा ॥१०८॥

पच्चक्खव्ववहारी, इंदिय-णोइंदिएसु वक्खातो ।
आगमजो ववहारी, पारोक्खं तू इमं वोच्छं ॥१०९॥

परोक्षागमव्यवहारी

पच्चक्खागमसरिसो, होति परोक्खो वि आगमो जस्स ।
चंदमुहीव तु सो वि हु, आगमववहारवं होति ॥११०॥

---

१०४ करेऽण्णसत्ताणं करोत्यन्यसत्त्वानाम् ॥
१०८ गाथेयं व्य० उ० १० भा० गा० २०६ ॥
११० इत आरभ्य पञ्चदश गाथाः व्य० उ० १० भा० गा० २०७-२२१ ॥

णातं आगमियं ति य, एगट्ठं जस्स सो परायत्तो ।
सो पारोक्खो वुच्चति, तस्स पदेसा इमे होंति ॥१११॥
पारोक्खं ववहारं, आगमतो सुतधरा ववहरंति ।
चोद्दस-दसपुव्वधरा, णवपुव्वि य गंधहत्थी य ॥११२॥
किह आगमववहारी ?, जम्हा जीवादयो णव पयत्था ।
उवलद्धा तेहिं तु, सव्वेहिं णयवियप्पेहिं ॥११३॥
जह केवली वियाणति, दव्वं खेत्तं च काल भावं च ।
तह चउलक्खणमेतं, सुतणाणी वी वियाणाति ॥११४॥
पणगं मासविवड्ढि, मासिगहाणी य पणगहाणी य ।
एगाहे पंचाहं, पंचाहे चेव एगाहं ॥११५॥
राग-होसविवड्ढि, हाणिं वा णातु देति पच्चक्खी ।
चोद्दसपुव्वादी वि हु, तह णाउं देंति हीणऽहियं ॥११६॥
चोअगपुच्छा पच्चक्खणाणिणो थेवं वि कह बहुं देंति ? । (प्रायश्चित्त-न्यूनाधिक्ये चोदकस्य पृच्छा आचार्यस्योत्तरं च)
भण्णति सुणसू एत्थं, दिट्ठंतं वाणिएण इमं ॥११७॥
जं जह मोल्लं रयणं, तं जाणति रयणवाणियो णिउणो ।
थोवं तु महल्लस्स वि, कासति अप्पस्स वि बहुं तु ॥११८॥
अहवा वि कायमणिणो सुमहल्लस्सावि कागिणी मोल्लं ।
वइरस्स तु अप्पस्स वि, मोल्लं होती सतसहस्सं ॥११९॥
इय मासाण बहूण वि, राग-होसऽप्पयाए थोवं तु ।
राग-होसोवचया, पणगे वि जिणा बहुं देंति ॥१२०॥
पच्चक्खी पच्चक्खं, पासति पडिसेवगस्स सो भावं ।
किह जाणति पारोक्खी ?, णातमिणं तत्थ धमएणं ॥१२१॥
णालीधमएण जिणा, उवसंघारं करेंति पारोक्खे ।
जह सो कालं जाणति, सुएण सोहिं तहा सो तु ॥१२२॥

---

११८ कासति कस्यचित् ॥ १२२ उवसंघारं उपसंहारं तुलनामित्यर्थः॥

जेणं जीवा-ऽजीवा, उवलद्धा सव्वभावपरिणामा ।
तो पुव्वधरा सोहिं, कुव्वंति सुओवदेसेणं ॥१२३॥
तं पुग केण कतं तू सुतणाणं जेण जीवमादीया ।
णज्जंति सव्वभावा ?, केवलणाणीण तं तु कतं ॥१२४॥
प्रायश्चित्त-दानयोग्यः संते वि आगमम्मी, जाहे आलोतियं तु तेण भवे ।
सम्मं णाऽऽलोएती, पडिवज्जति सारियो जइया ॥१२५॥
तो तस्स उ पच्छित्तं, जेण विसुज्झति तगं पयच्छंति ।
आगमववहारी छव्विहो वि पलिउंचिएँ ण देति ॥१२६॥
आलोतिय-पडिक्कंते, होती आलोयणा तु णियमेणं ।
अणालोइयम्मि भयणा, किह पुण भयणा भवति तस्स?॥१२७॥
आलोयणापरिणतो, अंतर कालं करे अभिमुहो वा ।
अहवा वी आयरिओ, एमेव य होति संपत्तो ॥१२८॥
आराहओ तु तह वी, जं सम्मालोयणापरिणतो तु ।
णाराहेति अपरिणयो, एवं भयणा भवति एसा ॥१२९॥
अवराहं वियाणंति, तस्स सोहिं व जहवी ।
तहाऽवाऽऽलोयणा वुत्ता, आलोअंते बहू गुणा ॥१३०॥
दव्वेहिँ पज्जवेहि य, कम खेत्ते काल-भावपरिसुद्धं ।
आलोयणं सुणित्ता, तो ववहारं पउज्जंति ॥१३१॥
आलोचना-श्रवणक्रमः दव्वे सच्चित्तादी, पज्जव दवा बहूविगप्पेहिं ।
पुवाणुपुव्विमादी, कमओ एवं तु आलोए ॥१३२॥
अद्धाण जणवए वा, खेत्ते काले सुभिक्ख दुब्भिक्खे ।
भावे हट्ठ गिलाणे, सेविय जह तं तहाऽऽलोए ॥१३३॥
अहवा सहसऽण्णाणा, भीएण व पेल्लिएण व परेहिं ।

---

१२५ सारियो स्मारितः ॥१२७ गाथेयं व्य० उ० १० भा० गा० २२४ ॥ १३० गाथाद्विकं व्य० उ० १० भा० गा० २२६-२२७ । जहवी यद्यपि । तहाऽवाऽऽलोयणा तथाऽप्यालोचना ॥

वसणेण पमाएण व, मूढेण व राग-दोसेहिं ॥१३४॥
पुव्वं अपासिऊणं, छूढे पायम्मि जं पुणो पासे ।
ण य तरति णियत्तेउं, पायं सहसाकरणमेयं ॥१३५॥
अण्णतरपमाएणं, असंपउत्तस्सऽणोवउत्तस्स ।
इरियाइसु भूतत्थे, अवट्टतो एतदण्णाणं ॥१३६॥
भीओ पलायमाणो, अभियोगभएण वा वि जं कुज्जा ।
पडितो व अपडितो वा, पेल्लिज्जा पेल्लिओ पाणे ॥१३७॥
गीतादि होति वसणं, पंचविहो खलु भवे पमादो उ ।
मिच्छत्तभावणा तू, मोहो तह राग-दोसा ऊ ॥१३८॥
एतेसिं ठाणाणं, अण्णयरे कारणे समुप्पण्णे ।
तो आगमवीमंसं, करेंति अत्ता-तदुभएणं ॥१३९॥
जदि आगमो य आलोयणा य दोण्णि वि समं तु निवयंति ।
एसा खलु वीमंसा, जो असहू जेण वा सुज्झे ॥१४०॥
नाणमाईणि अण्णाणि, जेण अत्थे उ सो भवे ।
राग-दोसप्पहीणे वा, जे व इट्ठा विसोहिए ॥१४१॥
सुत्तं अत्थे उभयं, आलोयण आगमो इती उभयं ।
जं तदुभयं ति वुत्तं, तत्थेसा होति परिभासा ॥१४२॥
पडिसेवणातियारे, जदि णाऽऽउट्टति जहक्कमं सव्वे ।
ण हु देन्ती पच्छित्तं, आगमववहारिणो तस्स ॥१४३॥
पडिसेवणातियारे, जदि आउट्टइ जहक्कमं सव्वे ।
देंति तओ पच्छित्तं, आगमववहारिणो तस्स ॥१४४॥
कहेहि सव्वं जो वुत्तो, जाणमाणो वि गूहति ।

---

१३४ इत आरभ्य गाथादशकं व्य० उ० १० भा० गा० २२८-२३७॥ १३५ तरति शक्नोति॥ १३८ "पंचविहो पमादो-कसाय-विगहा-वियड-इन्दिय-निद्दा पमाया" इति जीतकल्पचूर्णौ पत्र २९॥ १४१ "नाणमादीणि अत्ताणि जेण अत्तो उ सो भवे।" इति व्य० भाष्ये, अयमेव पाठः साधुः ॥

ण तस्स देंति पच्छित्तं, बेन्ति अण्णत्थ सोहय ॥१४५॥
ण संभरति जो दोसे, सब्भावा ण य मायया ।
पच्चक्खी साहए ते उ, माइणो उ ण साहई ॥१४६॥
जति आगमो य आलोयणा य दोण्हि वि समं ण णिवइयाइं।
ण हु देंति उ पच्छित्तं, आगमववहारिणो तस्स ॥१४७॥
जति आगमो य आलोयणा य दोण्हि वि समं णिवइताइं ।
दिंति ततो पच्छित्तं, आगमववहारिणो तस्स ॥१४८॥

प्रायश्चित्त-दातुर्योग्या-योग्यत्वविचार

को पुण पायच्छित्ते, दायव्वे अणरिहो व अरिहो वा ? ।
भण्णइ इणमो सुणसू, अरिहो जो वा अणरिहो उ ॥१४९॥
अट्ठारसहिं ठाणेहिं, जो होति परिणिट्ठिओ ।
नऽलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥१५०॥
अट्ठारसहिं ठाणेहिं, जो होति सुपरिट्ठितो ।
अलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥१५१॥
अट्ठारसहिं ठाणेहिं, जो होइ अपतिट्ठितो ।
नऽलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥१५२॥
अट्ठारसहिं ठाणेहिं, जो होति सुपतिट्ठितो ।
अलमत्थो तारिसो होइ, ववहारं ववहरित्तए ॥१५३॥

अष्टादश स्थानानि

वयछक्क कायछक्कं, अकप्पो गिहिभायणं ।
पलियंक गोयर णिसिज्ज ण्हाणे भूसा अट्ठार ठाणेते ॥१५४॥
परिणिट्ठियो परिण्णाया, पतिट्ठितो जो ठिओ उ तेसु हवे ।
अविदू सोहि ण याणति, अठितो पुण अण्णहा कुज्जा ॥१५५॥
बत्तीसाए तु ठाणेहिं, जो होइ परिणिट्ठितो ।
णऽलमत्थो तारिसो होइ, ववहारं ववहरित्तए ॥१५६॥
बत्तीसाए तु ठाणेहिं, जो होति परिणिट्ठितो ।

१४५ गाथाचतुष्कं व्य० उ० १० भा० गा० २३८-२४१ ॥ १५० इत आरभ्य सप्तविंशतिर्गाथा व्य० उ० १० भा० गा० २४२-२६८ ॥

अलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥१५७॥
बत्तीसाए उ ठाणेहिं, जो होति अपइट्ठितो ।
णऽलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥१५८॥
बत्तीसाए तु ठाणेहिं, जो होति सुपतिट्ठितो ।
अलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥१५९॥
अट्ठविहा गणिसंपय, एक्केक्का चउव्विहा उ बोद्धव्वा । द्वात्रिंशत् स्थानानि
एसा खलु बत्तीसा, ते खलु ठाणा इमे होंति ॥१६०॥
आयार सुय सरीरं, वयणे वायण मती पतोगमती । अष्टौ सम्पदः
एतेसु संपया खलु, अट्ठमिया संगहपरिण्णा ॥१६१॥
एसा अट्ठविहा खलु, एक्केक्काए चउव्विहो भेदो ।
इणमो उ समासेणं, वोच्छामी आणुपुव्वीए ॥१६२॥
आयारसंपयाए, संजमधुवजोगजुत्तया पढमा । चतुर्धाऽऽचार-सम्पदः
बितिय असंपग्गहिया, अणिययवित्ती भवे ततिया ॥१६३॥
तत्तो य वुड्ढसीले, आयारे संपया चउद्धेसा ।
चरणमिह संजमो तू, तहियं णिच्चं तु उवउत्तो ॥१६४॥
आयरिओ अ बहुस्सुय-तवस्सि-जच्चाइएहि व मदेहिं ।
जो होति अणुस्सित्तो, सो तु असंपग्गहीउ त्ति ॥१६५॥
अणिययचारी अणियतवित्ती अगिहो य होति जो अणिसो ।
णिहुयसहाव अचंचल, णायव्वो वुड्ढसीलो त्ति ॥१६६॥
बहुसुत परिजितसुत्ते, विचित्तसुत्ते य होति बोद्धव्वे । श्रुतसम्पच्चतुष्कम्
घोसविसुद्धिकरे या, चउहा सुतसंपदा होति ॥१६७॥
बहुसुत जुगप्पहाणे, अब्भंतर बाहिरं च बहु जाणे ।
होति चसद्दग्गहणा, चारित्तं पी सुबहुयं तु ॥१६८॥
सगणामं व परिजितं, उक्कम-कमयो बहूहि व कमेहिं ।
ससमय-परसमएहिं, उस्सग्ग-ऽववातयो वि वितू ॥१६९॥

---

१६९ उस्सग्ग-ऽववातयो वि वितू उत्सर्गा-ऽपवादयोरपि विद्वान् ॥

घोसा उदात्तमादी, तेहिँ विसुद्धं तु घोसपरिसुद्धं ।
एसा सुतोवसंपय, दारं, सरीरसंपयमतो वोच्छं ॥१७०॥

शरीरसम्प-चतुष्कम्

आरोह-परीणाहो, तह य अणोत्तप्पया सरीरस्स ।
परिपुण्णिंदियमाऽऽइय, संघतणथिरे य बोद्धव्वो ॥१७१॥
आरोहो दिग्घत्तं, विक्खंभो होति तित्तियो चेव ।
आरोह-परिणाहो, य संपया एस णादव्वा ॥१७२॥
तपु लज्जाए धातू, अलज्जणिज्जो अहीणसव्वंगो ।
होति अणोत्तप्पो खलु, दारं, अविकलइंदी तु परिपुण्णो ।१७३।
पढमादीसंघयणो, बलियसरीरो थिरो मुणेयव्वो ।
एसा सरीरसंपय, दारं, एत्तो वयणम्मि वोच्छामि ॥१७४॥

वचनसम्प-चतुष्कम्

आएज्ज महुरवयणे, अणिसियवयणे तहा असंदिद्धे ।
आदिज्ज गज्झवक्का, दारं, अत्थवगाढं भवे महुरं ॥१७५॥
अहवा अफरुसवयणो, खीरासवलद्धिमादिजुत्तो वा ।
अहवा सूसर-सूहग-गंभीरजुओ महुरवक्को ॥१७६॥
णिस्सिओ कोहादीहिं, राग-द्दोसेहि वा वि जं वयइ ।
होति अणिस्सियवयणो, जो वयती एयवइरित्तं ॥१७७॥
अव्वत्तं अफुडत्तं, अत्थबहुत्ता व होति संदिद्धं ।
विवरीयमसंदिद्धं, वयणेसा संपदा चतुहा ॥१७८॥

वाचनासम्प-चतुष्कम्

वायणभेदा चतुरो, विधिउद्दिसणा समुद्दिसणओ य ।
परिणिव्ववियावाए, णिज्जवणा चेव अत्थस्स ॥१७९॥
तेणेव गुणेणं तू, वाएयव्वा परिक्खितुं सीसा ।
उद्दिसई विजिणेउं, जं जस्स तु जोग्ग तं तस्स ॥१८०॥
अपरीणामगमादी, वियाणितुमभायणे ण वाएति ।
जह आममट्टियघडे, अंबे व ण छुब्भए खीरं ॥१८१॥

---

१७२ णादव्वा ज्ञातव्या ॥ १७८ इत आरभ्यैकोनविंशतिर्गाथा व्य० उ० १० भा० गा० २६९-२८७ ॥

जदि कुम्भई विणस्सति, णस्सति वा एवमपरिणामादी ।
जोहिस्से छेदसुतं, दारं, समुद्दिसे याऽवि तं चेव ॥१८२॥
परिणिव्वविया वाए, जत्तियमेत्तं तु तरति तु घेत्तुं ।
जाहगदिट्ठंतेणं, परिजिएँ ताहऽण्णु उद्दिसति ॥१८३॥
णिज्जवयो अत्थस्सा, जो उवजाणेति अत्थो सुत्तस्स ।
अत्थेण वि णिव्वहति इ, अत्थं पि कहेति जं भणितं ॥१८४॥
मइसंपय चउभेदा, उग्गह ईहा अवाय धारणया । मतिसम्प-चतुष्कम्
उग्गहमति छब्भेता, तत्थ इमे होंति छब्भेया ॥१८५॥
खिप्प बहु बहुविहं वा, धुव णिस्सित तह य होयऽसंदिद्धं ।
ओगिण्हति एवीहा, अवायमिति धारणा चेव ॥१८६॥
परवाइण सिस्सेण व, उच्चारितमेत्तमेव ओगिण्हे ।
तं खिप्पं बहुगं पुण, पंच व छ व सत्त गंथसता ॥१८७॥
बहुविहऽणेगपयारं, जह लिहति पहारए गणेइ वि य ।
अक्खाणगं कहेति इ, सद्दसमूहं वऽणेगविहं ॥१८८॥
ण वि विस्सरइ धुवं तं, अनिस्सियं जं ण पोत्थए लिहितं ।
अणुभासिय व्व गेण्हति, निस्संकित होअसंदिद्धं ॥१८९॥
उग्गहियस्स तु ईहा, ईहिएँ पच्छा अणंतर अवायो ।
अवगते पच्छा धारण, तोय विसेसो इमो णवरं ॥१९०॥
बहु बहुविह पोराणं, दुद्धर णितयं तहेव असंदिद्धं ।
पोराण पुरा व जितं, दुद्धर णय-भंगगुविलत्ता ॥१९१॥
एत्तो उ पओगमती, चउव्विहा होनि आणुपुव्वीए । प्रयोगमति-सम्पदः चतुष्कम्
आय पुरिसं च खेत्तं, वत्थुं वि पउंजए वातं ॥१९२॥

---

१८३ जाहगदिट्ठंतेणं जाहकस्तिर्यग्विशेषः, तद्दृष्टान्तं यथा–"पातुं थीवं थोवं, खीरं पासाणि जाहओ लिहइ । एमेव जितं काउं, पुच्छति मतिमं न खेदेति ॥१॥" आवश्यक हारिभद्री टीका पत्र १०३ । ताहऽण्णु तदाऽन्यत ॥ १८७ परवाइण परवादिना ॥

जाणति पयोग भिसजो, वाही जेणाऽऽउरस्स छिज्जति उ।
इय वाओ व कहा वा, णियसत्ती णाउ कातव्वा ॥१९३॥
पुरिसं उवासगाई, अहवा वी जाणगाइयं पुरिसं।
पुव्वं तु गमेऊणं, ताहे वाओ पउत्तव्वो ॥१९४॥
खेत्तं मालवमाई, अहवा वी साहुभावियं जं तु।
णाऊण तहा विहिणा, वाओ हु तहिं पउत्तव्वो ॥१९५॥
वत्थुं पुण परवाई, बहुआगमिओ न वा वि नाऊणं।
राया व रायमत्तो, दारुण-भद्दस्सभावो वा ॥१९६॥
एसा उ पओगमई, एत्तो वोच्छामि संगहपरिण्णं।
चतुर्थी संग्रह-परिज्ञासंपत् सा वि य चउव्विगप्पा, तीय विभागो इमो होइ ॥१९७॥
बहुजणजोग्गं पेहे, खेत्तं तह पीढफलहमोगिण्हे।
वासासु एते दोण्णि वि, काले य समाणए काले ॥१९८॥
पूए अहागुरुं पि य, चउत्थ एसा उ संगहपरिण्णा।
एत्तो एक्केकीय य, इमा विभासा मुणेयव्वा ॥१९९॥
वासे बहुजणजोग्गं, वित्थिण्णं जं तु गच्छपायोग्गं।
पडिलेह बाल-दुब्बल-गिलाण-मादेसमादीणं ॥२००॥
खेत्त असइ अगहित्ता, ताहे गच्छंति ते उ अण्णत्थ।
पीढप्फलगग्गहणे, ण उ मइलंती णिसिज्जादी ॥२०१॥
वासासु विसेसेणं, अण्णं कालं तु गमय अण्णत्थ।
पाणा सीयल-कुंथादिआ य तो गहण वासासु ॥२०२॥
जं जम्मि होति काले, कायव्वं तं समाणए तम्मि।
सज्झाय पेह उवही, उप्पायण भिक्खमादी तु ॥२०३॥
अहगुरु जेणं पव्वाविओ तु जस्स व अहीत पासम्मि।
अहवा अहागुरू खलु, हवंति रातिणियतरया उ ॥२०४॥

---

१९३ णियसत्ती णाउ कातव्वा निजशक्तिं ज्ञात्वा कर्तव्या॥ १९६ रायमत्तो राजामात्यः॥ १९८ इतोऽष्टचत्वारिंशद्गाथाः व्य० उ० १० गा० २८८-३३२॥ २०४ रातिणियतरया रात्निकतराः व्रतपर्यायज्येष्ठतराः॥

तेसिं अब्भुट्ठाणं, डण्डग्गह तह य होति आयारे।
उवहीवहणं विस्सामणं च संपूयणा एसा ॥२०५॥
एसा खलु बत्तीसा, जाणाति जो पतिट्ठितो एत्थं।
ववहारे अलमत्थो, अहवा वि भवे इमेहिं तु ॥२०६॥
छत्तीसाए तु ठाणेहिं, जो होयऽपरिणिट्ठिओ।
णऽलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥२०७॥
छत्तीसाए उ ठाणेहिं, जो होति अपतिट्ठिता॥
णऽलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥२०८॥
छत्तीसाए उ ठाणेहिं, जो होइ परिणिट्ठितो।
अलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥२०९॥
छत्तीसाए उ ठाणेहिं, जो होइ सुपइट्ठिओ।
अलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥२१०॥
जा होती बत्तीसा, तम्मी छोढूण विणयपडिवत्ती।
चतुभेदं तो होती, छत्तीसा एस ठाणाणं ॥२११॥ षट्त्रिंशत् स्थानानि
बत्तीस वण्णिय च्चिय, वोच्छं चउभेय विणतपडिवत्तिं।
आयरियंतेवासी, जह विणएत्ता भवे णिरिणो ॥२१२॥
आयारे सुत विणए, विक्खिवणे चेव होति बोधव्वो। विनय प्रतिपत्तयः
दोसस्स य णिग्घाओ, विणए चउहेस पडिवत्ती ॥२१३॥
आयारे विणयो खलु, चउविहो होति आणुपुव्वीए। चतुर्धाऽऽचारविनयः
संजमसामायारी, तवे य गणिविहरणा चेव ॥२१४॥
एगल्लविहारे या, सामायारी य एस चउहा तु।
एतेसिं तु विभागं, वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥२१५॥
संयममायरइ सतं, परं च गाहेइ संजमं णियमा।
सीयंतथिरीकरणं, उज्जुतचरणं च उववूहे ॥२१६॥
सो सत्तरसो पुढवातियाण घट्ट-परियावणो-द्दवणं।
परिहरियव्वं णियमा, संजमयो एस बोद्धव्वो ॥२१७॥

पक्खे य पोसहेसुं, कारेति तवं सतं करेति वि य।
भिक्खायरियाय तहा, णियुंजति परं सयं वा वि। ॥२१८॥
सव्वम्मि बारसविहे, णिउंजति परं सतं च उज्जमति।
गणसामायारीए, गणं विसीयंतु चोएति ॥२१९॥
पडिलेहण-पक्खोडण-बाल-गिलाणाइवेयवच्चेसुं।
सीदंतं गोहती, सतं च जुत्तो तु एएसु ॥२२०॥
एगल्लविहारादी, पडिमा पडिवज्जए सतं वऽण्णं।
पडिवज्जावे एवं, अप्पाण परं च विणएति ॥२२१॥
आयारविणय एसो, जहक्कमं वण्णिओ समासेणं।
चतुर्थो श्रुतविनयः
एत्तो ऊ सुतविणयं, जहाणुपुव्विं पवक्खामि ॥२२२॥
सुतं अत्थं च तहा, हितकर णिस्सेसयं च वाएइ।
एसो चउविहो खलु, सुतविणता होति णायव्वो ॥२२३॥
सुत्तं गाहेति जुत्तो, दारं, अत्थं च सुणावए पयत्तेणं।
जं जस्स होति जोग्गं, परिणामगमादितं तु हियं ॥२२४॥
णिस्सेसमपरिसेसं, जाव समत्तं तु ताव वाएति।
चतुर्थो विक्षेपणविनयः
एसो सुतविणयो खलु, वोच्छं विक्खेवणाविणयं ॥२२५॥
अदिट्ठं दिट्ठं खलु, दिट्ठं साहम्मियत्तविणएणं।
चुतधम्म ठावे धम्मे, तस्सेव हितट्ठ अब्भु ॥२२६॥
विण्णाणाभावम्मि वि, 'खिव पेरणे' विक्खिवितु परसमया।
ससमते णमभिच्छुमे, अदिट्ठधम्मं तु दिट्ठ वा ॥२२७॥
धम्मसहावो सम्मद्दंसण जं जेण पुव्वि ण उ लद्धं।
सो होयऽदिट्ठपुव्वो, तं गाहे दिट्ठपुव्वमिव ॥२२८॥
जह भायरं व पियरं, व मिच्छदिट्ठिं पि गाहे सम्मत्तं।
दिट्ठपुव्वं सावग, साहम्मि करेइ पव्वावे ॥२२९॥
चुतधम्मो णट्ठधम्मो, चरित्तधम्माओ दंसणाओ वा।
तं ठावेति तहिं चिय, पुणो वि धम्मे जहुद्दिट्ठे ॥२३०॥

तस्स पी तस्सेव उ, चरित्तधम्मस्स वुड्ढिहेतुं तु ।
वारेतऽणेसणादी, ण य गिण्हे सयं हितट्ठाए ॥२३१॥
जं इह-परलोए या, हितं सुहं तं खमं मुणेतव्वं ।
णिस्सेयस मोक्खो तु, अणुगामऽणुगच्छए जं तु ॥२३२॥
विक्खेवणविणएसो, जहक्कमं वण्णितो समासेणं ।
एत्तो तु पवक्खामी, विणयं दोसाण णिग्घाते ॥२३३॥ चतुर्थो दोष-निर्घातविनयः
दोसा कसायमाई, बंधो अहवा वि अट्ठपयडीओ ।
णिययं व णिच्छियं वा, घाय विणासो य एगट्ठा २३४॥
रुट्ठस्स कोहविणयण, दुट्ठस्स य दोसविणयणं जं तु ।
कंखिय कंखुच्छेए, आयप्पणिहाण चउहेसा ॥२३५॥
सीयघरम्मि व डाहं, वंजुलरुक्खो व जह व उरगविसं ।
रुट्ठस्स तहा कोहं, पविणेती उवसमेति त्ति ॥२३६॥
दुट्ठो कसाय-विसयाइएहिँ माणपयभावदुट्ठो व्व ।
तस्स पविणेइ दोसं, णासयए धंसए व त्ति ॥२३७॥
कंखा उ भत्त-पाणे, परसमए अहव कंख एमाई ।
तस्स पविणेइ कंखं, संखडि अण्णं व देसेणं ॥२३८॥
चरगाइमाइएसु तु, अहिंसमक्खो व्व अत्थि जा कंखा ।
तं हेउ-कारणेहिं, विणयउ जह होइ णिकंखो ॥२३९॥
जो एएसु ण वट्टइ, कोहे दोसे तहेव कंखाए ।
सो होति सुप्पणिहिओ, सोभणपरिणामजुत्तो वा ॥२४०॥
छत्तीसेयाणि ठाणाणि, भणिताणि अणुपुव्वसो ।
जो कुसलो एतेहिं, सो ववहारी समक्खातो ॥२४१॥
अट्ठहि अट्ठारसहि य, दसहि य ठाणेहिं जे अपारोक्खा ।
आलोयणदोसेहिं, छहि य अपारोक्ख त्रिण्णेया ॥२४२॥

---

२३३ विक्खेवणविणएसो विक्षेपणविनय एषः ॥ २३४ अट्ठपयडीओ अष्टकर्मप्रकृतिजः ।

आलोयणागुणेहिं, छहिं य ठाणेहिं जे अपारोक्खा ।
पंचहि य णियंठेहिं, पंचहि य चरित्तमंतेहिं ॥२४३॥
अट्ठायारवमादी, वयछक्कादी हवंति यऽट्ठरसं ।
दसविहपायच्छित्ते, आलोयणमादिए चेव ॥२४४॥
आलोयणदोसेहिं, आकंपणमादिएहि दसहि तु ।

दश आलोचना गुणाः

छहिँ काएहि वएहि व, दसहिं चाऽऽलोयणगुणेहिं ॥२४५॥
इमेहिं—आयार विणयगुण कप्पदीवणा अत्तसोहि उजुभावो ।
अज्जव मद्दव लाघव, तुट्ठी पल्हायकरणं च ॥२४६॥
मिच्छत्ततवाऽऽयारे, पढमं आलोयणा तहि पढमं ।
विणयो विणासणं ति य, मायाए विणयणगुणेसो ॥२४७॥
चारित्त कप्पो णियमा, णिरतियारित्त विगडिये सो य ।
दीविय पभासिउ त्ति य, पगासितो चेव एगट्ठा ॥२४८॥
अतियारपंकपंकंकितो य आया विसोहिओ होति ।
आलोइए य आया, उजुभावे ठाविओ होइ ॥२४९॥
अज्जवभावे अज्जव, सयं चियाऽऽलोइए कओ होइ ।
मद्दवभावेणं पुण, अमाणि होऊग आलोए ॥२५०॥
अतियारगुरुभएणं, अकंतालोतिए लहू होति ।
सुद्धो हं ती य तुट्ठी, दारं, अतियारुण्हो य पल्हाणो ॥२५१॥
आलोयणागुणेसु, जे ऊ एवं हवंतऽपारोक्खा ।
छट्ठाणयपडिएहिं, छहिँ चेव य जे अपारोक्खा ॥२५२॥
संखादीया ठाणा, छहिँ ठाणेहि पडियाण ठाणाणं ।
जे संजया सरागा, एगे ट्ठाणे विगयरागा ॥२५३॥
एआऽऽगमववहारी, पण्णत्ता राग-दोसणीहूया ।
आणाएँ जिणिंदाणं, जे ववहारं ववहरंति ॥२५४॥

२४६ गाथेयं व्य० उ० १० गा० ४७३ ॥ २५३ इतो द्वाविंशतिर्गाथाः व्य० उ० १० गा० ३३३-३५२ ॥

इय भणिए चोएती, ते वोच्छिण्णा हु संपदं इहइं।
तेसु य वोच्छिण्णेसु, णत्थि विसुद्धी चरित्तस्स ॥२५५॥
चोद्दसपुव्वधराणं, वोच्छेदो केवलीण वोच्छेदे।
केसिंचि य आदेसो, पायच्छित्तं पि वोच्छिण्णं ॥२५६॥

प्रायश्चित्ताभावविषयं चोदकस्य वचनम्

जं जत्तिएण सुज्झति, पावं तस्स तह देंति पच्छित्तं।
जिण-चोद्दसपुव्वधरा, तव्विवरीता जहिच्छाए ॥२५७॥
पारगमपारगं वा, जाणंते जस्स जं च करणिज्जं।
देंति तहा पच्चक्खी, घुणक्खरसमो तु पारोक्खी ॥२५८॥
जा य ऊणाहिए वुत्ता, सुत्ते मग्गविराहणा।
ण सुज्झे तीइ देंतो उ, असुद्धो कं च सोहए २५९॥
देंता वि ण दीसंती, मास-चउम्मासियाओ सोहीओ।
कुणमाणा वि य सोहिं, ण पासिमो जो व सिं देज्जा ॥२६०॥
सोहीए य अभावे, देंताण करेंतगाण य अभावे।
वट्टति संपतिकाले, तित्थं सम्मत्त-णाणेहिं ॥२६१॥
णिज्जवगा य ण संती, महपुरिसाणं तु तेसि वोच्छेते।
तम्हा संपयकाले, णत्थि विसुद्धी सुविहियाणं ॥२६२॥
एवं तु चोतियम्मी, आयरिओ भणति ण हु तुमे णातं।
पच्छित्तं कहितं तू, किं धरती किं च वोच्छिण्णं? ॥२६३॥

आचार्यस्य प्रतिवचः

अत्थं पडुच्च सुत्तं, अणागतं तं तु किंचि आमसति।
अत्थो वि को वि सुत्तं, अणागतं चेव आमसति ॥२६४॥
सव्वं चिय पच्छित्तं, पच्चक्खाणस्स ततियवत्थुम्मि।
ततो चिय णिज्जूढं, कप्प पकप्पो य ववहारो ॥२६५॥
ताणि धरंती अज्ज वि, तेसु धरंतेसु कह तुमं भणसि।
वोच्छिण्णं पच्छित्तं?, तत्थ इमा तु परूवणया ॥२६६॥

---

२६४ आमसति आमृषति-विचारयति॥ २६५ पकप्पो निशीथसूत्रम्॥

सपदपरूवण अणुसज्जणा य दस चोद्दसऽट्ठ दुप्पसहे ।
अत्थि ण दीसति धणिएण विणा तित्थं च णिज्जवए।२६७॥
पण्णवगस्स तु सपदं, पच्छित्तं चोयगस्स तमणि ।
तं संपयं पि विज्जति, जहा तहा मे णिसामेहिं ॥२६८॥
भुंजति चक्की भोए, पासाए सिप्पिरयणणिम्मविए ।
तं दट्ठुं रायीणं, अण्णेसिच्छा समुप्पण्णा ॥२६९॥
अम्हे कारावेमो, पासाए एरिसे त्ति इति तेहिं ।
चित्तकरा पेसविया, णिउणं लिहिऊण आणेह ॥२७०॥
पासाद स्सयणे मणहारितं तेहिं चित्तकारेहिं ।
लीलविहूणं णवरिं, आगारो होति सो चेव ॥२७१॥
जह रूपादिविसेसा, परिहीणा होंति पागतजणस्स ।
ण य ते ण होंति गेहा, भुंजंति य तेसु ते भोगे ॥२७२॥
एमेव य पारोक्खी, तदाऽणुरूवं तु सो व्व ववहरति ।
किं पुण ववहरितव्वं, पायच्छित्तं इमं दसहा ॥२७३॥

दशधा प्रायश्चित्तम्

आलोयण पडिकमणे, मीस विवेगे तहा वियोसग्गे ।
तव छेद मूल अणवट्ठया य पारंचिए चेव ॥२७४॥

प्रायश्चित्त-दानस्य विभागः

एतुवरि भण्णिहिती, सवित्थरेणं तु आणुपुव्वीए ।
एयं पुण जह धरती, जं जत्था तं चिमाऽऽहंसु ॥२७५॥
दसहा अणुसज्जंती, जा चोद्दसपुव्वि पढमसंघयणे ।
तेणाऽऽरेणऽट्ठविहं, तित्थंतिम जाव दुप्पसहो ॥२७६॥
तम्मि कालगए तित्थं चरित्तं च वोच्छिज्जिहीति ॥
दोसु तु वोच्छिण्णेसु, चोद्दसपुव्वाऽऽतिमे य संघयणे ।
तव(तो)पारंच-ऽणवट्ठा, णव-दस पच्छित्तवोच्छिण्णा॥२७७॥

---

२७२ पागतजणस्स प्राकृतजनस्य ॥ २७५ एतुवरिं एतद् उपरि-अग्रे । जत्था तं चिमाऽऽहंसु यत्र तत् चेदमाह ॥ २७६ गाथेयं व्यव० उ० १० गा० ३५३ ॥

सेस अद्धइऽणुसज्जति, जा तित्थं णव दसे य जिणादी।
चोदे तं पि ण दीसदि, एवभणंतं गुरू भणति ॥२७८॥
दोसु तु वोच्छिण्णेसू, अट्ठविहं देंतया करेंता य।
ण य केयी दीसंती, एवमणंतस्स चतुगुरुगा ॥२७९॥
दोसु तु वोच्छिण्णेसू, अट्ठविहं देंतया करेंता य।
पच्चक्खं दीसंती, जहा तहा मे णिसामेहिं ॥२८०॥
पंच णियंठा भणिया, पुलाग बउसा कुसील णिग्गंठा।
तह य सिणाओ तेसिं, पच्छित्त जहक्कमं वोच्छं ॥२८१॥
आलोयण पडिकमणे, मीस विवेगे तहा विओसग्गे।
तवो य तवे छेदे, पच्छित्त पुलागे छऽप्पेते ॥२८२॥
बगुस-पडिसेवगाणं, पायच्छित्ता हवंति सव्वे वि।
थेराण भवे कप्पे, जिणकप्पे अट्ठहा होति ॥२८३॥
आलोयणा विवेगो वा, णियंठस्स दुवे भवे।
विवेगो य सिणायस्स, एमेया पडिवत्तीओ ॥२८४॥
पंचेव संजया खलु, णायसुएण कहिता जिणवरेणं।
सामाइसंजयादी, पच्छित्तं तेसि वुच्छामि ॥२८५॥
सामाइसंजताणं, पच्छित्ता छेय-मूलरहियऽट्ठ।
थेराण जिणाणं पुण, तवगंतं छव्विहं होति ॥२८६॥
छेदोवट्ठावणिए, पायच्छित्ता हवंति सव्वे वि।
थेराण जिणाणं पुण, मूलंतं अट्ठहा होति ॥२८७॥
परिहारविसुद्धीए, मूलंता अट्ठ होंति पच्छित्ता।
थेराण जिणाणं पुण, छव्विहमेतं चिय तवंतं ॥२८८॥
आलोयणा विवेगे य, ततियं तु ण विज्जइ
सुहमम्मि संपराए, अहक्खाए तहेव य ॥२८९॥

---

२७९ इतआरभ्य गाथाः व्य० उ० १० गा० ३९४-३९६ ॥
२८२ छ प्पेते षडप्येतानि ॥

बउस-पडिसेवया खलु, इत्तिरि-छेदा य संजता दोण्णि ।
जा तित्थं अणुसज्जंति, अत्थि हु तेणं तु पच्छित्तं ॥२९०

प्रायश्चित्तविधातृणामस्तित्वम्

जदि अत्थि ण दीसंती, केइ करेंता उ भण्णती सुणसु ।
दीसंतु उवाएणं, कुव्वंता तत्थिमं णातं ॥२९१॥
जह धणियो सावेक्खो, णिरवेक्खो चेव होइ [दुविहो] तु ।
धारणग संतविभवो, असंतविभवो य सो दुविहो ॥२९२॥
संतविभवो तु जाहेव मग्गितो ताहे देति तं सव्वं ।
जो पुण असंतविभवो, तस्स विसेसो इमो होति ॥२९३॥
णिरवेक्खो तिण्णि चयती, अत्ताण धणं च तह य धारणयं ।
सावेक्खो पुण रक्खति, अप्पाण धणं च धारणगं ॥२९४॥
जो तु असंतविभवो, दव्वं घेत्तण पडइ पाढेण ।
सो अप्पाण धणं पि य, धारणगं चेव णासेति ॥२९५॥
जो पुण सहती कालं, सो अत्थं लहति रक्खति य तं च ।
ण किलिस्सइ य सतं पी, एव उवाओ तु सव्वत्थ ॥२९६
जो तु धरेज्ज अवड्ढं, असंतविभवो सतं ।
कुणमाणो य कम्मं तु, णिव्विसे करिसावणं ॥२९७॥
अणमप्पेण कालेणं, सो तगं तु विमोयए ।
दिट्ठंतेसो भणितो, अत्थोवणयो इमो तस्स ॥२९८॥
संतविभवेहिँ तुल्ला, धिति-संघयणेहिँ जे उ संपण्णा ।
ते आवण्णा सव्वं, वहंति णिरणुग्गहं धीरा ॥२९९॥

सापेक्ष–निरपेक्षतया प्रायश्चित्तदाने लाभालाभौ

संघयण-धितीहीणा, असंतविभवेहिँ होंति तुल्ला तु ।
णिरवेक्खो जदि तेसिं, देति तयो ते ण सुज्झंति ॥३००॥
ते तेण परिच्चत्ता, लिंगविवेगं तु काउ वच्चंति ।
तित्थुच्छेदो एवं, अप्पा वि य चत्ता इणमो उ ॥३०१॥

---

२९१ इत आरभ्य नव गाथाः व्य० उ० १० भा० गा० ३६७-३७५ ॥

ते उद्देसु पलाणा, पच्छा एक्काणियो तयो होति ।
ताहे किं तु करेतू?, एवं अप्पा परिच्चत्तो ॥३०२॥
साविक्खो पवयणम्मी, अणवत्थपसंगवारणाकुसलो ।
चारित्तरक्खणट्ठा, अव्वोच्छित्तीय तु विसुज्झे ॥३०३॥
कल्लाणगमावण्णे, अतरंते जहक्कमेण काउं जे ।
दस कारेंति चतुत्थे, तब्बिउणाऽऽयंबिलतवे य ॥३०४
एक्कासण पुरिमड्ढा, णिव्विगती चेव बिगुणबिगुणाओ ।
पत्तेयाऽसहुदाणं, कारेंति व सण्णिगासंति ॥३०५॥
चउ-तिग-दुगकल्लाणा, एगं कल्लाणगं च कारिंति ।
जं जो उ तरति तं तस्स देंति असहुस्स झोसेंति ॥३०६॥
एवं सदयं दिज्जति, जेणं सो संजमे थिरो होति ।
ण य सव्वहा ण दिज्जइ, अणवत्थपसंगदोसाओ ॥३०७॥
तिलहारगदिट्ठंतो, पसंगदोसेण जह वहं पत्तो ।
जणणी य थणच्छेयं, पत्ता अणिवारयन्ती तु ॥३०८॥
णिब्भत्थणाइ बितियाएँ वारिओ जीविआदिआभागी ।
णेव य थणछेदादी, पत्ता जणणी य अवराहं ॥३०९॥
इय अणिवारियदोसा, संसारं दुक्खसागरमुवेंति ।
विणियत्तपसंगा पुण, करेंति संसारवोच्छेदं ॥३१०॥
एवं धरती सोही, देन्ता करेंता वि एत्थ दीसंति । दारं ।
जं पि य दंसण-णाणेहिँ भाति तित्थं ति तं सुणसु ॥३११॥
एवं ते भणंतेणं, सेणियमादी वि थाविया समणा । चरणस्य अस्तिता
समणस्स उ सुत्तम्मी, णत्थी णरएसु उववातो ॥३१२॥

---

३०२ पलाणा पलायिताः । एक्काणियो एकाकी ॥

३०३ इत आरभ्यैकादश गाथा व्य० उ० १० भा० गा० ३७६-३८६ ॥

३०८ तिलहारगदिट्ठंतो तिलहारकदृष्टान्तः गुरुतत्त्वविनिश्चयवृत्तौ उ० १ गाथा २०० मध्ये, व्य० उ० १० भा० गाथा ३८० टीकायां च द्रष्टव्यः ॥

जं पि य हु एक्कवीसं, वाससहस्साइँ होइती तित्थं ।
तं मिच्छा सिद्धी वा, सव्वगतीसुं पि होज्जाहि ॥३१३॥
अण्णं च इमो दोसो, पच्छित्ताभावतो तु पावइ हु ।
जह न वि चिट्ठति चरणं, तत्थ इमं गाहमाहंसु ॥३१४॥
पायच्छित्ते असंतम्मि, चरित्तं पि ण चिट्ठति ।
चरित्तम्मि असंतम्मि, तित्थे णो सचरित्तया ॥३१५॥
अचरित्तयाए तित्थे, णेव्वाणं पि ण गच्छती ।
णेव्वाणम्मि असंतम्मि, सव्वा दिक्खा णिरत्थिया ॥३१६॥
ण विणा तित्थं णियंठेहिं, णियंठा व अतित्थगा ।
छक्कायसंजमो जाव, ताव दुण्हाऽणुसज्जणा ॥३१७॥
सव्वन्नूहिँ परूविय, छक्काय महव्वया य समितीओ ।
स च्चेव य पण्णवणा, संपयकालम्मि साहूणं ॥३१८॥
तं णो वयइ तित्थं, दंसण-णाणेहिँ एव सिद्धं तु ।
निर्यापककाना-मभावच्छेदः णिज्जवगा वोच्छिण्णा, जं पि य भणियं तु तं ण तहा ॥३१९॥
सुण जह णिज्जवगऽत्थी, दीसंति जहा य णिज्जविज्जंता ।
इह दुविहा णिज्जवगा, अत्ताण परे य बोधव्वा ॥३२०॥
पाओवगमे इंगिणि, दुविहा खलु होंति आयणिज्जवगा ।
णिज्जवणा य परेण व, भत्तपरिण्णाएँ बोद्धव्वा ॥३२१॥
भक्तपरिज्ञा-विधिः पाओवगमे इंगिणि, दोण्णि वि चिट्ठंतु ताव मरणाइं ।
भत्तपरिण्णाएँ विहिं, वाच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥३२२॥
पावज्जादी काउं, णेयव्वं ताव जाव वोच्छित्ती ।
पंच तुलेतूण य सो, भत्तपरिण्णं परिणयो य ॥३२३॥
सपरक्कमे य अपरक्कमे य वाघाय आणुपुव्वी य ।
सुत्तऽत्थजाणएणं, समाहिमरणं तु कातव्वं ॥३२४॥

---

३१५ इतो द्वादश गाथाः व्य० उ० १० भा० गा० ३८७-३९८ ॥

भिक्ख-वियारसमत्था, जो अण्णगणं तु गंतु चाएति ।
एस सपरक्कमो खलु, तव्विवरीओ भवे इयरो ॥३२५॥
एक्केक्कं तं दुविहं, णिव्वाघायं तहेव वाघायं ।
वाघाती वि य दुविहो, कालाइयरो व्व इयरो व्व ॥३२६॥
सपरक्कमं तु तहियं, णिव्वाघायं तहेव वाघातं ।
वोच्छामि समासेणं, ठप्पं अपरक्कमं दुविहं ॥३२७॥

निर्व्याघाताया सव्याघाताया-श्च सपराक्रमः भक्तपरिज्ञायाः स्वरूपम्

तं पुण अणुगंतव्वं, दारेहिँ इमेहिँ आणुपुव्वीए ।
गणणिसिरणाइएहिं, तेसि विभागं तु वोच्छामि ॥३२८॥
गणणिसिरणा परगणा, सिति संलेहा अगीयऽसंविग्गे ।
एगाऽऽभोगण अण्णे, अणपुच्छ परिच्छ आलोए ॥३२९॥
ठाण वसही पसत्थे, णिज्जवगा दव्वदायणा चरिमे ।
हाणि परितंत णिज्जर, संथारुव्वत्तणादीणि ॥३३०॥
सारेऊण य कवयं, णिव्वाघाएण चिंधकरणं च ।
वाघाए जयणा या, भत्तपरिण्णाय कायव्वा ॥३३१॥
गणणिसिरणम्मि उ विही, जो कप्पे वण्णितो उ सत्तविहो ।
सो चेव णिरवसेसो, भत्तपरिण्णाएँ इहइं पि ॥३३२॥

गणनिःसरण-द्वारम्

णिसिरित्तु गणं वीरो, गंतूण य परगणं तु सो ताहे ।
कुणति दढव्ववसायो, भत्तपरिण्णं परिणयो य ॥३३३॥
किं कारण अवक्कमणं, थेराण इहं तवोकिलंताणं ? ।
अब्भुज्जयम्मि मरणे, कालुणिया झाणवाघातो ॥३३४॥
सगणे आणाहाणी, अप्पत्तिय होति एवमादीहिं ।
परगणे गुरुकुलवासो, अप्पत्तियवज्जितो होति ॥३३५॥
उवगरणगणणिमित्तं, तु वुग्गहो दिस्स वा वि गणभेदो ।
बालादी थेराण व, उचियाकरणम्मि वाघातो ॥३३६॥

---

३२८ इतः पञ्च गाथाः व्य० उ० १० भा० गा० ३९९-४०३ ॥
३३४ इतः षड् गाथाः व्य० उ० १० भा० गा० ४०४-४०९ ॥

सिणेहो पेलवी होती, णिग्गए उभयस्स वि।
आहच्च वा वि वाघाए, णो स होइ विउब्भमो ॥३३७॥

सितिद्वारम्

दव्वसिती भावसिती, दव्वसिती होइ दारुणिस्सेणी ।
भावसिति संजमो जा, तीय वि भंगा इमे होंति ॥३३८॥
संजमठाणाणं कंडगाण लेसाठितीविसेसाणं ।
उवरिल्ला परक्कमणं, भावसिती केवलं जाव ॥३३९॥
भावसिती अहिगारो, विसुद्धभावेण तत्थ ठातव्वं ।
ण हु उड्डगमणकज्जे, हेट्ठिल्लपदं पसंसंति ॥३४०॥

सिति त्ति दारं ॥

संलेखना-द्वारम्

संलेहणा उ तिविहा, जहण्ण मज्झा तहेव उक्कोसा ।
छम्मासा वरिसं वा, बारस वरिसा जहाकमसा ॥३४१॥
चिट्ठतु जहण्ण मज्झा, उक्कोसं तत्थ ताव वोच्छामि ।
जं संलिहिऊण मुणी, साहंती अप्पणा अट्ठं ॥३४२॥
चत्तारि विचित्ताइं, विगतीणिज्जूहियाइँ चत्तारि ।
दोसु चउत्थाऽऽयामं, अविगिट्ठ विगिट्ठ कोडेक्कं ॥३४३॥
संवच्छराइँ चउरो, तवं विचित्तं चउत्थमादीयं ।
काऊण सव्वगुणितं, पारेती उग्गमविसुद्धं ॥३४४॥
पुणरवि चउरण्णा तू, विचित्त काऊण विगतिवज्जं तु ।
पारेति सो महप्पा, णिद्धं पणियं च वज्जेइ ॥३४५॥
अण्णा दोण्णि समाओ, चउत्थ काऊण पारे आयामं ।
कंजीएणं तु तपो, अण्णेकसमं दुहा काउं ॥३४६॥
तत्थेकं छम्मासं, चतुत्थ छट्ठं च काउ पारेति ।
आयामेणं णियमा, बितिए छम्मासिएँ विगिट्ठं ॥३४७॥

---

३४२ इतो नव गाथाः व्य० उ० १० भा० गा० ४११-४१८ ॥
३४४ सव्वगुणितं सर्वगुणिकं प्रतिबन्धरहितम्, यथेष्टमिति यावत् ।

अट्ठम दसम दुवालस, काउं पारे तमेव आयामं ।
अण्णेकहायणं तू, कोडीसहितं तु काऊणं ॥३४८॥
आयाम-चउत्थादी, काऊण अपारिए पुणो अण्णं ।
जं कुणयाऽऽयामादी, तं भण्णति कोडिसहितं तु ॥३४९॥

आयंबिल उसिणोएण पारें हावंतो आणुपुव्वीए ।
जह दीव-तेल्ल-वत्तीक्खओ समं तह सरीराउं ॥३५०॥
बारसमम्मि य वरिसे, जे मासा उवरिमा उ चत्तारि ।
पारणए तेसिं तू, एक्कंतरतं इमं धारे ॥३५१॥
तेल्लस्स उ गंडूसं, णीसट्ठं जाव खेलसंवुत्तो ।
तो णिसिरे खेलमसे, किं कारण ? गल्लधरणं तु ॥३५२॥
लुक्खत्ता मुहजंतं, मा हु खुहेज्ज त्ति तेण धारेइ ।
माऽह णमोकारस्सा, अपच्चलो सो हु होज्जाहि ॥३५३॥
उक्कोसिया तु एसा, संलेहा मज्झिमा जहण्णा य ।
संवच्छर छम्मासा, एमेव य मास-पक्खेहिं ॥३५४॥
एसो एगतरेणं, संलेहेणं खवेत्तु अप्पाणं ।
कुज्जा भत्तपरिण्णं, इंगिणि पाओवगमणं च ॥३५५॥
अग्गीयसगासम्मी, भत्तपरिण्णं तु जो करेज्जाहि ।   अगीत-द्वारम्
चउगुरुगा तस्स भवे, किं कारण ? जेणिमे दोसा ॥३५६॥

णासेइ अगीयत्थो, चउरंगं सव्वलोगसारंगं ।
णट्ठम्मि य चउरंगे, ण हु सुलभं होति चउरंगं ॥३५७॥
किं पुण तं चउरंगं, जं णट्ठं दुल्लहं पुणो होति ? ।
माणुस्सं धम्मसुती, सद्धा तह संजमे विरियं ॥३५८॥
किह णासेति अगीतो, पढम-वितिएहिं अद्दिओ सो उ ।
ओभासें कालिमाए, तो निद्धम्मो त्ति छड्डेज्जा ॥३५९॥

---

३५३ इतोऽष्टाविंशतिर्गाथाः व्य० उ० १० भा० गा० ४२०-४४७ ॥

अंतो वा बाहिं वा, दिया व रातो व सो विचित्तो तु ।
अट्टदुहट्टवसट्टो, पडिगमणादीणि कुज्जाहि ॥३६०॥
मरिऊण अट्टज्झाणा, गच्छेज्ज व तिरिय वणसुरेसुं वा ।
संमरिऊण य वेरं, पडिणीयत्तं करेज्जाहि ॥३६१॥
अहवा वि सव्वरीए, मोयं देज्जाहि जायमाणस्स ।
सो डंडियादि होज्जा, रुट्ठो साहे णिवाईणं ॥३६२॥
कुज्जा कुलादिपत्थारं, सो वा रुट्ठो तु गच्छे मिच्छत्तं ।
तप्पच्चयं तु दीहं, भमेज्ज संसारकंतारं ॥३६३॥
सो दिट्ठो य विगिंचितो, संविग्गेहिं तु अण्णसाहूहिं ।
आसासियमणुसट्ठो, मरणज्जढ पुणो वि पडिवण्णो ॥३६४॥

एए अण्णे य बहू, तहियं दोसा सपच्चवाया य ।
एएहिँ कारणेहिँ, अगीये ण कप्पति परिण्णा ॥३६५॥

तम्हा पंच व छ स्सत्त वा त्रि जोयणसने समहिए वा ।
गीयत्थपायमूलं, परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥३६६॥

एक्कं व दो व तिण्णि व, उक्कासं बारसेव वासाइं ।
गीयत्थपायमूलं, परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥३६७॥

गीतत्थदुल्लभं खलु, पडुच्च कालं तु मग्गणा एसा ।
ते खलु गवेसमाणे, खेत्ते काले य परिमाणं ॥३६८॥

तेण य गीयत्थेणं, पवयणगहियत्थसव्वसारेणं ।
णिज्जवएण समाही, कायव्वा उत्तिमट्ठम्मि ॥३६९॥

अगीय त्ति दारं ॥

असंविग्ग-द्वारम् एवमसंविग्गे वी, पडिवज्जंतस्स होंति चउगुरुगा ।
किं कारणं तु ? तहियं, जम्हा दोसा हवंति इमे ॥३७०॥

णासेति असंविग्गो, चउरंगं सव्वलोयसारंगं ।
णट्ठम्मि य चउरंगे, ण हु सुलहं होति चउरंगं ॥३७१॥

आहाकम्मिय पाणय, पुप्फा सीया य बहुजणे णायं ।
सेज्जा संथारो वि य, उवही वि य होति अविसुद्धो॥३७२॥
एते अण्णे य तहिं, बहवे दोसा सपच्चवाया य ।
एतेण कारणेणं, असंविग्गे ण कप्पति परिण्णा ॥३७३॥
तम्हा पंच व छ स्सत्त वा वि जोयणसते समहिए वा ।
संविग्गपादमूलं, परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥३७४॥
एक्कं व दो व तिण्णि व, उक्कोसं बारसेव वासाइं ।
संविग्गपादमूलं, परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥३७५॥
संविग्गदुल्लहं खलु, कालं तु पडुच्च मग्गणा एसा ।
ते खलु गवेसमाणे, खेत्ते काले य परिमाणं ॥३७६॥
तेण य संविग्गेणं, पवयणगहियत्थसव्वसारेणं ।
णिज्जवगेण समाही, कातव्वा उत्तिमट्ठम्मि ॥३७७॥
संविग्गेति दारं ॥

एगम्मि उ णिज्जवए, विराहणा होति कज्जहाणी य ।
सो सेहा वि य चत्ता, पावयणं चेव उड्डाहो ॥३७८॥ एकद्वारम्
तस्सट्ठगतोभासण, सेहादिअदाणे सो य परिचत्तो ।
दातुं व अदाउं वा, हवंति सेहा वि णिद्धम्मा ॥३७९॥
कूवइ अदिज्जमाणे, मारेति बल त्ति पवयणं चत्तं ।
सेहा य जं पडिगया, जणे अवण्णं पयासंति ॥३८०॥ दारं॥
सयमेवाऽऽभोएतुं, अतिसेसि णिमित्तियो व आयरिओ । आभोग-द्वारम्
देवयणिवेयणेण व, जह णगरे कंचणपुरम्मि ॥३८१॥
कंचणपुर गुरुसण्णा, देवयरुयणा य पुच्छ कहणा य ।
पारणग खीर रुहिरं, आमंतण संघणासणया ॥३८२॥
अहवा वि सो व परतो, पारग मिच्छत्त पारए गुरुगा ।
असती खेमसुभिक्खे, णिव्वाघाते ण पडिवत्ती ॥३८३॥

---

३८२ गाथेयं व्य० १० गा० ४९२ ॥

सतं चेव चिरावासो, वासावासे तवस्सिणं ।
तेणं तस्स विसेसेणं, वासासु पडिवज्जणं ॥३८४॥
असिवोमादीएसु तु, पडिवज्जंते इमे भवे दोसा ।
संजम-आयविराहण, आणाईया य दोसा उ ॥३८५॥
असिवादीहिं वहंता, तं उवगरणं व संजता चत्ता ।
उवहिं विणा य छड्डणे, चत्तो सो पवयणं चेव ॥३८६॥ दारं॥

अन्यद्वारम् एगो संथारगतो, बितियो संलेहे ततिय पडिसेहो ।
अपहुचंतऽसमाही, तस्स व तेसिं व असमाही ॥३८७॥
हविज्ज जदि वाघातो, बितियं तत्थ ठावए ।
चिलिमिलि अन्तरे काउं, बहिं वंदावए जणं ॥३८८॥दारं॥

अनापृच्छा-द्वारम् अणपुच्छाएँ गणस्सा, पडिच्छए तं जती गुरू गुरुगा ।
चत्तारि तु विण्णेया, गच्छमणिच्छंते जं पावे ॥३८९॥
पाणगादीणि जोग्गाणि, जाणि तस्स समाहिए ।
अलंभे तस्स जाणाही, परिकेसो य जायणे ॥३९०॥
असंथरं अजोग्गो वा, जोगवाही व जइ भवे ।
एसणादिपरिकेसो, जा य तस्स विराहणा ॥३९१॥ दारं ॥

परीक्षाद्वारम् अपरिच्छणम्मि गुरुगा, दोण्ह वि अण्णोण्णगं जहाकमसो ।
होति विराहण दुविहा, एक्को एक्को व जं पावे ॥३९२॥
तम्हा परिच्छणा खलु, दव्वे भावे य होति दोण्हं पि ।
तहियं तु जो परिच्छति, दवपरिच्छाएँ ते इणमो ॥३९३॥
मादणपयकढियादी, दव्वे आणेह मे त्ति तो उदिते ।
यदि उवहसंति ते तू, अहो इमो विगयगेहि त्ति ॥३९४॥
किह मोच्छिइ त्ति भत्तं ?, तेसेवं दवयो परिच्छा उ ।
भावे कसाइजंती, तेसि सगासे ण पडिवज्जे ॥३९५॥

---

३८९ इतो गाथाद्वादशकं व्य० १० गा० ४४९-४६० ॥ ३९५ मोच्छिइ मोक्ष्यति। तेसेवं तेषामेवम् ॥

अह पुण विस्सकवे, आणीएँ दुगुंछए भणंतऽण्णे।
आणेमो त्ति ववसिए, पडिवज्जति तेसि सो पासे ॥३९६॥
एवंभासी ते तू, परिच्छए दव्व-भावयो विहिणा।
ते वि य तं तु परिच्छे, दुविहपरिच्छाएँ इणमो तु ॥३९७॥
कलमोयणो य पयसा, अण्णं व सभावअणुमतं तस्स।
उवणीयं जो कुंछइ, दव्वपरिच्छाएँ सो सुद्धो ॥३९८॥
भावे पुण पुच्छिज्जइ, किं संलेहो कतो त्ति ण कयो त्ति ?।
इति उदिए सो ताहे, हंतूणं अंगुलिं दाए ॥३९९॥

पेच्छइ ता मे एयं, किं कतो ण कतो त्ति एव उदितम्मि।
भणति गुरू तो ण तयो, एयं चिय ते ण संलीढं ॥४००॥

ण हु ते दव्वसंलेहं, पुच्छे पासामि ते किसं।
कीस ते अंगुली भग्गा ?, भावं संलिहमाऽऽउर ! ॥४०१॥

भावो च्चिय एत्थं तू, संलिहियव्वो सदा पयत्तेणं।
तेणाऽऽयट्ठं साहे, दिट्ठंतोऽमच्च-कोंकणए ॥४०२॥

रण्णा कोंकणगाऽमच्चा, दो वि णिव्विसया कता।
दोद्दिए कंजियं छोढुं, कोंकणो तक्खणा गतो ॥४०३॥

भण्डीओ वइल्लए काए, अमच्चो जा भरेइ तु।
ताव पुण्णं तु पंचाहं, णलिए णिहणं गतो ॥४०४॥

एवं जेहिं संलीढो, भावो ते तु साहगा।
असंलीढे ण साहेन्ति, अमच्चो इव ते खलु ॥४०५॥

इंदियाणि कसाए य, गारवे य किसे कुण।
ण चेयं ते पसंसामो, किसं साहु ! सरीरगं ॥४०६॥

---

३९८ व्य० १० गा० ४६१ ॥ ३९९ हंतूणं उत्प्लुत्य । दाए दर्शयेत् ॥
४०१ व्य० १० गा० ४६३ ॥ ४०३ मायाह्निकं व्य० १० गा० ४६४-६५ ॥
४०६ व्य० १० गा० ४६६ ॥

एवं परिच्छिऊणं, जदि सुद्धो ताहे तं पडिच्छंति । दारं ॥
आलोयणा-द्वारम् ताहे य अत्तसोहिं, करेति विहिणा इमेणं तु ॥४०७॥
आयरियपादमूलं, गंतूणं सति परिक्कमे ताहे ।
सव्वेण अत्तसोही, परसक्खीयं तु कायव्वा ॥४०८॥
जह सुकुसलो वि वेज्जो, अण्णस्स कहेति अप्पणो वाही ।
वेज्जस्स य सो सोतुं, तो परिकम्मं समारभइ ॥४०९॥
जाणंतेण वि एवं, पायच्छित्तविहमप्पणा णिउणं ।
तह वि य पागडतरयं, आलोएतव्वयं होति ॥४१०॥
छत्तीसगुणसमण्णागएण तेण वि अवस्स कायव्वा ।
आलोयण निंदण गरहणा य ण पुणो य बितियं ति ॥४११॥
किं कारणमालोयण, एवपयत्तेण होति दायव्वा ? ।
भण्णइ सुणसु इणमो, आलोयंतस्स जे उ गुणा ॥४१२॥
आयार विणयगुण कप्पदीवणा अत्तसोहि उज्जुभावो ।
अज्जव मद्दव लाघव, तुट्ठी पल्हायजणणं च ॥४१३॥
पावज्जादी आलोयणा तु तिण्हं चतुक्किय विसोही ।
जह अप्पणो तह परे, कायव्वा उत्तिमट्ठम्मि ॥४१४॥
तिण्हं ती णाणादी, दव्वादि चउक्कगं मुणेयव्वं ।
जो अतियारो तेसु, कयो आलोएति तं सव्वं ॥४१५॥
णाणे वितहपरूवण, जं वा आसेवितं तदट्ठाए ।
चेयणमचेयणं वा, दव्वे खेत्तादिसु इमं तु ॥४१६॥
णाणणिमित्तं अद्धाणमेति ओमे व अच्छति तदट्ठा ।
णाणं च आगमेस्सइ, कुणती परिकम्मणं देहे ॥४१७॥
पडिसेवति विगईओ, मेहादव्वे व एसती पियति ।
वायंतस्स व किरिया, कया तु पणगादिहाणीए ॥४१८॥

---

४०८ गाथाचतुष्कं व्य० १० गा० ४६७-७० ॥ ४१० पागडतरयं प्रकटतरं-स्पष्टम् ॥ ४१३ गाथात्रयोविंशतिः व्य० १० गा० ४७३-९४ ॥

एमेव दंसणम्मि वि, सद्दहणा पवरि तत्थ णाणत्तं ।
एसण-इत्थीदोसे, वयंति चरणे सिया सेवा ॥४१९॥

अहवा तिगसालंबेण दव्वमादी चउक्कमाहच्च ।
आसेवियं णिरालंबओ व आलोयए तं तु ॥४२०॥

पडिसेवणातियारा, जदि वीसरिया कहिंचि होज्जाहि ।
तेसु कह वट्टियव्वं, सल्लुद्धरणम्मि समणेणं ? ॥४२१॥

जे मे जाणंति जिणा, अवराहे जेसु जेसु ठाणेसु ।
ते हं आलोएउं, उवट्ठितो सव्वभावेणं ॥४२२॥

एवं आलोएंतो, विसुद्धभावपरिणामसंजुत्तो ।
आराहओ तह वि सो, गारवपलिउंचणारहितो ॥४२३॥दारं॥

ठाणं पुण केरिसयं, होति पसत्थं तु तस्स जं जोग्गं ? । स्थान-वसति-
भण्णति जत्थ ण होज्जा, झाणस्स उ तस्स वाघाओ ॥४२४॥ द्वारम्

गंधव्व-नट्ट-जड्ड-ऽस्स-चक्क-जंत-ऽग्गिकम्म-फरुसे य ।
णन्तिक्क-रयग-देवड-डोम्बिल-पाडहिय-रायपहे ॥४२५॥

चोरग-कोट्टग-कल्लाल-करकए पुप्फ-दगसमीवे य ।
आरामअहे वियडे, णागघरे पुव्वभणिए य ॥४२६॥

पढम-बितिएसु कप्पे, उद्देसेसु उवस्सया जे तु ।
विहिसुत्ते य णिसिद्धा, तव्विवरीए भवे सिज्जा ॥४२७॥

उज्जाणे तरुमूले, सुण्णघर अणिसट्ठ हरिय मग्गे य ।
एवंविहे ण ठायइ, होज्ज समाहीय वाघाओ ॥४२८॥

इंदियपडिसंचारो, मणसंखोभकरणं जहिं णत्थि ।
चाउस्सालाईं दुवे, अणुण्णवेऊण ठायंति ॥४२९॥

---

४२१ सल्लुद्धरणम्मि शल्योद्धरणे अपराधालोचनायामित्यर्थः ॥
४२३ पलिउंचणा प्रतिकुञ्चना अन्यथासेवितं अन्यथा कथ्यते यया सा प्रतिकुञ्चना । व्यवहारपीठिका गाथा १५० पत्रं ५० ॥

पाणगजोग्गाहारे, ठवेंति से तत्थ जत्थ ण उवेन्ति ।
अप्परिणया व सो वा, अप्पच्चय-गेहिरक्खट्ठा ॥४३०॥
भुत्तभोगी पुरा जो तु, गीयत्थो वि य भावितो ।
संतेसाऽऽहारधम्मेसु, सो वि खिप्पं तु खुब्भती ॥४३१॥
पडिलोम अणुलोमा वा, विसया जत्थ दूरतो ।
ठावित्ता तत्थ से णिच्चं, कहणा जाणगस्स वि ॥४३२॥दारं ॥
निर्यापकद्वारम् पासत्थोसण्णकुसीलठाणपरिवज्जिया उ णिज्जवगा ।
पियधम्मऽवज्जभीरू, गुणसंपण्णा अपरितंता ॥४३३॥
जो जारिसतो कालो, भरहेरवएसु होति वासेसु ।
ते तारिसया तइया, अडयालीसा तु णिज्जवगा ॥४३४॥
उव्वत्त दार संथार कहग वादी य अग्गदारम्मि ।
भत्त पाण वियारे, कहग दिसा जे समत्था य ॥४३५॥
दुवालसमु एतेसु, एक्केक्के चउरो भवे ।
दिसि चउसु पुव्वे एक्केक्के, अडयालीसं भवंती तु ॥४३६॥
एवं खलु उक्कोसा, परिहायंती हवंति दो चेव ।
दो गीय किं णिमित्तं ?, असुण्णकरणं जहण्णेणं ॥४३७॥दारं॥
द्रव्यदापना-द्वारम् तस्स य चरिमाहारो, इट्ठो दायव्वो तण्हछेयट्ठा ।
सव्वस्स चरिमकाले, अतीव तण्हा समुज्जलइ ॥४३८॥
णव विगइ सत्त ओदण, अट्ठारस वंजणुच्चपाणं च ।
अणुपुव्विविहारीणं, समाहिकामाण उवहरइ ॥४३९॥
काल-सभावाणुमतो, पुव्वज्झुसिओ सुओवइट्ठो वा ।
झोसिज्जति सो वि तहा, जयणाय चउव्विहाहारो ॥४४०॥
तण्हाछेदम्मि कते, ण तस्स तहितं पवत्तए भावो ।
अहव कहिंचुप्पज्जति, तहवि णियत्तेइ एवं तु ॥४४१॥

---

४३१ संतेसाऽऽहारधम्मेसु सत्सु आहारधर्मेषु ॥ ४३७ गाथाषट्कं व्य० १० गा० ४९५-५०० ॥ ४४१ कहिंचुप्पज्जति कथञ्चिदुत्पद्यते ॥

किं व तं णोवभुत्तं मे, परिणामासुयिं सुयिं ? ।
दिट्ठसारो सुहं झाइ, चोयणेसेव सीययो ॥४४२॥
चरिमं च एस भुंजति, सद्धाजणणं च होति उभए वि ।
संजय-गिहियाणं वा, तो देंति इमोय तु विहोय ॥४४३॥
तिविहं तु वोसिरिहीइ, सो ता उक्कोसगाइँ दव्वाइं ।
मग्गेत्ता जयणाए, चरिमाहारं पदंसेंति ॥४४४॥
पासित्त ताणि कोयी, तीरप्पत्तस्स किं ममेतेहिं ?।
वेरग्गमणुप्पत्तो, संवेगपरायणो होति ॥४४५॥
सव्वं भोच्चा कोई, धिद्धीकारं इमेण किं मे ? त्ति ।
वेरग्गमणुप्पत्तो, संवेगपरायणो होति ॥४४६॥
सव्वं भोच्चा कोई, मणुण्णरसपरिणतो हवेज्जाहि ।
तं चेवऽणुबंधंतो, देसं सव्वं च गेहीया ॥४४७॥ दारं ॥
विगयीकयाणुबंधे, आहारऽणुबंधणाए वोच्छेदो ।　　हानिद्वारम्
परिहायमाणदव्वे, गुणवड्ढि समाहि अणुकंपा ॥४४८॥
दव्वियपरीणामं ता, हावेंति दिणे दिणे तु जा तिण्णि ।
विन्ति ण लभंति दुल्लभे, सुलभम्मि वि होतिमा जयणा॥४४९॥
आहारं ताव छिंदाहि, गेहि तो णं चइस्ससि ।
जं भुत्तं ण हु पुव्वं ते, तीरपत्तो तमिच्छसि ॥४५०॥ दारं॥
वट्टंति अपरितंता, दिया य रायो य सव्वपरिकम्मं ।　　अपरितान्त-
पडियरगा सुणिवरगा, कम्मरयं णिज्जरंमाणा ॥४५१॥　　द्वारम्
जो जत्थ होति कुसलो, सो तु ण हावेइ तं सइ बलम्मि।
उज्जुत्ता सति जोगे, तस्स वि दीवेंति तं सद्धं ॥४५२॥दारं॥

---

४४२ झाइ चोयणेसेव सीययो ध्यायति चोदना यैव सीदतः ॥ ४४४ गाथाद्विकं व्य० १० गा० ५०१-२ ॥ ४४५ ममेतेहिं मम एतैः ॥ ४४७ इतः ४७२ गाथान्ता गाथा व्य० १० गा० ५०३-२८ ॥ ४४९ होतिमा भवति इयम् ॥

निर्जराद्वारम् देहविओगो खिप्पं, व होज्ज अहवा वि कालकरणेणं ।
दोण्हं पि णिज्जरा वट्टमाणी गच्छो उ एयट्टा ॥४५३॥
कम्ममसंखेज्जभवं, खवेइ अणुसमयमेव आउत्तो ।
अण्णयरम्मि वि जोगे, सज्झायम्मी विसेसेणं ॥४५४॥
कम्ममसंखेज्जभवं, खवेइ अणुसमयमेव आउत्तो ।
अण्णयरम्मि वि जोगे, काउस्सग्गे विसेसेणं ॥४५५॥
कम्ममसंखेज्जभवं, खवेइ अणुसमयमेव आउत्तो ।
अण्णयरम्मि वि जोगे, वेयावच्चे विसेसेणं ॥४५६॥
कम्ममसंखेज्जभवं, खवेति अणुसमयमेव आउत्तो ।
अण्णयरम्मि वि जोगे, विसेसतो उत्तिमट्ठम्मि ॥ ४५७॥ दारं ॥

संस्तारद्वारम् संथारो उत्तिमट्ठे, भूमि-सिला-फलगमादि णायव्वो ।
संथारपट्टमादी, दुगचीराऊ बहू वा वि ॥४५८॥
तह वि असंथरमाणे, कुसमादी निण्णि अज्झुसिरतणाति ।
तेसऽसति अमंथरणे, व होज्ज मुसिरा वि नो पच्छा॥४५९॥
तह वि असंथर कोतव, पावारग णवय तूलि भूमीए ।
एमेव अणहियासे, मंथारगमादि पल्लंके ॥४६०॥ दारं ॥

उद्वर्त्तनाद्वारम् पडिलेहण मंथारं, पाणग उव्वत्तणादि णिग्गमणं ।
सयमेव करेंति सहू, असहुस्स करेंति अण्णे उ ॥४६१॥
कायोवचितो बलवं, णिक्खमण पवेसणं च सो कुणति ।
तह वि य अविसहमाणं, मंथारगतं तु मंथारे ॥४६२॥
संथारो तस्स मउतो, समाहिहेउं तु होति कायव्वो ।
तह वि य अविसहमाणे, समाहिहेउं उदाहरणं ॥४६३॥दारं ॥

स्मारणाद्वारम् धीरपुरिसपण्णत्ते, सप्पुरिसणिसेविए परमरम्मे ।
धण्णा सिलातलतले, णिरावयक्खा णिवज्जंति ॥४६४॥

---

४५८ उत्तिमट्ठे उत्तमार्थं चरिमाराधनावसरे ॥ ४६३ मउतो मृदुकः ॥

जइ ताव सावया कुलगिरिकंदरविसमकडगदुग्गेसु ।
साहेंति उत्तिमट्ठं, धितिधणियसहायगा धीरा ॥४६५॥
किं पुण अणगारसहायगेण अण्णोण्णसंगहबलेणं ।
परलोतिए ण सक्का, साहेउं अप्पणो अट्ठं ? ॥४६६॥
जिणवयणमप्पमेयं, णिउणं कण्णाहुइं सुणंतेणं ।
सक्का हु साहुमज्झे, संसारमहोदहिं तरितुं ॥४६७॥
सव्वे सव्वद्धाए, सव्वण्णू सव्वकम्मभूमीसु ।
सव्वगुरू सव्वमहिया, सव्वे मेरुम्मि अहिसित्ता ॥४६८॥
सव्वाहि वि लद्धीहिं, सव्वे वि परीसहे पराइत्ता ।
सव्वे वि य तित्थगरा, पायोवगमेण सिद्धि गया ॥४६९॥
अवसेसा अणगारा, तीय-पडुप्पण्ण-ऽणागया सव्वे ।
केई पायोवगया, पच्चक्खाणिंगिणी केयी ॥४७०॥
सव्वाओ अज्जाओ, सव्वे वि य पढमसंघयणवज्जा ।
सव्वे य देसविरया, पच्चक्खाणेण तु मरंति ॥४७१॥
सव्वसुहप्पभवाओ, जीवियसाराओ सव्वजणयाओ ।
आहाराओ रतणं, ण विज्जए उत्तिमं अण्णं ॥४७२॥
सेलेसि सिद्ध विग्गह, केवलिओवायए य मोत्तूणं ।
सव्वे सव्वावत्थं, आहारे होंति आयत्ता ॥४७३॥
तं तारिसयं रयणं, सारं जं सव्वलोगरयणाणं ।
सव्वं परिच्चइत्ता, पाओवगया पविहरंति ॥४७४॥
एवं पाओवगमं, णिप्पडिकम्मं जिणेहि पण्णत्तं ।
जं सोऊण परिण्णी, ववसायपरिक्कमं कुणति ॥४७५॥ दारं ॥
कोयि परीसहेहिं, वाउलिओ वेयणट्टिओ वा वि । कवचद्वारम्
ओभासेज्ज कयाई, पढमं बितियं च आसज्ज ॥४७६॥

४६९ पराइत्ता पराजित्य ॥ ४७४ इतः ४८७ गाथान्ता गाथा व्य० १० गा० ५३०-४३ ॥ ४७६ वेयणट्टिओ वेदनार्तः ॥

गीयत्थमगीयत्थं, मारेउं तह विबोहणं काउं ।
तो पडिबोहय छट्ठे, पढमे पगए सिया बितिए ॥४७७॥
हन्दि दु परीसहचमू, जोहेतव्वा मणेण काएण ।
तो मरणदेसयाले, कवयब्भूआ तु आहारो ॥४७८॥
णायं संगामदुगं, महसिल-रहमुसलवण्णणा तेसिं ।
असुर-सुरिन्दावरणं, चेडग एगो गह सरस्स ॥४७९॥
महसिल्कंटे तहियं, वट्टंते कूणिओ तु रहिएणं ।
रुक्खगवलग्गेणं, पहतो पट्टम्मि कणएणं ॥४८०॥
उप्फिडितुं सो कणओ, कवयावरणम्मि तो ततो पडितो ।
तो तस्स कोणिएणं, छिण्णं सीसं खुरप्पेणं ॥४८१॥
दिट्ठंतस्सोवणओ, कवयत्थाणी इहं तहाऽऽहारो ।
सत्तू परीसहा खलु, आराहण रज्जथाणीया ॥४८२॥
जह वाऽऽउंटियपाए, पायं काऊण हत्थिणो पुरिसो ।
आरुहति तह परिण्णी, आहारेणं तु झाणवरं ॥४८३॥
उवगरणेहि विहूणो, जह वा पुरिसो ण साहए कज्जं ।
एवाऽऽहारपरिण्णी, दिट्ठंता तत्थिमे होंति ॥४८४॥
लक्ख पवए जोहे, संगामे पत्थिए इय ।
आतुरे सिक्खए चेव, दिट्ठंत समाहिकामेतो ॥४८५॥
दत्तेणं णावाए, आउह तहोवाहणोसहेहिं च ।
उवगरणेहिं च विणा, जहसंखमसाहगा सव्वे ॥४८६॥
एवाऽऽहारेण विणा, समाहिकामो ण साहए समाहिं ।
तम्हा समाहिहेउं, दायव्वो तस्स आहारो ॥४८७॥

४७९-४८१ एतद्गाथागतश्चेटक-कोणिकसम्बन्धः महाशिला रथमुशलवर्णना च भगवतीसूत्रसप्तमशतकनवमोद्देशकादवसेया । पत्र ३१६ ॥
४८६ दत्तेणं दात्रेण ॥

थिति-संघयणविजुत्तो, असमत्थो परीसहेऽहियासेउं ।
फिट्टति चंदगविज्झा, तेण विणा कत्तयभूएणं ॥४८८॥
सरीरमुज्झियं जेण, को संगो तस्स भोयणे ? ।
समाहिसंधणाहेउं, दिज्जए सो मि अंतिए ॥४८९॥
सुद्धं एसित्तु ठावेंति, हाणिओ वा दिणे दिणे ।
पुव्वुत्ताए उ जयणाए, तं तु गोवेंति अण्णहिं ॥४९०॥दारं॥
णिव्वाघाएणेवं, कालगयविगिंचणा विहीपुव्वं । चिह्नकरण-द्वारम्
कातव्व चिंधकरणं, अचिंधकरणे भवे गुरुगा ॥४९१॥
उवगरण सरीरम्मि य, अचिंधकरणम्मि मंडिओ तहियं ।
मग्गणगवेसणाए, गामाणं घायणं कुणति ॥४९२॥ दारं ॥
ण पगासेज्ज लहुत्तं, परीसहुदएण होज्ज वाघाओ । गतनाद्वारम्
उप्पण्णे वाघाए, जो गीयत्थाण तु उवाओ ॥४९३॥
को गीयाण उवाओ ?, संलेहग उट्ठविज्जए अण्णो ।
उच्छहए जो वऽण्णो, इयरं उ गिलाणपरिकम्मं ॥४९४॥
वसभो वा ठाविज्जति, अण्णस्सऽसतीअ तम्मि संथारे ।
कालगतो त्ति य काउं, संझाकालम्मि णीणेंति ॥४९५॥
एव तु णायम्मी, डंडियमादीहि होंति जयणेसा ।
मत गमण पेसणं वा, खिंसण चउरो अणुग्घाता ॥४९६॥
सपरक्कमे य भणियं, णिव्वाघाइं तहेव वाघायं ।
णिव्वाघाइम इयरं, एत्तो अपरक्कमं वोच्छं ॥४९७॥ निर्व्याघात-सव्याघाता-पराक्रमभक्त-परिज्ञायाः स्वरूपम्
अपरक्कमो व्व जहीणो, अण्णगण ण जाति कुणइ गच्छम्मि ।
सपरक्कमो व्व सेसं, णिव्वाघाती गतो एसो ॥४९८॥
वाघाति आणुपुव्वी, रोगाऽऽयंकेहिं णवरि अभिभूओ ।
बालमरणं पि य सिया, मरेज्ज उ इमेहि हेऊहिं ॥४९९॥

---

४८८ चंदगविज्झा चन्द्रकवेधः पुत्तलिकाक्षिचन्द्रकस्य वेधः ॥
४८९ इतः ४९७ गाथान्ता गाथा व्य० १० गा० ५४४-५२ ॥ ४९९ इतः ५०२ गाथान्ता गाथा व्य० १० गा० ५५३-५९ ॥

वाल-ऽच्छभल्ल-विसगय-विसूयिगाऽऽयंक सण्णिकोसलए ।
ऊसास गद्ध रज्जू, ओमा-ऽसिव-ऽहियाय-संबद्धे ॥५००॥
वालेण गोणसाइण, खइओ होज्जाहि सडिउमारद्धो ।
कण्णोट्ठणासिगादी, विभंगिया अच्छभल्लेण ॥५०१॥
लद्धो व विसेणं तू, विसूयिया वा से उट्ठिता होज्जा ।
आयंको वा कोयी, खयमादी उट्ठिओ होज्जा ॥५०२॥
तिण्णि तु वारा किरिया, तस्स कया ण वि य उवसमो जातो ।
जह ओमे कोसलेणं, सण्णीणं पंच उ सयाइं ॥५०३॥
सण्णीणं रुद्धाइं, अहयं भत्तं तु तुज्झ दाहामि ।
लाभंतरं च णाउं, लुद्धेणं विक्कियं धण्णं ॥५०४॥
तो णाउ विचिछेदं, ऊसासणिरोहमादिणि कताणि ।
अणहीयासेन्तेहिं, गहवंदण ओमे साहूहिं ॥५०५॥
एवं ता कोसलए, अण्णम्मि वि ओमो होज्ज एमेव ।
सहसा छिण्णद्धाणे, असिवग्गहिया व कुज्जाहिं ॥५०६॥
अभिघाओ वा विज्जू, गिरिभित्ती कोणगादि वा होज्जा ।
संबद्ध हत्थ-पादादयो व वादेण होज्जाहि ॥५०७॥
एतेहिं कारणेहिं, वाघाइम मरण होति णायव्वं ।
परिकम्ममकाऊणं, पच्चक्खाई ततो भत्तं ॥५०८॥
अह पुण जदि होज्जाही, पंडियमरणं तु काउ असमत्थो ।
ऊसास गद्धपट्ठं, रज्जुग्गहणं व कुज्जाहि ॥५०९॥
अणुपुव्विविहारीणं, उस्सग्गणिवाइयाण जा सोही ।
विहरंतएण सोही, भणिता आयारलोवा या ॥५१०॥
एसा पच्चक्खाणे, आय परे भणिय णिज्जवाण विही ।
इंगिणि-पायोवगमे, वोच्छामी आयणिज्जवणं ॥५११॥

---

५०७ गाथाद्विकं व्य० १० गा० ५६०-६१ ॥ ५१० व्य० १० गा० ५६२ ॥

पव्वज्जादी काउं, णेतव्वं जाव होयऽवोच्छित्ती ।
पंच तुलेतूण य सो, इंगिणिमरणं ववसिओ यु ॥५१२॥ इङ्गिनीमरणम्
आय-परपरिक्कम्मं, भत्तपरिण्णाए दो अणुण्णाता ।
परिवज्जिया य इंगिणि, चउव्विहाहारविरती य ॥५१३॥
ठाण णिसीय तुयट्टण, इत्तिरियाइं जहासमाहीए ।
सयमेव य सो कुणती, उवसग्ग परीसहऽहियासे ॥५१४॥
संघयण-धितीजुत्तो, णव-दसपुव्वा सुतेण अंगा वा ।
इंगिणिमरणं णियमा, पडिवज्जइ एरिसो साहू ॥५१५॥
पव्वज्जादी काउं, णेयव्वं जाव होयऽवोच्छित्ती ।
पंच तुलेतूण य सो, पाओवगमं परिणतो य ॥५१६॥ पादपोपगमनम्
तं दुविहं णायव्वं, णीहारिं चेव तह अणीहारिं ।
बहिता गामादीणं, गिरिकंदरमादि णीहारिं ॥५१७॥
वइयादिसु जं अंतो, उट्ठेउमणा य ठाय अणीहारिं ।
कम्हा पादवगमणं ?, जं उवमा पादवेणेत्थं ॥५१८॥
सम विसमम्मि व पडिओ, अच्छति जह पादवो व णिकंपो ।
णिच्चल णिप्पडिकम्मा, णिक्खिवती जं जहिं अंगं ॥५१९॥
तं ठित होति तह च्चिय, णवरं चलणं परप्पयोगातो ।
वायादीहिं तरुस्स व, पडिणीयादीहिं तह तस्स ॥५२०॥
तसपाण-बीयरहिते, विच्छिण्णवियार थंडिल विसुद्धे ।
णिद्दोसा णिद्दोसे, उवेंति अब्भुज्जयं मरणं ॥५२१॥
पुव्वभवियवेरेणं, देवो साहरइ कोवि पातालं ।
मा सो चरिमसरीरो, ण वेदणं किंचि पाविहिती ॥५२२॥
उप्पण्णे उवसग्गे, दिव्वे माणुस्सए तिरिक्खे य ।
सव्वे पराजिणित्ता, पाओवगया पविहरंति ॥५२३॥

५१२ गाथाचतुष्कं व्य० १० गा० ५६३-६६ ॥ ५१८ वइया व्रजिका गोकुलम् ॥ ५२१ गाथात्रिकं व्य० १० गा० ५६८-७० ॥ ५२२ साहरइ कोवि संहरति कोऽपि ।

देव-णर दुगनिगऽस्सं, कंथी पक्खेवगं सिया कुज्जा ।
वोसट्ठ-चत्तदेहो, अहाउयं कोइ पालिज्जा ॥५२४॥

अणुलोमा पडिलोमं, दुगं तु उभयसहिया तिगं होंति ।
अहवा चित्तमचित्तं, दुगं तिगं मीसग समग्गं ॥५२५॥

पुढवि-दग-अगणि-मारुय-वणस्सति-तसेसु कोइ साहरइ ।
वोसट्ठ-चत्तदेहो, अहाउयं कोइ पालेज्जा ॥५२६॥

थिति-बलजुत्तेहिँ तहिँ, उवसग्गा जह सहा उ धीरेहिं ।
णिदरिसणा केइ तहिं, वोच्छामि इमे समासेणं ॥५२७॥

मुणिसुव्वयंतेवासी, खंदगमणगार कुंभकारकडे ।
देवी पुरंदरजसा, डंडगि पालक्क मरुगे य ॥५२८॥

पंचसया जंतेणं, रुट्ठेण पुरोहिएण मलिया उ ।
राग-दोसतुलग्गं, समकरणं चिंतयंतेहिं ॥५२९॥

जंतेहिँ करकएहि व, सत्थेहि व सावएहिँ विविहेहिं ।
देहे विद्धंसन्ते, ण य ते झाणातो फिट्टंति ॥५३०॥

पडिणीययाएँ कोई, अग्गिं से पदेज्ज असुभपरिणामो ।
पादोवगते संते, जह चाणक्कस्स वा करिसे ॥५३१॥

पडिणीययाएँ कोई, चम्मं से खीलएहिँ विहणित्ता ।
महु-घयमक्खियदेहं, पिवीलियाणं तु दिज्जाहिं ॥५३२॥

जह सो चिलायपुत्तो, वोसट्ठ-णिसट्ठ-चत्तदेहाओ ।
सोणियगंधेण पिवीलियाहिँ जह चालणि व्व कतो ॥५३३॥

---

५२४ गाथात्रिकं व्य० १० गा० ५७४-७६ ॥ ५२७ सहा सोढाः ॥ ५२८-३० स्कन्दकदृष्टान्त उत्तराध्ययनसूत्र द्वितीयाध्ययननिर्युक्तौ १११-११३ गाथासु तट्टीकायां च वर्त्तते । पत्र ११४ ॥ ५२८ गाथाऽऽदर्शकं व्य० १० गा० ५८९-६०० ॥ ५३३ चिलातिपुत्रोदाहरणमावश्यकचूर्णितोऽवसेयम् गाथा ८७२ पत्र ४९७ ।

मोगल्लसेलसिहरे, जह सो कालासवेसिओ भगवं ।
खइओ विउव्विऊणं, देवेण सियालरूवेणं ॥५३४॥
जह से वंसिपदेसो, वोसट्ठ-णिसट्ठ-चत्तदेहाओ ।
वंसीपत्तेहिँ विणिग्गएहिँ आगासमुज्झितो ॥५३५॥
जहऽवंतीसुकुमालो, वोसट्ठ-णिसट्ठ-चत्तदेहाओ ।
धीरो सपेल्लियाए, सिवाएँ खइओ तिरत्तेणं ॥५३६॥
जह ते गोट्ठट्ठाणे, वोसट्ठ-णिसट्ठ-चत्तदेहागा ।
उदगेणवुब्भमाणा, वियरम्मी संकरे लग्गा ॥५३७॥
जह सा बत्तीसघडा, वोसट्ठ-णिसट्ठ-चत्तदेहागा ।
धीराघाएण उ दीविएण डिलयम्मि ओलइया ॥५३८॥
बावीस आणुपुव्वी, तिरिक्ख मणुया व भंसणत्थाए ।
विसयाणुकंपरक्खण, करेज्ज देवा व मणुया वा ॥५३९॥
जह णाम असी कोसी, अण्णो कोसी असी वि खलु अण्णो।
इय मे अण्णो देहो, अण्णो जीवो त्ति मण्णंति ॥५४०॥
एगंतणिज्जरा से, दुविहा आराहणा धुवा तस्स ।
अंतकिरियं च साहू, करेज्ज देवोववत्तिं वा ॥५४१॥
एवं थिति-बलजुत्तो, अहियासेति पडिलोम उवसग्गे ।
एत्तो पुण अणुलोमे, जह सहती ते तहा वोच्छं ॥५४२॥
सक्कारं सम्माणं, ण्हाणादीयाणि तत्थ कुज्जाहि ।
वोसट्ठ-चत्तदेहो, अहाउयं कोइ पालेज्जा ॥५४३॥
पुव्वभवियपेमेणं, देवो देवकुरु-उत्तरकुरासु ।
कोई तु साहरेज्जा, सव्वसुहा जत्थ अणुभावा ॥५४४॥

---

५३४ कालासवेसिकोदन्तं उत्तराध्ययनसूत्रद्वितीयाध्ययननिर्युक्ति-११५ गाथानन्दवृत्तितश्चावसेयम् पत्र १२० ॥ ५३६ अवन्तीसुकुमाल-वृत्तान्त आवश्यकचूर्णीद्वितीयभाग पत्र १५७ गाथा १३८० चूर्णितोऽवधेयः ॥ ५४० व्य० १० गा० ५७१ ॥ ५४१ व्य० १० गा० ५७७ ॥ ५४३ गाथैकादशकं व्य० १० गा० ५७८-५८८ ॥

पुव्वभवियपेमेणं, देवो साहरति णागभवणम्मि ।
जहियं इट्ठा कंता, सव्वसुहा होंति अणुभावा ॥५४५॥
वत्तीसलक्खणधरो, पायोवगयो य पागडसरीरो ।
पुरिसव्वेसिणि कण्णा, रायविदिण्णा तु गिण्हेज्जा ॥५४६॥
मज्जण-गंधं पुप्फोवकार-परियारणं च कुज्जाहिं ।
सा पवर रायकण्णा, इमेहिँ जुत्ता गुणगणेहिं ॥५४७॥
णवयंगसोयबोहिय, अट्ठारसरतिविसेसकुसला तु ।
चोयट्ठीमहिलगुणा, णिउणा य विसत्तरिकलाहिं ॥५४८॥
दो सोय-णेत्तमादिग, णवंगसोया हवंति एतेसु ।
देसीभास अठारस, रतीविसेसा उ इगुवीसं ॥५४९॥
कोमलगे व वीसइविहं तु एमादिएहिँ तु गुणेहिं ।
जुत्ताए रूव-जोव्वण-विलास-लायण्णकलियाए ॥५५०॥
चउकण्णम्मि रहस्से, राएणं रायदिण्णपसराए ।
तिमि-मगरेहि व उदही, ण खोभितो जो मणो मुणिणो ॥५५१॥
जाहे पराइया सा, ण समत्था सीलखंडणं काउं ।
णेऊण सेलसिहरं, तो सिलमुवरिं मुयति तस्स ॥५५२॥
एगंतणिज्जरा से, दुविहा आराहणा धुवा तस्स ।
अंतकिरिया व साहू, करेज्ज देवोववत्ति वा ॥५५३॥
एमादीहिँ वहुविहं, दुविहं निविरोहिँ ते महाभागा ।
घोरेहि उवसग्गेहिं, चालिज्जंता वि गिरिवरा ॥५५४॥
पुव्वा-ऽवर-दाहिण-उत्तरेहिँ वाएहिँ आवयंतेहिं ।
जह ण वि कंपइ मेरू, तह ते झाणाओ न चलिंति ॥५५५॥
पढमम्मि य संघयणे, वट्टंता सेलकुड्डसामाणा ।
तेसिं पि य वोच्छेदो, चउदसपुव्वीण वोच्छेदे ५५६॥

५५५ गाथाद्विकं व्य० १० गा० ५७२-७३ ॥

एवं पाओवगमं, णिप्पडिकम्मं जिणेहिँ पण्णत्तं ।
तित्थयर-गणहरेहि य, साहूहि य सेवियमुदारं ॥५५७॥
एवं जहाणुरूवा, संपतिकालम्मि अत्थि जइ सोही ।
विज्जंति य सोहिकरा, तं सव्वेयं समक्खायं ॥५५८॥
एसाऽऽगमववहारो, जहोवएसं जहक्कमं कहिओ ।
एत्तो सुतववहारं, सुण वच्छ ! जहाणुपुव्वीए ॥५५९॥
णिज्जूढं चोद्दसपुव्विएण जं भद्दबाहुणा सुत्तं । श्रुतव्यवहार:
पंचविहो ववहारो, दुवालसंगस्स णवणीयं ॥५६०॥
जो सुतमहिज्जति बहुं, सुत्तत्थं च णिउणं ण याणाति ।
कप्पे ववहारम्मि य, ण सो पमाणं सुयधराणं ॥५६१॥
जो सुतमहिज्जति बहुं, सुत्तत्थं च णिउणं वियाणाति ।
कप्पे ववहारम्मि य, सो उ पमाणं सुतधराणं ॥५६२॥
कप्पस्स य णिज्जुत्तिं, ववहारस्सेव परमणिउणस्स ।
जो अत्थओ न जाणति, सो ववहारी णऽणुण्णातो ॥५६३॥
कप्पस्स य णिज्जुत्तिं, ववहारस्सेव परमणिउणस्स ।
जो अत्थतो वियाणति, ववहारी सो अणुण्णातो ॥५६४॥
एसो सुतववहारो, जहोवएसं जहक्कमं कहितो ।
आणाए ववहारं, सुण वच्छ ! जहक्कमं वोच्छं ॥५६५॥ आज्ञाव्यवहार:
समणस्स उत्तिमट्ठे, सल्लुद्धरणकरणे अभिमुहस्स ।
दूरत्था जत्थ भवे, छत्तीसगुणा उ आयरिया ॥५६६॥
अपरक्कमो सि जातो, गंतुं जे कारणं तु उप्पण्णं ।
अट्ठारससमण्णयरे, वसणगते इच्छिमो आणं ॥५६७॥
अपरक्कमो तवस्सी, गंतुं ण चएइ सोहिकरमूलं ।
सीसं पेसेति तहिं, जहिच्छ सोहिं तुमससीवे ॥५६८॥

५५८ सव्वेयं सर्वमेतत् ॥ ५५९ इतः ५८९ गाथान्ता गाथाः व्य० १० गा० ६०२-३४ ॥ ५६८ चएइ शक्नोति । जहिच्छ सोहिं तुमसमीवे यथा इच्छामि शोधिं युष्मत्समीपे ॥

सो वि अपरक्कमगत्तो, सीसं पेसेति धारणाकुसलं ।
जाणइ तहिं जो जोग्गो, इमेण विहिणा परिच्छित्ता ॥५६९॥

अपरिणत-अतिपरिणत-परिणतानां शिष्याणां परीक्षणम्

अपरक्कमो य सीसं, आणापरिणामगं परिच्छेज्जा ।
रुक्खे य बीयकाए, सुत्ते वाऽमोहणाऽऽधारिं ॥५७०॥
दट्ठु महल्ल महीरुह, भणितो रुक्खं विलग्गितुं इणं ।
अपरिणतो बेति तयो, णो वट्टति रुक्खे आरोढुं ॥५७१॥
किं वा सागरदत्तो, अहतं ? तो बेइ इव रुक्खातो ।
अतिपरिणामो भणती, इय होतु अम्ह वेमिच्छा ॥५७२॥
बेति गुरू अह तं तू, अपरिणय अन्धे अ भाससे एवं ।
किं व मए तं भणितो, आरुह रुक्खे तु सच्चित्ते? ॥५७३॥
तव-णियम-णाणरुक्खं, आरुहिउं भवमहण्णवावत्तं ।
संसारागडमूलं, डेरेहि सए तुमं भणितो ॥५७४॥
जो पुण परिणामो खलु, 'आरुह'भणितो तु सो विचिंतेति।
णिच्छंति पावमेते, जीवाणं थावराणं पि ॥५७५॥
किं पुण पंचिंदीणं ?, तं भवियव्वेत्थ कारणेणं तु ।
आरुहणवक्सियं तू, वारेति गुरूऽहवा थंभे ॥५७६॥
एवाऽऽणय बीयाइं, भणिते पडिसेह अपरिणामो तु ।
अतिपरिणामो पोट्टल, बंधूणं आगतो तत्थ ॥५७७॥
पच्चाह गुरू ते तू, जहोदियाऽऽणेह अंबिलीबीये ।
ण विरोहसमत्थाइं, सच्चित्ताइं विभणियाइं ॥५७८॥
परिणामगो हु तत्थ वि, भणती आणेमि केरिसाइं तु ?।
कित्तियमित्ताइं वा ?, विरोहमविरोहजोग्गाइं ? ॥५७९॥

---

५७० आणापरिणामगं आज्ञापरिणामिनं अवश्यमाज्ञाधारिण-मित्यर्थः । वाऽमोहणाऽऽधारिं वाऽसंमोहनाऽऽधारिणम् ॥ ५७१ इणं प्रतिक्षिप-पत इत्यर्थः ॥ ५७२ अम्ह वेमिच्छा अस्माकमप्येषा इच्छा ॥ ५७६ भवियव्वेत्थ भवितव्यमत्र ॥ ५७७ एवाऽऽणय एवमानयत ॥

सो वि गुरुहिं भणिओ, ण नाव कज्जं पुणो भणीहामो ।
हसिओ व मए वाऽसी, वीमंसत्थं व भणितो सि ॥५८०॥
पढमक्खरमुद्देसं, मंतो सुत्तऽत्थ तदुभयं पुट्ठो ।
अक्खर-वंजणसुद्धं, कहेति सव्वं जहाभणितं ॥५८१॥
एवं परिच्छिऊणं, जोग्गं णाऊण सेवतो तं तु ।
वच्चाहि तस्सगासं, सोहिं सोऊण आगच्छ ॥५८२॥
अह सो गतो उ तहियं, तस्स सगासम्मि सो करे सोहिं ।
दुग-तिग-चउविसुद्धं, तिविहे काले विगडभावो ॥५८३॥
दुविहं तु दप्प कप्पे, तिविहं णाणाइगं तु अट्ठाए ।
दव्वे खेत्ते काले, भावे य चउव्विहं एयं ॥५८४॥
तिविहं अतीयकाले, पच्चुप्पण्णे य तेविहे जं तु ।
सेविस्सं वा एस्से, पागडभावो विगडभावो ॥ ५८५॥
किं पुण आलोएती ?, अतियारं सो इमो य अतियारो ।
वतछक्कादीओ खलु, णातव्वो आणुपुव्वीए ॥५८६॥
वयछक्क कायछक्कं, अकप्पो गिहिभायणं ।
पलियंक णिसेज्जा य, सिणाणं सोहवज्जणं ॥५८७॥
तं पुण होज्जाऽऽसेविय, दप्पेणं अहव होज्ज कप्पेणं ।
दप्पेण दसविहं तू, इणमो वोच्छं समासेणं ॥५८८॥
दप्प अकप्प णिरालंब चियत्ते अप्पसत्थ वीसत्थे ।	दर्पस्य दश भेदाः
अपरिच्छ अकडजोगी, अणाणुतावी य णीसंको ॥५८९॥
वायाम-वग्गणादी, णिक्कारण धावणं तु दप्पो उ । दारं॥
कायापरिणतगहणं, अकप्पो जं वा अगीतेणं ॥५९०॥ दारं॥
संसारखड्डुपडितो, णाणादवलंबितुं समुत्तरइ ।
मोक्खतडं जह पुरिसो, वल्लिवियाणेण विसमाओ ॥५९१॥
णाणादीपरिवुड्ढी, ण भविस्सति मे असेवतो वितियं ।
तेसिं पसंधणट्ठ व, सालंबणसेवणा होति ॥५९२॥

जा पुण णिक्कारणयो, अपसत्थालंवणा य सेवा उ।
असुएण वि आयरियं, को दोसो वा णिरालंबं ॥५९३॥दारं
जं सेवितं तु वितियं, गेलण्णादी असंथरंतेणं।
हट्ठो वि पुणो तं चिय, चियत्तकिच्चो णिसेवंतो ॥५९४॥दा०
वत्थ-वण्ण-रूवहेतुं, फासुयभोई वि होति अपसत्थो।
किं पुण जो अविसुद्धं, णिसेवए वण्णमादट्ठा ? ॥५९५॥दारं
सेवंतो तु अकिच्चं, लोए लोउत्तरम्मि य विरुद्धं।
परपक्ख सपक्खे वा, वीमत्थासेवणमलज्जे ॥५९६॥ दारं॥
अपरिच्छितुमाय-वए, णिसेवमाणो उ होइ अपरिच्छो ।दा०
तिगुणं जोगमकाउं, वितियासेवी अकडजोगी ॥५९७॥दारं
वितियपदे जो तु परं, तावेन्ता णाणुतप्पती पच्छा।
सो होति अणणुतावी, किं पुण दप्पेण सेवित्ता? ॥५९८॥दा०
करण-भएसु तु संका, करणे कुव्वं ण संकइ कयाइ।
इहलोयस्स ण भायइ, परलोए वा भया एसा ॥५९९॥दारं

कल्पस्य चतुर्विंशतिर्भेदाः

एसा दप्पियसेवा, दसभेय समासतो समक्खाया।दारं॥
एत्तो कप्पियसेवं, चउवीसविहा इमाऽऽहंसु ॥६००॥
दंसण-णाण-चरित्ते, तव-पवयण-समिति-गुत्तिहेउं वा।
साहम्मियवच्छल्लेण वा वि कुलयो गणस्सेव ॥६०१॥
संघस्साऽऽयरियस्स य, असहुस्स गिलाण-बाल-वुड्ढस्स।
उदयऽग्गि चोर सावय, भय कंताराऽऽवती वसणे ॥६०२॥
दंसणपभावगाणं, सत्थाणऽट्ठाए सेवए जं तु।
णाणे सुत्त-ऽत्थाणं, असंथरासेवणे सुद्धो ॥६०३॥
चरणे एसणदोसा, इत्थीदोसा य जत्थ खेत्तम्मि।
तत्तो विणिक्खमंतो, जं सेवाऽसंथरं सुद्धो ॥६०४॥

---

६०१ गाथाद्विकं व्य० उ० १० गा० ६३६-३७ ॥

णेहादि तवं काउं, कए विगिट्ठे वि लागतरणाती ।
अभिवायणा पवयणे, विण्हुस्स विउव्वणा चेव ॥६०५॥
इरियं ण सोहइस्सं, चक्खुणिमित्तकिरिया उ रीयाए ।
खित्तादि बीय तइया, अहवा वि इमं तु तइयाए ॥६०६॥
अद्धाणकप्पणेसी, अण्णं वऽसिवादिकारणेहिं तु ।
संकियमाई गिण्हे, जयणाए तत्थ सुद्धो तु ॥६०७॥
आयाणे चलहत्थो, पमज्जमाणेहिँ अण्णहिं जाइ ।
अहवा वि तस्स अट्ठा, ओसह किंची करेज्जाहि ॥६०८॥
पंचमिएँ काइभूमादिवंधमाणे उ आरभे किंचि ।
विगडादि मणअगुत्ते, वइ-काए खित्त-दित्तादी ॥६०९॥
वच्छल्ले असिहमुंडो, णित्थारिओ जह तु अज्जवइरेहिं ।
कुल-गण-संघे अभिचारुगादि रायाइणं कुज्जा ॥६१०॥
आयरिय-असहु-अतरा, बाले वुड्ढे य जेण तु समाही ।
तं जायितूण देन्ती, पणगादीहि तु जयणाए ॥६११॥
णिव्वदिक्खियादि असहू, बालो वइरो व्व दिक्खितो कज्जे ।
वुड्ढो वी कज्जम्मी, जह दिक्खितो रक्खियज्जेहिं ॥६१२॥
उदय-ऽग्गि-चोर-सावय-भएसु थंभाण पलाण रुक्खं वा ।
कंतारे पलंबादी, दव्वादी आवई चउहा ॥६१३॥

---

६०५ लागतरणाती लाजातरणादि, तीयत इवाऽस्यामतिस्वच्छतया इत्यधिकरणेऽनाट तरणम्, लाजा आर्द्रा व्रीहयस्तैर्निवृत्तं तरणं लाजातरणम्; उपचारात पेयाऽभिधीयते । गुरुतत्त्वविनिश्चयवृत्तौ उ० २ गाथा २०-२१ पत्र ५९ । विष्णुकुमारविकुर्वणाविषयकं कथानकं वसुदेवहिण्डि प्रथमखण्ड १२८ पत्रादवसेयम् ॥ ६१० आर्यवज्रसम्बन्धः आवश्यकचूर्णी प्रथमखण्ड पत्र ३९६ मध्यादवसातव्यः ॥ ६११ जायितूण याचित्वा ॥ ६१२ वज्रदीक्षासम्बन्ध आवश्यकचूर्णी प्रथमखण्डपत्र ३९१ मध्यादवलोकनीयः । आर्यरक्षितवृद्धपितृदीक्षासम्बन्धः आवश्यकचूर्णी ४०६ पत्राद् ज्ञातव्यः ॥

कोई तु वियडवमणी, गोज्जादी वा वि होज्ज णिक्खंतो ।
जयणाएँ वियडगहणं, गाएज्ज व गीतवसणी उ ॥६१४॥
एयअण्णयरागाढम्मि दंसणे णाण चरण सालंबो ।
पडिसेवितुं कयादी, होति पमत्थो पमत्थेसु ॥६१५॥
एसा कप्पियसेवा, चउवीसतिविहा समासतो कहिता ।
अहुणा उ चारणा तू, इणमो वोच्छं समासेणं ॥६१६॥
ठावेतु दप्प कप्पे, हेट्ठा दप्पस्स दस पदे ठावे ।
कप्पाहो चउवीसइ, तेसिमह अट्ठारस पदा उ ॥६१७॥
पढमस्स य कज्जस्सा, पढमेण पदेण सेवितं होज्जा ।
पढमे छक्के अब्भितरं तु पढमं भवे ठाणं ॥६१८॥
पढमस्स य कज्जस्सा, पढमेण पदेण सेवितं होज्जा ।
पढमे छक्के अब्भितरं तु इय जाव णिसिभत्तं ॥६१९॥
पढमस्स य कज्जस्सा, पढमेण पदेण सेवियं होज्जा ।
बितिए छक्के अब्भितरं तु पढमं भवे ठाणं ॥६२०॥
पढमस्स य कज्जस्सा, पढमेण पदेण सेवितं होज्जा ।
बितिए छक्के अब्भितरं तु इय जाव तसकायं ॥६२१॥
पढमस्स य कज्जस्सा, पढमेण पदेण सेवियं होज्जा ।
तइए छक्के अब्भितरं तु पढमं भवे ठाणं ॥६२२॥
पढमस्स य कज्जस्सा, पढमेण पदेण सेवियं होज्जा ।
ततिए छक्के अब्भितरं तु इय जाव तु विभूसा ॥६२३॥
पढमममुचंतेणं, बितियादीए तु जाव दसमं तु ।
पढमच्छक्काईसु उ, पुणो पुणो चारणिज्जाइं ॥६२४॥
दप्पियसेवाए तू, दप्पेणं चारियाणि अट्ठरस ।
दस अट्ठारसगुणिता, आसीयसतं तु गाहाणं ॥६२५॥

---

६१८ गाथेयं व्य० उ० १० गा० ६३८ ॥ ६१७ गाथायुगलं व्य० उ० १० गा० ६३९-४० ॥ ६२० गाथाचतुष्कं व्य० उ० १० गा० ६४३-४६ ॥

एवं बीतिज्जस्स वि, कज्जस्सा गाह होंति छ चेव ।
सव्वाओ गाहाओ, चत्तारि सता तु बत्तीसा ॥६२६॥
बितियस्स य कज्जस्सा, पढमेण पदेण सेवियं होज्जा ।
पढमे छक्के अब्भितरं तु पढमं भवे ठाणं ॥६२७॥
एवं बितियस्सा वि हु, कज्जस्सा णव चेव गाहाओ ।
बितिभगअभिलावेणं, सव्वाओ भाणियव्वाओ ॥६२८॥
पढमं ठाणं दप्पो, दप्पो च्चिय तस्स ती भवे पढमं ।
पढमं छक्क वयाइं, पाणतिवाओ तहिं पढमं ॥६२९॥
एवं तु मुसावायो, अदत्त मेहुण परिग्गहे चेव ।
बितिछक्के पुढवादी, ततिछक्के होयऽकप्पादी ॥६३०॥
एवं दप्पपयम्मी, दप्पेणं चारिया उ अट्ठरस ।
एवमकप्पादीसु वि, एक्केक्के होंतिमट्ठरस ॥६३१॥
बितियं कज्जं कप्पो, पढमपदं तत्थ दंसणणिमित्तं ।
पढमं छक्क वयाइं, तत्थ वि पढमं तु पाणवहो ॥६३२॥
दंसण अणुस्सुयन्तो, पुव्वकमेणं तु चारणीयाइं ।
अट्ठारस ठाणाइं, एवं णाणादिएक्केक्के ॥६३३॥
चउवीस अट्ठारसगा, एवं एते हवंति कप्पम्मि ।
दस होंति अकप्पम्मी, सव्वसमासेण सुण संखं ॥६३४॥
दप्पेणाऽसीयसतं, गाहाणं कप्प होंति चत्तारि ।
बत्तीसाऽऽयातेते, छस्सय होंती तु बारस य ॥६३५॥
मोत्तूण तस्स पडिसेवणं तु आलोयणं कमविहिं तु ।
आगम पुरिसज्जायं, परियाग बलं च खेत्तं च ॥६३६॥
अह सो गतो सदेसं, संतस्साऽऽलोइयव्वयं सव्वं ।
आयरियाण करेंतो, परियाग बलं च खेत्तं च ॥६३७॥

---

६३२ गाथायं व्यव० उ० १० गा० ६४६-४८ ॥ ६३६ गाथेयं व्यव० उ० १० गा० ६४९ ॥

सो ववहारविहिण्णू, अणुमज्जित्ता सुनोवदेसेणं ।
सीसस्स देइ आणं, तस्स इमं देह पच्छित्तं ॥६३८॥
पढमस्स य कज्जस्सा, दसविहमालोयणं णिसामित्ता ।
णक्खत्ते पीला भे, सुक्के पणगं तवं कुणह ॥६३९॥
पढमस्स य कज्जस्सा, दसविहमालोयणं णिसामित्ता ।
णक्खत्ते पीला भे, सुक्के दसमं तवं कुणह ॥६४०॥
पढमस्स य कज्जस्सा, दसविहमालोयणं णिसामेत्ता ।
णक्खत्ते पीला भे, सुक्के पक्खं तवं कुणह ॥६४१॥
पढमस्स य कज्जस्सा, दसविहमालोयणं णिसामित्ता ।
णक्खत्ते पीला भे, सुक्के वीसं तवं कुणह ॥६४२॥
पढमस्स य कज्जस्सा, दसविहमालोयणं णिसामित्ता ।
णक्खत्ते पीला भे, पणुवीसतवं कुणह सुक्के ॥६४३॥
एवं ता उग्घाए, अणुग्घाए एत्त चेव गाहाओ ।
णवरं तु अभिलावो, किण्हे पणगादि वत्तव्वो ॥६४४॥
पढमस्स य कज्जस्सा, दसविहमालोयणं णिसामेत्ता ।
णक्खत्ते पीला भे, चाउम्मासं तवं कुणह सुक्के ॥६४५॥
पढमस्स य कज्जस्सा, दसविहमालोयणं णिसामेत्ता ।
णक्खत्ते पीला भे, चाउम्मासं कुणह किण्हे ॥६४६॥
पढमस्स य कज्जस्सा, दसविहमालोयणं णिसामेत्ता ।
णक्खत्ते पीला भे, छम्मासतवं कुणह सुक्के ॥६४७॥
पढमस्स य कज्जस्सा, दसविहमालोयणं णिसामेत्ता ।
णक्खत्ते पीला भे, छम्मासतवं कुणह किण्हे ॥६४८॥
छिंदंतु वनं भाणं, गच्छंतु तवस्स साहुणो मूलं ।
अव्वावारा गच्छे, अच्चितिया वा परिहरंतु ॥६४९॥

६३८ गाथेयं व्य० उ० १० गा० ६६१ ॥ ६४४ इतो गाथाषट्कं व्य० उ० १० गा० ६६३-६९ ॥

पणगादिभाणछेदं, साहूमूले भवे पुणक्करणं ।
पुव्वमवहाय सव्वं, पंचाऽऽभवणाउ उवरिं तु ॥६५०॥
लिंगादीजोगत्थे, जहण्ण उक्कोसओ व बोधव्वो ।
उक्कोस जहण्णो वा, विहरउ सो अव्वितीओ उ ॥६५१॥
वितियस्स य कज्जम्मा, तहियं चउवीसगं वियाणित्ता ।
णवकारेणाउत्ता, हवन्तु एवं भणेज्जासि ॥६५२॥
एवं गंतूण तहिं, जहोवएसेण देहि पच्छित्तं ।
आणावए वहारो, भणिएसो धीरपुरिसेहिं ॥६५३॥
एसाऽऽणाववहारो, जहोवएसं जहक्कमं भणितो ।
धारणववहारं पुण, सुण वच्छ ! जहक्कमं वोच्छं ॥६५४॥
उद्धारणा विहारण, संधारण संपहारणा चेव ।
धारणववहारस्स उ, णामा एगट्ठिता एते ॥६५५॥
पावल्लेण उवेच्च व, उद्धियपयधारणा उ उद्धारो ।
विविहेहिं पगारेहिं, धारेयऽत्थं विधारो तु ॥ ६५६॥
सं एगीभावम्मी, 'धो धरणे' ताणि एव भावेणं ।
धारेयऽत्थपयाणि तु, तम्हा संधारणा होति ॥६५७॥
जम्हा संपहारेउं, ववहारं पउंजती ।
तम्हा कारणे तेण, णातव्वा संपहारणा ॥६५८॥
धारणववहारेसो, पउंजियव्वो तु केरिसे पुरिसे ? ।
भण्णइ गुणसंपण्णे, जारिसए तं सुणेह त्ति ॥६५९॥
पवयणजसंसि पुरिसे, अणुग्गहविसारए तवस्सिम्मि ।
सुस्सुय वहुस्सुयम्मि य, विवक्कपरियागसुद्धिम्मि ॥६६०॥
एतेसु धीरपुरिसा, पुरिसज्जाएसु किंचि खलिएसु ।
रहिए विहारइत्ता, जहारिहं देन्ति पच्छित्तं ॥६६१॥

धारणा-व्यवहारः

रहिए णाम असन्ने, आनिल्लम्मि ववहारतियगम्मि ।
ताहे विहारइत्ता, वोमंसेतूण जं भणियं ॥६६२॥

पुव्विम्मि उ अवराहं, विधारइत्ताण जस्स जं भणितं ।
तं देन्ती पच्छित्तं, केणं देन्ती उ ? तं सुणसु ॥६६३॥

जो धारिओ सुतत्थो, अणुओगविहीय धीरपुरिसेहिं ।
अल्लीणपल्लीणेहिं, जतणाजुत्तेहि दंतेहिं ॥६६४॥

अल्लीणा णाणादिसु, पइ पइल्लीणा उ होन्ति तु पल्लीणा ।
कोहादी वा पलयं, जेसि गया ते पल्लीणा तु ॥६६५॥

जतणाजुत्तो पयत्तवं, दंतो जो उवरतो तु पावेहिं ।
अहवा दन्तो इंदियदमेण नोइंदिएणं च ॥६६६॥

एरिसया जे पुरिसा, अत्थधरा ते भवंति जोग्गा उ ।
धारणववहारन्तू, ववहरिउं धारणाकुसला ॥६६७॥

अहवा जेणं इयाऽऽदिट्ठा, सोही परस्स कीरंती ।
तारिसयं चेव पुणो, उप्पण्णं कारणं तस्स ॥६६८॥

सो तम्मि चेव दव्वे, खित्ते काले य कारणे पुरिसे ।
तारिसयं अकरेन्तो, ण हु सो आराहओ होति ॥६६९॥

सो तम्मि चेव दव्वे, खित्ते काले य कारणे पुरिसे ।
तारिसयं चिय भूतो, कुव्वंतो राहओ होति ॥६७०॥

अहवा वि इमे अण्णे, धारणववहारजोग्गयमुवेंति ।
धारणववहारेणं, जे ववहारं ववहरंति ॥६७१॥

वेयावच्चकरो वा, सीसो वा देसहिंडओ वा वि ।
दुम्मेहत्ता ण तरइ, अवधारेउं वहू जो तु ॥६७२॥

जस्स उ उद्धरिऊणं, अत्थपयाइं तु देंति आयरिया ।
जेहिं करेहि कज्जं, आहारेन्तो तु सो देसं ॥६७३॥

धारणववहारो खलु, जहक्कमं वण्णितो समासेणं ।
जीतेणं ववहारं, सुण वच्छ ! जहक्कमं वोच्छं ॥६७४॥ जीतव्यवहारः

वत्तणुवत्तपवत्तो, बहुसो आसेवितो महाणेणं ।
एसो उ जीतकप्पो, पंचमयो होति ववहारो ॥६७५॥

वत्तो णामं एक्कसि, अणुवत्तो जो पुणो बितियवारे ।
ततियव्वारपवत्तो, परिग्गिहीओ महाणेणं ॥६७६॥

बहुसो बहुस्सुएहिं, जो वत्तो ण य णिवारितो होति ।
वत्तणुपवत्तमाणं, जीएण कतं हवति एयं ॥६७७॥

जो आगमे य सुत्ते, य सुण्णतो आण-धारणाए य ।
सो ववहार जीएणं, कुणती वत्ताणुवत्तणं ॥६७८॥

असुतो असुयत्थकतो, जह असुयस्स असुएण ववहारो ।
असुअत्थविय तह कओ, असुतो असुएण ववहारो ॥६७९॥

तं चेवऽणुकज्जंतो, ववहारविहिं पयुंजति जहुत्तं ।
जीतेण एस भणितो, ववहारो धीरपुरिसेहिं ॥६८०॥

धीरपुरिसपण्णत्तो, पंचमयो आगमो विदुपसत्थो ।
पियधम्मऽवज्जभीरूपुरिसज्जाताणुचिण्णो य ॥६८१॥

सो जह कालादीणं, अपडिक्कंतस्स णिव्विगइयं तु ।
मुहणंतफिडिय पाणग, असंवरे एवमादीसु ॥६८२॥

एगिन्दिऽणन्तवज्जे, घट्टण तावेऽणगाढ गाढे य ।
णिव्विगतियमादीयं, जा आयामन्तमुद्दवणे ॥६८३॥

विगलिंदिऽणंतघट्टण, परियावऽणगाढ गाढ उद्दवणे ।
पुरिमड्ढादिक्कमेण उ, णेतव्वं जाव खमणं तु ॥६८४॥

पंचिंदि घट्ट तावणऽणगाढ गाढ तहेव उद्दवणे ।
एगासणमायामं, खमणं तह पंचकल्लाणं ॥६८५॥

एमाईओ एसो, णायव्वो होति जीयववहारो ।
अणवज्जविसोहिकरो, संविग्गगणगारचिण्णो त्ति ॥६८६॥

सावद्यासावद्यं जीते

जं जीतं सावज्जं, ण तेण जीएण होति ववहारो ।
जं जीयमसावज्जं, तेण उ जीएण ववहारो ॥६८७॥

केरिस सावज्जं तू ?, केरिसयं वा भवे असावज्जं ? ।
केरिसयस्स व दिज्जति, सावज्जं वा वि ? इयरं वा ? ॥६८८॥

खार धडि हरमाला, पोट्टेण व रिंगणं तु सावज्जं ।
दसविह पायच्छित्तं, होइ असावज्ज जीयं तु ॥६८९॥

ओसण्णे बहुदोसे, णिद्धंधसे पवयणे य णिरवेक्खे ।
एयारिसम्मि पुरिसे, दिज्जति सावज्ज जीयं तु ॥६९०॥

संविग्गे पियधम्मे, य अप्पमत्ते यऽवज्जभीरुम्मि ।
कम्ही पमायखलिए, देयमसावज्ज जीयं तु ॥६९१॥

जं जीयमसोहिकरं, ण तेण जीएण होति ववहारो ।
जं जीयं सोहिकरं, तेण उ जीएण ववहारो ॥६९२॥

जं जीयमसोहिकरं, पासत्थ-पमत्तसंजयाचिण्णं ।
जइ वि महाणाचिण्णं, ण तेण जीएण ववहारो ॥६९३॥

जं जीयं सोहिकरं, संविग्गपरायणेण दंतेण ।
एक्केण वि आइण्णं, तेण उ जीएण ववहारो ॥६९४॥

एवं जहोवइट्ठस्स धीर-विदुदेसित-प्पसत्थस्स ।
णिस्संदो ववहारस्स एस कहितो समासेणं ॥६९५॥

को वित्थरेण वोत्तूण समत्थो णिरवसेसए अत्थे ।
ववहारो जस्स ठिता, जीहाण मुहे सतसहस्सं ? ॥६९६॥

किं पुण गुणोवदेसो, ववहारस्स तु विदुप्पसत्थस्स ।
एवं मे परिकहियं, दुवालसंगस्स णवणीयं ॥६९७॥

ववहारे पंचसु वी, विज्जंते केण तू ववहरेज्जा ? ।
आगमववहारेणं, तस्स अभावा सुतेणं तु ।।६९८।।
सुतववहारअभावे, ववहारं ववहरेज्ज आणाए ।
जेणं सो उ सुतस्सा, अणुसरिसा एगदेसेणं ।।६९९।।
आणाएँ अभावाओ, ववहारं ववहरेज्ज धरणाए ।
जेणेसा वि सुयस्सा, वट्टइ तू एगदेसम्मि ।।७००।।
धारणऽणंतर जीयं, एत्थं पुण जीयकप्प पगयं तु ।
जेणेसो सावेक्खो, अणुसज्जइ जाव तित्थं ति ।।७०१।।

अण्णं च—

दव्वं खेत्तं कालं, भावं पुरिस पडिसेवणाओ य ।
धिति बल संघयणं वा, आवेक्खति जीयकप्पो उ ।।७०२।।
एस पसंगाभिहितो, चोयगवयणाओं अहुण जीवस्स ।
वोच्छामि सोहणं तू, परमं सुमसाहितो एणिंह ।।७०३।।
'जीव त्ति पाणधारणे,' पाणा पुण आउमादि णिद्दिट्ठा ।
अहवा जीवइ जीविस्सइ य जिवं ति होइ जिओ।।७०४।।
होइ विसोहणा सोहण, जह तू वत्थस्स तोयमादीहि ।
तह कम्ममलक्खउरुलियस्स जीवस्स पच्छित्तं ।।७०५।।
सोधनं ।।
एयं पुण पच्छित्तं, परम पहाणं ति होति एगट्ठं ।
कस्सेयं परमं ? ती, जीवस्स उ होइ पच्छित्तं ।।७०६।।

संवर-विणिज्जराओ, मोक्खस्स पहो तवो पहो तासिं। प्रायश्चित्तस्य माहात्म्यम्
तवसो य पहाणंगं, पच्छित्तं जं च णाणस्स ।।२।।

संवर घट्टण पिहणं, एगट्ठं सो य संवरो दुविहो ।
देसे सव्वे य तहा, एमेव य णिज्जरा दुविहा ।।७०७।।

संवरणियामवदारो, णवकम्मोवज्जणं ण कुव्वइ उ ।
पुव्वज्जितस्स खवणं, विणिज्जरा सा उ णायव्वा ॥७०८॥

सेलेसि पडिवण्णे, दुचरिमसमयम्मि वट्टमाणे य ।
नहिँ सव्वसंवरा णिज्जरा य अवसेस देसम्मि ॥७०९॥

संवर-विणिज्जराओ, उभयमवी मोक्खकारणं होति ।
मोक्खपहो हेतू कारणं ति एते उ एगट्ठा ॥७१०॥

एतेसिं दोण्ह वि तू, तवो पहो हेउ कारणं होति ।
एतस्स वि पच्छित्तं, पहाणमंगं मुणेतव्वं ॥७११॥

जेण तवो बारसहा, पच्छित्ते णिवतती तु दसभेदे ।
तेण पहाणं अंगं, तवस्स तू होति पच्छित्तं ॥७१२॥

गाहापच्छद्धेणं, तस्स वि जं भणिय जं च णाणस्स ।
एतर ततिगाहाए, सारं तू तं चिमं आह ॥७१३॥

सारो चरणं तस्सा, णिव्वाणं चरणसोहणत्थं च ।
पच्छित्तं तेण तयं, णेयं मोक्खत्थिणाऽवस्सं ॥३॥

सामाइयमादीयं, सुतणाणं बिंदुसारपज्जन्तं ।
तस्स वि सारो चरणं, चरणस्स वि होति णेव्वाणं ॥७१४॥

णेव्वाणस्स अणंतर, चरणं चरणा अणंतरं णाणं ।
णाणविसुद्धीए पुण, चारित्तविसुद्धया होति ॥७१५॥

चारित्तविसुद्धीए, णेव्वाणफलं तु पावती अचिरा ।
सा पुण चरित्तसुद्धी, पच्छित्ताहीण णातव्वा ॥७१६॥

जम्हा एतेऽत्थ गुणा, पच्छित्ते वण्णिया तु सुत्तम्मि ।
तम्हा खलु णायव्वं, दसहा मोक्खत्थिणा जहिमं ॥७१७॥

प्रायश्चित्तस्य भेदाः

तं दसविहमालोयण-पडिकमणो-भय-विवेग-वोसग्गा।
तव-छेद-मूल-अणवट्ठया य पारंचियं चेव ॥४॥

आलोयणअरिहं ती, आ मज्जाआऽऽलोयणा गुरुसमासे । आलोचना
जं पाव विगडिएणं. मुज्झति पच्छित्त पढमेयं ॥७१८॥

मिच्छादुक्कडमेत्तेण, चेव जं मुज्झती तु पावं तु । प्रतिक्रमणम्
ण य विगडिज्जति गुरुणो. पाडिक्कमणारिहं हवति एयं ॥७१९॥

जह तु अणाभोगेणं. खेलादी णिमिरिंत तु होज्जाहि । तदुभयम्
हिंसाइए य दोसे. ण य आवण्णो तु किंचिदवि ॥७२०॥

जं पाव सेविनूणं, गुरुणो विगडिज्जना उ सम्मं तु ।
गुरुसंदिट्ठ पडिक्कम, तदुभयमेतं मुणतव्वं ॥७२१॥

जं किंचि दव्व गहितं, अहिकमप्पं व अहव ऊणं तु । विवेकः
विहिणा तु विगिंचन्ते, पच्छित्त विवेगअरिहंतं ॥७२२॥

जं कायचेट्ठमेत्तेण णिरोहेणं तु मुज्झती पावं । व्युत्सर्गः
जह दुस्सिमिणादीयं. पच्छित्तेयं वियोमग्गं ॥७२३॥

णिव्वीतियमादीओ, छम्मासंतो उ जत्थ दिज्जइ तु । तपः
एय तवारिह भणितं, इदाणि छेदारिहं वोच्छं ॥७२४॥

जेण पडिसेविएणं, दूसिज्जइ जस्स पुव्वपरियाओ । छेदः
तत्तियमेत्तं छिज्जइ. सेसगपरियायरक्खट्ठा ॥७२५॥

जम्मि पडिसेवियम्मी. सव्वं छेत्तूण पुव्वपरियायं । मूलम्
पुणरवि महव्वयाइं, आरोविज्जंति मूलारिहं ॥७२६॥

जम्मि पडिसेवियम्मी, अणवट्ठो कंचि काल कोरइ तु । अनवस्थाप्यम्
मूलवएसुं पंचसु. चिण्णतवो पच्छ होतूणं ॥७२७॥

तद्दोसोवरयस्स उ, महव्वयारुवण कीरती तस्स ।
अणवट्ठप्पो एसो. एत्तो पारंचियं वोच्छं ॥७२८॥

अंचु गती-पूजणयो. पारंचइ गच्छती तु पारं तु ।
तवमादीणं कमसो, सो लिंगादीहि चतुधा तु ॥७२९॥ पाराञ्चिकम्

आलोयणमाईणं, दसण्ह वी एस होति पिंडत्थो ।
सट्ठाणे सट्ठाणे, विभागतो इणमो वोच्छामि ॥७३०॥

आलोचना-प्रायश्चित्तम्

करणिज्जा जे जोगा, तेसुवयुत्तस्स णिरतियारस्स ।
छउमत्थस्स विसोही, जइणो आलोयणा भणिया ॥५॥

के पुण करणिज्जा ? जे, तित्थंकर-गणहरोवइट्ठा उ ।
सुत्ताणुसारओ वा, संजम-दुक्खक्खया होऊ ॥७३१॥
जेतिय जे णिद्दिट्ठा, जुंजि जोगे कातमादिआ तिण्णि ।
जं जीवं जुंजयती, पेरयती वा ततो जोगा ॥७३२॥
संखेवयो उ एते, मुहपुत्तियमादि जाव उस्सग्गो ।
दियराओसमायारी, जा जहियं वुत्त सुत्तम्मि ॥७३३॥
ते तु जया उवउत्तो, असवत्त करेइ णिरतियारा य ।
तद आलोयणमेत्तेण चेव सुद्धी तु छदुमस्स ॥७३४॥

छद्म

छउमं कम्मं भण्णइ, णाणावरणं च दंसणावरणं ।
मोहणिय अंतरायं, चउव्विहं होति णायव्वं ॥७३५॥

जे तु जया करणिज्जे, उवयुत्तो करेति णिरतियारो य ।
णणु तत्थ का व सुद्धी ?, का व असुद्धी उ ? चोएति ॥

गुरुराह तत्थ चेट्ठा, जा किरिया सुहुम आसवेसु वा ।
अहव पमाया सुहुमा, अतियार ण जाणती छतुमो ॥७३७॥
ते अइयारा सुहुमा, आलोइयमेत्तया विसुज्झंति ।
सा आलोयण चोयग !, करणिज्जा तीसु जोगेसु ॥७३८॥
को कारयो ? जती तू, जइ साहू पयतियो विणिद्दिट्ठो ।
पंचम गाह समत्ता, गाहं छट्ठं इमं वोच्छं ॥७३९॥

आहाराईगहणे, तह बहियाणिग्गमेसु णेगेसु ।
उच्चार-विहारावणि-चेइय-जइवंदणादीसुं ॥६॥

आहारो जेसि आदी, सो चउहा होइमो उ आहारो ।
भत्तं पाणं खाइम, साइम होती चउत्थं तु ॥७४०॥
आदिग्गहणेणं पुण, सेज्जा-संथार-वत्थ-पायट्ठा ।
पाउंछणअट्ठा वा, ओहोवहुवग्गहट्ठा वा ॥७४१॥
अहव गिलाणस्सट्ठा, आयरिए बाल वुड्ढ खमए वा ।
दुब्बल सेहे व महोदरे व आदेसअट्ठा वा ॥७४२॥
एतेसिं पाउग्गं, आहारो अहव होज्ज सेज्जादी ।
ओसह-भेसज्जाणि य, एमादी होज्ज अट्ठो उ ॥७४३॥
एतेसिं अट्ठाए, गुरु पुच्छित्ता गुरूणऽणुण्णाओ ।
सुत्ताणुसारओ तू, उवयुत्तो विहीय घेत्तूणं ॥७४४॥
आलोएती गुरुणो, जं जह गहियं तु भत्तमादीयं ।
सुत्ताणुसारतो तू, आलोयणसेवयो सुद्धो ॥७४५॥
सीसाऽऽह जई एवं, विहिगहणं होति एवऽसुद्धं तु ।
तो गहणमेव सव्वे, आहारादीण मा कुणउ ॥७४६॥
चोअग ! जदि एवं तु, संजमजोगा उ होंति संपुण्णा ।
आहारमाइयाणं, को णाम परिग्गहं कुज्जा ? ॥७४७॥
अण्णं च इमो दोसो, अग्गहणा पावती महंतो उ ।
आयरियादी चत्ता, णाणादीणं च वोच्छेदो ॥७४८॥
तम्हा अवस्स गहणं, आहारादीण होति विहिणा उ ।
आहाराईगहणे, एसो पादो समत्तेसो ॥७४९॥
णिग्गम गुरुमूलाओ, सेज्जाओ वा हवेज्ज णिग्गमणं ।
ते य अणेगा णिग्गम, कुलादिया इणसु वोच्छामि ॥७५०॥
कुल गण संघे चेइय, तहक्खवगणामओ दुविहभेदे ।
एतेसि णिवारणया, गुरुवृन्द करेज्ज णिग्गमणं ॥७५१॥
संथारादीण अहवा, अप्पिणणत्था उ पाडिहारीणं ।

निग्गमो गुरुमूलाओ, वसहीओ वा करेज्जाहि ॥७५२॥
गाहापच्छद्धेणं, जं भणितुच्चार अवणिसद्दो तु ।
अवणी भूमी भण्णति, तेण उ उच्चारभूमी उ ॥७५३॥
सज्झाय विहारो तु, अवणीसहिओ विहारभूमी उ ।
चेइयवंदणहेउं, गच्छे आसण्ण दूरं वा ॥७५४॥
आयरिया तु अपुव्वा, अहवा साहू अतीव संविग्गा ।
वंदण-संसयहेउं, गच्छे आसन्न दूरं वा ॥७५५॥
आदीगहणेणं पुण, सड्ढा सण्णाय अहव ओसण्णा ।
दंसणगाहण निक्खमणं च ओसण्णउच्छहणा ॥७५६॥
एतेहि व कज्जेहिं, गुरुमूला णिग्गमो उ साहूणं ।
गाहा छट्ठ समत्ता, अहुणा पुण सत्तमं वोच्छं ॥७५७॥

जं चऽण्णं करणिज्जं, जतिणो हत्थसयबाहिरायरियं ।
अवियडियम्मि असुद्धो, आलोएंतो तयं सुद्धो ॥७॥

जं चऽण्णमजुत्तं तो, करणिज्जं तं इमं तु खेत्तादी ।
हत्थसया आरेणं, परओ व इमं पवक्खामि ॥७५८॥
खित्तपडिलेह थंडिल्ल, णिक्खमणं अहव होज्ज सेहस्स ।
संलेहणं व कोई, आयरियादी व कुज्जा तु ॥७५९॥
हत्थसयाओ परेणं, जं आयरियं तु होज्ज खेत्तादी ।
समितिविसुद्धिणिमित्तं, अवस्स आलोयणं कुज्जा ॥७६०॥
जं पुण हत्थसयाओ, अंतो आसेवियं हवेज्जाहि ।
तं वियडिज्जइ किंची, अहव ण वियडिज्जती किंचि ॥७६१॥
जह—
पासवण-खेल-सिंघाणगादि उस्सुत्ते णत्थि आलोया ।
आलोएइ पमत्तोऽणालोइए होतऽसुद्धो तु ॥७६२॥

सत्तम गाह समत्ता, एत्तो वच्छामि अट्ठमं गाहं ।
कारण निग्गमें जत्थ उ, स-परगणाओ व आगमणं ॥७६३॥

कारणविणिग्गयस्स य, सगणाओ परगणागतस्स वि य ।
उवसंपया विहारे, आलोयणमणइयारस्स ॥८॥

दुविहो उ णिग्गमो खलु, कारण निक्कारणो व गच्छाओ ।
असिवादी कारणिओ, णिक्कारण चक्क-थूभादी ॥७६४॥
असिवे ओमोयरिए, गच्छहुं भए व गेलण्णे ।
अहवा वि उत्तमट्ठे, ससाहिकारो व गच्छेज्जा ॥७६५॥
आयरियपेसणादी, विणिग्गमो कारणो व होज्जाहि ।
कारण णिग्गमो एसो, णिक्कारणतो इमं वोच्छं ॥७६६॥
चक्के थूभे पडिमा, जम्मण णिक्खमण णाण णिव्वाणे ।
महिम समोसरणे वा, सण्णातिग-सज्झमादिसु वा ॥७६७॥
असमत्तकप्पियाणं, णिक्कारण णिग्गमा भवे एते ।
एते च्चिय कारणतो, जयणाजुत्तस्स गीतस्स ॥७६८॥
कारणविणिग्गएणं, णिग्गमागओ वा असमं तु ।
आलोयण दायव्वा, अभिनिविसुद्धीमित्तं तु ॥७६९॥
सा आलोयण दुविहा, ओहेण विभागओ य णायव्वा ।
ओहो संखेवो उ, विभागो पुण वित्थरो भणिओ ॥७७०॥
ओहो तत्थ इमो खलु, अब्भंतरअद्धमासआयस्स ।
पडिक्कंतस्स य इणमो, साहूमुहिमणतेणा तु ॥७७१॥
णिरइयारो य जतो, भत्तट्ठी वि य हवेज्ज जदि सो तु ।
ओहेण तत्थ आलोइऊण तो मंडलि पविसे ॥७७२॥
अप्पा मूलगुणेसुं, विराहणा अप्प उत्तरगुणेसुं ।
अप्पं पासत्थाइसु, दाणग्गहणं तु ओहेमा ॥७७३॥

अण्णाय उ वंदाए, विभागआलोयणा तु दायव्वा ।
समितिविसुद्धिणिमित्तं, एमेव य पक्खपरयो वि ॥७७४॥
एवं ता कारणिए, असिवादीणिग्गयस्स सगणाओ ।
अतियारविरहियस्स वि, आलोयणमेत्तयो सुद्धी ॥७७५॥
जे खलियाऽऽगत साहू, ते दुविहा होन्ति तू मुणेतव्वा ।
समणुण्णऽसमणुण्णा वा, समणुण्णा सगच्छतो चेव ॥७७६॥
परगणे जे असमणुण्णा, ते दुविहा होंति तू मुणेयव्वा ।
संविग्गमसंविग्गा, पासत्थादी असंविग्गा ॥७७७॥
परगणसंविग्गाओ, जो साहू आगतो उ अण्णगणं ।
तेण अवस्साऽऽलोयण, विभागतो होति दायव्वा ॥७७८॥
उवसंपद पंचविहा, सुत सुह दुक्खे य खेत्त मग्गे य ।
विणयोवसंपया वि य, पंचमिया होति नायव्वा ॥७७९॥
पंचविहाए नियमा, एगविहाए व जत्थ उवसंपे ।
निरतीयारेण वि या, विभागतोऽवस्स दातव्वा ॥७८०॥
विहरन्ति एगसंभोइया उ फड्डावती उ गीयत्था ।
तत्थऽण्णत्थ व खेत्ते, समणुण्णा एस गच्छम्मि ॥७८१॥
एगाह पणग पक्खे, चउमासे वि जत्थ वि मिलंति ।
तत्थ विभागालोयण, अवरोप्पर तेहिं दायव्वा ॥७८२॥
आलोयणारिहं ति इ, पढमं दारमेयं समक्खातं । दारं ।
पडिक्कमणारिहमेत्तो, बितियं दारं इमं वोच्छं ॥७८३॥

प्रतिक्रमण-प्रायश्चित्तम् गुत्ती-समितिपमत्तो, गुरुणो आसायणा विणयभंगे ।
इच्छाईणमकरणे, लहुस मुसादिण्णमुच्छासु ॥१॥

पुरक्खणम्मि (?) गुत्ती, ताणि मणादीणि होन्ति तिण्णेव ।
गुप्तयः तेहिं कहिंचि पमायं, साहु करेज्जा इमं तं च ॥७८४॥

दुच्चिंतिय दुब्भासिय, दुच्चेट्ठिय एमऽगुत्तिया होति ।
मणमादीणं कमसो, एस पमाओ उ साहुस्स ॥७८५॥
गुत्तो होइ कह ण्णू, मणमादीहिं तु साहुणा निच्चं ।
तत्थोदाहरणे तू, जिणदासादी इमे वोच्छं ॥७८६॥
मणगुत्तीए तहियं, जिणदासो सावओ उ सेट्ठिसुतो ।
सो सव्वराइपडिमं, पडिवण्णो जाणसालाए ॥७८७॥

मनोगुप्तौ जिनदासो दृष्टान्तम्

भज्जुब्भामिग पल्लंक घेत्त खीलउग्गभागया तत्थ ।
तस्सेव पायगुवरिं, मंचगपादं ठवेऊणं ॥७८८॥

अणयारमायरंतो, पादो विद्धो य मंचखीलेणं ।
तो तं महंति वियणं, अहियासेती तहि सम्मं ॥७८९॥

मणदुक्कडमुप्पण्णं, ण तस्स झाणम्मि णिच्चलमइस्स ।
दट्ठूण तीय विलियं, इय मणगुत्ती करेतव्वा ॥७९०॥

वइगुत्तीए साहू, सण्णायगपल्लि गच्छए दट्ठुं ।
चोरग्गह सेणावइ, विमोइतो भणिउ मा साह ॥७९१॥

[illegible]

चलिया य जण्णजत्ता, सण्णायग मिलिय अंतरा चेव ।
माइ-पिति-भातिमादी, सो वि णियत्तो समं तेहिं ॥७९२॥
तेणेहि गहित मुसिया, दिट्ठो तो विन्त सो इमो समणो ।
अम्हेहिं गहिय मुक्को. तो वेती अम्मया तस्स ॥७९३॥
तुम्हेहि गहिय मुक्को ?, आमं आणेह वेति नच्छुरियं ।
जा छिंदामि थणं ति इ, किं ? ती सेणावती भणइ ॥७९४॥

दुज्जायजम्म एसो, दिट्ठं अम्हं तहा वि ण वि सिट्ठं ।
कह पुत्तो ? ती आमं, कह ण वि सिट्ठं ? ति धम्मकहा ॥७९५॥

आउट्टो उवसंतो, मुक्को मज्झं पि तं सि माय त्ति ।
सव्वं समप्पियं ती, वइगुत्ती एव कातव्वा ॥७९६॥

काइगगुत्ताहरणं, अद्धाणपवण्णगो जहा साहू ।
आवासियम्मि सत्थे, ण लभति तहि थंडिलं किंचि ॥७९७॥

कायगुप्तौ कस्यचित् साधोरुदाहरणम्

लद्धं च णेण किह वी, एगो पाओ जहिं पइट्ठाइ ।
तहियं ठिएगपादो, सव्वं राइं तहा थद्धो ॥७९८॥

ण य ठवितो तेणाथंडिलम्मि होतव्वमेव गुत्तेणं ।
सुमहब्भए वि अहवा, साहू ण भिंदे गई एगो ॥७९९॥

कायगुप्तौ द्वितीयमुदाहरणम्

सक्क पसंसा असद्दहाण देवागमो विउव्वणया ।
मंडुक्कलि सुहुम बहू, जतणा सो संकमे सणियं ॥८००॥

हत्थी विगुव्विओ या, आगच्छति मग्गतो गुलगुलेंतो ।
ण य कुणत गतीभेदं. गएण हत्थेण उच्छूढो ॥८०१॥

बेइ पडंतो मिच्छामिदुक्कडं जिय विराहियं मे त्ति ।
ण वि अप्पाणे चिंता, देवो तुट्टो णमंसति य ॥८०२॥

गुत्तीदारं भणियं, अगुत्तगुत्ती वि हू पसंगेण ।
समिईदारं वोच्छं, समिति ममति त्ति मानाओ ॥८०३॥

समितीनां स्वरूपम्

गमणकिरिया हु समिती, सामण्णे परिणयस्स वा गमणं ।
सम्ममयति त्ति समिति, सा पंचह इरियमादीया ॥८०४॥

कह समितीसु पमादं, साहु करेज्जा तु ? भण्णए सुणसु ।
उड्ढमुहो कहरत्तो, वच्चइ साहू पमाएसो ॥८०५॥

सावज्ज भास भासति, गारत्थिय हड्डर व्व भासेज्जा ।
एमादी तु पमाओ. भासाए होति णातव्वो ॥८०६॥

हिंडंतो गोयरम्मि, संकितमादीसु जो तु नाऽऽयुत्तो ।
भिक्खाएँ गहणकाले. एसण एसो पमाओ तु ॥८०७॥

आदाण-भंडणिक्खेवणम्मि जो होइ एत्थऽणाउत्तो ।
एसो होति पमायो, एत्थ पमायम्मि छ भंगा ॥८०८॥

गहणं आदाणं ती, होति णिसद्दो तहाऽहियत्थम्मि ।
खिव पेरणे त्र भणितो, अहिउक्खेवो तु णिक्खेवो ॥८०९॥
ण वि पेहे ण पमज्जे, ण वि पेहे पमज्जती तु बितिभंगो ।
पेहे ण पमज्ज ततिओ, पेह पमज्जे चउत्थो तु ॥८१०॥
जो सो चउत्थ भंगो, पेहेति पमज्जती य तम्म पुणो ।
भंगा भवंति चउरो, दुपेहदुपमज्जणे पढमो ॥८११॥
बितियो दुपेहसुपमज्जणम्मि तइओ सुपेहदुपमज्जे ।
सुपडिल्लेहियसुपमज्जियम्मि भंगो चउत्थेसो ॥८१२॥
आदिमभंगा तिण्णि इ, अपेहअपमज्जणे य पढमादी ।
तिण्णि दुपेहादी वि य, छ ब्भंगा होंति एते उ ॥८१३॥
उच्चारं पासवणे, खेले सिंघाणमादियाणं च ।
परिठवणे एत्थं पि हु, पमाइणो होन्ति छ ब्भंगा ॥८१४॥
परिठवणुच्चारादी, उच्चरती तेण होंति उच्चारो ॥
पस्सवइ त्ति य तेणं, पासवणं भण्णए काई ॥८१५॥
अहवुच्चरई काइय, पायं सवई य पासवणमण्णा ।
खेळलणाओ खेलो, णासिगन्धाणाओ सिंघाणो ॥८१६॥
एस पमाओ भणितो, पंचसु समिईसु इरियमादीसु ।
अहुण पसंगेणं चिय, वोच्छामि इ अप्पमायं तु ॥८१७॥
जुगमेत्तंतरदिट्ठी, पदं पदं नमति चक्खुपूयं च । ईर्यासमिता-वरदत्तकः
अव्वक्खित्तायुत्तो, अरहण्णगो एत्थुदाहरणं ॥८१८॥
अह अरहण्णगसाहू, समितीअ समीय गड्ड डेवन्तो ।
छलिओ पादो छिण्णो, अण्णाए संथिओ यात्रि ॥८१९॥
भासासमितो साहू, भिक्खट्टा णगरसोहए कोयी । भाषासमितो कश्चित् साधु
णिग्गंतु बाहिकडए, हिंडंतो केणयी पुट्टो ॥८२०॥
केवइय आस हत्थी ?, धणणिचयो दारु-धण्णमादीणि ।
णिव्वण्णमणिव्वण्णं, णगरं तो वेइमं समितो ॥८२१॥

वेइ ण याणामो त्ती, सज्झाय-ज्झाण-जोगवक्खित्ता ।
हिंडंता ण वि पिच्छह, ण वि सुणहा किह हु ? तो बेति ॥८२२॥
बहुं सुणेति कण्णेहिं, बहुं अच्छीहिं पेच्छति ।
ण य दिट्ठं सुयं सव्वं, भिक्खु अक्खाउमरहति ॥८२३॥
अहव य भासति कज्जे, णिरवज्जमकारणे ण भासति य ।
विकह-विसोत्तियपरिवज्जितो जती भासणासमितो ॥८२४॥
बायालमेसणाओ, भोयणदोसे य जो विसोहेति ।
एषणासमितौ वसुदेवपूर्वभवो नन्दिषेणः सो एसणाए समिओ, दिट्ठंतो इत्थ वसुदेवो ॥८२५॥
वसुदेव अण्णजम्मे, आहरणं एसणाए समिएणं ।
मगहा णंदिग्गामे, गोयम धेज्जाइ चक्कायरो ॥८२६॥
तस्स य वारुणि भज्जा, गब्भो तीए कयाइ संभूओ ।
धेज्जाइ मतो छम्मासि गब्भ धेज्जाअणि ज्जाए ॥८२७॥
मातुलसंवड्ढण कम्मकरण वेयारणा अ लोएणं ।
णत्थि तुह एत्थ किंचि इ, तो बेती माउलो तं च ॥८२८॥
मा सुण लोयस्स तुमं, धूयाओ तिण्णि तासि जेट्ठयरी ।
दाहामि करे कम्मं, पकयो पत्त य वीवाहे ॥८२९॥
सा णेच्छई विसण्णो, माउलओ भणति अण्ण दाहामि ।
मा वि तहेव य णेच्छइ, तइयं ती णेच्छइ य मा वि ॥८३०॥
णिव्विण्ण णंदिवद्धण, आयरियाणं सगासे णिक्खंतो ।
जाओ छट्ठक्खमओ, गिण्हइ य अभिग्गहमिमं तु ॥८३१॥
बाल-गिलाणादीणं, वेयावच्चं मए तु कायव्वं ।
तं कुणइ तिव्वसद्धो, खायजसो सक्क गुणकित्ती ॥८३२॥
असद्दहाण देवस्स आगमो कुणइ दो समणरूवे ।
अतिसारगहियमेगो, अडवीय ठियो गओ बितिओ ॥८३३॥
बेति य गिलाणो पडितो, वेयावच्चं तु सद्दहे जो उ ।
सो सिग्घं उट्ठेतू, सुतं च तं णंदिसेणेणं ॥८३४॥

छट्ठोववासपारणगमाणितो कवल घेत्तुकामेण ।
तं सुत मोत्तुं संभमुट्ठिओ य भण केण कज्जं ? ति ॥८३५॥
पाणगदव्वं च तहिं, जं णत्थी तेण बेति कज्जं ति ।
णिग्गय आहिंडंते, अणेसणं कुणति ण य पेल्ले ॥८३६॥
इत एक्कवार बितियं, च हिंडिओ लद्ध तइयवाराए ।
अणुकंपा तूरंतो, गयो य सो तस्सगामं तु ॥८३७॥
खर-फरुस-णिट्ठुरेहिं, अक्कोसइ सो गिलाणओ रुट्ठो ।
हे मंदभग्ग ! फुक्किय, तूससि तं णाममेत्तेणं ॥८३८॥
साहुवयारि त्ति तुमं, णामइ अहं तु उद्दिसिउ आयो ।
एयाएँ अवत्थाए, तं अच्छसि भत्तलोहिल्लो ॥८३९॥
अमयमिव मण्णमाणो, तं फरुसगिरं तु सो ससंभंतो ।
चलणगतो खामेती, धुवति य तं ससल्लित्तं तु ॥८४०॥
उट्ठेह वयामो त्ती, तह काहामो जहा उ अचिरेणं ।
होहिह गिरुया तुब्भे, बेती ण तरामि गंतुं जे ॥८४१॥
आरुभहा पट्ठीए, आरूढो ताहे तो पयाते तु ।
परमासुइ दुग्गंधं, मुंचति सो तस्स पट्ठीए ॥८४२॥
फरुसं बेंति दमुण्डय !, वेगविघाओ कतो त्ति दुक्खविओ ।
इय बहुविहमक्कोसति, पदे पदे सो वि भगवं तु ॥८४३॥
ण गणेती फरुसगिरं, न वि अ हु दुव्विसहमसुइगंधं च ।
चंदणमिव मण्णंतो, मिच्छामी दुक्कडं भणति ॥८४४॥
चिन्तेइ किं करेमी, कह णु समाही हवेज्ज साहुस्स ? ।
इय बहुविहप्पगारं, ण वि तिण्णो जाहे खोभेउं ॥८४५॥
ताहे अभित्थुणित्ता, गतो तयो आगयो य इयरो वि ।
आलोएइ गुरूहि य, धण्णो त्ति तयो समणुसट्ठो ॥८४६॥
जह तेणं ण वि पेल्लिय, एसण इय एव साहुणा णिच्चं ।
जइअव्वं एसणा, एसणसमिती समक्खाया ॥८४७॥

आदान-निक्षेपणा-समितिः तत्रोदाहरणं च

पुव्विं चक्खु परिक्खिय, पमज्जिउं जो ठवेति गिण्हइ वा ।
आयाणभंडनिक्खेवणाएँ सो होइ इह समितो ॥८४८॥
एत्थ वि ते च्चिय भंगा, कायव्वा जाव होंति अंतिमतो ।
सुप्पडिलेहिय-सुपमज्जियं च भंगो चउत्थो उ ॥८४९॥
एसो गज्झो एत्थं, तस्सुवयुत्तो स होति खलु समितो ।
आहरण गुरुण भणितो, साहू वच्चामो गामं ति ॥८५०॥
ओगाहिए पडिग्गहे, ताहे ठिया कारणेण केणावि ।
तत्थेगो पेहेउं णिक्खिवती विइओ पुण आह ॥८५१॥
पेहियमेतं किं पेहणा, पुणो ? होज्ज एत्थ किं सप्पो ? ।
सण्णिहितदेवयाए, विउव्विनो तत्थ तो सप्पो ॥८५२॥
उग्गाहिए य दिट्ठो, आउट्टो देति मिच्छकारं च ।
समिताऽसमिता एते, उक्कोस-जहण्णया होन्ति ॥८५३॥

पारिष्ठापनिका समितिः तत्रार्थे धर्मरुच्युदाहरणम्

उच्चारं पासवणं, खेलादि व अण्णपाणमहियं वा ।
सुविसोइए पदेसे, णिसिरंतो होइ इह समिओ ॥८५४॥
इत्थ वि ते च्चिय भंगा, नवरं समियो तु अंतिमे होति ।
आहरणं धम्मरुती, परिठावणसमितिसुज्जुत्तो ॥८५५॥
काइयऽसमाहि परिठावणे य गहितो अभिग्गहो तेणं ।
सक्क पसंसा अस्सद्दहाण देवागम विउव्वे ॥८५६॥
सुवहू पिपीलियाओ, बाहाडा यावि काइयऽसमाही ।
अण्णो य काइयाए, उवट्ठितो बेयऽहं असहू ॥८५७॥
अहयं तु काइयाडो, बेइ परिट्ठव समाहि मा अच्छ ।
णिग्गय णिसिरं जहिं जहिं, पिवीलियाऊ सरे तत्थ ॥८५८॥
अह साहु किलामिज्जइ, ताहे पीतो य धरितो देवेणं ।
मा मा य णिसिद्धो त्ती, मा पिय देवो य आउट्टो ॥८५९॥
वंदित्त गतो देवो, समितीसु एव होति जतितव्वं ।
एत्त पसंगाभिहितं, आसातण इणमु वोच्छामि ॥८६०॥

गुरुवो आयरिया तू, णाणादीओ उ होइ आयारो । आशातना
आयरण परूवणया, वट्टइ सो तेसिमाऽऽसाणा ॥८६१॥
तीय विभासा इणमो, आसातण दुपद वयणमेव त्ति ।
आयाय सातयाणा, आयस्स उ साडणा जा उ ॥८६२॥
सा होती आसातण, आओ लाभो त्ति आगमो यावि ।
णाणादीणं साया, सायण धंसो विणासो त्ति ॥८६३॥
आतस्स साडणं ती, यकारलोवम्मि होइ आसयणा ।
आयरियाणं इणमो, आसयणा होइमेहिं तु ॥८६४॥
डहरो अकुलीणो त्ति य, दुम्मेहो दमग मंदबुद्धि त्ति ।
अवि अप्पलाभलद्धी, सोसो परिभवइ आयरियं ॥८६५॥
अहवा वि वदे एवं, उवएस परस्स देन्ति एवं तु ।
दसविह वेयावच्चं, कायव्व सयं ण कुव्वंति ॥८६६॥
अहव निहा आसायण, मण-वइ-काएण मणपदोसादी ।
वायाए आसायण, अंतरभासादि कुव्विज्जा ॥८६७॥
काएणं संघट्टण, जमलित पुरतो व वच्चती पंथे ।
अहवा आसायणमो, तुसिणीमादी मुणेयव्वा ॥८६८॥
आलत्ते वाहित्ते, वावारिय पुच्छिए णिसट्ठे या । गुरु-शिष्ययो-वचनानि
गुरुवयणा पंचेते, सीसस्स तु छा इमेक्केक्के ॥८६९॥
तुसिणीए हुंकारं, किं ? ति व किं चडगरं करेसि ? त्ति ।
किं णिव्वुइं ण देसी ?, केवइयं वा वि रडसि ? त्ति ॥८७०॥
एवं छा आलत्ते, तुसिणीमादी उ होंति णातव्वा ।
वाहित्तादि य छ च्चिय, एक्केक्कपयम्मि बोद्धव्वा ॥८७१॥
गुरुआसायण भणिया, एत्तो वोच्छामि विणयभंगं तु । विनयस्य भङ्गः
णेगविह अब्भुठाणे, अभिग्गहे आसणे चेव ॥८७२॥
आसणदाणं सक्कारणा य सम्माणणा य किनिकम्मं ।
अंजलिपग्गह अणुगती य ठितपज्जुवासणता ॥८७३॥

जंते पडिसंमाहण, आमणमादीहि होति मक्कारो ।
मम्माणो उवहीए, जोग्गं जं जस्स तं कुज्जा ॥८७४॥
कप्पो मंथारगे वा, जहिं चेट्ठो अच्छई तु आयरिओ ।
णायागमस्स काले, पडिलेहिय घेत्तु तं अच्छे ॥८७५॥
किनिकम्मं वंदणयं, हत्थुस्सेहो णिडालदेसम्मि ।
अंजलिपग्गहमेतं, सेना उ पया हु कंठोत्ता ॥८७६॥
एमादी विणयं तू, जो ण वि कुणती उ सूरिमादीणं ।
विणयब्भंगो एसो, सत्तविहो अहव णाणादी ॥८७७॥

समधा विनयभङ्गः

णाणे दंसण चरणे, मण वइ कायोवयार सत्तविहो ।
एतेसु अवट्टंते, समासओ एस भंगो तु ॥८७८॥
विणयब्भंगो एसो, ओहेण समासओ समक्खायो ।
इच्छादी दसहा तू, अकरणेणतो तू वोच्छामि ॥८७९॥
इच्छा-मिच्छा-तहक्कारो, आवसिया य णिसीहिया ।
आपुच्छणा य पडिपुच्छा, छंदणा य निमंतणा ॥८८०॥
उवसंपया य काले, इच्छादिअकरणया उ दसहेमा ।
लहुसमुसावादि त्ती, एत्तो उ समासतो वोच्छं ॥८८१॥
पयलाउल्ल मरुए, पच्चक्खाणे य गमणपरियाए ।
समुद्देससंखडीओ, खुड्डयपरिहारियमुहीओ ॥८८२॥
अवस गमणं दिसासु, एगकुले चेव एगदव्वे य ।
एमादी तु पदेहि, मुसं तु लहुसं वए साहू ॥८८३॥
पयलासि किं दिवा ? ण पयलामि लहु विनिय णिण्हवे गुरुगो।
अण्णहाविय णिण्हावे, बहुगा गुरुगा बहुतराणं ॥८८४॥
णिण्हवणे णिण्हवणे, पच्छित्तं वड्ढइ ऊ जा सपयं ।
लहु-गुरुमासो सुहुमो, लहुमादी बायरो होति ॥८८५॥
किं वच्चसि वासंते ?, ण गच्छे णणु वामबिंदवो एते । दारं ।
भुंजंति णीह मरुया, कहं ? ति णणु सव्वगेहेसु ॥८८६॥

भुंजसु पच्चक्खाणं, मज्झं ति तक्खण पभुंजियो पुट्ठो ।
किं व ण मे पंचविहा, पच्चक्खाता अविरतीओ ? ॥८८७॥
वच्चसि? णाहं वच्चे, तक्खण वच्चंत पुच्छिओ भणति ।
सिद्धंतं ण वि जाणह, णणु गम्मति गम्ममाणं तु ? ॥८८८॥
दस एयस्स य मज्झ य, पुच्छितो परियाग वेइ तु छलेण ।
मज्झ णव त्ति य वंदिए, भणाइ दे पंचगा दस उ ॥८८९ दारं॥
वट्टइ तु समुद्देसो, किं अच्छह कत्थ एस गयणंमि । दारं ।
वट्टन्ति संखडीओ, घरेसु णणु याउखंडणया ॥८९०॥ दारं॥
खुड्डगजणणी उ मुया, परुण्णो जियइ त्ति एव भणियंमि ।
माइत्ता सव्वजिया, भविंसु ते णे ममायाने ॥८९१॥ दारं ।
ओसण्णे दट्ठूणं, दिट्ठा परिहारिय त्ति लहुकहणे ।
कत्थुज्जाणे गुरुओ, अदिट्ठ दिट्ठे य लहुगुरुगा ॥८९२॥
छल्लहुगा उ नियत्ते, आलोयंतम्मि छग्गुरू होन्ति ।
परिहरमाणा विकहं, अप्परिहारी भवे छेदो ॥८९३॥
खाणुगमाई मूलं, सव्वे तुब्भेगा हं ति अणवट्ठो ।
सव्वे उ बाहिरा पवयणस्स तुब्भे त्ति पारंची ॥८९४॥
भण वय दिट्ठणियट्ट, आलोयामंति चोदगसुहीउ ।
किमणुस्सा सव्वेगो, सव्वे बाहिं पवयणस्स ॥८९५॥
मासो लहुओ गुरुओ, चउरो मासा हवंति लहुगुरुगा ।
छम्मासा लहुगुरुगा, छेदो मूलं तह दुगं च ॥८९६॥ दारं ।
गच्छसि ण ताव गच्छं, तक्खण वच्चंत पुच्छितो भणइ ।
वेला ताव ण जायइ, परलोगं वा वि मोक्खं वा ॥८९७॥
कतरिं दिसिं गमिस्ससि !, पुव्वं अवरं गतो भणति पुट्ठो ।
किं वा ण होंति पुव्वा, इमा दिसा अवरगामस्स ? ॥८९८॥
अहमेगकुलं गच्छं, वच्चइ बहुकुलपवेसणे पुट्ठो ।
भणति कहं दोण्णि कुले, एगसरीरेण पविसिस्सं ॥८९९॥

वग्घह एगं दव्वं, गेच्छं णेगगह पुच्छिओ भणति ।
गहणं तु लक्खणं पोग्गलाण णऽण्णेमि तेणेगं ॥९००॥ दारं॥
पयलादी तु पदा खलु, एमेते वण्णिया समासेणं ।
लहुगुरुया जाव सुयं, लहुसगमेयं मुणेतव्वं ॥९०१॥ दारं ॥
तण डगल छार मल्लग, उग्गहमणणुण्णवेतु जो गिण्हे ।
लहुसग अदत्तमेयं अहवा रुक्खादिसु लहुसं ॥९०२॥
मुहणंत पायकेसरि, पत्तट्ठवणं च गोच्छओ चेव ।
लहुसपरिग्गहमेसो, मुच्छ करेंतस्स साहुस्स ॥९०३॥
अहवा वि इमो अण्णो, सेज्जातर-गोण-साण-कागादी ।
धारण कप्पट्ठस्स व, रक्ख-ममत्तादि कुज्जा तु ॥९०४॥
विणियत्त-तइय-पंचमलहुस्सगा एते होंति णातव्वा ।
गाहेसा तु समत्ता, णवमा दसमं अतो वोच्छं ॥९०५॥

अविहीय कामजंभियखुयवायाऽसंकिलिट्ठकम्मेसु ।
कंदप्पहासविकहाकसायविसयाणुसंगेसु ॥१०॥

अविधिः अविही हत्थमदातुं, अहवा मुहणंतयं अदातूणं ।
जंभाइए वि एवं, खुइए वी एव वत्तव्वं ॥९०६॥
काश जृम्भादीनां व्याख्यानम् सु त्ति कतं तं खुइतं, छीयं वा होंति इह उ खुइतं तु ।
वायणिसग्गो दुविहो, उड्ढे य अहे य णायव्वो ॥९०७॥
उड्ढं उड्डोयादी, वायणिसग्गो अहे मुणेतव्वो ।
मुहणंतय हत्थं वा, उड्डोए तत्थ जयणाए ॥९०८॥
पुयकड्ढणा उ हेट्ठ वायणिसग्गस्स होइ जयणेसा ।
इयववियरित्तो जो खलु, अविहीए सो णिसग्गो तु ॥९०९॥
छेयण-भेयणमादी, असंकिलिट्ठ य होइ कम्मं तु ।
कंदप्पो वायाए, काएण व होति णातव्वो ॥९१०॥

हासं तु हासमेव तु, विकहा पुण इत्थिमाइया चउहा ।
कोहादी उ कसाया, विसया सद्दाइया णेया ॥९११॥
जा तेसिं तु पसज्जण, सहसाऽणाभोगओ व साहूणं ।
सा होति विसयसंगो, अविहीगाहा समत्ता उ ॥९१२॥

खलितस्स य सव्वत्थ वि, हिंसमणावज्जओ जयन्तस्स ।
सहसाऽणाभोगेण व, मिच्छक्कारो पडिक्कमणं ॥११॥

खलणा दुविहा भणिया, सहसाऽणाभोगओ व होज्जाहि ।
सा कत्थ पुणो दुविहा, सव्वत्थ इमं पवक्खामि ॥९१३॥
सव्ववएसुं गुत्तिसु, समिती णाणादिएसु व हवेज्जा ।
सव्वत्थ वि एतेसुं, खलणेसा होति णायव्वा ॥९१४॥
सहसाऽणाभोगेण व, हिंसमणावज्जओ जयन्तस्स ।
सहसाऽणाभोगाणं, को णु विसेसो ? त्ति चोएइ ॥९१५॥
आउत्तो वि य होतुं, कारेन्तो वि ण याणतीयारं ।
जह हं करेमि एयं, कए य नाऽयं अणाभोगो ॥९१६॥
आउत्त पुव्वभासा, पडिसेवण सहस एत जा नु भवे ।
ण य तरति णियत्तेउं, सहसक्कारो भवे एसो ॥९१७॥
सहसाऽणाभोगा उ., सव्वत्थ उ वण्णिया समासेणं ।
एस विसोहिट्ठाणं, मिच्छक्कारो पडिक्कमणं ॥९१८॥
॥ गाहा सम्मत्ता ॥

आभोगेण वि तणुएसु णेहभयसोगबाउसादीसु ।
कंदप्पसोगविगहादिएसु णेयं पडिक्कमणं ॥१२॥

आभोगे जाणंतो, तणुओ थोवे तु होति णातव्वो ।
तं पुण करेज्ज कप्पट्ठ-सेज्जतर-सण्णिमाइसु वा ॥९१९॥
एमादीणेहाऊ, जं कय कप्पट्ठगादि आभोगा ।
तस्स तु पायच्छित्तं, मिच्छक्कारो पडिक्कमणं ॥९२०॥

भयम् तणुओ णेहो भणितो, भइ सत्तविहं इमं तु वोच्छामि ।
इह परलोगाऽऽयाणे, अकम्ह आजीवियऽसिलोए ॥९२१॥
मरणभयं सत्तमयं, एतेसि समासतो विभागो इमो ।
मणुओ मणुयस्सेव तु, देवो देवस्स तिरि तिरिए ॥९२२॥
बीभेइ सजाईए, इहलोगभए य होंति बोद्धव्वं ।
परलोगभयं विसरिस, जह मणुओ बीभे तिरिदेवे ॥९२३॥
धणमायाणं भण्णति, तब्भय चोरादियाण जं बीभे ।
तस्सेव य रक्खट्टा, वइ-पागाराइ जं कुणति ॥९२४॥
अणिमित्त अकम्हभयं, ण वि किंची पासती तह वि बीभे ।
अडवीए रातीय व, आजीवभयं जहा अहणो ॥९२५॥
दुक्कालो आपसो, कह जीवीहं ति एस चिंतेति ।
मरणभयं सिद्धं चिय, मरणमि महब्भयं जह तु ॥९२६॥
असिलोगो त्ति ह अयसो, जइ एव करिस्स होहिइ अयसो ।
असिलोगभयं एयं, वेयणभय होइ सीयादी ॥९२७॥
सत्तविहं भयमेयं, एएसु य वट्टियं तु जं तणुए ।
तस्स विसोहिट्टाणं, मिच्छक्कारो पडिक्कमणं ॥९२८॥
शोकः सोगं आभोएण वि, चिन्तादि करंते विप्पयोगम्मि ।
तस्स तु पायच्छित्तं, मिच्छक्कारो पडिक्कमणं ॥९२९॥
बाकुशिकः आभोगमणाभोगे, संवुडमस्संवुडे य अहसुहुमे ।
पंचविहो बाउसिओ, सुहुमाभोगेण पगयेत्थं ॥९३०॥
कंदप्पादी तु पदा, पुव्वुत्तकमा तु दसमगाहाए ।
एव जहुद्दिट्ठेसु, तणुए सोही पडिक्कमणं ॥९३१॥
वितिय द्दार समत्तं, पडिक्कमणारिहमहुण ततियं तु ।
तदुभयदारं वोच्छं, तत्थ इमा होइ गाहा तु ॥९३२॥

संभमभयातुरावतिमहसाणाभोगऽणप्पवसओ वा । तदुभयार्हः प्रायश्चित्तम्
सव्ववयातीयारे. तदुभयमासंकिते चेव ॥१३॥

संभमोऽणेगविहो खलु, हत्थी अगणी व उदगमादीओ । सम्भ्रमभयं
भय दस्सुग मिलक्खू वा, मालवतेणाइओ बहुहा ॥०.३३॥
पढमबितीयादिएहिं. परीसहेहाऽतुरो तु बहुहा तु ।
आवइ चउहा इणमो. समासतोऽहं पवक्खामि ॥०.३४॥ आपत्
दव्वावति खेत्तावइ, कालावइ भावआवई चेव ।
दव्वावती तु दव्वं, जं दुल्लभं होति साहुस्स ॥०.३५॥
विन्थिण्णमइम्वादी, खेत्तावति एस होइ णातव्वा ।
कालावती तु ओमे, भावे तु गुरू-गिलाणादी ॥०.३६॥
सहसा ऽणाभोगा तू, पुव्वुत्ता अहुण वोच्छऽणप्पवसो ।
णप्पवसो उ परवसो, सो होति इमेहि कज्जेहिं ॥०.३७॥
वाइय पित्तिय सिंभिय, अहवा वी होज्ज सण्गिवाएणं ।
एतेहि अणप्पवसो, अहवा होज्जा इमेहिं तु ॥०.३८॥
जक्खाइट्ठसरीरो, मोहणिए अहव होज्ज कम्मुदए ।
एतेहि अणप्पवसो, होज्जाही कारणेहिं तु ॥०.३९॥
एव जहुद्दिट्ठसु, संभममादीसु कारणेसु तु ।
सव्ववयातियारं, णासं तु करेज्जऽणप्पवसो ॥०४०॥
पुढवि जल अगणि मारुय, वणस्सती कुज्ज रुक्खरुहणं वा ।
बिय तिय चउरो पंचिंदियं व साहू विराहेज्जा ॥०.४१॥
एव मुसावादादी, अणपज्जो आयरेज्ज साहू तु ।
पिंडविसोहादीणि व, सेवेज्ज व उत्तरगुणाणि ॥०.४२॥
एमादी आवण्णे, अनियारविसोहि तदुभयं होति ।
तदुभय गुरुमालोइय, मिच्छामी दुक्कडं वेति ॥०४३॥
आसंकिएँ तदुभयं, मूलगुणे उत्तरे य णातव्वं ।
परिच्छिदितु ण वि सक्के, कतमकयं एस आसंका ॥०४४॥

दुच्चिंतिय दुब्भासिय, दुच्चेट्ठिय एवमादियं बहुहा
उवउत्तो वि ण याणति, जं देवसियातियाराति ॥१४॥

'दु त्ति दुगुंछा' धातू, संजमउवरोहि कुच्छियं होति ।
तं मणसा जइ चिंतिय, दुच्चिंतिय एव णातव्वं ॥९४५॥
एवं तू दुब्भासिय, दुच्चेट्ठिय एवमेव णातव्वं ।
दुप्पडिलेहियमादी, आदीसद्देण बोद्धव्वं ॥९४६॥
एमादियं तु बहुसो, अणेगसो होइ हू मुणेतव्वं ।
उवउत्तो वि ण जाणति, ण वि संभरती उ जं भणियं ॥९४७॥
आदिग्गहणेणं पुण, राइय पक्खिय तहेव चउमासे ।
संवच्छरिए य तहा, अतियारा होंति बोद्धव्वा ॥९४८॥

सव्वेसु य विनियपए, दंसणणाणचरणावराहेसु ।
आउत्तस्स तदुभयं, सहसक्काराइणा चेव ॥१५॥

पढमं उम्मग्गपदं, अवराहपयं तु वितियं होति ।
सव्वग्गहणेणं पुण, सव्व अवराहा मुणेयव्वा ॥९४९॥
दंसण णाण चरित्ते, जे अवराहा तु होन्ति गीतत्थे ।
कारणजयणाजुत्ते, एव जयंतस्स जे उ भवे ॥९५०॥
जह तिक्खउदगवेगे, विसमम्मि व विज्जलम्मि वच्चंतो ।
कुणमाणो वि पयत्तं, अवसो जह पावए पडणं ॥९५१॥
तह समणसुविहियाणं, सव्वपयत्तेण वी जयंताणं ।
कम्मोदयपच्चइया, विराहणा कस्सइ हवेज्जा ॥९५२॥
प(पु?)रिसज्जनणाजुत्ते, तस्स विसोहीय तदुभयं होति ।
सहसा वि होइ तदुभय, आवण्णे दंसणाईसु ॥९५३॥
तदुभयदार समत्तं, विवेगदारं अयो पवक्खामि ।
कस्स पुण विवेगो ऊ, तत्थ इमा होति गाहा तु ॥९५४॥

पिंडोवहिसेज्जादी. गहियं कडजोगिणोवयुत्तेणं ।
पच्छा णायमसुद्धं. सुद्धो विहिणा विगिंचंतो ॥१६॥

'पिडि संघाए' धातू, पिंडो संघाओ भण्णए तम्हा । पिण्डः
सो इह सचित्ताई, णवणवभेदो पुणेक्केक्को ॥०.५५॥
पुढवी आउक्काए, तेऊ वाऊ वणस्सती चेव ।
बेइंदिय तेइंदिय, चउरो पंचिंदिया चेव ॥०.५६॥
एक्केक्को पुण तिविहो, पुढवीमादी सचित्तमादीओ ।
सत्तावीसइभेदो, पिंडेस समासतो होति ॥०.५७॥
आहिय ओवग्गहिओ, उवही दुविहो समासतो होति । उपधिः
होइ विभागेणं पुण, जह भणिओ ओहजुत्तीए ॥०.५८॥
भण्णति सिज्जा वसही, आदीसद्देण होंति डगलादी । शय्या
ओसहभेसज्जाणि य, आदीसद्देण लहियाणि ॥०.५९॥
कडजोगी गीयत्थो, जं वुत्तं होति जो उ गहियत्थो । कृतयोगी
पिंडेसण-पाणेसण-वत्थेसण-सेज्जमादीणं ॥०.६०॥
अहवा छेदसुयादीसुत्तत्थाहिज्जितो तु गीयत्थो ।
गहितं तेणुवयुत्तेण णात पच्छा असुद्धं तु ॥ ०.६१॥
केण असुद्धं ? भण्णति, उग्गमउप्पायणेसणादीहिं ।
अहवा वि संकियादी, सो सुज्झति विहिविगिंचंतो ॥०.६२॥

कालद्धाणाऽतिच्छियमणुग्गयत्थमियगहियमसढो उ ।
कारणगहिउव्वरियं, भत्तादिविगिंचणे सुद्धो ॥१७॥

पढमाएँ पोरिसीए, पडिगाहेत्ताण असणपाणादी ।
जो तइयमइक्कामे, कालातीतं इमं होति ॥०.६३॥ कालातीतम्
अद्धोयणा परेणं, आणियऽणीयं व असणपाणादी । अध्वातीतम्
एयऽद्धाणातीतं, सो सढ असढो वइक्कामो ॥०६४॥

पाठापाठौ — विगहा-किड्डादीहिं, होति मढो एम होति अमढो तु ।
गेलण्णवावडत्ता, होज्ज व सागारिया तत्थ ॥९६५॥
थंडिल्लअभावा वा, तेणाहिभयं व तत्थ होज्जाहि ।
एमादीकज्जेहिं, अमढो तु होइ णायव्वो ॥९६६॥
एमादी अमढो जं, विहो विगिंचंतो होति सुद्धो उ ।
अणुदित अत्थमिओ वा, गहियं अमढेणिमं वोच्छं ॥९६७॥

अनुद्गता-स्तमनं — गिरि-राहु-मेह-महिया-पंसु-रयावरिओ होज्ज वा सविया ।
उग्गयबुद्धी साहू, एमेव य दोयऽणत्थमिए ॥९६८॥
पच्छा णायमणुग्गय, अहव अत्थमिओ एम इणिह तु ।
एगण्णायंमि मढो, सुद्धो तु विहो विगिंचंतो ॥९६९॥

कारणगृहीतम् — आयरिए य गिलाणे, पाहुणए खमग बाल वुड्ढे य ।
एतेसऽट्ठा गहितं, तं होती कारणगहियं ॥९७०॥
विहिपरिभुत्तुव्वरियं, विही विगिंचन्त होति सुद्धं तु ।
एयं विवेगदारं, एत्तो वोच्छामि वोसग्गं ॥९७१॥

व्युत्सर्ग-प्रायश्चित्तम् — **गमणागमणविहारे, सुयंमि सावज्जसुविणयादिसु य ।**
णावाणदिसंतारे, पायच्छित्तं वियोसग्गो ॥१८॥

गमनागमन विहार: — वसही गुरुमूला वा, गमणं अण्णत्थ पुणरवागमणं ।
एयं गमणागमणं, विहार सज्झायभूमो तु ॥९७२॥
तो सज्झायणिमित्तं, गमणं अन्नत्थ होज्ज साहुस्स ।
गमणागमणविहारं, णातव्वं होति एतं तु ॥९७३॥
समितिविसुद्धिणिमित्तं, एत्थं पच्छित्त होति उस्सग्गो ।

श्रुतम् — होति सुतं सुतणाणं, उद्देसगमादि णातव्वं ॥९७४॥
पट्ठवणुद्दिसणे या, समुद्दिसणे तह य होतऽणुण्णाए ।
कालपडिक्कमणम्मि य, सुयस्स एत्थं तु उस्सग्गो ॥९७५॥

सावद्यस्वप्नम् — पाणतिवायादीयो, सावज्जो सुमिणतो तु णातव्वो ।
आदिग्गहणेणं पुण, अणवज्जपसत्थएसु पि ॥९७६॥

चरसइग्गहणाओ, दुस्सउणा दुण्णिमित्त गहिया उ ।
पढमवयादीएसु य, सव्वेसु क्तिसोहि उस्सग्गो ॥१७७॥
णावा चउव्विहा तू, समुद्दणादिक्क तिण्णि उ णदीए । नावा नदीसन्तारः
उज्जाणी ओयाणी, तिरिच्छगामी भवे तइया ॥१७८॥
जंघद्धा संघट्टो, णाभीलेवोवरिं तु लेवुवरि ।
बाहोडुपाइओ खलु, णदिसंतारेवमादीओ ॥१७९॥
णावादीहिं पएहिं, जाव तु उडुपादिसंतरंतो तु ।
सव्वत्थ तु पच्छित्तं, जयणाजुत्तस्स उस्सग्गो ॥१८०॥

भत्ते पाणे सयणासणे य, अरहंतसमणसेज्जासु ।
उच्चारे पासवणे, पणवीसं होन्ति उस्सासा ॥१९॥

भत्तं पाणं [सय]णं, सयणं सेज्जा उ होति णातव्वा ।
'आस उवेसण' धातू, उवेसणं आसणं होति ॥१८१॥
'अरह पूयाए' धातू, पूयामरिहंति तेण अरिहंता । अर्हन्
अरिहंति वंदण णमंसणं च तम्हा तु अरिहंता ॥१८२॥
कोहाइ उ अरी ऊ, अहव रयं कम्म होइ अट्ठविहं ।
अरिणो व रयं हंता, तम्हा उ हवंति अरिहंता ॥१८३॥
सयणं सेज्ज पडिस्सय-भत्तादी जाव होति सेज्जा ऊ ।
हत्थसयाउ परेणं, गमणागमणम्मि सव्वत्थ ॥१८४॥
समितिविसुद्धिणिमित्तं, जयणाजुत्तस्स होति उस्सग्गो ।
पणुवीसं उस्सासा, उच्चारसयो तु वोच्छामि ॥१८५॥
उच्चरती उच्चारं, पस्सवती तेण होति पस्सवणं ।
सण्णा काइय कमसो, अहव इमो होइ सद्दत्थो ॥१८६॥
उच्चरति काइयं तू, जम्हा तेणं तु होति उच्चारो ।
पायं सवती जम्हा, तम्हा तू होति पासवणं ॥१८७॥
परिठविएसेएसुं, हत्थसया आरतो व परतो वा ।
सोही काउस्सग्गो, पणुवीसं होंति ऊसासा ॥१८८॥

हत्थसतबाहिरातो, गमणागमणाइएसु पणुवीसं ।
पाणिवहादिसुमिणए, सतमट्ठसतं चउत्थम्मि ॥२०॥

गाहद्धं पढम कंठं, पाणवहे सुमिणदंसणे रातो ।
नतकारियादिएसुं, विसोहि ऊसास सतमेगं ॥९८९॥
एव मुसावादादिसु, उस्सग्गो जाव होति णिसिभत्तं ।
सतमुस्सासाण भवे, अट्ठसतं पुण चउत्थम्मि ॥९९०॥

देसिय राइय पक्खिय, चाउम्मासे तहेव वरिसे य ।
सतमद्धं तिण्णि सता, पंच सता अट्ठुत्तर सहस्सं ॥२१॥

देसियमादिपदाणं, कमसो ऊसासमाणमेयं तु ।
ते पुण कह विण्णेया, उस्सासा ? तमिह वोच्छामि ॥९९१॥
लोगस्सुज्जोयगरा, चउरो एगं सतं तु णेयव्वं ।
पंचासा दोहिं भवे, तिण्णि सया होंति बारसहिं ॥९९२॥
पंच सया वीसाए, अट्ठसहस्सं च होंति चत्ताए ।
देसियमाउस्सग्गे, होइ एयं तु परिमाणं ॥९९३॥
अहवा-पणुवीस अद्धतेरस, सिलोग पण्णत्तरि च बोधव्वा ।
सतमेगं पणवीसं, दो बावण्णा य वरिसेणं ॥९९४॥

उद्देस समुद्देसे, सत्तावीसं तहेव अणुण्णाए ।
अट्ठेव य ऊसासा, पट्ठवण-पडिक्कमणमादी ॥२२॥

उद्देसय अज्झयणे, सुतखंधे चेव होति अंगे य ।
उद्दिसणादिपयाणं, सत्तावीसं तु उस्सासा ॥९९५॥
पट्ठवणपडिक्कमणे, अट्ठस्सासा उ होंति उस्सग्गो ।
आदिग्गहणेणं पुण, पट्ठवयंते वि अणुओगं ॥९९६॥
कालपडिक्कमणे वि य, अवसउणे चेव होति सव्वत्थ ।
उस्सासा अट्ठ भवे, काउस्सग्गो मुणेतव्वो ॥९९७॥

उद्देसय अज्झयणे. सुतखंधंगेसु कमसो पमादिस्स।
कालाइक्कमणादिसु. णाणायारइयारेसु ॥२३॥

णाणायारो दुविहो. ओहेण विभागओ य णातव्वो ।
उद्देसय अज्झयणे. सुयखंधंगे विभागो तु ॥९९८॥
उद्देसादिचउण्ह वि. अतियारो अट्ठहा मुणेतव्वो ।
पत्तेयं पत्तेयं, कालादि इहं पवयणम्मि ॥९९९॥
काले विणए बहुमाणे उवहाणे तहा अणिण्हवणे ।
वंजण अत्थ तदुभए. अट्ठविहो णाणयागारो ॥१०००॥
जो तु करेति अकाले. सज्झायं कुणइ वा असज्झाए ।
सज्झाए वा ण कुणति. कालतियारा भवे एस ॥१००१॥
जच्चादिमदुम्मत्तो, थद्धो विणयं ण कुव्वति गुरूणं ।
हीलयइ य जो तु गुरूं. विणयइयारो भवे एस ॥१००२॥
सुतणाणम्मि गुरुम्मि य. भत्ती बहुमाण जो तु ण करेति ।
भत्ती होयुवयारो. बहुमाणो मणसिणेहो ॥१००३॥
बहुमाणे अइयारो. एमेसो वण्णिओ समासेणं ।
उवहाणं होति तवो. आयंबिलमादिओ सो य ॥१००४॥
जो तं ण कुणति साहू, अहवा वि य सहहेसमुवहाणं ।
सो उवहाणतियारो. णिण्हवणेत्तो पवक्खामि ॥१००५॥
णिण्हवणं अवलवणं, असुगस्सगासे अहं णाहिज्जामि ।
अण्णं जुगप्पहाणं. आयरियं सो उ उद्दिसति ॥१००६॥
णिण्हवणे अतियारो, एमेसो वण्णितो समासेणं ।
वंजणमादिपदाणं, अतियारमतो पवक्खामि ॥१००७॥
भणितं वंजणमक्खर, तण्णिप्फण्णं सुतं मुणेतव्वं ।
पागतणिबद्धमेयं, सक्कयभासी करेज्जाहि ॥१००८॥
धम्मो मंगलमुक्कट्ठं. दया संवर णिज्जरा ।
तस्सेव य अत्थसमा, अण्णाणि य वंजणाणि करे ॥१००९॥

अहवा मत्ता विंदू, अण्णभिहाणेण वाचितं अत्थं ।
वंजिज्जति जेण अत्थो, वंजणमिति भण्णते सुत्तं ॥१०१०॥
वंजणभेदेण इहं, अत्थविणासो हवेज्ज तु कयाई ।
अत्थविणासा चरणं, चरणविणासे अमोक्खो तु ॥१०११॥
मोक्खाभावातो पुण, पयत्तदिक्खा णिरत्थिया होति ।
जम्हा एते दोसा, तम्हा सुत्तं ण भिंदिज्जा ॥१०१२॥
वंजणभेदो भणिओ, अत्थे भेदं अतो पवक्खामि ।
अत्थं तु वियप्पेंतो, तेहिं च्चिय वंजणेहऽण्णं ॥१०१३॥
आयारे सुत्तमिणं, आवंती पंचमम्मि अज्झयणे ।
आवंती केआवंती, लोगंसी विपरिसुसंति त्ति ॥१०१४॥
अट्ठाए अणट्ठाए, एतेसु विप्परामुसंती तु ।
एयं सुत्तं आसिम, अत्थ विकप्पेतिमं अण्णं ॥१०१५॥
आवंती होति देसो, तत्थ तु अरहट्टकूवजा कया ।
सा पडिया हेट्ठ तू, तं लोगो विप्परामुसति ॥१०१६॥
अत्थविसंवाएत्तं, तदुभयदारं इमं पवक्खामि ।
जत्थ तु सुतत्था खलु, दो वि विणस्संति तं च इमं ॥१०१७॥
धम्मो मंगलमुक्कट्ठो, अहिंसा पव्वतमत्थए ।
देवा वि तस्स णस्संति, जस्स धम्मे सया मती ॥१०१८॥
अहाकडेसु रंधंति, कट्ठेसु रहकारो उ ।
रण्णो भत्तम्मि णो जत्थ, गद्दभो जत्थ दीसति ॥१०१९॥
एसो तदुभयभेदो, दोण्णि वि णासेंति एत्थ सुत्तत्था ।
एवं तु ण कातव्वं, दोसा ते चेव पुव्वुत्ता ॥१०२०॥
णाणायारो एसो, अट्ठविगप्पो जिणेहिं पण्णत्तो ।
उद्देसगमादीणं, पच्छित्तुदितं इमं कमसो ॥१०२१॥

णिव्विगतिय पुरिमड्ढेगभत्त आयंबिलं चउत्थागाढे ।
पुरिमादी खमणंतं, आगाढे एवमत्थे वि ॥२४॥

उद्देसे णिव्विगतिं, पुरिमड्ढ सोढि होति अज्झयणे ।
सुतखंधे एगभत्तं, अंगम्मि य होति आयामं ॥१०२२॥
एवं ताऽणागाढे, आगाढजोगम्मि होति पुरिमादी ।
अंतम्मि होति खमणं, एमेव य होति अत्थे वि ॥१०२३॥

सामण्णं पुण सुत्ते, मतमायामं चउत्थमत्थम्मि ।
अप्पत्तापत्तावत्तवायणुद्देमणादीसु ॥२५॥

ओहो सामण्णं तू, सव्वम्मी चेव होति सुत्तम्मि ।
अविसेसिय सुतत्थे, आयाम चउत्थ कमसो तु ॥१०२४॥
अप्पत्तो दुविहो तू, सुतेण अत्थेण चेव बोद्धव्वो ।
पुव्विल्ल सुत्त अत्थे, विणिय अपत्तो मुणेतव्वो ॥१०२५॥
अप्पत्ते त्ति गतम् ॥

तिन्तिणिआदि अपत्तो, अव्वत्तो वए सुए त णातव्वो ।
वायंतस्स तु एते, चउगुरुया उद्दिसादिसु य ॥१०२६॥
पत्तमवाएंतस्स वि, उद्दिसणादीसु चेव य पदेसु ।
चउगुरुया बोद्धव्वा, अववाए कारणा सुद्धो ॥१०२७॥

कालाऽविसज्जणादिसु, मंडलिसुद्धापमज्जणादिसु य ।
णिव्वीतियं अकरणे, अक्खणिसेज्जा अभत्तट्ठो ॥२६॥

कालाविसज्जणाती, ण पडिक्कंतं तु जमिह कालस्स ।
तिविहा य होति मण्डली, वसुहा भूमी मुणेयव्वा ॥१०२८॥
भोयण सुत्ते अत्थे, तिविहेमा मंडली मुणेयव्वा ।
कालऽविसज्जणे मंडलिभूमीअपमज्जणे विगती ॥१०२९॥
सुत्ते वा अत्थे वा, ण करि णिसेज्जं च अक्ख ण गेण्हति ।
वत्ससद्देणं वंदण, उस्सग्ग ण कुव्वति चउत्थं ॥१०३०॥

आगाढाऽणागाढम्मि सव्वभंगे य देसभंगे य ।
जोगे छट्ठ चउत्थं. चउत्थमायंबिलं कमसा ॥२७॥

जोगो तु होति दुविहो, आगाढो चेव तह अणागाढो ।
दुविहे वि होति भंगो, सव्वे देसे य णातव्वो ॥१०३१॥
सव्वभंगे छट्ठं, होति चउत्थं तु देसे आगाढे ।
णागाढे तु चउत्थं, सव्वे देसे य आयामं ॥१०३२॥
कह भंगो सव्वम्मी, कह वा देसम्मि एव चोएति ।
भण्णति फुडवियडाहिं, गाहाहिं इमं पवक्खामि ॥१०३३॥
विगति अणट्ठा भुंजति, न कुणइ आयंबिलं ण सद्दहति ।
एसो उ सव्वभंगो, देसे भंगो इमो होति ॥१०३४॥
काउस्सग्गमकाउं, भुंजइ भोत्तूण वा कुणति पच्छा ।
संदिसह त्ति व भणतो, एवं देसे भवे भंगो ॥१०३५॥
णाणाचारो भणिओ, अट्ठविहो एस तु समासेणं ।
अहुणा अट्ठविहो च्चिय, आयारो दंसणे होति ॥१०३६॥
अष्टधा दर्शनाचारः णिस्संकित णिक्कंखित, णिव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य ।
उववूह थिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥१०३७॥
दंसणयारो अट्ठहा, एसेसो होइ तू समासेणं ।
एतेसिं वित्थारो ऊ, अइयारो होति सो य इमो ॥१०३८॥
संसयकरणं संका, कंखा अण्णोण्णदंसणग्गाहो ।
वितिगिच्छा अप्पणो ऊ, सोग्गति होज्जा ण वा वि त्ति॥१०३९॥
अहवा वि दुगुंछा ऊ, विउ त्ति साहू हवंति णातव्वा ।
ते उ दुगुंछति णिच्चं, मंडलि मोए य जल्लादी ॥१०४०॥
णेगविहा इड्ढीओ, पूयं परतित्थियाण दट्ठूण ।
सोतूणं वा जस्स उ, मइमोहो होति मूढसा ॥१०४१॥
उववूह होति दुविहा, पसत्थ अपसत्थिया य णातव्वा ।
साहूणं तु पसत्था, चरगादीणऽप्पसत्था तु ॥१०४२॥

दंसणणाणचरित्ते, तवसंजमविणयवेयवच्चादी ।
अब्भुज्जयस्स उच्छाहवद्धणं होंति तु पसत्था ॥१०४३॥
अपसत्था उववूहा, अण्णाणे अविरतीय मिच्छत्ते ।
चरगादी वट्टंते, उववूहंति दुविह एस गता ॥१०४४॥
थिरकरणा वि य दुविहा, पसत्थ इयरा य होंति णातव्वा ।
साहूण पसत्था तू, णाणादीएहिं सीयंति ॥१०४५॥
बहुदोसे माणुस्से, मा सीद थिरीकरंति एवं तु ।
एस पसत्था भणिया, अपसत्थो पवक्खामि ॥१०४६॥
मिच्छादिट्ठीए तू, चरगादी थिरिकरेंत अपसत्था ।
पासत्थादी अहवा, थिरीकरेन्तम्मि अपसत्था ॥१०४७॥
वच्छल्ला वि य दुविहा, पसत्थ इयरा य होंति णातव्वा ।
आयरियादि पसत्था, पासत्थादीण इयरा तु ॥१०४८॥
आयरिय गिल्लाणे या, पाहुणए असहु-बाल-वुड्ढादी ।
आहारोवहिमादीण, समाहिकरणं पसत्थं तु ॥१०४९॥
पासत्थोसण्णाणं, कुसील-संसत्त-णीयवासीणं ।
अहव गिहत्थादीणं, समादी अपसत्था तु ॥१०५०॥
दुविहा पहावणा वि य, पसत्थ इयरा य होंति णायव्वा ।
तित्थगरादि पसत्था, मिच्छत्तऽण्णाणं अपसत्था ॥१०५१॥
तित्थयर पवयणे वा, णाणादीणं च तिण्णि वी लोए ।
मग्गं णेव्वाणस्स उ, पभावयंते पसत्थेसा ॥१०५२॥
मिच्छत्तऽण्णाणादी, पभावयंतेस होंति अपसत्था ।
एसो दंसणयारो, पच्छित्तं तेसि वोच्छामि ॥१०५३॥

संकादिएसु देसे, खमणं मिच्छोववूहणादिसु य।
पुरिमादी खमणंतं, भिक्खुप्पभितीण य चतुण्हं॥२८॥

संकादी अट्ठ पदा, देसे सव्वे य होंति णायव्वा ।
संकादीण चउण्हं, देसे खमणं तु णायव्वं ॥१०५४॥
उववूहादिचउण्ह वि, अपमत्थे देसे होयभत्तट्ठं ।
सव्वम्मि होंति मूलं, एवं संकाइएसुं पि ॥१०५५॥
एवं ता ओहेणं, अविसेसो होंति एस पच्छित्ते ।
पुरिसविभागेणऽहुणा, देसे सोही इमा होंति ॥१०५६॥
संकाऽऽदिअट्ठसु त्तो, देसे भिक्खुस्स होंति पुरिमड्ढं ।
वसभे एक्कासणयं, आयामं होंति उवज्झाए ॥१०५७॥
आयरिय अभत्तट्ठो, एस विभागेण होइ सोही तु ।
अहुणा उववूहादीण, अकरणे सोही इमा जयिणो ॥१०५८॥

एवं चिय पत्तेयं, उववूहादीण अकरणे जतीणं ।
आया ऽतं णिव्वीतिआदि पासत्थमा सु ॥२९॥

एवं चिय पुरिम ', अणंतरुद्दिट्ठपुरिसभेएण ।
पिह पिह जति ण करेंती, उववूह पसत्थ साहूणं ॥१०५९॥
एव थिरीकरणं तू, वच्छल्ल पभावणा पसत्थेसु ।
पवयण-जइमादीणं, अकरिते तत्थिमा सोही ॥१०६०॥
भिक्खुस्स तु पुरिमड्ढं, वसभा भत्तेक्क होंति सोही तु ।
अभिसेगे आयामं, आयरिए होयऽभत्तट्ठं ॥१०६१॥
गाहापच्छद्धस्साऽणन्तरगाहाएँ होंति संबंधो ।
एयस्स वियत्तपए, संबंधो तं चिमं वोच्छं ॥१०६२॥

परिवारादिणिमित्तं, ममत्तपरिपालणादि वच्छल्ले ।
साहम्मिउ त्ति संजमहेउं वा सव्वहिं सुद्धो ॥३०॥

पासत्थोसण्णाणं, कुसील-संसत्त णीयवासीणं ।
जो कुणति ममत्तादी, परिवारणिमित्तहेतुं च ॥१०६३॥

तस्स इमं पच्छित्तं, निव्वीयादी तु अंते आयामं ।
भिक्खूमादीयाणं, चउण्ह वी होति जहकममो ॥१०६४॥
आदिग्गहणेणं पुण, महा सण्णायगा व सेज्जारा ।
दाहंताऽऽहारादी, तेण ममत्तादि कुज्जा तु ॥१०६५॥
अह पुण साहम्मि त्ती, संजमहेउं च उज्जमिस्सति वा ।
कुलगण संघगिलाणे, तप्पिस्सति एवबुद्धी तु ॥१०६६
एव ममत्त करेंते, परिवालण अहव तस्स वच्छलं ।
दढआलंबणचित्ता, मुज्झति मज्झत्थ साहू तु ॥१०६७॥
एसो अट्ठवियप्पो, अतियारो दंसणे समक्खातो ।
चारित्ते अतियारं, इणमो उ समासतो वोच्छं ॥१०६८॥

एगिंदियाण घट्टणमगाढगाढपरितावणोद्दवणे ।
णिव्वीयं पुरिमड्डं, आसणमायाममं कममो ॥३१॥

एगिदिय पुढवादी, जा पत्तेया वणस्सती होति ।
एतेसिं पंचण्ह वि, पिह पिह संघट्टणे विगती ॥१०६९॥
परियावियऽणागाढे, पुरिमड्डं गाढे होति भत्तट्ठं ।
उद्दवणे आयामं, एत्तो अणंतादिणं वोच्छं ॥१०७०॥३१॥

पुरिमादी खमणंतं, अणंतविगलिंदियाण पत्तेयं ।
पंचिंदियम्मि एक्कासणादि कल्लाणगमहेगं ॥३२॥

साहारणवणकाए, बिय तिय चउरिंदिए य विगलम्मि ।
एतेसि चउण्हं पी, पिह पिह संघट्टणे पुरिमं ॥१०७१॥
परिआविन अणागाढे, भत्तट्ठं गाढे होति आयामं ।
उद्दवणेऽभत्तट्ठं पंचिंदिविमोहिमं वोच्छं ॥१०७२॥
पंचिंदियसंघट्टे, एक्कासणयं तु होति णायव्वं ।
अणगाढे आयामं, परितावियए गाढे भत्तट्ठं ॥१०७३॥

उक्कोसे कल्लाणं, एगं चिय होंति तत्थ णायव्वं ।
पढमवए मोसेसा, पमायसहियस्स णायव्वा ॥१०७४॥३२॥

मोसादिसु मेहुणवज्जिएसु दव्वादिवत्थुभिण्णेसु ।
हीणे मज्झुक्कोसे, आमणआयामखमणाइं ॥३३॥

मोसाऽदत्तादाणं, परिग्गहो चेव होंति णातव्वो ।
एते मोसादिवया, मेहुणवज्जा मुणेतव्वा ॥१०७५॥
तत्थ मुसं चउभेदं, दव्वे खेत्ते य काल भावे य ।
तत्थ तिहा दव्वमुसं, जहण्ण मज्झे तहुक्कोसं ॥१०७६॥
एवं खेत्तमुसं पी, कालमुसा तह य होंति भावमुसं ।
हीणं मज्झुक्कोसं, सभेदभिण्णं मुणेतव्वं ॥१०७७॥
एवमदत्तपरिग्गह, दव्वादी चउह होंति णायव्वा ।
हीणा मज्झुक्कोसा, तिविहं पत्तेय पत्तेयं ॥१०७८॥
मोसम्मि चउब्भेदं, दव्वादी हीण मज्झ उक्कोसं ।
दव्वादीणं कमसो, इमं तु सोहिं पवक्खामि ॥१०७९॥
दव्वमुसे तु जहण्णे, भत्तेक्कं मज्झे होंति आयामं ।
उक्कोसम्मि चउत्थं, एवं खेत्तादिएसुं पि ॥१०८०॥
एवमदत्तपरिग्गह, दव्वादीसुं तु एस चेव गमो ।
हीणे मज्झुक्कोसे, आमण-आयाम-खमणाइं ॥१०८१॥
एव मुसावायादिसु, सोही भणिया समासतो एसा ।
एत्तो तु राइभत्ते, सोहिं वोच्छं समासेणं ॥१०८२॥३३॥

लेवाडयपरिवासे, अभत्तट्ठो सुक्कसण्णिहीए य ।
इतराय छट्ठभत्तं, अट्ठमगं सेस णिसिभत्ते ॥३४॥

लेवाडय कंठोत्तं, सुंठिबहेडादि अगयमादी वा ।
परिवासेन्ते एसि, सोही साहुस्स भत्तट्ठ ॥१०८३॥

इतरा य गिलाणम्मि, गुरुपच्चक्खाणेणं मुणेतव्वा ।
परिवासेंते गेलि. सोहो छट्ठं तु मासुम्मि ॥१०८४॥
णिसिभत्तं सेस तिविहं, दियगहियं राओभुत्त पढमं तु ।
राओगह दिवभुत्तं. गहभुंजणमुभयओ रातो ॥१०८५॥
तिविहंपि णिसिभत्तं, सोहो एत्थं तु अट्ठमं होति ।
तिविहम्मि वि पत्तेयं. एय समत्तं तु णिसिभत्तं ॥१०८६॥३४॥

उद्देसियचरिमतिए. कम्मे पासंडसघरमीसे य ।
बादरपाहुडियाए. सपच्चवायाहडे लोभे ॥३५॥

अच्छउ ता गाहत्थो, एतेसिं उग्गमादिअट्ठाणं ।
लक्खण आवत्ती दाणमेव वोच्छं समासेणं ॥१०८७॥
सोलस उग्गमदोसा, सोलस उप्पायणाए दोसा उ ।
दस एसणाए दोसा, संजोयणमादि पंचेव ॥१०८८॥
सो उग्गमो चतुद्धा, णामादी तत्थ दव्वसो होति ।
जोतिसतणोसहीणं, मेहरिणकरेणमादीणं ॥१०८९॥
अहवा वि लड्डुगादी. भावे तिविहुग्गमो मुणेतव्वो ।
दंसण णाण चरित्ते, चरित्तुग्गमेण एत्थं अहीगारो ॥१०९०॥
किं कारणं चरित्ते. अहिगारो एत्थ होति भणितो तु ?।
चोदग ! सुण चारित्ते. जे तु गुणा ते तु होन्ति इमे ॥१०९१॥
दंसणणाणप्पभवं, चरणं सुद्धं तु तम्मि तस्सुद्धी ।
चरणेण कम्मसुद्धी. उग्गमसुद्धी चरणसुद्धी ॥१०९२॥
पिंडोवहिसेज्जासु. जेण असुद्धासु चरण ण विसुज्झे ।
पिंडोवहिसेज्जासु, सुद्धासु चरणसुद्धी उ ॥१०९३॥
तो चरणसुद्धिहेतुं, पिंडस्स उ उग्गमेण अहिगारो ।
तस्स पुण उग्गमस्सा, सोलस दारा इमे होन्ति ॥१०९४॥
आहाकम्मुद्देसिय, पूतीकम्मे य मीसजाये य । षोडश उद्गमदोषाः
ठवणा पाहुडियाए, पाओयर कीत पामिच्चे ॥१०९५॥

परियट्टिए अभिहडे उब्भिण्णे मालोहडे इय ।
अच्छेज्जे अणिसट्टे, अज्झोयरए य मोक्खमे ॥१०९६॥
एते मोक्खस दारा, उद्दिट्ठमियाणि विवरणं वोच्छं ।
आधाकर्म एतेसि पढम आहा, तस्स इमे होंति णव दारा ॥१०९७॥
आहाकम्मियणामा, एगट्ठा कस्स वा वि किं वा वि ।
परपक्खे य सपक्खे, चउरो गहणे त आणादी ॥१०९८॥
तत्थ इमे णामा खलु, आहाकम्मस्स होन्ति चत्तारि ।
आह–अहेकम्मे या, अहयम्मे अत्तकम्मे य ॥१०९९॥
ओरालसरीराणं, उद्दवणऽइवायणं तु जस्सट्ठा ।
मणमाहित्ता कुव्वति, आहाकम्मं तयं वेन्ति ॥११००॥
ओरालग्गहणेणं, तिरिक्खमणुयाऽहवा सुहुमवज्जा ।
उद्दवणं उत्तामण, अतिवातविवज्जिया पीला ॥११०१॥
काय-वइ-मणा तिण्णि उ, अहवा देहायु-इंदिय-प्पाणा ।
सामित्त अवायाणे, होइऽतिवाओ उ करणम्मि ॥११०२॥
हिययम्मि समाहेउं, एगमणेगे व गाहगे जो तु ।
वहणं करेति दाता, कायाण तमाहकम्मं तु ॥११०३॥
जस्सट्ठा तं तु कतं, तं जो भुंजति सतं तु कायवहं ।
अणुमण्णइ आहेइ य, स कम्मबन्धं तमायाए ॥११०४॥
अवि य हु विवाहमङ्ग, भणितं भुंजतो आहकम्मं तु ।
पसिढिलबन्धादीया, पगडीओ करेति धणियादी ॥११०५॥
आहेति गतम् ॥
संजमठाणाणं कंडगाण लेस्साठितीविसेसाणं ।
संयमश्रेणिः भावं अहे करेती, तम्हा तु भवे अहेकम्मं ॥११०६॥
सं एगीभावम्मि, जम उवरम एगीभावउवरमणं ।
सम्म जमो वा संजमो, मण-वइ-कायाण जमणं तु ॥११०७॥

चिट्ठइ संजमो जहियं, तं होइ हु संजमस्स ठाणं तु ।
तं पुण चरित्तपज्जव, होन्ति अणंतेकठाणं तु ॥११०८॥
संजमठाणमसंखा, उ कंडगं कंडगा असंखा उ ।
हवंति उ लेसाठाणं ते तु असंखेज्ज जवमज्झं ॥११०९॥
तत्तो परिहायंता, लेसा कंडा य संजमट्ठाणा ।
परिसयाणमसंखा, लोगा उ हवंति ठाणाणं ॥१११०॥
एसा संजमसेढी, तत्थ विसुद्धोसु ठाणमाईसु ।
वट्टंतुक्कोसाऊसुरट्ठिनिजोगेसु होतूणं ॥११११॥
तं संजमहेकम्मं, हेट्ठिल्लेऽहिट्ठवेंति अप्पाणं ।
सुत्ते उदियमहे तृ , कप्पकप्पचिणोवचिणमाई (?) ॥१११२॥
बंधंति अहेभवाउं, पकरेंति अहोमुहाइं कम्माइं ।
घणकरणं तिव्वेण उ, भावेण चओ उवचओ तु ॥१११३।
तेसिं गुरुण उदएण अप्पयं दुग्गतीए पवडंतं ।
ण चएंति विहारेउं, अहेकम्मं भण्णए तम्हा ॥१११४॥
अहेकम्मे त्ति गतम ॥
अट्ठाए अणट्ठाए, छक्कायपमद्दणं तु जो कुणति ।
अणियाए य णियाए, वेन्ति तु दव्वाऽऽयहम्मं तो ॥१११५॥
जाणंतमजाणंतो, वट्टंति णिद्दिसिय ओहओ वा वि ।
जाणगमजाणए या, भणिता णिय अणिय होतेसा ॥१११६॥
दव्वायहम्मसेयं, भावाया तिण्णि णाणमाईणि ।
परपाणपाडणरतो, भावायं अप्पणो हणति ॥१११७॥
णिच्छयणयस्स चरणा-ऽऽयविघाये णाण-दंसणवहो वि ।
ववहारस्स उ चरणे, हयम्मि भयणा उ सेसाणं ॥१११८॥
आयाहम्मग एयं, एत्तो वोच्छामि अत्तकम्मं तु ।
जो परकम्मं अत्तीकरेति तं अत्तकम्मं तु ॥१११९॥

आहाकम्मपरिणयो, फासुयमवि संकिलिट्ठपरिणामो ।
आतियमाणो बज्झति, तं जाणसु अत्तकम्मं तु ॥११२०॥
परकम्ममत्तकम्मीकरेंति तं जो उ गिण्हिउं भुंजे ।
चोएति परकिरिया, कहण्णु अण्णत्थ संकमति ? ॥११२१॥
भण्णइ पमत्तउत्तं, जह विसमइयं तु मारगं होति ।
तह परकडे वि बंधो, परिणामवसेण जीयस्स ॥११२२॥
वेती परकडभोयिण, तो तुब्भ वि एव होति बंधो उ ।
जह अण्णत्थ पउत्ते, कूडे जो पडति सो बज्झे ॥११२३॥
गुरुगाह जो पमत्तो, जो य अदक्खो स बज्झए तत्थ ।
अपमत्तो ण वि बज्झति, तहेव दक्खे य जो होति ॥११२४॥
इय जो यु अप्पमत्तो, मणवायाकायजोगकरणेहिं ।
सो तु ण बज्झति णियमा, बज्झति इयरो परकडे वि ॥११२५॥
कामं सयं न कुव्वति, जाणंतो पुण तहावि तग्गाही ।
वड्ढेति तप्पसंगं, अगिण्हमाणो उ वारेति ॥११२६॥
तम्हा उ परकडम्मि वि, अत्तीकरणं तु होयऽसुद्धेहिं ।
मणमादीहि कहं पुण, अत्तिकरं ? भण्णति इमेहिं ॥११२७॥
पडिसेवण पडिसुणणा, संवासऽणुमोयणा चउण्हं पि ।
एएहिं पगारेहिं, अत्तिकरं तत्थिमे णाया ॥११२८॥
पडिसेवणाएँ तेणा, पडिसुणणाए य रायपुत्तो तु ।
संवासम्मि य पल्ली, अणुमोयणे रायदुट्ठो उ ॥११२९॥
आहाकम्मियणामा, एते चउरो समासतो भणिया ।
एगट्ठिताणि अहुणा, वोच्छामि समासतो चेव ॥११३०॥
एगट्ठ एगवंजण, एगट्ठं णाणवंजणं चेव ।
णाणट्ठ एगवंजण, णाणट्ठा णाणवंजणया ॥११३१॥
जह खीरं खीरं चिय, एगट्ठं एगवंजणं दिट्ठं ।
एगट्ठ णाणवंजण, दुद्ध पयो वालु खीरं च ॥११३२॥

णाणट्ठमेगवंजण, गोमहिसअजाइयाण खीरं ति ।
णाणट्ठ णाणवंजण, घडपडकडसगडरहमादी ॥११३३॥
एवमिहमाहकम्मं, आहाकम्मं ति पढमओ भंगो ।
आहा अहेकम्मादी, बितिओ सक्किन्द इव भंगो ॥११३४॥
ततितो भंगो तू आतकम्ममहकम्म पणगमादी य ।
आहाकम्म पडुच्चा, णियमा सुण्णो चउत्थो उ ॥११३५॥
इंदत्थं जह सद्दा, पुरंदरादी तु णातिवत्तंति ।
अह-आह-अत्तकम्मा, तहा अहे णातिवत्तंति ॥११३६॥
आहाकम्मेण अहे, करेति जं हणति पाणभूयाइं ।
जं तं आतियमाणो, परकम्मं अत्तणो कुणइ ॥११३७॥
एगट्ठितदारमिणं, अहुणा कम्म कडमाहकम्म भवे ? ।
भण्णति साहम्मिकडं, सो वाऽम्हा इमो होति ॥११३८॥
णामं ठवणा दविए, खेत्ते काले य पवयणे लिंगे ।
दंसण णाण चरित्ते, अभिग्गहे भावणाहि च ॥११३९॥
णामेणं साहम्मी, जाव उ कालेण सव्व बोधव्वा ।
पवयण लिंगेणं वा, साहम्मिय एत्थ चउभंगो ॥११४०॥
पवयणमणुस्सुयंते, दंसणमादी उ भावणा जाव ।
सव्वत्थ तु चउभंगा, जोएयव्वा जहाकमसो ॥११४१॥
एवं लिंगेणं पी, तह दंसणमादिएहिं चउभंगा ।
भइएसु उवरिमेसु, हेट्ठिल्लपयं तु छड्डेज्जा ॥११४२॥
एवं वुद्धीए तू, सव्वं वि जहक्कमेण जोएज्जा ।
चउभंग जाव चरिमो, अभिग्गहे भावणाहि च ॥११४३॥
पत्तेयबुद्धि णिण्हय, उवासए केवली य आसज्ज ।
खइयाइए य भावे, पडुच्च भंगे तु जोएज्जा ॥११४४॥
जत्थ तु ततिओ भंगो, ण तत्थ कप्पति तु सेसए भयणा ।
तित्थगरणिण्हओवासगादि कप्पे ण सेसाणं ॥११४५॥

कम्म त्ति जहुद्दिट्ठं, एरिस साहम्मियाण ण वि कप्पे ।
किं तो आहाकम्मं, असणाईयं इमं तं च ॥११४६॥
सालीमाई अगडे, फले य सुंठी य साइमं होति ।
तस्स कडणिट्ठियम्मि, सुद्धासुद्धे य चत्तारि ॥११४७॥ भंगा ।
कोद्दवरालगगामे, वसही रमणिज्ज भिक्ख सज्झाए ।
खेत्तपडिलेह संजय, सावयपुच्छुज्जुए कहणा ॥११४८॥
जुज्जति गणस्स खेत्तं, णवर गुरूणं ति णत्थि पायोग्गं ।
सालि त्ति कए रुवण, परिभायण णिययगेहेसु ॥११४९॥
वोलेंता ते व अण्णे वा, जाव तु किमियं ? ति कहिय सब्भावे ।
वज्जेन्ति एव णाए, अहवा अण्णं वयंती तु ॥११५०॥
एसऽसणे कम्मं तू, हवेज्ज कह पाणगे हवेज्जाहि ? ।
तह वि य साहु ण ठन्ती, सावगपुच्छा दगं लोणं ॥११५१॥
अह ताव सावयो तू, खणेज्ज महुरोदगं तहिं अगडं ।
अच्छंति य ढंकिएणं, जावाऽऽगय साहुणो तत्थ ॥११५२॥
एत्थ वि तहेव जाणए, वज्जण तह चेव होति णातव्वा ।
एवं खाइम सातिम, णेयव्व जहक्कमेणं तु ॥११५३॥
कक्कडिग अंबगा वा, दाडिम दक्खा व बीयपूरा वा ।
एमाइ खाइमं तू, साइम तह तिगडुआदीयं ॥११५४॥
किं आहागम्मं तो, एतं तं वण्णियं समासेणं ।
परपक्ख सपक्खे तो, अहुणा दारं अणुप्पत्तं ॥११५५॥
परपक्खो तु गिहत्थो, समणा समणी य होइ तु सपक्खो ।
एत्थ कडनिट्ठिएहिं, चउभंगो होइ तं वोच्छं ॥११५६॥
तस्स कड तस्स निट्ठिय, तस्स कडऽण्णस्स निट्ठियं चेव ।
अण्णकड तस्स निट्ठिय, अण्ण कडं निट्ठियऽण्णस्स ॥११५७॥
वाविता लूया मलिया, कंडित एगच्छड कडा जे तु ।
निच्छड निट्ठिय होन्ती, ते रद्धा दुगुणमहकम्मं ॥११५८॥

कडनिट्ठियाण लक्खणमिणमो तु समासतो मुणेतव्वं ।
फामुकडं रद्धं वा, णिट्ठियमितरं कडं होति ॥११५९॥
समणट्ठ वावियादी, जा दुलडा एय होति तस्स कडं ।
तस्सट्ठ निछडरद्धं, णिट्ठितमेसो पढमभंगो ॥११६०॥
समणट्ठ जाव दुलडा, णवरि य तुरिमऽट्ठ कारणुप्पण्णं ।
तेमऽट्ठ निछडरद्धा, विनिभंगो एस णातव्वो ॥११६१॥
जा दुलडा अत्तट्ठा, णवरि य साहु तु पाहुणा आया ।
तेसऽट्ठ कया निछडा, ततिभंगो एस णातव्वो ॥११६२॥
आयट्ठा जा दुलडा, आयट्ठा चेव निछडरद्धा य ।
एस चउत्थो भंगो, कतरं कप्पे ण कप्पइ वा ? ॥११६३॥
पढमततिए ण कप्पे, बितियचउत्था उ दोण्णि वी कप्पे ।
एमेव पाणगे वी, खातिम तह साइमे चेव ॥११६४॥
साहुणिमित्ता रद्धं, जाव ण फासुं कडं तु ताव कडं ।
फासुकड णिट्ठियं तू, चाउलधुवणादि पाणम्मि ॥११६५॥
फलमादि छिण्णछोडिय, फासुकडं णिट्ठितं मुणेतव्वं ।
एमेव साइमे वी, अल्लगमादी मुणेतव्वा ॥११६६॥
सव्वत्थ तु चतुभंगो, जोएअव्वो जहक्कमं होति ।
एत्थं तू परिहरणा, बिहि अविही सव्व बोद्धव्वा ॥११६७॥
छायं पि विवज्जेन्ती, केयी फलहेतुगादिवुत्तस्स ।
तं तु ण जुज्जति जम्हा, फलं पि कप्पं बितियभंगे ॥११६८॥
परपच्चइया छाया, ण वि सा रुक्खो व्व वड्ढिता कत्ता ।
णट्ठच्छाए य दुमे, कप्पइ एवं भणंतस्स ॥११६९॥
वड्ढति हायति छाया, तच्छिक्कं पूइयं पिव ण कप्पे ।
ण य आहाय सुविहिए, णिव्वत्तयती रवीछाया ॥११७०॥
अघणघणचारिगगणे, छाया णट्ठा दिया पुणो होति ।
कप्पति णिरायवे णाम, आयवे तं विवज्जेंतु ॥११७१॥

तम्हा ण एस दोसो, तु संभवे कम्मलक्खणविहूणो ।
तं पि य हु अतिगिणिज्जा, वज्जेमाणा अदोसिल्ला ॥११७२॥
परपक्ख सपक्खे वी, एसेयं वण्णियं समासेणं ।
चउरो त्ति दारसहुणा, वोच्छामि समासतो चेव ॥११७३॥
चउरो अतिक्कमे वतिकमे य अतियार तह अणायारा ।
आहाकम्मे एते, चउरो वि जहक्कमं जोए ॥११७४॥
तस्स पुण संभवो ऽऽ, आहाकम्मस्स कह उ होज्जाहि ? ।
णिदरिसणं जह भएए, सद्दा दट्ठेण सकयं ॥११७५॥
सहसड्ढादीएसुं, तेसु वि सड्ढा ततो समुप्पण्णा ।
अम्हे वि य साहूणं, करेमि भत्तं तु सविसेसं ॥११७६॥
सालीघयगुलगोरस, नवेसु वल्लीफलेसु जाएसु ।
दाणा अभिगमसड्ढी, आहाकम्मे निमंतणया ॥११७७॥
आमंतियपडिसुणणा, सव्वासु सुभो अतिक्कमो होति ।
पदभेयाइ वतिक्कमो, गहिए होई अइयारो ॥११७८॥
मुहछूढे अणायारो, केयी गिलियम्मि बेन्ति अणायारं ।
किं कारण ? छूढे वी, पुणरावत्ती कयाइ भवे ॥११७९॥
तो खेलमल्लगम्मी, णिग्गलइ ण एस पत्तोऽणायारं ।
गलियम्मि अणायारो, तस्स णियत्ती ततो णत्थि ॥११८०॥
सेसेहि णियत्तेज्जा, एग दुग तिगे य एत्थ दिट्ठंतो ।
जह तिहि आगास ठितो, पदेहि विणियत्तिओ हत्थी ॥११८१॥
चउरो गहणे एवं, अतिक्कमादी तु वण्णिया एते ।
आणादी चउरो वि य, दारं एत्तो पवक्खामि ॥११८२॥
आणं सव्वजिणाणं, गेण्हंतो तं अतिक्कमति लुद्धो ।
आणं च अतिक्कमंतो, कस्साऽऽएसा कुणति सेसं ? ॥११८३॥

एगेण कयमकज्जं, करेंति तप्पच्चया पुणो अण्णो ।
सायाबहुलपरंपर, वोच्छेओ संजमतवाणं ॥११८४॥
जो जहवायं ण कुणति, मिच्छादिट्ठी तओ हु को अण्णो ? ।
वड्ढेति य मिच्छत्तं, परस्स संकं जणेमाणो ॥११८५॥
दुविहा विराहणा खलु, संजमतो चेव तह य आयाए ।
आहाकम्मग्गहणे, तत्थ इमा संजमे होति ॥११८६॥
वड्ढेति तप्पसंगं, गेही य परस्स अप्पणो चेव ।
सजियं पि भिण्णदाढो, ण मुयति णिद्धंधसो पच्छा ॥११८७॥
खद्धे णिद्धे य रुया, सुत्ते हाणी तिगिच्छणे काया ।
पडियरगाण य हाणी, कुणति किलेसं च किस्संतो ॥११८८॥
पाएण दकिच्चेण य, आहाकम्मं तु भोगियं होति ।
एसा आतविराहणया, तम्हा तु तं ण भोत्तव्वं ॥११८९॥
पडिदारगाहा सम्मत्ता ॥

अभोज्जे गमणादी, पुच्छा दव्व काल देस भावे य ।
एव जयंते छलणा, दिट्ठंता तत्थिमे होंति ॥११९०॥
जह वंतादि अभोज्जं, जाव य चंदो य सूरउदयं च ।
उज्जाणा दोण्णि भवे, तत्तित्थरं सव्व वोद्धव्वं ॥११९१॥
जह ते दंसणकंखी, अपूरितिच्छा विणासिया रण्णा ।
दिट्ठ वितरंग मुक्का, एमेव इहं समोआरो ॥११९२॥
आहाकम्मं भुंजति, ण पडिक्कमए य तस्स ठाणस्स ।
एमेव अडति बोडो, लुक्कविलुक्को जह कवोडो ॥११९३॥
आहाकम्मद्दारं, एवमिणं मे समासतो कहितं ।
आवत्ती दाणं वा, विसोहिसेतेसिमं वोच्छं ॥११९४॥
आहाकम्मे चतुगुरु, आवत्ती दाण होयऽभत्तट्ठं ।
उद्देसियं पि दुविहं, ओहे य विभागओ चेव ॥११९५॥ औद्देशिकम्

ओहे मासलहुं तू, आवत्ती ठाण होंति पुरिमड्ढं ।
होन्ति विभागुद्देसे, मूलवत्थू इमे तिण्णि ॥११९६॥
उद्देसकडे कम्मे, एक्केक्क चउव्विहो भवे भेदो ।
कह होंति चउब्भेदो ?, इमाहि गाहाहिँ वोच्छामि ॥११९७॥
उद्देसियं समुद्देसियं च आदेसियं समाएसं ।
एमेव कडे चउरो, कम्मम्मि वि होंति चत्तारि ॥११९८॥
जावंतिगसुद्देसो, पासंडीणं भवे समुद्देसो ।
समणाणं आएसो, णिग्गंथाणं समाएसो ॥११९९॥
उद्देसियम्मि लहुओ, पत्तेयं होंति चतुसु ठाणेसु ।
एमेव कडे गुरुओ, कम्मादिस लहुग तिसु गुरुगा ॥१२००॥
थी (?) लहुमासा गुरुगा, चउगुरुगा तिण्णि तू मुणेतव्वा ।
तवकालेहिँ विसिट्ठा, ठाणं तु अतो पवक्खामि ॥१२०१॥
लहुमासे पुरिमड्ढं, गुरुमासे होंति एगभत्तं तु ।
चउलहुए आयामं, चउगुरुए होयऽभत्तं ॥१२०२॥
उद्देसिए त्ति गयं ।

पूतिकर्म पूतीकम्मं दुविहं, दव्वे भावे य होइ णायव्वं ।
दव्वम्मि छगणधम्मी, भावे दुविहं इमं होति ॥१२०३॥
सुहुमं व बादरं वा, दुविहेयं होति हू मुणेतव्वं ।
बादर पुणरवि दुविहं, उवगरणे भत्त-पाणे य ॥१२०४॥
इंधण गंधे धूमे, सुहुमेयं एत्थ णत्थि पइत्तं ।
चुल्लुक्खलियादीणं, उवगरणे पूतियं होति ॥१२०५॥
एवं मासलहुं तू, आवत्ती ठाण होति पुरिमड्ढं ।
डोए लोणे हिंगू, संकामण भत्तपूतीयं ॥१२०६॥
एत्थं मासगुरुं तू, आवत्ती ठाणमेगभत्तं तु ।
उवगरण भत्तपाणे, पूतिस्स उ लक्खणं वोच्छं ॥१२०७॥

सिज्झंतस्सुवगारं, मिद्धस्स करेंति वा वि जं दव्वं ।
तं उवगरणं भण्णति, चुल्लुक्खलिदव्विडोयादी ॥१२०८॥
संघट्टकया चुल्ली, उक्खलि डोए तहेय दव्वी य ।
सो होति आहकम्मो, पूतीकम्मं इमं होति ॥१२०९॥
संघियचिक्खल्लेणं, मयचुल्लोवरि इयाइ संठवणं ।
एसेव उक्खलीय वि, फड्डगमादी तु जं डोए ॥१२१०॥
एवं सतडोतीए, दव्वीए वा वि संघदारूणं ।
अग्गिल्लियं जदि लाए, गंडफलं वा वि एगतरं ॥१२११॥
उवगरणपूति भणितं, एत्तो वोच्छामि भत्तपूतिं तु ।
डाए लोणे हिंगू, संकामण फोडणं धूमे ॥१२१२॥
अत्तट्ठिय आयाणे, डागं लोणं व कम्म हिंगुं वा ।
तं भत्तपाणपूतिं, फोडणकण्णं व जं छुभइ ॥१२१३॥
संकामेउं कम्मं, तेणेव य भायणेण संकामे ।
जं सुद्धं तं पूति, अहवा रद्धं नहि होज्जा ॥१२१४॥
अंगारभूइ थाली, वेसण हेट्ठामुहीए जं धूमे ।
संघट्टकडे तम्मि उ, अत्तट्ठ करेन्ते पूतीयं ॥१२१५॥

पूति त्ति गयं ॥

मीसज्जायं तिविहं, जावंतिगमीस विनिय पासंडे । मिश्रजातम्
साहूमीसं ततियं, पच्छित्तं तेसि वोच्छामि ॥१२१६॥
पढमे चउलहुया तू, विति ततिते चउगुरू मुणेतव्वा ।
तवकालेहिं विसिट्ठा, चउगुरुगा होन्ति णायव्वा ॥१२१७॥
चउलहुए आयामं, चउगुरुए होति तु चउत्थं तु ।
मीसज्जातं भणितं, ठवणाभत्तं अतो वोच्छं ॥१२१८॥ स्थापना
ठवणाभत्तं दुविहं, इत्तरठवियं तहेव चिरठवियं ।
इत्तरठविए पणगं, चिरठविए होति मासलहुं ॥१२१९॥

पणगे णिव्विगई तू, लहुमासे दोण होंति पुरिमड्ढं ।
इत्तर चिरठविए या, समासतो लक्खणं वोच्छं ॥१२२०॥
संघाडग हिंडंते, परिवाडिठिएसु तु गेहेसु ।
एक्को दोसुवयोगं, करेति भिक्खाएँ गेहेसु ॥१२२१॥
खितिओ साणादीणं, देयुवओगं परे तइकम्मि ।
तेण परेण चउत्थे, उक्खित्ता इत्तरट्ठविया ॥१२२२॥
चतुथघरा तु परेणं, चिरठविया जाव पुव्वकोडी उ ।
एयं ठवियाऽभिहितं, एत्तो वोच्छामि पाहुडियं ॥१२२३॥
प्राभृतिका सा पाहुडिया दुविहा, सुहुमा तह बादरा य बोद्धव्वा ।
ओसक्कण उस्सक्के, एक्केक्का सा भवे दुविहा ॥१२२४॥
सुहुमाए लहुपणगं, आवत्ती दोण होंति णिव्विगति ।
चउगुरुगा बायराए, आवत्ती दोणऽभत्तट्ठं ॥१२२५॥
एत्थं सुहुमा तु इमा, जह काइ अगारि कत्तमाणी उ ।
भणिया तु चेडरूवेण देहि अम्मो ! मह भत्तं ॥१२२६॥
भणितोहितो त्ति होही. जाया ! कत्तामि ता इमं पेलुं ।
जइ तं सुणेति साहू, ण गच्छए तत्थ आरंभो ॥१२२७॥
अब्भुट्ठिया भणंती, तुज्झ मि देमि त्ति किं ति परिहरति ।
किह दाणि ण उट्ठिस्से ?, साहुपभावेण लब्भामो ॥१२२८॥
एवं णाऊण ततो, परिहरती एस होंति ओसक्का ।
उस्सक्कण कत्तंती, भणिता चेडेण दे भत्तं ॥१२२९॥
कत्तामि भणति पेलुं, तो ते दाहामि पुत्त ! मा रोव ।
सा य समत्ता पेलू, देही एत्ताहे सो भणति ॥१२३०॥
मा ताव झंख पुत्तय !, परिवाडीए इहेहिही साहू ।
एयट्ठमुट्ठिता ते, दाहं सोउं विवज्जेति ॥१२३१॥
अंगुलिए चालेउं, कड्ढति कप्पट्ठतो घरं जत्तो ।
किन्ति ? कहिए ण वच्चति,पाहुडिया एअ सुहुमा उ ॥१२३२॥

वायरपाहुडिया वि य, ओसक्कऽहिसक्कणे य दुविहा उ ।
कप्पट्ठगसंखडाइय, ओसरणेणं च णिद्देसो ॥१२३३॥
जह पुत्तविवाहदिणा, ओसरणातिच्छिए सुणिय सड्ढो ।
ओसक्के ओसरणं, संखडिपाहेणऽवट्ठी ॥१२३४॥
अप्पत्तम्मी ठवियं, ओसरणे होहिइ त्ति उस्सक्के ।
संपागडमितरं वा, करेंति उज्जूमणुज्जू वा ॥१२३५॥
मंगलहेतुं पुण्णट्ठया व ओसक्कें तं च उस्सक्के ।
किं कारणं ? ति पुट्ठो, सिट्ठं नाहे विवज्जेन्ति ॥१२३६॥
पाहुडिभत्तं भुंजति, ण पडिक्कमए य तस्स ठाणस्स ।
एमेव अडति बोडो लुक्कविलुक्को जह कवोडो ॥१२३७॥
पाहुडिया भणितेसा, एत्तो पायोवगरण वोच्छामि । प्रादुष्करणम्
पादु पयासणम्मी, अपगासपगासणं जं तु ॥१२३८॥
पायोकरणं दुविहं, पागडकरणं पगासकरणं च ।
पागडे मासलहुं तू, पगासकरणे उ चतुलहुगा ॥१२३९॥
लहुमासे पुरिमड्ढं, चतुलहुए दाण होति आयामं ।
पायोकरणं भणियं, कीतकडमयो तु वोच्छामि ॥१२४०॥ क्रीतकृतम्
कीतकडं पि य दुविहं, दव्वे भावे य दुविहमेक्केक्कं ।
आयपरकीयमेवं, पच्छित्तं तेसि वोच्छामि ॥१२४१॥
दव्वाय-परक्कीए, दुविहे वि चउलहू मुणेयव्वं ।
दाणं आयामं तू, भावम्मि अतो परं वोच्छं ॥१२४२॥
भावे तु आयकीयं, चउलहुगा एत्थ वी मुणेयव्वा ।
दाणं आयामं तू, भावे परकीय वोच्छामि ॥१२४३॥
मासलहुमिहावत्ती, दाणं पुण एत्थ होति पुरिमड्ढं ।
कीयकडेयं भणियं, पामिच्चमतो उ वोच्छामि ॥१२४४॥

प्रामित्यम् पामिच्चं पि य दुविहं, लोइय लोउत्तरं समासेणं ।
लोइए चतुलहुगा तू , आवत्ती दाणमायामं ॥१२४५॥
लोउत्तरे मासलहुं, दाणं पुण एत्थ होति पुरिमड्ढं ।
पामिच्चयं भणियं, परियट्टियमणमो वोच्छामि ॥१२४६॥
परावर्तितम् परियट्टियं पि दुविहं, लोइय लोउत्तरं समासेणं ।
लोइए चउलहुगा तू , आवत्ती दाणमायामं ॥१२४७॥
लोउत्तरे मासलहुं, आवत्ती दाण होति पुरिमड्ढं ।
अभ्याहृतम् परियट्टिय भणियं, अभिहडदारं अयो वोच्छं ॥१२४८॥
तं होति दुहाऽभिहडं, आचिण्णं चेव तह अणाइण्णं ।
आइण्ण णोणिसीहं, होति णिसीहं च दुविहं तु ॥१२४९॥
छण्ण णिसीहं भण्णति, पगडं पुण होति णोणिसीहं ति ।
एक्केक्कं परगामे, सगामे चेव बोद्धव्वं ॥१२५०॥
सगामाहड दुविहं, आइण्णं चेव होयऽणाइण्णं ।
अणइण्णे मासलहुं, दाणेत्थं होति पुरिमड्ढं ॥१२५१॥
परगामाहड दुविहं, सदेस परदेसओ य णायव्वं ।
एक्केक्कं पुण दुविहं, जलेण तह थलपहेणं च ॥१२५२॥
सपच्चवाय णिप्पच्चवाय पुण होति दुविहमेक्केक्कं ।
संजमआयविराहण, सपच्चवायम्मि जाणेज्जा ॥१२५३॥
परदेसआहडम्मी, सपच्चवायम्मि होन्ति चउगुरुगा ।
णिप्पच्चवाए लहुगा, दाणं एतेसि वोच्छामि ॥१२५४॥
चउगुरुगे अभत्तट्ठं, दाण • हं होति तू मुणेयव्वं ।
चउलहुए आयामं, एमेव य होति सदेसे ॥१२५५॥
उब्भिण्ण होति तिविहं, पिहितुब्भिण्णं कवाडउब्भिण्णं ।
जं तं पिहितुब्भिण्णं, तं दुविहं फासुगमफासुं ॥१२५६॥
फासुग छगणेणं तू, ददरएणं च एत्थ मासलहुं ।
तहियं पवहणदोसा, दाणं पुण एत्थ पुरिमड्ढं ॥१२५७॥

अप्फासुपुढविमादी, सच्चित्तेणं तु जं भवे लित्तं ।
तहियं उब्भिज्जंते, कायाण विराहणा इणमो ॥१२५८॥
सच्चित्तपुढविलित्तं, लेलु सिलं वा वि दाउमोलित्तं ।
सच्चित्तपुढविलेवो, चिरं पि उदगं अचिरलित्ते ॥१२५९॥
चिरलित्तपुढविकाओ, लिंपंते तु लिप्पमाणे आउवहो ।
जउमुद्दतावणग्गी, तेऊ वाऊ वि तत्थेव ॥१२६०॥
पणगबियाइ वणस्सति, तस कुंथुपिपीलिएवमादीहिं ।
एते ऊ लिप्पंते, इमे तु दोसा तु उब्भिन्ने ॥१२६१॥
परस्स तं देति मए व गेहे, तेल्लं व लोणं व घयं गुलं वा ।
उग्घाडितं तं तु करेयऽवस्सं, स विक्कयं तेण किणाति वऽण्णं॥
॥१२६२॥
दाणकयविक्कयादी, अहिगरणं होति अजयभावस्स ।
णिवडंति जे य तहियं, जीवा मुइंगमसमादी ॥१२६३॥
जेहेव कुंभादिसु पुव्वलित्ते, उब्भिज्जमाणम्मि वि कायघाओ ।
ओलिप्पमाणे वि तहेव घाओ, उब्भिण्णमेयं पिहियं पि वुत्तं
॥१२६४॥
आवत्ति दाणमेत्थं, ओहेणं चउलहू मुणेयव्वा ।
दाणं आदाणं तू, विभागओ कायणिप्फण्णं ॥१२६५॥
एमेव कवाडम्मि वि, कायवहो होइ ऊ मुणेयव्वो ।
उप्पाडिय पिहिज्जंते, संचिमेत्ता जंतमाईसु ॥१२६६॥
घरकोइलसंचारा, आवत्तण पेढियाए हिट्ठुवरिं ।
णिन्ते ठिते य अन्तो, डिंभादीपेल्लणे दोसा ॥१२६७॥
एत्थ वि चउलहुगा तू, ओहेणं दाणमेत्थमायाणं ।
होति विभागेणं पुण, पुढवादीकायणिप्फण्णं ॥१२६८॥
उब्भिण्णेयं भणियं, अहुणा मालोहडं पवक्खामि ।
तं तिविहं उड्ढमहे, तिरियं मालोहडं चेव ॥१२६९॥　मालाहृतम्

उड्ड दुभूमादीयं, अह उड्डियकोट्टयाइयं होति ।
तिरि अद्धमालगादी, हत्थपमाराउ जं गिण्हे ॥१२७०॥
सव्वं पि य तं दुविहं, जहण्ण उक्कोसयं च बोद्धव्वं ।
अग्गपएहि जहण्णं, तव्विवरीयं ति उक्कोसं ॥१२७१॥
मालोहड उक्कोसे, आवत्ती चउलहू मुणेतव्वा ।
ठाणं आयामं तू, जहण्णमालोहडंमियाणि ॥१२७२॥
एत्थ तु मासलहुं तू, आवत्ती ठाण होति पुरिमड्डं ।
इय मालोहड भणितं, अच्छेज्जं अहुण वोच्छामि ॥१२७३॥
तिविहं पुण अच्छेज्जं, पभू य सामी य तेणए चेव ।
एक्केक्के चतुलहुगा, ठाणं पुण एत्थमायामं ॥१२७४॥
अणिसिट्टं पि य तिविहं, साहारण चोल्लए य जड्डे य ।
तिविहे वि य अणिसट्टे, चउलहुगा ठाणमायामं ॥१२७५॥
साहारणमणिसट्टं, दाइयमादीण जं तु होज्जाहि ।
खीरं आपण संखडि, दिट्टंतो गोट्टिभत्तेणं ॥१२७६॥
सो चोल्लगो वि दुविहो, छिण्णमछिण्णो समासतो होति ।
परिछिण्णं चिय दिज्जति, एसो छिण्णो मुणेतव्वो ॥१२७७॥
अच्छिण्णपरिमाणो, सो वि णिसट्टो तहेव अणिसट्टो ।
णिसट्टो तेसिं चिय, णेतूण समप्पितो जो तु ॥१२७८॥
आणेति भुत्तसेसं, जं गहियं एय होति अणिसट्टं ।
छिण्णम्मि चोल्लगम्मो, कप्पति घेत्तुं णिसट्टेयं ॥१२७९॥
अणिसट्टमणुण्णायं, कप्पति घेत्तुं तहेव अदिट्टं ।
चोल्लग अणिसट्टेयं, जड्डणिसट्ठं अतो वोच्छं ॥१२८०॥
रायकुलातो भत्तं, णीयं जड्डस्स तं ण कप्पति तु ।
णिवपिंडमंतराया, अदिण्णगहणादिदोसा य ॥१२८१॥

जड्डो व पन्तोसगतो, परिपाडे वमहिमादि भंजिज्जा ।
डोंबस्स संतिओ वि हु, अहिट्ठो कप्पति घेत्तुं ॥१२८२॥

अणिसट्ठ भणियमेयं, एत्तो अज्झोयरं पवक्खामि ।
अहियं उदरं अज्झोयरो तु जं सगिहमेगम्मि ॥१२८३॥

अहिगं तु तंदुलादी, छुब्भति अज्झोयरो उ सो तिविहो ।
जावंतिय पासंडे, साहू अज्झोयरे चेव ॥१२८४॥

जावंतियम्मि लहुगो, आवत्ती दाणमेत्थ पुरिमड्ढं ।
पासंडी साहूण य, मासगुरू दाण भत्तट्ठं ॥१२८५॥

एसो अज्झोयरओ, सोलस वी उग्गमस्स दोसेते ।
णव कोडीउ भवंतिह, किं भणियं होति कोडि ? त्ति॥१२८६॥

कोडिज्जंते जम्हा, बहवो दोसा उ सहियए गच्छे ।
कोडि त्ति तेण भण्णति, णव कोडीओ इमा ताओ ॥१२८७॥

हणण हणावण अणुमोदणं च पयणं पयावणऽणुमोया ।
किणण किणावण अणुमोयणं च कोडीउ णव एया ॥१२८८॥

णव चेव अट्ठारसगं, सत्तावीसा तहेव चउपण्णा ।
णउती दो चेव सया, तु सत्तरा होन्ति कोडीणं ॥१२८९॥

ता चेव य णव कोडी, रागद्दोसेहि गुणिय अट्ठरस ।
अण्णाण मिच्छ अविरति.तिहिं गुणिए सत्तवीसा तु ॥१२९०॥

पुढवादीछस्सु संजय. छहिं गुणिया होति एस चतुपण्णा ।
खंतीमादीदसहिं उ. गुणिया णउती तु बोद्धव्या ॥१२९१॥

णउती तिहिं गुणिया तू. दंसणणाणेहिं तह चरित्तेणं ।
सत दोण्णि होन्ति सयरा. कोडीणं एस वित्थारो ॥१२९२॥

संखेवेण दुहा ऊ. उग्गमकोडी विसोहिकोडी य ।
उग्गमकोडी छब्बिह, विसोहिकोडी अणेगविहा ॥१२९३॥

हणणनियं पयणनियं, उग्गमकोडी तु छव्विहा एसा ।
अहवा वि इमा छव्विह, उग्गमकोडी मुणेयव्वा ॥१२९४॥
आहाकम्मुद्देसिय, चरिमतियं पूति मीसजायं च ।
बादरपाहुडिया वि य, अज्झोयरए य चरिमदुगे ॥१२९५॥
एसा विसोहिकोडी, छव्विहभेया समासतोऽभिहिता ।
एत्तो छद्धा सुद्धं, वोच्छामी आणुपुव्वीए ॥१२९६॥
उग्गमकोडी अवयव, लेवालेवे य अकयकप्पे या ।
कंजिय आयामे चाउलोयसंसट्टपूती य ॥१२९७॥
सुक्केण वि जं छिक्कं, असुइण तं धोव्वए जहा लोओ ।
इय सुक्केण वि छिक्कं, धोवइ कम्मेण भाणं तु ॥१२९८॥
लेवालेवं त्ति जं वुत्तं, जं पि दव्वमलेवडं ।
तं पि घेत्तुं ण कप्पेति, तक्कादी किमु लेवडं ? ॥१२९९॥
कंजियमादीगहणं, कम्हा तु कतं तु ? भण्णती सुणसु ।
साहुस्स उ आहेतुं, जं कीरइ आहकम्मं तं ॥१३००॥
इय णाउमाह कोयी, साहुणिमित्ता य आयणो उ कतो ।
ण उ कंजियमादीणि, तो वज्जो ओयणो एगो ॥१३०१॥
ण उ कंजियमादीणि, तो तग्गहणे कते तमेवं तु ।
जदि वि ण दिट्ठा आहा, ओदणमट्टा तह वि वज्जे ॥१३०२॥
सेसा विसोहिकोडी, दवितगमादी तु जइ वऽणाभोगा ।
गहिता हवेज्ज छुद्धा, अण्णम्मी भत्तपाणम्मि ॥१३०३॥
ताहे तु जहासत्ति, विगिंचितव्वं तमण्णपाणं तु ।
दव्वादिक्कमेणं तू, इमेण वोच्छं समासेणं ॥१३०४॥
दव्वे तं चिय दव्वं, खेत्त पदेसेसु जेसु तं पडियं ।
काले अकालहीणं, जावऽण्णा भिक्ख णऽक्कमति ॥१३०५॥
भावे अरत्तदुट्ठो, असढो जं पासती तगं छड्डे ।

अणलक्खियमीसदव्वे, सव्वविवेगोऽवयवे सुद्धो ॥१३०६॥
अह पुण ण संथरेज्जा, ताहे परिठावणा तु तम्मत्तं ।
इत्थं चउभंगो तू, सुक्खोल्लणिवायतो इणमो ॥१३०७॥
सुक्खे सुक्खं पडियं, सुक्खे उल्लं तु उल्ले सुक्खं तु ।
उल्ले उल्लं च तहा, एस चउत्थो भवे भंगो ॥१३०८
सुक्खे सुक्खं पडियं, पढमगभंगो विगिंचति सुहं तु ।
वितियम्मि दवं छोढुं, गालेति दवं करं दाउं ॥१३०९॥
ततियम्मि करं छोढुं, उल्लिप्पइ ओदणादि जं तरति ।
चरिमे सव्वविवेगो, दुल्लभदव्वे वा वि तम्मत्तं ॥१३१०॥
एव विगिंचितऽसढो, जेसु पदेसुं तु गेज्झए साहू ।
मायावी ण वि सुज्झे, तम्हा असढेण होयव्वं ॥१३११॥
एवं गवेसणाए, उग्गमदोसे समासतो भणितं ।
उप्पायणमहुणा तू, समासओ हं पवक्खामि ॥१३१२॥
सोलस उग्गमदोसे, गिहिणो उ समुट्ठिए वियाणाहि ।
उप्पायणाए दोसे, साहूतु समुट्ठिए जाण ॥१३१३॥
णामं ठवणा दविए, भावे उप्पायणा मुणेयव्वा ।
दव्वे सचित्तादितिविहाण, चित्ते दुपयादि तिविह इमा ॥१३१४॥
आयासुयमादीहिं, सच्चित्त-तुरंगवीयमादीसु ।
सुय-आस-दुमादीणं, उप्पायणया तु सच्चित्ता ॥१३१५॥
कणग-रययाइयाणं, जहद्धधातुविहिता तु अच्चिता ।
मीसा उ सभंडाणं, दुपया तुप्पायणा दव्वे ॥१३१६॥
भावे पसत्थ इयरा, कोहादुप्पायणा तु अपसत्था ।
कोहादिजुया धायादिणं च णाणादि तु पसत्था ॥१३१७॥
अपसत्थियभावुप्पायणाए एत्थं तु होति अहिगारो ।
सा सोलसहा तु इमा, धायादीया मुणेयव्वा ॥१३१८॥

षोडश उत्पादनादोषाः धाती दूती णिमित्ते, आजीव वणीमए तिगिच्छा य।
कोहे माणे माया, लोभे य हवंति दस एते ॥१३१९॥
पुव्विं-पच्छासंथव, विज्जा मंते य चुण्ण जोए य।
उप्पायणाएँ दोसा, सोलसमे मूलकम्मे य ॥१३२०॥
धात्रीदोषः धारयति धीयए वा, धयंति वा तमिति तेण धाती तु।
जहविभवं आसि पुरा, खीराई पंच धातीओ ॥१३२१॥
पञ्च धात्र्यः खीरे य मज्जणे मंडणे य कीलावणंकधाती य।
धाइत्तं कुणमाणो, एगयरं धातिपिंडो तु ॥१३२२॥
तं दुविहं धातित्तं, करणे कारवणे य बोद्धव्वं।
तं पुण दारगमादी, पडुच्च धाति व्व कुज्जाहि ॥१३२३॥
पंचविह धातिपिंडे, आवत्ती चउलहू मुणेयव्वा।
दाणं आयामं तू, दूतीपिंडं अतो वोच्छं ॥१३२४॥
सग्गाम परग्गामे, दुविहा दूती तु होति णायव्वा।
एक्केक्का वि य दुविहा, पागड छण्णा य णायव्वा ॥१३२५॥
पागड णिस्संको च्चिय, अप्पाहेन्तो व भणति इयरो वा।
सेज्जातरग्धंतिया तू, धूता वा अण्णगामम्मि ॥१३२६॥
भिक्खादी वच्चंतो, अप्पाहणि णेति खंतियाईणं।
सा ते अमुगं साया, सो व पिया पागडं भणति ॥१३२७॥
छण्णा पुणाइ दुविहा, दूती एत्थं तु होति णायव्वा।
लोउत्तरं तत्थेगा, बितिया पुण उभयपक्खे वि ॥१३२८॥
लोउत्तर संघाडग, संकंतो सावछण्णवयणेहिं।
कह पुण छण्णं ? सेज्जायरीय अप्पाहिओ गंतुं ॥१३२९॥
संघाडपच्चयट्ठा, बेती दूति त्ति अम्ह ण वि कप्पे।
अविकोविया सुया ते, जा वेइ इमं भणसु खंती ॥१३३०॥
सा वि य भणती होतू, वारिज्जिहिती अयाणिया सा उ।

लोउत्तरछण्णेमा, उभयच्छण्णं अतो वोच्छं ॥१३३१॥
जामाइनिन्थजत्तागतस्स उत्ताडिपोट्टेण कतं ।
सो आगतो त्ति धूया, उभयच्छण्णं इमं भणति ॥१३३२॥
एव भणेज्जहि खंतो, तं किर तह चेव चिंतियं जं तु ।
जह ण वि संघाडो मे, अण्णो व वियाणति कोति ॥१३३३॥
उभयच्छण्णा एसा, सग्गामे अभिहिया भवे दूती ।
एमेव परग्गामे, दुह दूती कह पुण हवेज्जा ? ॥१३३४॥
गामाण दोण्ह वेरं, सेज्जायरिधूय तत्थ परगामे ।
सामत्थं गामस्स य, जह पयं हणिमो परगामं ॥१३३५॥
खंतो तु तत्थ पच्छा, भिक्खायरियाए तो तु सेज्जतरी ।
अप्पाहेती खंतं, मम धूय भणेज्जस एयं ॥१३३६॥
जह गामो पडिउकामो, सा उ भणेज्जासु मा कुण पमायं ।
तीय कहियं तु तस्सा, तेण वि गामस्स तं कहियं ॥१३३७॥
ते य ठिय एगपासे, इतरे पडिता कतं तहिं जुद्धं ।
सेज्जातरिपति-पुत्ता, जामाता चेव वहिओ उ ॥१३३८॥
बेति जणो केणेयं, कहियं ? ति बेति सेज्जयरी ।
जामाति-पुत्त-पतिमारएण खंतेण मे सिट्ठं ॥१३३९॥
जम्हा एते दोसा, दूतित्तं खु ण कप्पती तम्हा ।
दूतीपिंडे चउलहु, आवत्ती ठाणमायाए ॥१३४०॥
णियमा तिकालविसयम्मि णिमित्ते छव्विहे भवे दोसा ।
सज्जं तु वट्टमाणो, आतुभए तत्थिमं णातं ॥१३४१॥
आकंपिया णिमित्तेण भोइणी कणता तु लिंगीणं ।
भोइयचिरगतपुच्छा, केवतिकालेण एज्जाहि ? ॥१३४२॥
कल्लं चिय एति तो, इयरी पडिभणति पच्चयो को उ ? ।
तुह गुज्झदेस तिलओ, सुविणातो पच्चए कहए ॥१३४३॥

तीय कयं आउत्तं, पंमवित्रिओ परिजणो य पच्चोणी ।
इतरो त्रि अविदिओ च्चिय, पवित्रिमिस्सं भोइओ चिन्ते ॥१३४४॥
परवित्तंना मित्तं, दिट्ठो उवणिग्गओ य परिवग्गो ।
कह तुब्भे णायं ? नी, पंमवित्रिआ भोतिणीए तु ॥१३४५॥
पुट्ठाय आदिअत्तणं, नीय य मिट्ठं सलाहमाणीए ।
समणे नीय भविस्सं, जाणइ निलओ य णे मट्ठो ॥१३४६॥
कोवो वलवागब्भं, च पुच्छितो पंचपुण्डमाहंसु ।
फालण दिट्ठो जदि णेव तो नुहं अवितह कतेवं ॥१३४७॥
तम्हा ण वागरज्जा, णिमित्तपिंडम्म वण्णिओ तु मए ।
तीतणिमित्ते चउलहु, आवत्ती ठाणमायामं ॥१३४८॥
पडुपण्णऽणागए या, चउगुरुगा ठाण होयऽभत्तट्ठं ।
आजीवपिण्डमेत्तो, समासओ हं पवक्खामि ॥१३४९॥

आजीवदोषः जाती कुल गण कम्मे, सिप्पे आजीवणा उ पंचविहा ।
सूयाए असूयाए, व कहेइ अप्पाणमेक्केक्के ॥१३५०॥
जाती कुल गण कम्मे, सिप्पे आजीवणा तु पंचविहा ।
एक्केक्के चतुलहुगा, आवत्ती ठाणमायामं ॥१३५१॥
जाती माहणमादी, मातिसमुत्था व होति वोधव्वा ।
तहियं सूयाए तु, जाणावेमेहि अप्पाणं ॥१३५२॥
होमाइवितहकरणे, णज्जति जह सोत्तियस्स पुत्तो त्ति ।
वसितो वेस गुरुकुले, आयरियगुणे व सूएति ॥१३५३॥
सम्ममसम्मा किरिया, अणेण ऊणाहिया व विवरीया ।
समिहा-मंता-ऽऽहुति-ठाण-जाय-काले य घोसादी ॥१३५४॥
वेति फुडं चिय सुकयं, असोहणं वा वि ते कतमितं ति ।
तहितं भद्दगपंता, दोसा इणमो भवंतो तु ॥१३५५॥
भद्दो अम्ह सपक्खो, एस त्ती भिक्खु देज्जहेयस्स ।

पंतो ओभामेती, मुहमंगल्लि कुणति भिक्खट्ठा ॥१३५६॥
उग्गाईयं तु कुलं, पितुवंसादि व्व तत्थ वि तहेव ।
मल्लमरस्स तमादिण, जाएई मंडलपवेसं ॥१३५७॥
देउलदरिसण-भासाउवणयणे मण्डवाइ सएति ।
जंतुप्पीलणमादि तु, कम्मं तुण्णादियं सिप्पं ॥१३५८॥
अहवा जं सिक्खिज्जइ, आयरितुवदेसतो तयं सिप्पं ।
जं कीरतो सयं तु, तं कम्मं तेसु सव्वेसु ॥१३५९॥
कत्तरिपयोयणट्ठा, तत्थ वहुवित्थरेसु तह चेव ।
कम्मेसु य सिप्पेसु य, सम्मसम्मेसु गतिअतरा ॥१३६०॥
सव्वेसु भद्दपंता, णियमा दोसा हवंति विण्णेया ।
आजीवगपिंडेसो, एत्तो तु वणीमगं वोच्छं ॥१३६१॥
किं भणियं वणीमे ? त्ति, भण्णति वणि जायणम्मि धातू तु । वनीपकदोषः
वणिमगो पायप्पाणं, वणिमो त्ती भण्णए तम्हा ॥१३६२॥
ते पंचहा वणीमग, जायणवित्ती तु होन्ति बोद्धव्वा ।
समणा माहण किवणे, अतिही साणा य पंचमया ॥१३६३॥
समणे माहण किवणे, अतिही साणे य जाण पंचमु त्ति ।
पत्तेयं चउलहुगा, आवत्ती दाणमायासं ॥१३६४॥
सयमादिवच्छगं पिव, वत्तेति आहारमादिलोभेणं ।
अप्पाण समण-माहण-किमिणा-ऽतिहि-साणभत्तेसु ॥१३६५॥
णिग्गंथ सक्क तावस, गेरुय आजीव पंचहा समणा ।
तेसिं परिएसणाए, लोभेण वणेइ को अप्पं ? ॥१३६६॥
तच्चण्णियादि दट्ठुं, भुंजंते दातु पीति अणुकूलं ।
साहु तुमं विप्प ! कयं, दाउं जं देसि एतेसिं ॥१३६७॥
भुंजंति चित्तकम्मट्ठिय व्व कारुणिय दाणरुइणो वा ।
अवि कामगद्दभेसु वि, ण वि णासइ किं पुण जतीसु ? ॥१३६८॥

मिच्छत्तथिरीकरणं, उग्गमदोसा य ते पुण करेज्जा ।
चडुकारऽदिण्णदाणा, पच्चत्थिग मा पुणो एंतु ॥१३६९॥
एमेव माहणेसु वि, दिज्जंतं दिस्स बेति अणुकूलं ।
दोण्हं भणियं दाणं, समणाणं माहणाणं च ॥१३७०॥
लोगाणुग्गहकारिसु, भूमीदेवेसु बहुफलं दाणं ।
अवि णाम बंभबंधुसु, किं पुण छक्कम्मणिरएसु ? ॥१३७१॥
किमणा उ कुट्ठि-कर-पाय-अच्छिमादीसु जुंगिया जे तु ।
दट्ठूण तेसि देन्तं, तस्स अणुकूलं इमं भणति ॥१३७२॥
किमणेसु दुब्बलेसु य, अबंधवा-ऽऽयंक-जुंगियंगेसु ।
पूयाहिज्जे लोए, दाणपडायं हरति देन्तो ॥१३७३॥
ते च्चिय एत्थ वि दोसा, कोइ पुण देति दाणमतिहीणं ।
तत्थ वि अणुप्पयं तू, दाणपतिस्सा इमं भणति ॥१३७४॥
पाएण देंति लोगो, उवगारी परिचिए व झुसिए वा ।
जो पुण अद्धाखिण्णं, अतिहिं पूएति तं दाणं ॥१३७५॥
कोइ पुण साणभत्तो, भत्तं साणादियाण दिज्जंतं ।
तस्स य पियं ति भासति, तुससेगो जाणसी दाउं ॥१३७६॥
अवि णाम होज्ज सुलभो, गोणादीणं तणादि आहारो ।
छिच्छिक्कारहयाणं, ण य सुलभो होति सुणयाणं ॥१३७७॥
केलासभवणा एते, आगया गुज्झगा महिं ।
चरंति जक्खरूवेण, पूयापूय हियाहिय ॥१३७८॥
पूयंति पूयणिज्जा, पूयाए हियाय आगया इहइं ।
लोगस्स हिता एते, पूइय अहवा हिया होन्ति ॥१३७९॥
अहवा वि पूयपूया, हिताहिता पूतिता हिता होन्ति ।
अपूतिता य अहिता, तम्हा खलु पूयणिज्जेते ॥१३८०॥
एमादी अणुकूले, भणिते सव्वेसि माहणाईणं ।

दाना चिंतेति ततो, मज्झत्थो एस समणो त्ति ॥१३८१॥
एतेण मज्झ भावो, विद्धो लोए पणामहउजम्मि ।
एक्केक्के पुव्वुत्ता, भद्दग-पंताइया दोसा ॥१३८२॥
दाणं ण होति अफलं, पत्तमपत्ते य सण्णिउज्जंतं ।
इय विभणिए वि दोसा, पसंमिमो किं पुण अपत्ते ? ॥१३८३॥
वणिमगपिंडो भणितो, एत्तो वोच्छं तिगिच्छपिंडं तु ।　　तिकित्सा-पिण्डः
सा दुविहा तु तिगिच्छा, सुहुमा तह बायरा चेव ॥१३८४॥
सुहुमाए मासलहुं, आवत्ती दाण होति पुरिमड्ढं ।
बादरतेगिच्छाए, चउलहुगा दाणमायामं ॥१३८५॥
भिक्खादिगतं संतं, पुच्छति रोगी तु ओसहं किंचि ।
भणइ किमहं वेज्जो ?, पढमतिगिच्छा भवे एसा ॥१३८६॥
वेज्जो त्ति पुच्छियव्वो, अन्थावत्तीए सूतियं एयं ।
अबुहाण बोहणं वा, अयाणमाणाण कतमेतं ॥१३८७॥
वेंति व एरिस दुक्खं, असुएणं ओसहेण पउणं मे ।
सहसुप्पइयं च रुयं, वारेमो अट्ठमादीहिं ॥१३८८॥
एसा वितिय तिगिच्छा, दो वेयाओ तु सुहुमतेगिच्छं ।
बादरतेगिच्छं पुण, सतमेव करेंति वेज्जत्तं ॥१३८९॥
संसोहण संसमणं, णिदाणपरिवज्जणं च जं जत्थ ।
आगंतुधातुखोभे, व आमए कुणति किरियं तु ॥१३९०॥
अस्संजयतेगिच्छे, कीरंते तह य सुहुमकरणम्मि ।
तद्दियं तु अणेगविहा, दोसा इणमो पसज्जंति ॥१३९१॥
अस्संजमजोगाणं, पसंजणं कायघाओ अयगोलो ।
दुब्बलवग्घाहरणं, अच्चुदए गिण्हणुड्डाहो ॥१३९२॥
जम्हा एते दोसा, तम्हा कायव्विया ण हु तिगिच्छा ।दारं।
भणितो तिगिंच्छिपिंडो, एत्तो कोहादि वोच्छामि ॥१३९३॥　　क्रोधादयो दोषाः

कोहादीणं कमसो, आहरणा होन्तिमे समासेणं ।
हत्थप्पं गिरिफुल्लिय, रायगिहं चेव चंपा य ॥१३९४॥

क्रोधे क्षपकः णगरम्मि हत्थकप्पे, करडुगभत्ते उ खमओ दिट्ठंतो ।
कोसलदेसे गिरिफुल्लिगामे वणकोट्ठकारम्मि ॥१३९५॥

माने क्षुल्लकः माहूण ससुल्लावे, को णु हु अज्जं पए तु माहूणं ।
आणेज्ज इट्टगातो ?, खुड्डाऽऽह तहिं अहं आणे ॥१३९६॥
घत-गुलसंजुत्ता वि य, जह आणिय इट्टगातु खुड्डेणं ।
सेडंगुलिमादीहिं, णाएहि एत्थ भत्तट्ठं ॥१३९७॥

मायायामाषाढभूतिः रायगिहे धम्मरुयी, असाढभूती तु खुड्डओ तस्स ।
रायणडगेहपविसण, संभोइय मोदए लंभो ॥१३९८॥
आयरिय उवज्झाए, संघाडग अप्पयस्स अट्ठाए ।
भुज्जो भुज्जो पविसति, काण-कुणी-खुज्जरूवेहिं ॥१३९९॥
उवरितलत्थो य णडो, पासति चिंतेति बुद्धिमं मुट्ठु ।
होज्ज णडो सारिक्खो, उवायओ एस घेत्तव्वो ॥१४००॥
चिंतिय उवायमेयं, वाहरिया देमि मोदए बहवे ।
भणिओ य तओ एज्जसु, दिणे दिणे जाहे कज्जं तु ॥१४०१॥
धूयदुगं संदिसती, हास-खेड्ड-परिहास-संफासे ।
एतेण समं कुव्वह, जह भज्जति एस अचिरेणं ॥१४०२॥
जदि णामं गिण्हेज्जा, तो बेज्जह सुयसु एय पव्वज्जं ।
ताहि तहकय खुभितो, रयहरणं लिंग सुयसु त्ति ॥१४०३॥
गुरु सिट्ठ मोत्तुमातो, दिण्णा बीयाय भणिय णेणं च ।
एसुत्तमपगतीओ, जत्तेणं उवचरेज्जाह ॥१४०४॥
रायगिहे य कयायी, णिम्महिलं णाडगं णडाऽऽगच्छी ।
ताव विरहम्मि मत्ता, उवरिगिहे दो वि पासुत्ता ॥१४०५॥
वाघाएण पविट्ठो, दिट्ठ विचेला विरागमावण्णो ।
आयरियगुरुसमीवं, पट्ठित दिट्ठो णडेणं च ॥१४०६॥

इंगितणाए भूयाखरंट पेसियय जीवणं देहि ।
देमि त्ति रट्ठपालं, णाडग णच्चीय कुसुमपुरे ॥१४०७॥
कडगादिअत्थदाणं, बहुपडिनं तत्थ(नच्च)गम्मि णच्चंते ।
भरहो य वणादीया, भरहिट्ठी तत्थ य णिबद्धा ॥१४०८॥
इक्खागवंस भरहो, आयंसघरे य केवलालोओ ।
हत्थे गहिओ मा कुण, किं भरहो णियत्तो ? पच्चाह ॥१४०९॥
ण हु तं पडिक्खवउ एवं, वेलंबो होति जति णियत्तामि ।
पंच सता तेण समं, पव्वइता णाडए डहणं ॥१४१०॥
एमादि मायपिंडो, ण कप्पती णवरि कारणे कप्पे ।
गेलण्ण-खमग-पाहुण-थेरादट्ठमादीसु ॥१४११॥
मायापिंडो भणितो (दारं), एत्तो वोच्छामि लोहपिंडं तु ।
सो लोहपिंडमादिसु, सव्वत्थऽणुपाति अहव इमो ॥१४१२॥ लोभे सिंहकेसरकः क्षपकः
लब्भंतं पि ण गिण्हति, अण्णं अमुगं ति अज्ज घेच्छामि ।
भद्दरसं ति व काउं, गिण्हति खद्धं सिणिद्धादी ॥१४१३॥
तत्थोदाहरणमिणं, चंपाए छणम्मि को वि खमतो तु ।
गेण्हति अभिग्गहं तु, सीहकेसरमोदए घेच्छं ॥१४१४॥
भिक्ख पविट्ठो य ततो, दाहिंते अण्ण लब्भमाणं पि ।
सीहकेसरलद्धंतो, संकिलिस्सति भावतो अह सो ॥१४१५॥
सीहकेसरगतचित्तो, विसरिसचित्तो य धम्मलाभो त्ति ।
वेइ सीहकेसरए, सूरत्थमिए वि हिंडइ तु ॥१४१६॥
सड्ढऽड्ढरत्त केसरभायणभरणं च पुच्छ पुरिमड्ढे ।
उवओग चन्दजोयण, साहु त्ति विगिंचणे णाणं ॥१४१७॥
कोहादीणं कमसो, एसेते वण्णिया उ आहरणा ।
एतेसिं चिय कमसो, आवत्ती दाण वोच्छामि ॥१४१८॥
कोहे माणे चतुलहु, आवत्ती दाण होइ आयामं ।
मायाए मासगुरु, आवत्ती दाण भत्तट्ठं ॥१४१९॥

लोभे चउगुरुगा तू, आवत्ती दाण होयऽभत्तट्ठं । दारं ।
संथवदोषः संथुणण संथवो तू, थुणणा वंदणगमेगट्ठं ॥१४२०॥
दुविहो य संथवो खलु, संबंधी वयणसंथवो चेव ।
एक्केक्को पुण दुविहो, पुव्विं पच्छा य णायव्वो ॥१४२१॥
संबंधे पुव्व दुविहो, इत्थी पुरिसे य होंति णायव्वो ।
एमेव य पच्छा वी, आवत्ती दाण वोच्छामि ॥१४२२॥
इत्थीए चतुगुरुगा, पुरिसेसु चतुलहू मुणेतव्वा ।
चउगुरुए तु चउत्थं, चउलहुए दाणमायामं ॥१४२३॥
वयणे वि पुव्व दुविहो, इत्थी पुरिसे य होंति णायव्वो ।
एमेव य पच्छा वी, आवत्ती दाण वोच्छामि ॥१४२४॥
इत्थीए मासगुरुं, आवत्ती दाण होंति एगंतं ।
पुरिसे मासलहुं तू, आवत्ती दाण पुरिमड्ढं ॥१४२५॥
संबंधि पुव्वसंथव, माय-पियादी तु होंति णायव्वो ।
मामुय-ससुरादीओ, संबंधीसंथवो पच्छा ॥१४२६॥
आयवयं च परवयं, णाउं संबंधणं तयणुरूवं ।
मम माता एरिसिया, ससा व धूया व णत्तादी ॥१४२७॥
अद्धी दिट्ठीपण्हय, पच्छा कहणं संकेसणी अगणी ।
थणग्वेसो संबंधो, विहवागुणाए दाणं च ॥१४२८॥
एमेव य पुरिसेसु वि, पियभायादीहि होंति संबंधो ।
एमेव पच्छसंथव, अद्धीति दिट्ठीति पुच्छादी ॥१४२९॥
पच्छासंथवदोसा, सासू विहवादिपुच्छणं च ।
भज्जा मम एरिसिया, सज्जं घातो व भंगो वा ॥१४३०॥
संबंधे संथवेसो, एत्तो वोच्छामि संथवं वयणे ।
पुव्विं पच्छा व तहा, संथुणणे कुणति दाताए ॥१४३१॥
गुणसंथवेण पुव्वं, संतासंतेण जो थुणेज्जाहि ।
दातारमदिण्णम्मि, सो वयणे संथवो पुव्विं ॥१४३२॥

सो एसो जस्स गुणा, पयरंति अवारिया दसदिसासु ।
इहरा कहासु सुव्वति, पच्चक्खं अज्ज दिट्ठो त्ति ॥१४३३॥
गुणसंथवेण पच्छा, संतासंतेण जो थुणेज्जाहि ।
दातारं दिण्णम्मी, सो पच्छासंथवो वयणे ॥१४३४॥
विमलीकय णे चक्खू, जहत्थतो वियरिया गुणा तुज्झं ।
आसि पुरा णे संका, इयाणि णीसंकियं जायं ॥१४३५॥
तत्थ वि भद्दग पंता, दोसा जह [illegible] ।
भणियम्मि संथवो तू [illegible] विज्जा-मंते अतो वोच्छं ॥१४३६॥
विज्जा-मंते चतुरो [illegible] ।
विज्जा-मंतविसेसं [illegible] ॥१४३७॥
विज्जा-मंतविसेसो, [illegible] होंति मंता तु ।
अहव ससाहणा विज्जा, मंतो पुण पाढसिद्धो तु ॥१४३८॥
विज्जाए उ भिक्खुगमं, जह कोइ [illegible] पत्ता ।
साहूण पिंडदाणे, [illegible] ॥१४३९॥
इय पंतभिक्खुयाणं, [illegible] ।
जइ इच्छह विज्जाए, घत-गुल-वत्थाणि [illegible] ॥१४४०॥
पेच्छामो त्ति य भणिए, तेहिं विज्जाभिमंतिओ वेंति ।
किं देमि ? ता घत-गुल-वत्थाणि देह साहूणं ॥१४४१॥
अण्णेहि य सो भणिओ, किह ते दिण्णं ति घत-पाणादी ? ।
तो बेंति नट्ठो मुट्ठो, केण हितं ? केण मुट्ठो मि ? ॥१४४२॥
पडिविज्ज थंभणादी, सो वा अण्णो व से करेज्जाहि ।
पावाजीवी मायी, कम्मणकारी य गहणादी ॥१४४३॥
मंतम्मि उदाहरणं, पाडलिपुत्ते मुरुंडरायस्स ।
उप्पण्ण सीसवेदण, पालित्तयकहण ओमज्जे ॥१४४४॥
जह जह पदेसिणी जाणुयम्मि पालित्तयो भमाडेति ।

विद्या मन्त्र-दोषौ

विद्या मन्त्रयोर्विशेषः

विद्यायां भिक्षु-पासकः

मन्त्रे पादलिप्त-मुरुण्डराजा

तह तह सीसे वियणा, पणस्सति मुरुंडरायस्स ॥१४४५॥
मंतेणं अभिमंतिय, तह चेव दवाव दिज्ज कोयि तु ।
तत्थ वि ते च्चिय दोसा, पडिमंतादी इमे होन्ति ॥१४४६॥
पडिमंतथंभणादी, सो वा अण्णो व से करेज्जाहि ।
पावाजीवी मायी, कम्मणकारी य गहणादी ॥१४४७॥
चूर्ण-योग-मूल-कर्मदोषाः विज्जा-मंताभिहिया,(दारं) अहुणा वोच्छामि चुण्ण-जोगादी ।
वसिकरणादी चुण्णा, अन्तद्धाणंजणादीया ॥१४४८॥
चूर्णे क्षुल्लकद्वयम् चुण्णे जोगे चउलहु, आवत्ती दाणमेत्थ आयामं ।
णिदरिसणं दुण्ह पी, उल्लिङ्गेऽहं समासेणं ॥१४४९॥

दिट्ठंतो चुण्ण-जोगे, जह कुसुमपुरम्मि केति आयरिया ।
जंघाबलपरिहीणा, ओमे सीसस्स तु रहम्मि ॥१४५०॥
कहयंति चुण्ण-जोगा, अंतद्धाणादि तत्थ दो खुड्डा ।
पच्छण्णठिय णिसामे, अवधारं अंजणं एक्कं ॥१४५१॥
वीसज्जिया वि साहू, गुरूहि देसंत खुड्डग णियत्ता ।
आयरिएहि य भणिता, दुट्ठु कयं जं णियत्ता भे ॥१४५२॥

भिक्खे परिहायंते, थेराणं ओमे तेसि दंताणं ।
किं ओम गुरूणं तू, कुव्वामो ? खुड्ड सामत्थे ॥१४५३॥
कुणिमो अंतद्धाणं, दव्वे मेलेत्तु अंजियंजणगा ।
सह भोज्ज चंदगुत्त, ओमोदरियाएँ दोब्बल्लं ॥१४५४॥
चाणक्क पुच्छ इट्टालचुण्ण दारपिहणं तु धूमो य ।
दट्ठुं कुच्छ पसंसा, थेरसमीवे उवालंभो ॥१४५५॥

एवं वसिकरणादिसु, चुण्णेसु वसीकरेत्तु जो तु परं ।
उप्पाएती पिंडं, सो होती चुण्णपिण्डो तु ॥१४५६॥

जे विज्ज-मन्तदोसा, ते च्चिय वसिकरणमादिचुण्णेहिं ।
एगमणेगपयोसं, कुज्जा पत्थारयो वा वि ॥१४५७॥

भणिएस चुण्णपिण्डो. (दारं) अहुणा वुच्छामि जोगपिंडं तु ।
तहियं जोग अणेगा, इणमो तू संपवक्खामि ॥१४५८॥ योगः
सूभग-दोभग्गकरा, जोगा आहारिमा य इयरे य ।
आघंस धूववासो, पायपलेवायिणो इतरे ॥१४५९॥
तत्थाहरणं इणमो, अणहारिमपादलेवजोगम्मि ।
आभीरगविसयम्मी, जह कत मुण तावसेहिं तु ॥१४६०॥ योगे ब्रह्मद्वैपिकाः तापसाः
णदि कण्ह वेण्ण दीवे, पंच सया तावसाण णिवसंति ।
पव्वदिवसेसु कुलवइ, पालेव लिप पाए तु ॥१४६१॥
पाउगदुरूढ सलिलुप्परेण उत्तरिउ एति णगरं ति ।
आउट्ट लोग पूया, पच्चक्खा तेते देव त्ति ॥१४६२॥
जण सावगाण खिंसण, तहियं तू वइरसामिमाउलया ।
आयरियअज्जसमिता, तेसिं च णिवेदियं तेहिं ॥१४६३॥
तेहि भणिया य वच्चह, ते मातिट्ठाणि पायलेवणं ।
णतिमुत्तरंति सगिहे, णेउंमणोएण धोव्वह णं ॥१४६४॥
तेहि य सगिहे णेउं, पाय वत्ता धोयऽणिच्छमाणाणं ।
किं जाणति लोगो ? त्ती, दिण्णं विणएण वहुफलयं ॥१४६५॥
पडिलाभिय वच्चंता, णिवुड्ड णदिकूल मिलिय समिया य ।
विम्हिय पंच सता तावसाण पव्वज्ज साहा य ॥१४६६॥
एमादीजोगेहिं, आउट्टावेउं एसती पिण्डं ।
सो ण वि कप्पं (दारं) एत्तो, वोच्छामी मूलकम्मं तु ॥१४६७॥
दुविहं तु मूलकम्मं, गब्भादाणे तहेव परिसाडे । मूलकर्म
दुविहं वि मूलकम्मं, पच्छित्तं होति मूलं तु ॥१४६८॥
आदाणे अहिगरणं, पडिबंधो छोभगादिदोसा य ।
पाणवह साडणम्मि, छोभग पडिणीय उड्डाहो ॥१४६९॥
इय मूलकम्मेणं, पिंडो उप्पादिओ ण कप्पति तु ।
उप्पातणेस भणिया, गवेसणा चेव य समत्ता ॥१४७०॥दारं।

एवं तु गविट्ठस्सा, उग्गमउप्पायणाविसुद्धस्स ।
गहणविसोहिविसुद्धस्स होति गहणं तु पिंडस्स ॥१४७१॥
उग्गमदोस गिहीतो, उप्पायण होइ समणउत्थाणा ।
ग्रहणैषणा गहणेसणाए दोसे, आयपरसमुट्ठिए वोच्छं ॥१४७२॥
दोण्णि वि समणसमुत्था, संकित तह भावतोऽपरिणयं च ।
सेसा अट्ठ वि णियमा, गिहिणो तु समुट्ठिए जाण ॥१४७३॥
सा गहणेसण चतुहा, णामं ठवणा य दव्वे भावे य ।
दव्वे वाणरजूहं, सव्वं वत्तव्व वित्थरयो ॥१४७४॥
दव्वम्मि एस भणिता, भावे गहणेसणं तु वोच्छामि ।
दसहिँ पदेहि सुद्धं, संकितमादी इमेहिं तु ॥१४७५॥
ग्रहणैषणा दशधा संकित मक्खित णिक्खित, पिहित साहरण दायगुम्मीसे ।
अपरिणय लित्त छड्डिय, एसणदोसा दस हवंति ॥१४७६॥
संकाए चउभंगो, पढमो गहणे य भोयणे चेव ।
शङ्कितदोषः बितिओ गहणे ण भोयणे, ततिओ पुण संकितो भोगे॥१४७७॥
शङ्काचतुर्भङ्गी णीसंकिओ तु चरिमे, किह पुण संका हवेज्ज ? जह कोई ।
भिक्ख पविट्ठो लद्धम्मि, हिमभिक्खं विगिंचेति ॥१४७८॥
किण्णु हु खद्धा भिक्खा, लद्धा ? ण य तरति पुच्छिउं तहियं ।
हिरिमं इति संकाए, भुंजति इह संकितो चेव ॥१४७९॥
बीएण गहिय संकिय, विगडन्तऽन्ने य णवरि संघाडे ।
पगयं पहेणगं वा, सोउं णिस्संकिओ भुंजे ॥१४८०॥
णीसंकगाहि तइओ, विगडेन्तो णिसम्ममण्णसंघाडं ।
संका पुणाइ जारिस, लद्ध मए अमुगगेहम्मि ॥१४८१॥
महती भिक्खा तारिस, एतेहि वि लद्ध किण्ण होज्जाहि ? ।
णीसंकिअ काऊणं, भुंजति तं संकिओ चेव ॥१४८२॥
पढमो दोसु वि लग्गो, बितिओ पुण गहणे भोयणे तइतो ।

जं संकितमावण्णो, पणुवीसा चरिमए सुद्धो ॥१४८३॥
छउमत्थो सुतणाणी, गवेसती उज्जुयं पयत्तेणं ।
आवण्णो पणुवीसं, सुतणाणपमाणतो सुद्धो ॥१४८४॥
साहू सुतोवयुत्तो, सुतणाणी जइ वि गिण्हइ असुद्धं ।
तं केवली वि भुंजति, अपमाण सुयं भवे इहरा ॥१४८५॥
सुत्तस्स अप्पमाणे, चरणाभावो ततो य मोक्खस्स ।
मोक्खाभावाओ चिय, पयत्तदिक्खा णिरत्था य ॥१४८६॥
सोलस उग्गमदोसा, णव एसणदोस संकमेतूण ।
पणुवीसेए दोसा, संकियमासंकिओ वोच्छं ॥१४८७॥
जइ संका दोसकरी, एवं सुद्धं पि होति तु असुद्धं ।
णीसंकमेसियं ति व, अणेसणिज्जं पि णिद्दोसं ॥१४८८॥
भण्णति संकियभावो, अविसुद्धो अपडिनेकनरपक्खे ।
एमि पि कुणयऽणेमि, अणेसिमेमि विसुद्धो तु ॥१४८९॥
णिस्संकं काउ तम्हा, भोत्तव्वं संकियं भणितमेयं ।दारं।
मक्खितमिदाणि वोच्छं, मक्खित जं होति संसत्तं ॥१४९०॥ म्रक्षितदोषः
दुविहं च मक्खितं खलु, सच्चित्तं चेव होइ अच्चित्तं ।
सच्चित्तं तत्थ तिहा, पुढवी आऊ य वणकाए ॥१४९१॥
पुढवीससरक्खेणं, हत्थे मत्ते व सुक्खे पणगं तु ।
आवत्ती दाणं पुण, णिव्वितियं होति दातव्वं ॥१४९२॥
कद्दमसक्खियमोसे, लहुगो णिम्मीसे होन्ति लहुगा तु ।
लहुमासे पुरिमड्ढं, चतुलहुए होति आयामं ॥१४९३॥
ससणिद्धदउल्ले या, पुर-पच्छाकम्म मक्खियं चतुहा ।
उक्कुट्ठ-पिट्ठ-कुक्कुसमक्खितमेवादि वणकाये ॥१४९४॥
ससणिद्ध हत्थमत्ते, पणगं आवत्ति दाण णिव्विगइं ।
उदउल्ले मासलहुं, आवत्ती दाण पुरिमड्ढं ॥१४९५॥

पुरकम्म पच्छकम्मे, आवत्ती चतुलहू मुणेतव्वा ।
दाणं आयामं तू, वणकाय अतो तु वोच्छामि ॥१४९६॥
उक्कट्ठ-पिट्ठ-मक्खिय, परित्तहत्थे य मत्त सच्चित्ते ।
मासलहू आवत्ती, दाणं पुण होति पुरिमड्ढं ॥१४९७॥
एते चेव उ मक्खिए, हत्थे मत्ते य होन्तऽणन्तेसु ।
आवत्ती मासगुरुं, दाणं पुण होति भत्तेक्कं ॥१४९८॥
छिंदंती एव सागं, छिंदंती एव जं रसोलित्तं ।
उक्कट्ठमक्खितेतं, परित्तऽणंतेण वा होज्जा ॥१४९९॥
सेसेहि तु काएहिं, तीहि वि तेऊ-समीरण-तसेहिं ।
सच्चित्तमीसएण व, मक्खित्त ण विवज्जए किंचि ॥१५००॥
सच्चित्त मक्खियम्मि उ, हत्थे मत्ते य होति चउभंगो ।
पढमम्मि दो वि मक्खिय, हत्थो विनियम्मि ण वि मत्तो॥१५०१॥
ततिए मत्तो मक्खितो, ण वि हत्थो चरिमए ण एक्को वि ।
आदितिए पडिसेहो, चरिमो भंगो अणुण्णातो ॥१५०२॥
अच्चित्तमक्खित दुहा, गरहितदव्वेण वा वि इतरेणं ।
गरहित होति दुहा तू, लोगे तह उभयओ वा वि ॥१५०३॥
मंस-वस-सोणिया-ऽऽसव-लसुणादी गरहिएम लोगम्मि ।
मुत्तपुरोसादीहिं, गरहियमेयं भवे उभए ॥१५०४॥
दुविहे तु गरहिए तू, आवत्ती चउलहू मुणेतव्वा ।
दाणं आयामं तू, अगरहितेत्तो पवक्खामि ॥१५०५॥
अगरहिय कूरकुसणं. गोरस-घत-तेल्लमादीहिं जं तु ।
संसत्तमसंसत्तं. दुविहं पि य होति णायव्वं ॥१५०६॥
अच्चित्तमक्खियम्मी, चउसु वि भंगेसु होति भयणा तु ।
अगरहिएण तु गहणं, पडिसेहो गरहिए होति ॥१५०७॥
संसज्जिमेहिं वज्जं, अगरहिएहिं पि गोरसद्दवेहिं ।
मधु-घत-तेल्ल-गुलेहि य, मा मच्छि-पिवीलियाघाओ ॥१५०८॥

गोरससंसत्ते या, घत-तेल्ल-गुलादि-कीडिसंसत्ते ।
चतुलहुगा आवत्ती, ठाणं पुण होति आयामं ॥१५०९॥
लोइयगरहित मज्जा-मंस-वसादीहिं मक्खियं जं तु ।
नवरं पुराण भाविअ, देंमि व पडुच्च गहणं तु ॥१५१०॥
दोहिं पि गरहिएहिं, मुत्तुच्चाराइ होइ अग्गहणं ।
मक्खित भणितं एयं, एत्तो वोच्छामि णिक्खित्तं ॥१५११॥
णिक्खित्तं छव्विहं ति य, एगट्ठं ठाणमग्गणा एत्थं । निक्षिप्तदोषः
तं तिविह होति ठाणं, सच्चित्तं मीस अच्चित्तं ॥१५१२॥
एत्थं चतुभंग भवे, सच्चित्तादी अणेगहा इमो तु ।
सच्चित्तं सच्चित्ते, सच्चित्त मीसे वऽच्चित्ते वा ॥१५१३॥
मीसं वा सच्चित्ते, मीसं मीसे व होति णिक्खित्तं ।
चित्तेणं मीसेण य, एवेक्को होति चउभंगो ॥१५१४॥
अहुणा चित्ताचित्ते, चित्तं चित्तम्मि होति णिक्खेवो ।
चित्तं वा अच्चित्ते, अचित्त चित्तोभयमचित्तो ॥१५१५॥
अहुणा मीसं मीसे, मीसमचित्ते अचित्त मीसम्मि ।
अच्चित्तं अच्चित्ते, ततिएमो होति चतुभंगो ॥१५१६॥
चतुभंगेसेतेसुं, संजोगाऽणेगहा मुणेयव्वा ।
पुढवादिएसु छस्सु त्ति, काएसु सठाण परठाणे ॥१५१७॥
सच्चित्तपुढविकाए, सच्चित्तो चेव पुढवि णिक्खित्तो ।
सच्चित्त अच्चित्तो, अच्चित्त वा वि सच्चित्तो ॥१५१८॥
अच्चित्ते अच्चित्तो, सट्ठाणे एस होति चउभंगो ।
परठाणे पंचऽण्णे, आऊमादीमिमे होन्ति ॥१५१९॥
सच्चित्तपुढविकाओ, सच्चित्ताउम्मि होति णिक्खित्तो ।
सच्चित्तो अच्चित्ते, अच्चित्तो चेव सच्चित्ते ॥१५२०॥
अच्चित्तो अच्चित्ते, एवं सेसेसु तेउमादीसुं ।
संजोगा णेतव्वा, पंचसु परठाणे चउभंगो ॥१५२१॥

एमेव आउ-तेऊ-वाउ-वणस्सति-तसाण चतुभंगा ।
एक्केक्के विण्णेया, छ च्चतुभंगाण संजोगा ॥१५२२॥
चित्ते सच्चित्तेणं, ते छत्तीसं हवंति संजोगा ।
अच्चित्तमीसएण वि एवतिया नेव संजोगा ॥१५२३॥
मीसे अच्चित्तेण वि, एवतिय च्चिय हवंति संजोगा ।
तिण्णि वि छत्तीसा तु, मिलिया अट्टुत्तरसयं तु ॥१५२४॥
अहवण सचित्तमीसा, य एगयो एगयो य अच्चित्तो ।
एत्थं चतुभंगो तू, तत्थाऽऽदिनिए कहा णत्थि ॥१५२५॥
जं पुण अचित्तदव्वं, णिक्खिप्पति चेयणेसु कायेसु ।
तहि मग्गणा तु इणमो, अणंतर परंपरा होति ॥१५२६॥
चित्तपुढविइ अणंतर, ओगाहिमगाइ होनि णिक्खित्तं ।
होती परंपरं पुण, पिहडगयं जं तु पुढविठियं ॥१५२७॥
उदगमणंतर णवणीयमादि पारंपरं तु णावादी ।
ते उ अणंतर पारंपरं य दुयगा इमे सत्त ॥१५२८॥
विज्झायमुम्मुरिंगालमेव अप्पत्तपत्तसमजाले ।
वोलीणे सत्त दुगा, एते तु अणंतर परं य ॥१५२९॥
विज्झाउ त्ति ण दीसति, अग्गी दीसति य इंधणे छूढे ।
छारुम्मीसा पिगल, अगणिकणा मुम्मुरो होति ॥१५३०॥
णिज्जाला हिलिहलया, इंगाला ते भवे मुणेतव्वा ।
होति चउत्थो भंगो, ते जालाऽपत्तपिहडं तु ॥१५३१॥
पंचम पत्ता पिहडं, छट्ठम्मि य होति कण्णसमजाला ।
सत्तमए समतीया, अणंतरा होति सत्तसु वी ॥१५३२॥
पारंपर पिहडादिसु, अगणीयट्टादि तत्थ दोसा तु ।
भयणा तु जंतचुल्लिसु, इणमो तु तहि मुणेयव्वा ॥१५३३॥
पासोलित्त कडाहे, परिसाडी णत्थि तं पि य विसालं ।
सो वि य अचिरच्छूढो, उच्छुरसो णाइउसिणो य ॥१५३४॥

गहणमघट्टिय कण्णे, घट्टित छारादिपडण अग्गिवहो ।
उसिणोदगस्स गुलरसपरिणामिय गहणऽणच्चुमिणे ॥१५३५॥
दुविह विराहण उमिणे, छड्डुण हाणी य भाणभेदो य ।
अच्चुसिणातो ण घेप्पति, जंतोलित्तम जयणा तु ॥१५३६॥
वाउक्खित्ताणंतर, पप्पडिगादो तु होति णायव्वा ।
वत्थि दतिपूरिओवरि, पतिट्ठिय परंपरं होति ॥१५३७॥
हरियादि अणंतर पूग्गिया पारंपरं पिहडमादी ।
गोणादिपिट्ठ पूवादणंतरं भरगकुतिगिवरं ॥१५३८॥
सव्वं ण कप्पएयं, णिक्खित्त समासतो समक्खातं ।
पुढवादीणं एत्तो, आवत्तो दाण वोच्छामि ॥१५३९॥
पुढवादी जाव तसे, अणंतवणकाय मोत्तु णिक्खित्ते ।
संति अणंतर लहुगा, परंपरं होंति मासलहुं ॥१५४०॥
चतुलहुए आयामं, मासलहू दाण होति पुरिमड्ढं ।
एयं सच्चित्तम्मि, भणियं मोसे अतो वोच्छं ॥१५४१॥
एतेसु चेव पुढवादिएसु मीसे अणंतरं लहुओ ।
होति परंपर पणगं, दाणं एत्तो तु वोच्छामि ॥१५४२॥
लहुमासे पुरिमड्ढं, पणगे पुण दाण होति णिव्विगति ।
वणकायमणंतेसुं, आवत्तो दाण वोच्छामि ॥१५४३॥
वणकायअणंतेसुं, णिक्खित्त अणंतरं तु चतुगुरुगा ।
होति परंपरि गुरुओ, दाणं तु अतो तु वोच्छामि ॥१५४४॥
चतुगुरुए तु चउत्थं, गुरुमासे दाणमेगभत्तं तु ।
आवत्ती दाणं पि य, पिहियम्मि अतो उ वोच्छामि ॥१५४५॥
पिहियाणंताऽणंतर, परंपरं चेव होति गुरुपणगं । पिहितदोषः
लहुपणगं तु परित्ते, दोसु वि दाणं तु णिव्विगती ॥१५४६॥
आवत्ती दाणे वा, पुढवादीणिक्खित्तं भणियं तु ।
एत्तो समासयो च्चिय, पिहितद्दारं पवक्खामि ॥१५४७॥

सच्चित्तादिसु अच्चित्तपिहिय चतुभंग तह य संजोगा ।
जह भणिया णिक्खित्ते, तह चेव य होन्ति पिहिते वि ॥१५४८॥
सचित्त मीस एक्को, एक्कं तोऽचित्त एत्थ चउभंगो ।
आदिदुवे पडिसेहो, ततिए भंगम्मि मग्गणया ॥१५४९॥
अच्चित्त सच्चित्तेणं, अतिरं मतिरं च जं भवे पिहितं ।
पुढवादिएसु छस्सु वि, लोट्टादी अतिर पुढवीए ॥१५५०॥
पच्छिय-पिहुडादिऽतिरं, ओगाहिमगादिऽणंतरं होति ।
वद्धणियादि परंपर, अगणिक्काए इमं होति ॥१५५१॥
अतिरं अंगाराई, तहियं पुण संतरो सरावादी ।
तत्थेव अतिर वायू, परंपरो वत्थिणा पिहिते ॥१५५२॥
अइरं फलादिपिहियं, वणम्मि इतरं तु पच्छि-पिहुडादी ।
कच्छवसंचारादी, अतिरतिरं पच्छियादीहिं ॥१५५३॥
तइए भंगे मग्गण, भणिएस चउत्थभंगभयणा तु ।
अच्चित्त अच्चित्तेणं, पिहिए का भयण ? सुणसु इमा ॥१५५४॥
चतुभंगो पिहिएणं, गुरुयं गुरुएण लहुअ (गुरुअ) लहुएणं ।
लहुयं गुरुएण तहा, लहुयं लहुएण चरिमो तहिं गज्झो ॥१५५५
पुढवादीणं कमसो, आवत्ती दाण जह तु णिक्खित्ते ।
आयविराहण गुरुयं, ति कातु णवरं तु चउगुरुया ॥१५५६॥
एत्थ उ दाण चतुत्थं, एत्तो वोच्छामि साहरणदारं ।
साहरणं उक्किरणं, विरेयणं चेव एगट्ठं ॥१५५७॥
संहृतदोषः मत्तेण जेण दाहिति, तत्थ अदेज्जं तु होज्ज जं दव्वं ।
तं साहरितुं अण्णहिं, मत्तेणं देइ साहरणा ॥१५५८॥
सा पुण छसु णातव्वा, सचित्तमीसा तहेव अच्चित्ता ।
एत्थ वि जह णिक्खित्ते, भंगा संजोग तह चेव ॥१५५९॥
सच्चित्तमीस आदिल्लएसु दुसु णत्थि मग्गण विभंगा ।
ततियम्मि मग्गणा तू, छसु भोमादीसु साहरणे ॥१५६०॥

चरिमे भंगे भयणा, जं दुहमचित्त का नहिं भयणा ? ।
भण्णइ सुणसू तहियं, चउभंगो होति इणमो तू ॥१५६१॥
सुक्के सुक्कं पढमं, सुक्के उल्लं तु बितियओ भंगो ।
उल्ले सुक्खं तइओ, उल्ले उल्लं चउत्थो तु ॥१५६२॥
एक्केक्के चउभंगो, सुक्कादीएसु चउसु भंगेसु ।
थोवे थोवं थोवे, बहुयं बहु थोव बहु बहुगं ॥१५६३॥
जत्थ तु थोवं थोवं, सुक्खे उल्लं च छुभति तं गज्झं ।
जति तं तु समक्खित्तुं, थोवाहारं दलइ मत्तं (अन्नं) ॥१५६४॥
सेसेसु तीसुं पी, दाना भंगेसु होति णातव्वो ।
थोव बहुं बहुग थोवं, बहु बहुगो चेव इणमो तु ॥१५६५॥
उक्खेवे णिक्खेवं, महल्लभाणम्मि लुद्ध वह डाहो ।
छक्कायवहो य तहा, अचियत्तं चेव वोच्छेदो ॥१५६६॥
थोवं थोवं छूढं, सुक्खे उल्लं तु उल्ले सुक्खं तु ।
बहुगं तु अणाइण्णं, कडदोसो सो त्ति कातूणं ॥१५६७॥
साहरणेयं भणियं, आवत्ती दाण जह तु णिक्खित्ते ।
दायगदारं अहुणा, समासओ हं पवक्खामि ॥१५६८॥ दायकदोषः
बाले वुड्ढे मत्ते, उम्मत्त वेविए य जरिए य ।
अंधेल्लए पगलिए, आरूढे पाउयाहिं च ॥१५६९॥
हत्थंदु-णियलबद्धे, विवज्जिए चेव हत्थ-पाएहिं ।
तेरासि गुव्विणी बालवच्छ भुंजंति घुसुलेंती ॥१५७०॥
भज्जेन्ती य दलेन्ती, कंडेन्ती चेव तह य पीसेन्ती ।
पिज्जंती रुंचंती, कत्तंती पमद्दमाणी (पमद्दमाणी) य ॥१५७१॥
छक्कायवग्गहत्था, समणट्ठा णिक्खिवित्तु ते चेव ।
ते चेवागाहेन्ती, संघट्टेताऽऽरभंती य ॥१५७२॥
संसत्तेण तु दव्वेण लित्तहत्था य लित्तमत्ता य ।

ओयत्तेन्ती साहारणं च देन्ती य चोरिययं ॥१५७३॥
पाहुडियं च ठवंन्ती, सपच्चवाया परं च उद्दिस्स ।
आभोग अणाभोगेण दलंती वज्जणिज्जा उ ॥१५७४॥
एतेसि दायगाणं, गहणं केसिंचि होति भइयव्वं ।
केसिंची अग्गहणं, तप्पडिवक्खे भवे गहणं ॥१५७५॥
एते दायगदोसा, एतेहिं दिज्जमाण ण वि कप्पे ।
जे तु अकारणे गेण्हे, पच्छित्तं तेसि वोच्छामि ॥१५७६॥
बाले वुड्ढे मत्ते, उम्मत्ते वेविए य जरिए य ।
एतेसिं मासलहुं, आवत्ती दाण पुरिमड्ढं ॥१५७७॥
अंधेल्ल-पगलियादी, जाव तु दारं तु बालवच्छ त्ति ।
पत्तेयं चतुगुरुगा, दाणं पुण होयऽभत्तट्ठं ॥१५७८॥
भुंजण-घुसुलेन्तीए, आवत्ती चतुलहू मुणेयव्वा ।
दाणं आयामं ती, भज्जणमादी अतो वोच्छं ॥१५७९॥
भज्जन्ती य दलेंती, जाव तु छक्कायवग्गहत्थ त्ति ।
समणट्ठा ते चेव तु, णिक्खिव आगाह घट्टन्ती ॥१५८०॥
एत्थ तु विसरिसदाणं, पच्छित्तं होति कायणिप्फण्णं ।
सेसेसु दारेसु, चतुलहुगा दाणमायामं ॥१५८१॥
एते दायग भणिता, एत्तो उम्मीसयं पवक्खामि ।
उन्मिश्रदोषः तं तिह सचित्त मीसग, अच्चित्तेणं च उम्मीसं ॥१५८२॥
जह चेव य संजोगो, कायाणं हेट्ठओ तु साहरणे ।
तह चेव य उम्मीसे, होति विभागो णिरवसेसो ॥१५८३॥
चोएति को विसेसो, साहरणुम्मीसयाण दोण्हं पि ?।
भण्णति साहरणं तू, भिक्खट्ठा भत्तयं रेये ॥१५८४॥
उम्मीसं पुण दायव्वयं च दो वेते मीसितुं देज्जा ।
बीय हरियाइएहिं, जह ओदण-कुसणमादीणि ॥१५८५॥
तं पि य सुक्खे सुक्खं, भंगा चत्तारि जह तु साहरणे ।

अप्पबहुए वि चउरो, तहेव चाइण्णऽणाइण्णं ॥१५८६॥

उम्मीस भणियमेयं, एत्तो वोच्छामि परिणयं दुविहं। अपरिणतदोषः

दव्वे भावे य तहा, दव्वे पुढवादि छक्कं तु ॥१५८७॥

जीवत्तम्मि अविगते, अपरिणयं परिणयं गते जीवे।

दिट्ठंतो दुद्ध दही, इय अपरिणयं परिणयं चेव ॥१५८८॥

दव्वे अपरिणयम्मी, पच्छित्तं होति कायणिप्फण्णं।

भावे अपरिणतं पुण, एत्तो वोच्छं समासेणं ॥१५८९॥

सज्झिल्लगादिणं तू, अहवा अण्णेहिं होति सामण्णं।

तत्थेगस्स परिणतो, भावो देमि त्ति माहुस्स ॥१५९०॥

सेसाण ण वि परिणयो, अपरिणयं भावतो भवे एयं।

अहवा वि दाणमण्णं, अपरिणयं भावतो होति ॥१५९१॥

संघाडग हिंडंतो, एगस्स गणम्मि परिणयं एमी

बिनिएण तु परिणमती, तं पि अघेत्तव्व मा कलहो ॥१५९२॥

पढमिल्लुग भावम्मी, अप्परिणयगेण्हणे तु लहुमासो।

तस्सावत्ती भवति, दाणं पुण होति पुरिमड्ढं ॥१५९३॥

भणित अपरिणयमेयं, एत्तो वोच्छामि लित्तदारं तु। लिप्तदोषः

लित्तम्मि जत्थ लेवो, लब्भति कुमणाभिदव्वस्स ॥१५९४॥

तं खलु ण गेण्हियव्वं, मा तहियं होज्ज पच्छकम्मं तु।

तम्हा उ अलेवकडं, णिप्पावादी गहेतव्वं ॥१५९५॥

इति उदिते चोएई, जदि पच्छाकम्मदोस एवं तु।

तो ण वि भोत्तव्वं चिय, जावज्जीवाए भणति गुरू ॥१५९६॥

को कल्लाणं नेच्छति, आवस्सगजोग जदि ण हायंति।

तो अच्छतु मा भुंजतु, अह ण तरं नत्थ भंगऽट्ठा ॥१५९७॥

संसट्ठहत्थ-मत्ते, सव्वम्मी सावसेस भंगऽट्ठा।

गहणं तु सावसेसे, सेसयभंगेसु भयणा यु ॥१५९८॥

संसत्तहत्थ-मत्ते, लित्ते लहुगा तु दाणमायामं।
अवसेस लि....उ, दाणं पुण होति पुरिमड्ढं ॥१५९९॥

छर्दितदोषः
लित्तं ति गतं एयं, एत्तो वोच्छामि छड्डियं अहुणा।
तं पि तिह छड्डियं तू, सचित्त मीसं च अच्चित्तं ॥१६००॥
छड्डिएँ चउलहुगा तू, आवत्ती दाण होति आयामं।
अहव सचित्तादीणं, आवत्ती कायणिप्फण्णं ॥१६०१॥
सच्चित्त मीसए या, चउभंगो छड्डणम्मि इत्थ भवे।
चउभंगे पडिसेहो, गहणे आणादिणो दोसा ॥१६०२॥
उसिणस्स छड्डणे देन्तओ व डज्झेज्ज कायडाहो वा।
सीयपडणम्मि काया, पडिए महुबिंदुआहरणं ॥१६०३॥
छड्डिय भणियं एयं, गहणेसण एस परिसमत्ता तु।
गहितस्स अतो विहिणा, ग्रासेसण पत्तमहुणा उ ॥१६०४॥

ग्रासैषणा
सा चतुहा णामादी, सव्वं वण्णेत्तु एत्थ दारम्मि।
एतस्सेवोवणयं, वोच्छामि इमं समासेणं ॥१६०५॥
मच्छत्थाणी साहू, मंसत्थाणी य भत्तपाणं तु।
रागादीण समुदयो, मच्छियथाणी मुणेतव्वो ॥१६०६॥
जह ण छलिओ तु मच्छो, उवायगहणेण एव साहू वि।
अप्पाणमप्पण च्चिय, अणुसासे भुंजमाणो उ ॥१६०७॥
बायालीसेसणसंकडम्मि गेण्हंतो जीव ! ण सि छलितो।
एण्हि जह ण छलिज्जसि, भुंजंतो राग-दोसेहिं ॥१६०८॥
ग्रासेसणा तु भावे, होति पसत्था य अप्पसत्था य।
अपसत्था पंचविहा, तव्विवरीता पसत्था तु ॥१६०९॥
संजोइय अइबहुयं, संगाल सधूमयं अणट्ठाए।
पंचविह अप्पसत्था, तव्विवरीता पसत्था तु ॥१६१०॥

संयोजनादोषः
संजोयणेत्थ दुविहा, दव्वे भावे य दव्वें बहियंतो।
भिक्खं चिय हिण्डंता, संजोए बाहिरेसा तु ॥१६११॥

खीर-दहि-कट्टरादिण, लंभे गुड-सालि-कूर-घतमादी ।
जातित्ता संजोए, हिण्डंतंतो अतो वोच्छं ॥१६१२॥
अंतो तिह पादम्मी, लंबण वयणे य होइ बोद्धव्वं ।
जं जं रसोवकारिं, संजोययए तु तं पाए ॥१६१३॥
वालुंक-वडग-वाइंगणादि संजोए लंवणेण समं ।
वयणम्मि छोढु लंवण, तो मालणगं छुभे पच्छा ॥१६१४॥
दव्वम्मि एस संजोयणा तु संजोएँ जं तु दव्वाइं ।
रसहेउं तेहिं पुण, संजोयण होति भावम्मि ॥१६१५॥
संजोएन्तो दव्वे, राग-द्दोसेहिं अप्पगं जोए ।
राग-द्दोसणिमित्तं, संजोययए तु तो कम्मं ॥१६१६॥
कम्मेहितो य भवं, संजोययए भवातु दुक्खेणं ।
संजोययए अप्पं, एसा संजोयणा भावे ॥१६१७॥
रसहेउं पडिकुट्ठो, संजोयो कप्पए गिलाणट्ठा ।
जस्स व अभत्तछंदो, सुहोइओ अभाविनो जो य ॥१६१८॥
अहव ण जाई दव्वं, पत्ते य ययादिगा वि मेलंति ।
सत्तुगमादीहि समं, मा होनु विगिचणीयंति ॥१६१९॥
अंतो बहि चउगुरुगा, विनियाएसेण बाहि चउलहुगा ।
चउगुरुगेऽभत्तट्ठं, चउलहुगे होनि आयामं ॥१६२०॥
संजोयण भणिएसा, अहुण पमाणं भणामि आहारं ।
जावतियं भोत्तव्वं, साहूहि जावणट्ठाए ॥१६२१॥ प्रमाणदोषः
बत्तीसं किर कवला, आहारो कुच्छिपूरओ भणिओ ।
पुरिसस्स महिलियाए, अट्ठावीसं भवे कवला ॥१६२२॥
चउवीस पंडगस्सा, ते ण गहित जेण पुरिस-इत्थीणं ।
पव्वज्ज ण पंडस्स उ, तम्हा ते ण गहिता एत्थं ॥१६२३॥
एत्तो किणावि हीणं, अद्धं अद्धद्धगं च आहारं ।
साहुस्स बेन्ति धीरा, जायामायं च ओमं च ॥१६२४॥

पकामं च णिकामं च, जो पणियं भत्त-पाणमाहारे ।
अतिबहुयं अतिबहुसो, पमाणदोसो मुणेयव्वो ॥१६२५॥
बत्तीसाउ परेणं, पकाम णिच्चं तमेव तु णिकामं ।
जं पुण गलंतणेहं, पणीतमिति तं बुहा बेंति ॥१६२६॥
अतिबहुयं अतिबहुसो, अतिप्पमाणेण भोयणं भुत्तं ।
हादेज्ज व वामेज्ज व, मारेज्ज व तं अजीरंतं ॥१६२७॥
णियगाहारादीयं, अइबहुयं अइबहुसो तिण्णि वारा उ ।
तिण्ह परेण तु जं तु, तं चेव अतिप्पमाणं तु ॥१६२८॥
अहवा अतिप्पमाणो, आतुरभूतो तु भुंजए जं तु ।
तं होति अतिपमाणं, हादणदोसा उ पुव्वुत्ता ॥१६२९॥
जम्हा एते दोसा, अतिरित्ते तेण होंति चतुलहुगा ।
आवत्ती दाणं पुण, आयामं होति णायव्वं ॥१६३०॥
दोसा अतिप्पमाणे, तम्हा भोत्तव्व होति केरिसयं ? ।
भण्णति सुणसु जारिस, भोत्तव्वं होति साहूहि ॥१६३१॥
हियाहारा मियाहारा, अप्पाहारा य जे णरा ।
ण ते विज्जा चिगिच्छंति, अप्पाणं ते चिगिच्छगा ॥१६३२॥
हितमहितं होति दुहा, इह परलोगे य होति चउभंगो ।
इहलोग हितं ण परे, किंचि परे णेय इहलोए ॥१६३३॥
किंचि हितमुभयलोए, णोभयलोए चतुत्थओ भंगो ।
पढमगभंगो तहियं, जे दव्वा होन्ति अविरुद्धा ॥१६३४॥
जह खीर-दहि-गुलादी, अणेसणिज्जा व रत्तदुट्ठे वा ।
भुंजंते होति हियं, इहइं ण पुणाइ परलोए ॥१६३५॥
अमणुण्णेसणसुद्धं, परलोगहितं ण होति इहलोगे ।
पत्थं एसणसुद्धं, उभयहियं होति णातव्वं ॥१६३६॥
अहितोभयलोगम्मी, अपत्थदव्वं अणेसणिज्जं च ।

अहवा वि रत्तदुट्ठो, भुंजति एत्तो मियं वोच्छं ॥१६३७॥
अद्धमसणस्स सव्वंजणस्स कुज्जा दवस्स दो भाए ।
वायुपवियारणट्ठा, छब्भागं ऊणगं कुज्जा ॥१६३८॥
सीयो उसिणो साहारणो य कालो तिहा मुणेयव्वो ।
एएसुं तीसुं पी, आहारे होतिमा मत्ता ॥१६३९॥
एगो दवस्स भागो, अवट्ठितो भोयणस्स दो भागा ।
वड्ढंति व हायंति व, दो दो भागा तु एक्केक्के ॥१६४०॥
एत्थ तु ततियचतुत्था, दोण्णि वि अणवट्ठिता भवे भागा ।
पंचम छट्ठो पढमो, बितिओ य अवट्ठिता भागा ॥१६४१॥
एयं तु मियं भणियं, एत्तो वी हीणगं भवे अप्पं ।
एय पमाणाऽभिहितं, संगालादी अतो वोच्छं ॥१६४२॥
संगाले चउगुरुगा, आवत्ती दाण होयऽभत्तट्ठं । अङ्गारदोषः
चउलहुगा तु सधूमे, आवत्ती दाणमायामं ॥१६४३॥
णिक्कारण भुंजन्ते, एत्थ वि लहुगा तु दाणमायामं ।
विनियादेसं लहुओ, आवत्ती दाण पुरिमड्ढं ॥१६४४॥
ण वि भुंजइ कारणतो, एत्थ वि लहुगा उ दाणमायामं ।
संगालादिण कमसो, सरूवमिणमो पवक्खामि ॥१६४५॥
जह इंगाला जलिया, डहंति जं तत्थ इंधणं पडियं ।
इह चिय रागिंगाला, डहंति चरणिंधणं णियमा ॥१६४६॥
रागेण सइंगालं, जं आहारेइ मुच्छिओ मोहू ।
सुट्ठु सुसंभित णिद्धं, सुपक्क सुरसं अहो सुरहिं ॥१६४७॥
रागग्गीपज्जलिओ, भुंजंतो फासुयं पि आहारं ।
णिद्दड्ढिंगालणिभं, करेति चरणिंधणं खिप्पं ॥१६४८॥ धूमदोषः
भणितं संगालेयं, अहुणा वोच्छं सधूमगं पगते ।
केवलवियणं तं तु, धूमायंतं तहा छगणं ॥१६४९॥

जह वा वि चित्तकम्मं, धूमेणोरत्तयं ण सोभइ उ ।
तह धूमदोसरत्तं, चरणं पि ण सोभए मइलं ॥१६५०॥
दोसेण सधूमं तू, जं आहारंति साहु णिदंतो ।
विरसमलोणं कुहितं, रोरो भोक्खेति णं एयं ॥१६५१॥
दोसग्गी वि जलंतो, अप्पत्तियधूमधूमियं चरणं ।
अंगारमेत्तमरिसं, जा ण भवति णिड्डहति ताव ॥१६५२॥
रागेण सइंगालं, दोसेण सधूमगं मुणेयव्वं ।
राग-द्दोससहगतं, तम्हा तु ण होति भोत्तव्वं ॥१६५३॥
आहारंति तवस्सी, विगतिगालं च विगयधूमं च ।
झाण-ऽज्झयणणिमित्तं, एसुवएसो पवयणस्स ॥१६५४॥
भणितं सधूममेयं, एत्तो वोच्छामि कारणद्दारं ।
कारणदोषः तं पुण पडिक्कमंतो, चरिमुस्सग्गे विचिन्तेति ॥१६५५॥
भोत्तव्व कारणम्मी, किं अत्थि अहव नत्थि जइ अत्थी ।
तो भुंजेज्जा साहू, के पुण ते कारणा ? सुणसु ॥१६५६॥
छहिं कारणेहिं साहू, आहारंतो उ आयरति धम्मं ।
छहिं चेव कारणेहिं, णिज्जूहंतो यु आयरति ॥१६५७॥
वेयण वेयावच्चे, इरियट्ठाए य संजमट्ठाए ।
तह पाणवत्तियाए, छट्ठं पुण धम्मचिन्ताए ॥१६५८॥
णत्थि छुहाएँ सरिसिया, वियणा भुंजेज्ज तप्पसमणट्ठा ।
छादो वेयावच्चं, ण तरति काउं अयो भुंजे ॥१६५९॥
इरियं च ण सोहेती, खुहितो भमलीय पेच्छ अन्धारं ।
थामो वा परिहायइ, पेहादो संजमं ण तरं ॥१६६०॥
आयु-सरीर-प्पाणादि छव्विहे पाण ण तरती मोत्तुं ।
तद्धारणट्ठतेणं, भुंजेज्जा पाणवत्तीयं ॥१६६१॥
धम्मज्झाणं ण तरति, चिन्तेउं पुव्वरत्तकालम्मि ।
अहवा वी पंचविहं, ण तरति सज्झाय काउं जे ॥१६६२॥

एतेहिं कारणेहिं, छहिं आहारेंति संजतो णियमा ।
छहिं चेव कारणेहिं, णाहारेंती इमेहिं तु ॥१६६३॥
आतंके उवसग्गे, तितिक्खया बंभचेरगुत्तीए ।
पाणिदया-तवहेऊ, सरीरवोच्छेयणट्ठाए ॥१६६४॥
आयंको जरमादी, तम्मुप्पण्णे ण भुंजे भणितं च ।
महसुप्पइया वाही, वारेज्जा अट्ठमादीहिं ॥१६६५॥
राया सण्णायादी, उवसग्गो तम्मि वी ण भुंजेज्जा ।
सहणट्ठा तु तितिक्खा, वाहिज्जंते तु विसएहिं ॥१६६६॥
भणितं च जिणिंदेहिं, अवि आहारं जती तु वोच्छिदे ।
लोगे वि भणिय विसया, विणिवत्तंते अणाहारं ॥१६६७॥
तो बंभरक्खणट्ठा, ण वि भुंजेज्जा हि एवमाहारं ।
पाणदय वास महिया, पाउमकाले व ण वि भुंजे ॥१६६८॥
तवहेतु चउत्थादी, जाव तु छम्मासिओ तवो होति ।
छट्ठं णिच्छिण्णभरो, छड्डेतुमणो सरीरं तु ॥१६६९॥
असमत्थो संजमस्स उ, कतकिच्चो वक्खरं व तो देहं ।
छड्डमि त्ति न भुंजइ, मव्वह वोच्छेय आहारं ॥१६७०॥
घासेसणा सम्मत्ता ॥ मूलाह—
सोलस उग्गमदोसा, सोलस उप्पादणाएँ दोसा तु ।
दस एसणाएँ दोसा, संजोयणमादि पंचेव ॥१६७१॥
सीयालीसं एते, सव्वे वी पिंडिता भवे दोसा ।
जेहिं अविसुद्ध पिंडे, चरणुवघातो जतीण भवे ॥१६७२॥
एतद्दोसविमुक्को, भणिताऽऽहारो जिणेहिं साहूणं ।
धम्मावस्सगजोगा, जेण ण हायंति तं कुज्जा ॥१६७३॥
उग्गममादीणं तू, कारणपज्जन्तपत्थडो एस ।
लक्खण आवत्ती दाणमेव कमसो समक्खायं ॥१६७४॥

पिंडपत्थारो । अहुणा गाहत्थो—

गाथाया अर्थः अहुणा गाहाणं तू, वोच्छामो अक्खरत्थमिणमो तू ।
उद्देस कम्म मोत्तुं, चरमतियं होति सेसं तु ॥१६७५॥
पासंडाणं पढमं, बितियं समणाण ततिय साधूणं ।
चरिमतियं एवं तू, कम्मं ती आहकम्मं तु ॥१६७६॥
पासंड मीसजाए, साहूमीसे य सघरमीसे य ।
बायरपाहुडिया तू, विवाह उम्मक्क ओसक्का ॥१६७७॥
आहड सपच्चवायं, विराहणा जत्थ होति आयाए ।
लोभेण जो उ एसति, सो होतो लोभपिंडो तु ॥१६७८॥
सव्वेसु वि एतेसु, उद्देसिगमादिलोभपज्जंते ।
पत्तेयं पत्तेयं, सोही एत्थं तु भत्तट्ठं ॥१६७९॥३५॥

अतिरं अणंतणिक्खित्त-पिहिय-साहरिय-मीसियादीसुं।
संजोग मइंगाले, दुविह णिमित्ते य खमणं तु॥३६॥

अतिर णिरंतर भण्णति, अणंतकायो तु होति वणकायो ।
पूवलिमादी किंची, णिक्खित्तं होति एत्थं तु ॥१६८०॥
पिहितं अणंतकाए, साहरियमणंतमीसियं वा वि ।
आदिग्गहणेणं पुण, अपरिणएऽणंतकाए वि ॥१६८१॥३६।

कम्मुद्देसिय-मीसे, धायादि-पगामणादिएसुं च ।
पुर-पच्छकम्म-कुच्छिय-संसत्तालित्तकरमत्ते ॥३७॥

जावंतिकम्म पढमे, जावंतियमीसजायमादिल्ले ।
पंचविह धातिपिंडे, खीरादी अंकपज्जन्ते ॥१६८२॥
आदिग्गणेणं पुण, दूतीपिंडे णिमित्ततीए य ।
आजीव वणिमपिंडो, बादरतेगिच्छणाहि च ॥१६८३॥
कोहे माणे य तहा, संबंधी वयणसंथवे थीसु ।
विज्जा मंते चुण्णे, जोगे एमेते आदिपदा ॥१६८४॥

पादोकरण पगासे, दव्वे कीए य आयपरकीए ।
भावे तु आयकीते. लोइयपामिच्चिएसुं च ॥१६८५॥
लोइयपरियट्टे वी, परगामे आहडम्मि णिरवाते ।
पिहिउब्भिण्णसचित्त. तह य कवाडे य णायव्वे ॥१६८६॥
मालोहडमुक्कोसे, अच्छेज्जे तह य होति अणिसट्ठे ।
एमेते तु पगासणमादिपदा होंति णायव्वा ॥१६८७॥
पुरकम्म पच्छकम्मे, कुच्छियदव्वेण मक्खियं जं तु ।
संसत्तदव्वलित्ते. हत्थे मत्ते व णातव्वं ॥१६८८॥
एतेसु जहुद्दिट्ठो, कम्मादिसु लित्तपज्जवसिएसु ।
पत्तेयं पत्तेयं, सोही एत्थं तु आयामं ॥१६८९॥३७॥

अतिरं परित्तणिक्खित्त-पिहिय-माहरिय-मीसियादीसु ।
अइमाण-धूम-कारणविवज्जए विहियमोयामं ॥३८॥

अतिर णिरंतर भणितं, परित्तकाए उ होति णिक्खित्तं ।
परितेण य जं निहितं, माहरियं वा परित्तणं ॥१६९०॥
मीस परित्तेणं चिय, आदिग्गहणा परित्तलित्तं वि ।
परितेसु छड्डियम्मि वि, आदिग्गहणा तु एमेते ॥१६९१॥
अइमाण सधूमं या, आहारं कारणे विवच्चासो ।
कारणविवज्जओ तू, केरिमओ होतिमं वोच्छं ॥१६९२॥
आहारेति अकज्जे, ण मग्गुद्दिसे एव कारणे जो तु ।
एस विवज्जो भणितो, सव्वत्थ वि सोहि आयामं ॥१६९३॥३८॥

अज्झोयर-कड-पूतिय-मायाणंते परंपरगए य ।
मीसाणंताणंतरगतादिए चेगमामणगं ॥३९॥

पाभंडऽज्झोयरओ, साहूअज्झोयरो य णायव्वो ।
होति कडो चउहा तू, जावंतियमादि विन्नेयो ॥१६९४॥

आहारं पूतियम्मी, मायापिंडे य होति णायव्वं ।
सचित्तऽणंतकाए, परंपरं जं तु णिक्खित्ते ॥१६९५॥
मीसाणंतअणंतरणिक्खित्ते चेव होति णायव्वं ।
आदिग्गहणे पिहिते, साहरिए मीसए चेव ॥१६९६॥
गहिताणंतपरंपरमीसऽतिरं पिहियमादि बोद्धव्वं ।
एव जहुद्दिट्ठेसु, सव्वत्थ वि सोहि भत्तेक्कं ॥१६९७॥३९॥

ओह-विभागुद्देसोवकरण-पूतीअ-ठविय-पागडिए ।
लोउत्तर-परियट्टिय-पमिच्च-परभावकीए य ॥४०॥

ओहुद्देसविभागे, उद्देस चउव्विहे तु णातव्वो ।
उवगरणपूतिए या, चिरठविए पागडे चेव ॥१६९८॥
लोउत्तरपामिच्चे, परियट्टिय उत्तरं य णायव्वे ॥
परभावकीय संखादिएसु सव्वेसु उद्दिट्ठो ॥१६९९॥
पत्तेयं पत्तेयं, सोही एत्थं तु होति पुरिमड्ढं ।
सग्गामाहडमादी, पत्ते एयं पवक्खामि ॥१७००॥४०॥

सग्गामाहड-दद्दर-जहण्णमालोहडोतरे पढमे ।
सुहुमतिगिच्छा-संथवतिग-मक्खिय-दायगोवहए ॥४१॥

सग्गामाहडदद्दर, उब्भिण्णे अहव गड्डिमहिए तु ।
मालोहडे जहण्णे, उयरो अज्झोयरो होति ॥१७०१॥
पढमो जावंतज्झोयरो तु एसो य हो मुणेतव्वो ।
सुहुमतिगिच्छा संथव, वयणे तू होति णायव्वो ॥१७०२॥
कद्दममक्खिय पुढवी-आऊ-उदउल्लमक्खिए जं तु ।
वणकायपरित्तेणं, उक्कुट्ठ मक्खियतिगेणं ॥१७०३॥
दायगउवहय एत्तो, दायग बालादियऽप्पभू जे य ।
एतेसेत्थऽहिगारो, ते य इमे होंति बालादी ॥१७०४॥

बाले वुड्ढे मत्ते, उम्मत्ते वेविए य जरिए य ।
एते देंति तु जं तू, नं होती दायगोवहयं ॥१७०५॥
एतेसु जहुद्दिट्ठेसाऽऽहडमादीसु जरिययन्तेसु ।
पत्तेयं पत्तेयं, सोही एत्थं तु पुरिमड्ढं ॥१७०६॥४१॥

पत्तेयपरंपरठविय-पिहिय-मीसे अणंतरादीसु ।
पुरिमड्ढं संकाए, जं संकइ तं समावज्जे ॥४२॥

वणकायपरित्तेणं, सच्चित्तपरंपरं तु णिक्खित्ते ।
तेणेव य पिहियं तू, परंपरं होंति विण्णेयं ॥१७०७॥
एमेव य साहरिए, सच्चित्तपरंपरे परित्तम्मि ।
मीसपरित्त अणंतर, णिक्खित्ते होंति णायव्वं ॥१७०८॥
आदिग्गहणेणं तू, पिहिए उ अणंतरे तु मीसम्मि ।
एमेव य साहरणे, मीसेसु अणंतरे होंति ॥१७०९॥
सव्वेसु जहुद्दिट्ठेसु सोहि पुरिमड्ढमेत्थ पत्तेयं ।
संकाए जं संकति, तस्सेव य होंति पच्छित्तं ॥१७१०॥४२॥

इत्तरठविए सुहुमे, ससणिद्ध ससरक्ख मक्खिए चेव ।
मीसपरंपरठवियादिएसु बितिएसु वा विगती ॥४३॥

इत्तरठवणा भत्तो, पाहुडिया सुहुम तह य ससणिद्धे ।
आयू मक्खियमेयं, ससरक्खं पुढविए होंति ॥१७११॥
पुढवी आउक्काए, तेऊ वाऊ परित्तवणकाए ।
बेइंदिय तेइंदिय, चउरो पंचिंदिएसुं च ॥१७१२॥
एतेसुं पुढवादिसु, मीसे उ परंपरं उ णिक्खित्ते ।
पत्तेयं पत्तेयं, लहुपणगं दाण णिव्विगती ॥१७१३॥
वणकायअणंतमीसे, णिक्खित्ते परंपरं तु सोहीमा ।
गुरुपणगं आयामो, दाणं पुण होंति णिव्विगतिं ॥१७१४॥

बितियाणंताऽणंतरणिक्खित्ते गुरुगपणग आवत्ती ।
दाणं णिव्विगती ऊ, परंपरे होंति एमेव ॥१७१५॥
बितियपरिताणंतरणिक्खित्ते लहुगपणगमावत्ती ।
दाणं णिव्विगयं तू, परंपरे होंति एमेव ॥१७१६॥४३॥

सहसाऽणाभोगेण व, जेसु पडिक्कमणमाहियं तेसु ।
आभोगओ वि बहुसो, अतिप्पमाणे व णिव्विगती॥४४

सहसा-अणाभोगा तू, पुव्वुत्ता जेसु जेसु ठाणेसु ।
सव्वेसु वि तेसु भवं, पडिक्कमण पुव्वविहियं तु ॥१७१७॥
तेसु च्चि कारणेसुं, आभोगे इत्थ जाणमाणो उ ।
बहुसो होंति पुणो पुणो, अतिप्पमाणे वि एमेव ॥१७१८॥
सव्वत्थ तु णिव्विगई, सोही आभोगतो मुणेतव्वा ।
बहुसो वि सोहि एसा, अतिप्पमाणे वि णातव्वा ॥१७१९॥४४

धावण-डेवण-संघरिस-गमण-किड्डा-कुहावणादीसु ।
उक्कुट्ठि-गीत-छेलिय-जीवरुयादीसु य चउत्थं ॥४५॥

धावण गतिमतिरित्ता, वाडिक्ति व डेवणं तु...ड्डवणं ।
संघरिसो जमलिओ तू, को सिग्घगति त्ति वच्चति तु ॥१७२०॥
किड्डा होयऽट्ठावय, चउरंगा जूयमादि णायव्वा ।
वट्टादि इंदजालं, खेड्डा उ कुहावणा एसा ॥१७२१॥
आदिग्गहणेणं तू, समासओ पहेलिया कुहेडादी ।
उक्कुट्ठी पुक्कारो, गीतं पुण होइ कंठं तु ॥१७२२॥
छेलिय सेण्टा भणति, संगारो कीरती तु सासण्णा ।
जीवरुअ मयूरादी, कोइलमादी व णातव्वं ॥१७२३॥
धावणमादिपदेसुं, सव्वेसु अहक्कमेण विण्णेयं ।
पत्तेयं पत्तेयं, सोही साहुस्सऽभत्तट्ठं ॥१७२४॥४५॥

तिविहोवहिणो विच्चुतविस्सरितापेहिताणिवेदणए।
णिव्वितियं पुरिमेक्कासणाइ सव्वम्मि चायामं ॥४६॥

तिविहो तु होति उवही, जहण्णओ मज्झिमो य उक्कोसो ।
चतुविह छव्विह चतुभेदयो य कमसो मुणेयव्वो ॥१७२५॥
मुहपोत्ति पायकेसरि, पत्तट्ठवणं तु गोच्छओ चेव ।
एसो जहण्णओ तू, मज्झिमगमतो पवक्खामि ॥१७२६॥ जघन्य उपधिः
पडलय रयत्तरणं वा, पत्ताबंधो य चोलपट्टो य ।
मत्तय रयहरणं वा, मज्झिमओ एस णातव्वो ॥१७२७॥ मध्यम उपधिः
पच्छादतिग पडिग्गह, एसो उक्कोसओ चतुब्भेओ ।
ओहोवही उ एसो, तिविहो तु समासतो होति ॥१७२८॥ उत्कृष्ट उपधिः
ओवग्गहिओ तिविहो, जहण्ण मज्झो तहेव उक्कोसो ।
सव्वो वण्णेयव्वो, जह भणिओ कप्पअज्झयणे ॥१७२९॥
विच्चुत पडियं भण्णति, पुणरवि लद्धे जहण्णमादीसु ।
सोही पमायमूला, णिव्वियमादी य इणमो उ ॥१७३०॥
णिव्वियति जहण्णम्मि, मज्झिमए सोहि होति पुरिमड्ढं ।
एक्कासणमुक्कोसे, सव्वम्मि य होति आयामं ॥१७३१॥
तिविहोवहि विस्सरिए, ण वि पडिलेहेइ तत्थ सोहि इमा ।
णिव्वितितं पुरिमेक्कासणं तु सव्वम्मि चाऽऽयामं ॥१७३२॥
तिविहोवहि विस्सरिए, आयरियादीण जो तु ण णिवेदे ।
सोही णिव्वितियादी, आयामंता मुणेयव्वा ॥१७३३॥४६॥

हारियधोतुग्गमियाणिवेदणादिण्णभोगदाणेसु ।
आमणमायामचतुत्थयाइं सव्वम्मि छट्ठं तु ॥४७॥

जहण्णोवहि हारंतो, सोही इक्कासणं तु दातव्वं ।
मज्झिमए आयामं, उक्कोसे होयऽभत्तट्ठं ॥१७३४॥

सव्वोवहि हारंती, मोही छट्टं तु होति णायव्वं ।
एत्तो थोए वोच्छं, मोही उ जहण्णमादीणं ॥१७३५॥
थोएँ जहण्णेक्कासण, मज्झिमए मोहि होति आयामं ।
उक्कोसेऽभत्तट्ठं, थोए सव्वम्मि छट्टं तु ॥१७३६॥
निविहोवहिमुग्गमितुं, आयरियाणं तु जो ण णिव्वेदे ।
आसणमायामचतुत्थयाइं सव्वम्मि छट्टं तु ॥१७३७॥
उवही जहण्णमादी, गुरूहिँ अविदिण्ण जो तु परिभुंजे ।
सोहिक्कासणमादी, छट्टंता होति सव्वम्मि ॥१७३८॥
अणणुण्णाय गुरूहिं, उवहि जहण्णादि देति अण्णस्स ।
सोहिक्कासणमादी. छट्टंतो होति जीएणं ॥१७३९॥४७॥

मुहणंतय रयहरणे, फिडिए णिव्विगतियं चउत्थं तु ।
नासिय हारविए वा, जीएण चउत्थछट्ठाइं ॥४८॥

मुहणंत फिडिय उग्गह, सोही णिव्विगतियं तु दाइव्वं ।
रयहरणे तु चउत्थं, फिडिए सोहेस लद्धम्मि ॥१७४०॥
मुहणंत पमादेणं, हारविए णासिए व भत्तट्ठं ।
रयहरणे छट्टं तू, सोहेस पमादिणो जीए ॥१७४१॥४८॥

कालऽद्धाणादीए, णिव्विगती खमणमेव परिभोगे ।
अविहिविगिंचणियाए, भत्तादीणं तु पुरिमड्ढं ॥४९॥

विकहादिपमाएणं, कालादीयं करेन्ते भत्तादी ।
सोही णिव्विगती तू, परिभोगे होयऽभत्तट्ठं ॥१७४२॥
एवऽद्धाणातीए, अप्परिभोगे वि सोहि णिव्विगति ।
परिभोगेऽभत्तट्ठो, अविहीय विगिचणे पुरिमं ॥१७४३॥४९॥

पाणस्सासंवरणे, भूमितिगापेहणे य णिव्विगती ।
सव्वस्सासंवरणे, अगहणभंगे य पुरिमड्ढं ॥५०॥

पाणस्सासंवरणे, सोही साहुस्स होति णिव्विगतिं ।
भूमीतिगं इमं तु, वोच्छामि समासतो इणमो ॥१७४४॥

उच्चारभूमि पढमा, बितिया पुण होति पासवणभूमी । भूमित्रिकम्
तइया उ कालभूमी, सोहेत्थ अपेहणे बिगतिं ॥१७४५॥

असणादी चतुभेदो, सव्वो वि य एत्थ होति आहारो ।
तस्स असंवरणम्मी, सोही साहुस्स पुरिमड्ढं ॥१७४६॥

अहव णमुक्कारादी, पच्चक्खाणं ण गेण्हए सव्वं ।
गहितं वा जो भंजति, सोही सव्वत्थ पुरिमड्ढं ॥१७४७॥५०॥

एयं चिय सामण्णं, तव-पडिमा-ऽभिग्गहादियाणं पि ।
णिव्वितियादी पक्खिय-पुरिमादिविभागतो णेयं॥५१

एयं चिय पुरिमड्ढं, सामण्ण विसेसमियं मुणेयव्वं ।
तव पडिम अभिग्गहे या, अगहणभंगे इमं वोच्छं ॥१७४८॥

तवो बारसहा होति, पडिमा तू एगरातिया ।
दव्वाती तु अभिग्गह, अगहणभंगे तु पुरिमड्ढं ॥१७४९॥

गाहापच्छद्धस्स तु, इमा विभासा तु, होति णातव्वा ।
खुड्डादी पंचण्ह वि, णिव्विगति अन्त भत्तट्ठो ॥१७५०॥

एयं पक्खिए ।

चाउम्मासिय खुड्डग, भिक्खू थेरो उवज्झ आयरिए ।
पुरिमड्ढ एगभत्तं, आयाम चउत्थ छट्ठंता ॥१७५१॥ चाउम्मासिए।

पतिदिणपच्चक्खाणं, जहसत्ति अगेण्हणे तु सव्वहियं ।
खुड्डादी पंचण्ह वि, एक्कासणमट्ठमं अंतो ॥१७५२॥ संवच्छरिए।

फिडिए सतमुस्सारिय भंगे वेगादि वंदणादीसु ।
णिव्विगतिय-पुरिमेगासणादि सव्वेसु चायामं ॥५२॥

फिडितुस्सग्गे एक्के, पमाइणो सोहि होति णिव्विगतिं ।
दोहिं पुरिमड्ड भवे, तिहिं फिडिए सोहि भत्तेक्कं ॥१७५३॥
सव्वे काउस्सग्गे, फिडिए जुयओ पडिक्कमे जो तु ।
सोही पच्छाऽऽयामं, उस्सारंते इमं वोच्छं ॥१७५४॥
सतमुस्सारे एक्कं, काउस्सग्गं ति एत्थ णिव्विगतिं ।
दोसु तु पुरिमड्ड भवे, एक्कासणयं भवे तीहिं ॥१७५५॥
सव्वं सतमुस्सारे, आयंबिल एत्थ होति सोही तु ।
भग्गे त्ति य एस च्चिय, सोही तह वंदणमदेन्ति ॥१७५६॥५२॥

अकएसु तु पुरिमा-ऽऽमणमायामं सव्वसो चउत्थं तु ।
पुव्वमपेहितथंडिल, णिमित्तोसिरणे दियासुवणे ॥५३

ण करेंतस्सुस्सग्गं, सोही एत्थं तु होइ पुरिमड्ढं ।
दोहि य एक्कासणयं, तिहि अकरणे सोहि आयामं ॥१७५७॥
सव्वं चिय आवसयं, अकरेन्ते सोहि होयऽभत्तट्ठो ।
काउस्सग्गे तह वंदणस्स सोही तहा[ऽ]करणे ॥१७५८॥
गाहापच्छद्धेण तु, पुव्वं तु अपेहिए उ थंडिल्ले ।
णिसिवोसिरणे सोही, साहुस्स भवे अभत्तट्ठं ॥१७५९॥
दियसुवणे णिक्कारणे, सोही साहुस्स होयऽभत्तट्ठं ।
कोहं परिवसमाणे, कक्कोल्लादीमतो वोच्छं ॥१७६०॥५३॥

कोहे बहुदेवसिए, आमव-कक्कोलगादिएसुं च ।
लसुणादी पुरिमड्ढं, तण्णादीबंधमुयणे य ॥५४॥

पक्खियमतिकामन्तो, बहुदेवसिओ त्ति एस कोहो तु ।
अहवा बहुदेवसिए, चाउम्मासादिरित्ते तु ॥१७६१॥
एयं बहुदेवसियं, एत्थ उ सोही तु होइ भत्तट्ठं ।
आसवो त्तियदं भण्णति, तमाइयंते अभत्तट्ठं ॥१७६२॥

कक्कोलयसेवंते, सोही साहुस्स होयऽभत्तट्ठं ।
पूयफल-जाईफल-लवंग-तंबोलमादिसु य ॥१७६३॥
आदिग्गहणे णेतो, पत्तेयं एत्थ सोहऽभत्तट्ठं ।
लसुणादिन्ते पुरिमं, आदिग्गहणा पलंडुम्मि ॥१७६४॥
तण्णगबंधणमुयणा, सोही एत्थं तु होति पुरिमड्ढं ।
आदिग्गहणेणं पुण, हंस-मयूरादिएसुं पि ॥१७६५॥ ५४॥

अज्झुसिरतणेसु निव्विगतियं तु सेसपणएसु पुरिमड्ढं ।
अप्पडिलेहियपणए, एगासण तसवहे जं च ॥५५॥

अज्झुसिरं तु कुसादी, परिभोगा कारणे तु णिव्विगर्ति ।
सेसपणगं तु पंचह, सपंचभेयं पुणेक्केक्कं ॥१७६६॥
पोत्थय-तणपणगं वा, दूसे पणगं च दुप्पडिलेहे ।
अप्पडिलेहियदूसे, पंचमयं चम्मपणगं च ॥१७६७॥
गंडी कच्छवि मुट्ठी, छिवाडि संपुडयपोत्थए चेव ।
साली वीली कोद्दव, रालग रण्णे तणाइं च ॥१७६८॥
अप्पडिलेहियदूसे, तूली उवहाणए य णायव्वे ।
गंडुवहाणाऽऽलिंगणि, मसूरए चेव पोत्तणए ॥१७६९॥
पल्हवि कोयवि पावार णवयए तह य दाढियाली य ।
दुप्पडिलेहियदूसे, एयं बितियं भवे पणगं ॥१७७०॥
गो-महिस-अया-एलग-मिगचम्मं पंचमं मुणेयव्वं ।
अहवा वि चम्मपणगं, एयं बितियं तु विण्णेयं ॥१७७१॥
तलिगा खल्लग वज्झे, कोसग कत्ती य पंचमं पणगं ।
एते पंच उ पणगा, सयं च भेया समक्खाना ॥१७७२॥ ५५॥

ठवणमणापुच्छाए, णिव्विसणे विरियगूहणाए य ।
जीएणेक्कासणयं, सेसगमायासु खवणं तु ॥५६॥

ठवणकुल-दाणसड्ढादियाइ ताइं तु गुरुमणापुच्छा ।
पविसइ णिव्विसणा तू, पडिगाहे जं तु भत्तादी ॥१७७३॥
विरियं सामत्थं वा, परक्कमो चेव होइ एगट्ठा ।
गूहण गोवण णूमण, पलियंचणमेव एगट्ठं ॥१७७४॥
पुरिसमायासहिए, जीएणं देज्ज एगभत्तं तु ।
सुयववहारे अण्णह, सेसं मायं अयो वोच्छं ॥१७७५॥
भद्दगं भद्दगं भोच्चा, विवण्णं विरसमाहरे ।
आयरियाण सगासे, जमोत्थी एव चिंतए ॥१७७६॥
लूहवित्ती महाभागो, एस साहू जिंतिदिओ ।
रसचागं करेइ त्ती, अंतपंतेहिं लाढए ॥१७७७॥५६॥

दप्पेणं पंचिंदियवोरमणे संकिलिट्ठकम्मे य ।
दीहद्धाणासेविय-गिलाणकप्पावसाणेसु ॥५७॥

दप्पो वग्गण-धावण-डेवणमादी तु होंति णायव्वो ।
पंचिंदियवोरमणं, उद्दवण विराहणेगट्ठं ॥१७७८॥
कम्मं तु संकिलिट्ठं, करकम्मं कुणति अंगादाणे उ ।
दीहेणऽद्धाणेणं, कम्म पलंबादि बहु सेवे ॥१७७९॥
गेलण्णम्मि तु दीहे, आहाकम्मादि सण्णिहोमादी ।
बहुअतियारणिसेवी, सोहि एत्थं तु अवसाणे ॥१७८०॥
एयम्मि जहुद्दिट्ठे, वोरमणादी गिलाणपज्जंते ।
पत्तेयं पत्तेयं, सोही तु पंचकल्लाणं ॥१७८१॥५७॥

सव्वोवहिकप्पम्मि य, पुरिमत्तापेहणे य चरिमाए ।
चाउम्मासे वरिसे, य सोहणं पंचकल्लाणं ॥५८॥

पाउसकाले सव्वोवहिम्मि जयणा वि कप्पिए सोही ।
पुरिमत्ताएँ पमाया. चरिमाएँ अपेहिते चेव ॥१७८२॥
उवही धोयवसाणे, पुरिमत्तापेहणाएँ चरिमाए ।

पत्तेयं पत्तेयं, सोहेत्थं पंचकल्लाणं ॥१७८३॥
चाउम्मासिय वरिसे, णिरतियारं यऽवस्स दायव्वं ।
आलोइयम्मि सोही, णियमेणं पंचकल्लाणं ॥१७८४॥
किं कारणमिह सोही, णिरतियारे वि दिज्जए एवं ? ।
चोयग ! सुहुमअतियारे, कए वि ण वि जाणति कयाति ॥१७८५॥
अहव ण संभरती तू, जह पायोसीय अड्डरत्तीए ।
वेरत्तिय पाभाइय, अग्गहणा काल अतियारं ॥१७८६॥
सुत्तत्थपोरिसीअकरणम्मि दुप्पेह दुप्पमज्जासु ।
एतेण कारणेणं, सोही तू पंचकल्लाणं ॥१७८७॥५८॥

छेदादिमसद्दहयो, मिउणो परियायगव्वियस्स वि य ।
छेदातीए वि तवो, जीएण गणाहिवइणो य॥५९॥

विपुलं तवमकरेंतो, किह मुज्झति छेदमूलमेत्तेणं ? ।
गुरुआणामेत्तेणं, असद्दहंते तवो देयो ॥१७८८॥
मतुओ वि छेद मूले, व दिज्जमाणम्मि होति परितुट्ठो ।
इहरा वि वंदणिज्जो, निक्खुत्तो तस्स देह तवं ॥१७८९॥
दुविहो य गव्विओ खलु, चिरपरियाओ तहेव तवबलिओ ।
छेदम्मि दिज्जमाणे, परियादी गव्विओ होति ॥१७९०॥
केत्तियमेत्तं छिंदिह ?, तह वि य हं तुब्भ होमि राइणिओ ।
एसो उ गव्विओ खलु, चिरपरियादी मुणेयव्वो ॥१७९१॥
तवबलिओ देह तवं, अहं समत्थो त्ति गव्विओ होति ।
तम्हा तद्दोसहरं, विवरीयं तेसि दातव्वं ॥१७९२॥
गणअहिवति आयरियो, तस्स वि छेदादि होति पत्तम्मि ।
अप्परिणयसेहादिसु, मा होज्जा हीलणिज्जो त्ति ॥१७९३॥
धीबलसंघयणं वा, णातुं कालं च निविह गिम्हादी ।
तम्हा तद्दोसहरं, तवारिहं दिज्जए तस्स ॥१७९४॥५९॥०॥

जं जं ण भणियमिहतिं, तस्सावत्तीय दाणसंखेवे।
भिण्णादिया य वोच्छं, छम्मासन्ता य जीएणं॥६०॥

जं जं ति होति विच्छा. ण वि भणियमिहं ति जीतववहारे।
पच्छित्तविसोही तू, तस्सावत्ती पणगमादी ॥१७९५॥
दाणं णिव्वितिगादी से य विसेसेणमेत्थ भणिहामि।
संखेवो तु समासो, किह ण वि जोएण भणितमिहं?॥१७९६॥
कम्ही वा भणियं ? तो. गुरुगाह णिसीह कप्प ववहारे।
सुत्तत्थयो य भणियं. आणादि सवित्थरेणं तू ॥१७९७॥
पणगादी छम्मासावसाण आवत्तिविरयणाओ य।
णेगविहा भणिता उ, णिसिहादिसु वित्थरेणं तु ॥१७९८॥
इह पुण जीएणं तू, णिव्वणावत्तिदाणसंखेवं।
भिण्णादी छम्मासा. णेदाणजिएणिमं वोच्छं ॥१७९९॥६०॥

भिण्णो अविसिट्ठो च्चिय.मासो चउरो य छच्च लहुगुरुगा।
णिव्वितियादी अट्ठमभत्तन्तं दाणमेतेसिं ॥६१॥

पणुवीस दिणा भिण्णो. अविसिट्ठो एस गुरु लहू वा वि।
अविसेसिओ विसिट्ठो. एसो तू होति णायव्वो ॥१८००॥
मासो लहुओ गुरुओ. चतुरो मासा य होन्ति लहुगुरुया।
छम्मासस्सा लहुगुरुगा. दाणं एतेसि वोच्छामि ॥१८०१॥
पणगं दस पण्णरसं. वीसा पणुवीस जाव णिव्विगती।
लहुमासे पुरिमड्ढं. गुरुमासे दाण भत्तिक्कं ॥१८०२॥
चउलहुए आयामं, चउगुरुए होति दाण भत्तट्ठं।
छल्लहूए छट्ठं तू. छग्गुरुए दाणमट्ठमयं ॥१८०३॥
णिव्विगतिगमादीयं, अट्ठमभत्तन्तमेय दाणं ति।
भिण्णादीणं कमसो, छम्मासंताऽवसाणाण ॥१८०४॥६१॥०॥

इय सव्वावत्तीओ, तवसो णाउं अहक्कमं समए ।
जीएण दिज्ज णिव्वीतिगाति दाणं जहाभिहितं ॥६२

इय एतेण कमेणं, एवपगारेण अहव इतिसद्दो ।
सव्वा आवत्ती पणगादिया तु छम्मासपज्जन्ता ॥१८०५॥
णिव्वीइगमाईओ, अट्ठमपज्जंतो होइ सव्वतवो ।
जीएण दिज्ज दाणं, णिव्वीतिगमादिगं कमसो ॥१८०६॥
जहभिहितं जह भणियं, तह तह देज्जाहिऽभिहितमेयं ति ।
सामण्णेणं एयं, समासतो होति णातव्वं ॥१८०७॥६२॥०॥

एयं पुण सव्वं चिय, पायं सामण्णयो विणिद्दिट्ठं ।
दाणं विभागतो पुण, दव्वादिविसेसियं जाण ॥६३॥

एयं ति जहुद्दिट्ठं, पुणसद्दो विसेसणे तु णातव्वो ।
सव्वं पायच्छित्तं, दाणं पाएण बाहुल्ला ॥१८०८॥
सामण्णं अविसेसित, णिद्दिट्ठं विसेसितं विणिद्दिट्ठं ।
दाणं णिव्वितिगादी, विभागतो देज्ज वित्थरतो ॥१८०९॥
दव्वादीया पडिसेवणा तु ल्लतिया तु आदिसद्देणं ।
होति विसेसेणाऽवेक्खिवतूण दिज्जाहि ऊणं पि ॥१८१०॥
अहवा वि समतिरित्तं, दाणं णाऊण देज्ज जीएणं ।
अहवा वि तत्तियं चिय, दिज्जाहि सुयोवदेसेणं ॥१८११॥६३॥०॥

दव्वं खेत्तं कालं, भावं पुरिस पडिसेवणाओ य ।
णातुमितं चिय दिज्जा, तम्मत्तं हीणमहितं व ॥६४॥

आहारादी दव्वं, खित्तं लुक्खादि काल गिम्हादी ।
हिट्ठादी भावं तू, पुरिसं गीयादि जाणित्ता ॥१८१२॥
आउट्टिगमादीया, पडिसेवण होति तू मुणेतव्वा ।
णाऊण जाणितूणं, इति मि त्ति जए न जीएणं १८१३॥

देज्जाही तम्मित्तं, हीणं अहितं व णातु दव्वानी ।
हीणे दव्वादीए, हीणं देज्जाऽहिए अहियं ॥१८१४॥६४॥
एसो तु अक्खरत्थो, दव्वादीणं तु वन्निनो कमसो ।
पुणरवि दव्वादीणं, विभागतो सूरिमाहंसु ॥१८१५॥

आहारादी दव्वं, वलियं सुलभं च णाउमहियं पि ।
देज्जाहि दुब्बलं दुल्लभं च णाऊण हीणं पि ॥६५॥

आहारो जेसिमादी, दव्वाणं ताइं होंति दव्वाइं ।
आहारादीयाइं, बलियाइं जम्मि देसम्मि ॥१८१६॥
जह अणूवदेस सालीकूरो सभावेण होति बलिओ तु ।
सुलभो य सो तु णिच्चं, सेसा वट्टंति एमेव ॥१८१७॥
एयं णाऊण तहि, जं भणितं दाण जीतववहारे ।
तं देज्ज समब्भहियं, जहिं पुण वणवल्लकल्मादी ॥१८१८॥
कंजियरुक्खाहारो, दुब्बल दुलभो य एव णाऊणं ।
देज्ज सेत्थहीणं (?) जीतव्ववहारभणिया उ ॥१८१९॥६५॥

लुक्खं सीतल साहारणं च खेत्तमाहितं पि सीयम्मि।
लुक्खम्मि य हीणयरं, एवं काले वि तिविहम्मि॥६६॥

लुक्खं तु णेहरहितं, जं खेत्तं वायपित्तलं वा वि ।
सीयं बलियं भण्णति, अहवा अणूवं भवे सीतं ॥१८२०॥
साहारणं समं तू, जं ण वि णिद्धं ण चेव लुक्खं पि ।
एयं तिविहं खेत्तं, दाणं एतेसि वोच्छामि ॥१८२१॥
इय एव जीतदाणं, णिद्धे खित्तेऽहियं पि देज्जाहिं ।
साहारणे तम्मत्तं, लुक्खे खेत्त तु हीणयरं ॥१८२२॥६६॥
लुक्खादी तिह खेत्तं, एवेयं वण्णितं समासेणं ।
अहुणा तु तिविह कालं, गिम्हादि समासतो वोच्छं॥१८२३॥

गिम्ह-सिसिर-वासासू, देज्जऽट्ठम-दसम-बारसंताइं।
णातुं विहिणा णवविहसुतववहारोवदेसेणं ॥६७॥

गिम्हासु चतुत्थं देज्जा, छट्ठं च हिमागमे ।
वासासु अट्ठमं दिज्जा, तवो एस जहण्णओ ॥१८२४॥
गिम्हासु छट्ठं देज्जा, अट्ठमं च हिमागमे ।
वासासु दसमं देज्जा, एस मज्झिमओ तवो ॥१८२५॥
गिम्हासु अट्ठमं देज्जा, दसमं च हिमागमे ।
वासासु दुवालसमं, एस उक्कोसतो तवो ॥१८२६॥
जहासंखेणेमो, गिम्हादितवो समासतो होति ।
एयं पुण कह दिज्जा ?, णवविहसुत्तोवएसेणं ॥१८२७॥
सुतववहारेणऽहवा, णवभेदवियप्प सुहुम जाणित्ता ।
देज्जाहि तिविहकाले, ववहारो सो इमो णवहा ॥१८२८॥
अहलहुसग लहुसयरो, लहुसो त्ती होति लहुसपक्खम्मि ।
अहलहुओ लहुयतरो, लहुओ त्ती लहुयपक्खम्मि ॥१८२९॥
गुरुयो गुरुयतराओ, अहगुरुओ एस होति गुरुपक्खे ।
णवविहववहारेसो, आवत्ती तेसि वोच्छामि ॥१८३०॥
पण दस पण्णरसं वा, तिविहेसो होति लहुसपक्खम्मि ।
वीसा य पणवीसा, तीसा वि य लहुगपक्खम्मि ॥१८३१॥
गुरुमासो चतुमासो, छम्मासो चेव होति गुरुपक्खे ।
णवविह आवत्तेसा, णवविहदाणं अतो वोच्छं ॥१८३२॥
णिव्विगतिं पुरिमड्ढं, एक्कासणयं च लहुसपक्खम्मि ।
आयंबिलऽभत्तट्ठं, छट्ठं वा होति लहुपक्खे ॥१८३३॥
अट्ठम दसम दुवालस, गुरुपक्खे एय होति दाणं तु ।
आवत्ती तवो एसो, समासतो णवहमक्खातो ॥१८३४॥

णवविहववहारेसो, लहुमादि समासतो समक्खातो ।
पुणरवि ओहेण विभागयो य गुरुमादि वोच्छामि ॥१८३५॥

गुरुओ गुरुगतरातो, अहागुरूयो व होति ववहारो ।
लहुओ लहुततरातो, अहालहू चेव ववहारो ॥१८३६॥

लहुसो लहुसतराओ, अहालहूसो य होति ववहारो ।
एएसि पच्छित्तं, वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥१८३७॥

गुरुओ य होति मासो, गुरुयतराओ य होति चतुमासो ।
अहगुरुओ छम्मासो, गुरुपक्खे एस पडिवत्ती ॥१८३८॥

तीसा य पण्णवीसा, वीसा वि य होति लहुयपक्खम्मि ।
पण्णरस दस य पंच य, लहुसगपक्खम्मि पडिवत्ती ॥१८३९॥

गुरुयं च अट्ठमं खलु, गुरुयतरायं च होति दसमं तु ।
अहगुरुयं बारसमं, गुरुपक्खे एस पडिवत्ती ॥१८४०॥

छट्ठं च चउत्थं वा, आयंबिल एगठाण पुरिमड्ढं ।
णिव्वितियं दायव्वं, अहलहुसे अहव सुद्धो वा ॥१८४१॥

ववहारो आरोवण, सोही पच्छित्तमेयमेगट्ठं ।
थोवो तु अहालहुसो, पट्ठवणा होति दाणं तु ॥१८४२॥

ओहेण एस भणिओ, एत्तो वोच्छं पुणो विभागेणं ।
तिग णव सत्तावीसग, एक्कासीती य भेदेणं ॥१८४३॥

गुरुपक्खो लहुपक्खो, लहुसगपक्खो य तिविह एस भवे ।
एक्केको पुणो तिविहो, उक्कोसादी इमं वोच्छं ॥१८४४॥

गुरुपक्खे उक्कोसा, मज्झ जहण्णो य एव लहुए वि ।
एमेव लहुसए वी, उक्कोसो मज्झिम जहण्णो ॥१८४५॥

गुरुपक्खे छम्मासो, पणमासो चेव होति उक्कोसो ।
मज्झिम तु तेमासो, दुमास गुरुमासिय जहण्णो ॥१८४६॥

लहुमास भिण्णमासो, वीसा वि य तिविहमेय लहुपक्खे ।
पण्णरस दसग पंचग, लहुसुक्कोसादि तिविहेसो ॥१८४७॥
आवत्तितवो एसो, णवभेदो वण्णितो समासेणं ।
अहुणा उ सत्तवीसो, दाणतवो तस्सिमो होति ॥१८४८॥
गुरु-लहु-लहुसगपक्खे, एक्केक्को णवविहो मुणेतव्वो ।
उक्कोसुक्कोसो या, उक्कोसगमज्झिम जहण्णो ॥१८४९॥
मज्झिमउक्कोसो या, मज्झिममज्झो तहा जहण्णो य ।
होति जहण्णुक्कोसो, जहण्णमज्झो दुहजहण्णो ॥१८५०॥
गुरुपक्खो—
उक्कोसुक्कोसो या, उक्कोसगमज्झिमो जहण्णो य ।
मज्झिमउक्कोसो तू, मज्झिममज्झो जहण्णो य ॥१८५१॥
होति जहण्णुक्कोसो, जहण्णमज्झो जहण्णगजहण्णो ।
णवविहववहारेसो, लहुपक्खे होति णातव्वो ॥१८५२॥
उक्कोसुक्कोसो तू, उक्कोसगमज्झिमो जहण्णो य ।
मज्झिमउक्कोसो तू, मज्झिममज्झो जहण्णो य ॥१८५३॥
होति जहण्णुक्कोसो, जहण्णमज्झो जहण्णगजहण्णो ।
णवविहववहारेसो, लहुसगपक्खे मुणेतव्वो ॥१८५४॥
बारसम दसम अट्ठम, छप्पणमासेसु तिविह दाणेदं ।
चउतेमासे दसमऽट्ठ, छट्ठ उक्कोसगाति तिहा॥१८५५॥
एमेवुक्कोसादी, दुमास गुरुमासिए तिहा दाणं ।
अट्ठम छट्ठ चउत्थं, णवविहमेयं तु गुरुपक्खो ॥१८५६॥
दसमं अट्ठम छट्ठं, लहुमासुक्कोसगादि तिह दाणं ।
अट्ठम छट्ठ चउत्थं, उक्कोसादेय तिह भिण्णे ॥१८५७॥
छट्ठ चउत्थाऽऽयामं, उक्कोसादेय दाण वीसाए ।
लहुपक्खम्मी णवगो, बीओ एसो मुणेयव्वो ॥१८५८॥
अट्ठम छट्ठ चउत्थं, एवुक्कोसादिदाण पण्णरसे ।

छट्ठ चउत्थाऽऽयामं, दसमं तिविहेत दाण भवे ॥१८५९॥
खमणाऽऽयामेक्कासण, तिविहोक्कोसादि दाण पणगेयं।
लहुसेस ततियणवगो, सत्तावीसेस वासासु ॥१८६०॥
सिसिरे दसमादी पुण, चारणभेदेण सत्तवीसे य।
ठायति पुरिमड्ढम्मी, अट्ठोक्कंती य तह चेव ॥१८६१॥
अट्ठममादी गिम्हे, चारणभेदेण सत्तवीसेण।
तह चेव अट्ठोक्कंती, ठायति णिव्वीतिए णवरिं ॥१८६२॥
अहुणा उ चारणा तु, उक्कोमुक्कोसगादि गुरुगादी।
वासासु सिसिरे या, गिम्हे य समासनो वोच्छं ॥१८६३॥
अहगुरुए वासासु, उक्कोमुक्कोसए य बारसमं।
उक्कोसमज्झ दसमं, उक्कोमजहण्णमट्ठमगं ॥१८६४॥
अहगुरुए सिसिरेसुं, उक्कोसुक्कोसए य दसमं तु।
उक्कोसमज्झिम अट्ठम, उक्कोसजहण्णए छट्ठं ॥१८६५॥
अहगुरुए गिम्हासुं, उक्कोमुक्कोसमट्ठमं दिज्जा।
उक्कोसमज्झ छट्ठं, उक्कोसजहण्णए चउत्थं ॥१८६६॥
अहागुरुपक्खे—
गुरुयतरा वासासुं, मज्झिमउक्कोसए य दसमं तु।
मज्झिममज्झे अट्ठम, मज्झजहण्णेण छट्ठं तु ॥१८६७॥
गुरुततरा सिसिरेसुं, मज्झिमउक्कोसमट्ठमं देज्जा।
मज्झिममज्झे छट्ठं, मज्झजहण्णे चउत्थं तु ॥१८६८॥
गुरुततरा गिम्हेसुं, मज्झिमउक्कोसे देज्ज छट्ठं तु।
मज्झिममज्झ चउत्थं, मज्झजहण्णेण छट्ठं तु ॥१८६९॥
गुरुततरासि आयामं। गुरुअतरपक्खे—
गुरुए वास जहण्णे, उक्कोसे अट्ठमं तु देज्जाहि।
छट्ठं जहण्णमज्झे, होइ चउत्थं दुहजहण्णे ॥१८७०॥

गुरु सिसिरेऽत्थ जहण्णे, उक्कोसं देज्ज छट्ठभत्तं तु ।
जहण्णयमज्झे चउत्थं, दुहयो जहण्णेण आयामं ॥१८७१॥
गुरुए गिम्ह जहण्णे, उक्कोसा देज्ज तू चउत्थं तु ।
जहण्णयमज्झाऽऽयामं, एक्कासणयं दुहजहण्णे ॥१८७२॥
गुरुपक्खे ॥

लहुए वासारत्ते, उक्कोसुक्कोसगम्मि दसमं तु ।
उक्कोसमज्झिमऽट्ठम, उक्कोसजहण्णए छट्ठं ॥१८७३॥
लहुए उक्कोसुक्कोसगम्मि सिसिरम्मि अट्ठमं दिज्जा ।
उक्कोसमज्झ छट्ठं, उक्कोसजहण्णए चउत्थं ॥१८७४॥
लहुपक्खे उक्कोसे, गिम्हम्मी देज्ज छट्ठभत्तं तु ।
मज्झिमगं तु चउत्थं, उक्कोसजहण्णमायामं ॥१८७५॥
लहुयपक्खे ॥

लहुयतरे वासासुं, मज्झिमउक्कोसमट्ठमं दिज्जा ।
मज्झिममज्झे छट्ठं, मज्झजहण्णेणऽभत्तट्ठं ॥१८७६॥
लहुयतरा सिसिरंसुं, मज्झिमउक्कोस देज्ज छट्ठं तु ।
मज्झिममज्झ चउत्थं, मज्झजहण्णेणमायामं ॥१८७७॥
लहुयतरा गिम्हेसुं, मज्झिमउक्कोस देज्जऽभत्तट्ठं ।
मज्झिममज्झायामं, मज्झजहण्णेण भत्तेक्कं ॥१८७८॥
लहुअतरपक्खे ॥

अहलहुया वासासुं, जहण्णउक्कोस छट्ठ देज्जाहि ।
मज्झिमगम्मि चउत्थं, जहण्णगजहण्णमायामं ॥१८७९॥
अहलहुयग सिसिरंसुं, जहण्णउक्कोस देज्जऽभत्तट्ठं ।
मज्झिमगे आयामं, जहण्णगजहण्णे भत्तेक्कं ॥१८८०॥
अहलहुगे गिम्हासुं, जहण्णगुक्कोस देज्ज आयामं ।
एक्कासणगं मज्झे, पुरिमड्ढं दुहजहण्णम्मि ॥१८८१॥
अहालहुयपक्खे ॥

लहुमग वासामुक्कोमगम्मि उक्कोममट्ठमं देज्जा ।
उक्कोसमज्झ छट्ठं, उक्कोसजहण्णए चउत्थं ॥१८८२॥
लहुमग सिसिरामुक्कोसगं तु उक्कोस छट्ठ देज्जाहि ।
मज्झिमगं तु चउत्थं, उक्कोसजहण्णमायामं ॥१८८३॥
लहुमग गिम्हामुक्कोमगम्मि उक्कोस देज्जऽभत्तट्ठं ।
मज्झिमगं आयामं, उक्कोसजहण्ण भत्तेक्कं ॥१८८४॥

लहुसपक्खे ॥

लहुसतरा वासासुं, मज्झुक्कोसेण छट्ठभत्तं तु ।
मज्झिममज्झ चउत्थं, मज्झजहण्णेण आयामं ॥१८८५॥
लहुसतरा सिसिरासुं, मज्झुक्कोसेण देज्जऽभत्तट्ठं ।
मज्झिममज्झाऽऽयामं, मज्झजहण्णेण भत्तेक्कं ॥१८८६॥
लहुसतरा गिम्हेसुं, मज्झुक्कोसेण देज्ज आयामं ।
मज्झिममज्झेक्कासण, मज्झजहण्णेण पुरिमड्ढं ॥१८८७॥

लहुसतरपक्खे ॥

अहलहुसय वासासुं, जहण्णमुक्कोस देज्जऽभत्तट्ठं ।
मज्झिमगं आयामं, भत्तेक्कं दुहजहण्णेणं ॥१८८८॥
अहलहुसग सिसिरासुं, जहण्णमुक्कोस दिज्ज आयामं ।
जहण्णगमज्झेक्कासण, जहण्गजहण्णेण पुरिमड्ढं ॥१८८९॥
अहलहुसग गिम्हासुं, जहण्णमुक्कोस देज्ज भत्तेक्कं ।
मज्झिमगं पुरिमड्ढं, दुहयो जहण्णेण णिव्विगति ॥१८९०॥

अहालहुसपक्खे ॥

एतेहिं ठाणेहिं, आवत्तीओ.....सदा णियमा ।
बोढव्वा सव्वाओ, असहुम्सेक्केक्कहामणया ॥१८९१॥
जाव ठियं एक्केक्कं, तं पि य हाविज्ज असहुणो ताहे ।
दाउं सट्ठाणेवं, परठाणं देज्ज एमेव ॥१८९२॥

एवं ठाणे ठाणे, हेट्ठाहुत्तो कमेण हासेत्ता ।
णेतव्वं जाव ठितं, णियमा णिव्वीयियं एक्कं ॥१८९३॥
णवविह ववहारेसो, आवत्तीदाणसहितकालजुतो ।
बुद्धीओ तिण्णेओ, विभागतो एससक्खातो ॥१८९४॥
अहव तिसो लहुमादी, तिविहादि समास वित्थरं वोच्छं ।
हीणो मज्झुक्कोसो, तिविहेसो होति णायव्वो ॥१८९५॥
लहुसगपक्खे पणगं, दस पण्णर तिविह एय णातव्वं ।
वीसा य भिण्णमासो, लहुमासो तिविह लहुपक्खे ॥१८९६॥
गुरुमासो चउमासो, छम्मासो चेव एस गुरुपक्खे ।
णवविह आवत्तेसा, दाणं णवहा तिसं वोच्छं ॥१८९७॥
णिव्वितिय पुरिमड्ढं, एक्कासण लहुसए य दाणं ति ।
आयाम चउत्थं वा, छट्ठं तू लहुगपक्खम्मि ॥१८९८॥
अट्ठम दसम दुवालस, गुरुपक्खे एय होति दाणं तु ।
णवविहदाणं एसो, अहवाऽऽवत्ती इमा णवहा ॥१८९९॥
पण दस पण्णरसं वा, लहुगुरुगा लहुसए तु पक्खम्मि ।
वीसा य भिण्णमासो, लहु गुरु लहुओ य मासेक्को ॥१९००॥
गुरुमासो दुण्णि मासा, लहुगुरुगा तिग चउक्क लहुगुरुगा ॥
पंचग छम्मासा या, लहुगुरुगा एस णवहा तु ॥१९०१॥
आवत्तितवो एसो, णवभेदो वण्णितो समासेणं ।
अहुणा तु सत्तवीसो, दाणतवो तस्समो होति ॥१९०२॥
लहुसग लहुगुरुपक्खो, एक्केक्को णवविहो मुणेतव्वो ।
दुहयो जहणो जहणगमज्झो य जहण्णगुक्कोसो ॥१९०३॥
मज्झिमजहण्णगं तू, मज्झिममज्झं तु मज्झिमुक्कोसं ।
उक्कोसगं जहण्णं, उक्कोसगमज्झ उक्कोसं ॥१९०४॥
लहुसगपक्खे वेयं, णवभेद समासतो समक्खायं ।
लहुपक्खे वि णवविहं, गुरुपक्खे वी मुणेयव्वं ॥१९०५॥

वासासु अहालहुसो, दुहयो जहण्णेण देज्ज भत्तेक्कं ।
जहण्णगमज्झायामं, जहण्णगुक्कोसए चउत्थं ॥१९०६॥
लहुसतर मज्झिमजहण्णयम्मि वासासु देज्ज आयामं ।
मज्झिममज्झे चउत्थं, मज्झिमउक्कोसए छट्ठं ॥१९०७॥
लहुसग उक्कोसजहण्णगम्मि वासासु देज्जऽभत्तट्ठं ।
उक्कोसमज्झ छट्ठं, उक्कोसुक्कोसमट्ठमगं ॥१९०८॥
अहलहुए वासासुं, जहण्णजहण्णे तु देज्ज आयामं ।
जहण्णगमज्झ चउत्थं, जहण्णउक्कोसए छट्ठं ॥१९०९॥
लहुयतरा वासासुं, मज्झजहण्णम्मि हवयऽभत्तट्ठं ।
मज्झिममज्झे छट्ठं, मज्झिमउक्कोसमट्ठमगं ॥१९१०॥
लहुए वासासुक्कोसगम्मि जहणे तु देज्ज छट्ठं तु ।
उक्कोसमज्झमट्ठम. उक्कोसुक्कोसए दसमं ॥१९११॥
गुरुपक्खे जहण्णम्मि, जहण्ण होंती चउत्थभत्तं तु ।
हीणगमज्झे छट्ठं, जहण्णउक्कोसमट्ठमगं ॥१९१२॥
गुरुअतरा वासासुं, मज्झजहण्णेण देज्ज छट्ठं तु ।
मज्झिममज्झं अट्ठम. मज्झिमउक्कोसए दसमं ॥१९१३॥
अहगुरुए वासासुं, उक्कोसजहण्णमट्ठमं देज्जा ।
उक्कोसमज्झ दसमं. उक्कोसुक्कोस बारसमं ॥१९१४॥
अहलहुसग सिसिरंमुं. जहण्णजहण्णेण होंति पुरिमड्ढं ।
हीणगमज्झेक्कासण. जहण्णउक्कोस आयामं ॥१९१५॥
लहुसतरा सिसिरेसुं, मज्झजहण्णेण भत्तमेक्कं तू ।
मज्झिममज्झाऽऽयामं, मज्झिमउक्कोसए चउत्थं ॥१९१६॥
लहुसग सिसिरुक्कोसे. जहण्ण एयं तु देज्ज आयामं ।
मज्झिमगं तु चउत्थं. उक्कोसुक्कोस छट्ठं तु ॥१९१७॥
अहलहुयग सिसिरेसुं. दुहाजहण्णेण देज्ज भत्तेक्कं ।
जहण्णममज्झाऽऽयामं. जहण्णमुक्कोसए चउत्थं ॥१९१८॥

लहुसतरा सिसिरेसुं, मज्झजहण्णेण देज्ज आयामं ।
मज्झिममज्झ चउत्थं, मज्झिम उक्कोसए छट्ठं ॥११९॥
लहुए सिसिरुक्कोसे, होति जहण्णं चतुत्थभत्तं तु ।
उक्कोसमज्झ छट्ठं, उक्कोसुक्कोसमट्ठमगं ॥१२०॥
गुरुए सिसिर जहण्णे, जहण्णएणं तु देज्ज आयामं ।
जहण्णगमज्झ चउत्थं, जहण्णउक्कोसए छट्ठं ॥१२१॥
गुरुयतरा सिसिरेसुं, मज्झजहण्णेण देज्जऽभत्तट्ठं ।
मज्झिममज्झे छट्ठं, मज्झिमउक्कोसमट्ठमगं ॥१२२॥
अहगुरुए सिसिरेसुं, उक्कोसजहण्णएण छट्ठं तु ।
उक्कोसमज्झिमऽट्ठम, उक्कोसुक्कोसए दसमं ॥१२३॥
अहलहुसग गिम्हासुं, जहण्णजहण्णेण होति णिव्विगतिं ।
हीणगमज्झे पुरिमं, जहण्णउक्कोस भत्तेक्कं ॥१२४॥
लहुसतरा गिम्हेसुं, मज्झजहण्णेण होति पुरिमड्ढं ।
मज्झिममज्झेक्कासण, मज्झिमउक्कोसमायामं ॥१२५॥
लहुसग गिम्हुक्कोसे, जहण्णगे होति भत्तमेक्कं तु ।
उक्कोसमज्झ आयंबिलं तु उक्कोसए चउत्थं ॥१२६॥
अहलहुयग गिम्हेसुं, पुरिमड्ढं होति दुहजहण्णेणं ।
मज्झजहण्णेक्कासण, जहण्णउक्कोसमायामं ॥१२७॥
लहुयतरा गिम्हेसुं, मज्झजहण्णेण भत्तमेक्कं तु ।
मज्झिममज्झाऽऽयामं, मज्झिमउक्कोसए चउत्थं ॥१२८॥
लहुयग गिम्हुक्कोसे, जहण्णएणं तु होति आयामं ।
मज्झिमगं तु चउत्थं, उक्कोसुक्कोसए छट्ठं ॥१२९॥
गुरुए गिम्ह जहण्णे, जहण्णयं होति भत्तमेक्कं तु ।
हीणगमज्झाऽऽयामं, जहण्णउक्कोसए चउत्थं ॥१३०॥
गुरुअतरा गिम्हेसुं, मज्झजहण्णेण होति आयामं ।
मज्झिममज्झ चउत्थं, मज्झिमउक्कोसए छट्ठं ॥१३१॥

अहगुरुए गिम्हासु, उक्कोसजहण्णए चउत्थं तु ।
उक्कोसमज्झ छट्ठं, उक्कोसुक्कोसमट्ठमगं ॥१०३२॥
णवविह ववहारंसो, आवत्ती-दाणमहियकालजुओ ।
बुद्धीए विण्णेयो, विभागतो एसमक्खातो ॥१०३३॥६७॥०॥

हट्ठगिलाणाभावम्मि देज्ज हट्ठस्स ण तु गिलाणस्स ।
जावतियं वा विसहति, तं देज्ज सहेज्ज वा कालं॥६८॥

भावं पडुच्च अहियं, देज्जाही हट्ठ-बलिय-णिरुयस्स ।
गिलाणस्स तु ऊणतरं, ण व देज्ज सहेज्ज वा कालं ॥१०३४॥
असुभ सुभो वा भावो, लेस्साभेदेण होंति णायव्वो ।
तिव्वो तिव्वतरो वा, तिव्वतमो एव मंदो वि ॥१०३५॥
पणए वि संवियम्मी, चरिमं भाओ उ केइ पावंति ।
चरिमाओ वा पणगं, एवमिणं भावणिप्फण्णं ॥१०३६॥

भावे त्ति गतम् ।

पुरिसं पडुच्च अहियं, ऊणं वा दिज्ज अहव तम्मत्तं ।
ते पुण पुरिसादीया, इमे समासेण णायव्वा ॥१०३७॥६८॥

पुरिसा गीतागीता, सहासहा तह सढासढा केति ।
परिणामाऽपरिणामा, अतिपरिणामा अवत्थूणं ॥६९॥

केयी पुरिसा गीता, केयि अगीयत्थ होंति णातव्वा ।
धिति-संघयणादीहिं, केइ सहा केइ तू असहा ॥१०३८॥
मायावी होन्ति सढा, असढा पुण उज्जुपण्ण णेतव्वा ।
परिणामादी इणमो, समासतोऽहं पवक्खामि ॥१०३९॥

परिणामक-अपरिणामक-अतिपरिणामकाः

परिणामा अपरिणामा, अतिपरिणामा य वत्थु चरिमदुए ।
अंबादीदिट्ठंता, होति विभागो इमो तेसिं ॥१०४०॥
जो दव्वखेत्तकयकालभावयो जं जहा जिणक्खायं ।
तं तह सद्दहमाणं, जाणसु परिणामगं साहुं ॥१०४१॥

जाणति दव्व जहट्ठिय, सच्चित्ताचित्त मीसयं चेव ।
कप्पाकप्पं च तहा, जोगं वा जस्स जं होति ॥१९४२॥
खेत्ते जं कायव्वं, अद्धाणे जयण एव सद्दहति ।
काले सुभिक्ख-दुब्भिक्खमादिसू जो जहा कप्पो ॥१९४३॥
भावे हट्ठगिलाणं, आगाढं जं जहा व कायव्वं ।
तं सद्दहति करेंति य, एसो परिणामओ साहू ॥१९४४॥
जो दव्वखेत्तकयकालभावयो जं जहा जिणक्खायं ।
तं तह असद्दहंतं, अपरिणामं वियाणाहि ॥१९४५॥
जो दव्वखेत्तकयकालभावयो जं जहा जिणक्खायं ।
तल्लेसुस्सुत्तमती, अतिपरिणामं वियाणाहि ॥१९४६॥
परिणमति जहत्थेणं, मती तु परिणामगस्स कज्जेसु ।
बितिए ण तु परिणमती, अहितमती परिणमे तितिए ॥१९४७॥
दोसु तु परिणमति मती, उस्सग्गऽववायओ तु पढमस्स ।
बितियस्स तु उस्सग्गे, अतिअववाए तु ततियस्स ॥१९४८॥
अंबादीदिट्ठंतेहिं परिक्खा तेसि होति कायव्वा ।
जह कोयि गुरूहिं तू, भणितो अंबाणि आणेहि ॥१९४९॥
परिणामगोऽत्थ भणती, किं सच्चित्तेऽचित्ते व आणेमि ? ।
भावतो कतइए वा ?, किं टाले(?) भिण्णऽभिण्णे वा ? ॥१९५०॥
बेति गुरू लद्ध च्चिय, पुणो व वोच्छिस्स अहव वीमंसा ।
भणिओ सि त्ती एवं, अपरिणामो इमं बेति ॥१९५१॥
किं ते पित्तपलावो ?, मा बितियं एरिसाइं जंपाहि ।
मा णं परो वि सोच्छिति, अहं पि णेच्छामि एयस्स ॥१९५२॥
अतिपरिणामो भणति, कालो मि अतिच्छए अहो ताव ।
किं एच्चिरस्स वुत्तं ?, इत्थऽम्ह वि ण तरिमो भणितुं ॥१९५३॥
घेत्तूण आरमागतो, भणती अण्णे वि किं नु आणेमि ? ।
तो दो वि गुरू भणती, उवालभन्तो इमं तहितं ॥१९५४॥

णाभिप्पायं गिण्हसि, असमत्ते चेव भाससि वयणे ।
मुक्कंबिलल्लोणकए, तिण्णे अहवा वि दोच्चंगे ॥१९५५॥

एमेव य रुक्खे वी, भंजितु आणेह बेति अपरिणतो ।
णिप्फावादी रुक्खे, भणामि ण दुमे अहं हरिए ॥१९५६॥

एमेव य बीयाइं, आणेतो आणिए गुरू भणति ।
अंबिलि विद्धत्थाणि व, भणामि ण वि रोहणि समत्थे ॥१९५७॥
थुं॰ ॥६९॥

तह धितिसंघयणोभयसंपण्णा तदुभएण हीणा य ।
आयपरोभयणोभयतरगा तह अण्णतरगा य ॥७०॥

धितिदुब्बल देहे बली, धितिबलिओ देहदुब्बलो कोइ ।
कोयी दोहि वि बलिओ, दोहिं पी दुब्बलो कोइ ॥१९५८॥
दोहि वि बलिए सव्वं, धितिहीणे जत्थ चिट्ठति धिती से ।
आसज्ज व देहबलं, देज्जा लहुयं उभयहीणे ॥१९५९॥
अहवा पंच विकप्पा—
केयी पुरिसा पंचह, आयतरादी इमे उ णायव्वा ।
पढमो आयतरो तू, णो परयो परतरं बितिओ ॥१९६०॥

उभयतरो तू ततिओ, णोभयह चउत्थओ उ णायव्वो ।
अण्णयरो परयो तू, पंचमओ होइ णातव्वो ॥१९६१॥

आयतर-परतराणं, को णु विसेसो ? त्ति एत्थ चोदेति ।
आततरो चउत्थादी, जं दिज्जति तं तु णित्थरति ॥१९६२॥

वेयावच्चकरो तू, गच्छस्स उवग्गहम्मि वट्टति तु ।
एसो तु होति परतरो, चतुभंगो एव णायव्वो ॥१९६३॥

वेयावच्चतराणं, एक्कं सक्केति दो ण णित्थरति ।
पंचमगो तू पुरिसो, अण्णतरो एस णातव्वो ॥१९६४॥थुं॰॥७०॥

कप्पट्ठियादयो वि य, चतुरो जे सेतरा समक्खाता।
सावेक्खेतरभेयादयो य जे ताण पुरिसाण ॥७१॥

कप्पट्ठिता परिणता, कडजोगी चेव होन्ति तरमाणा ।
पडिपक्खेण वि चतुरो, अकप्पट्ठियमादि णातव्वा ॥१९६५॥
पतिट्ठा ठवणा ठवणी अवत्था संठिती ठिती ।
अवत्थाणं अवत्था या, एगट्ठा चिट्ठणा ति य ॥१९६६॥
सामायिए य छेदे, णिव्विसमाणा तहेव णिव्विट्ठे ।
जिणकप्पे थेरेसु य, छव्विह कप्पट्ठिती होति ॥१९६७॥
सो पुण ठिती मज्जायाणामो कप्पो य होति कतिहा उ ? ।
भण्णति सो दसभेदो, इणमो वोच्छं समासेणं ॥१९६८॥
आचेलक्कुद्देसिय, सेज्जायर रायपिंड किंतिकम्मे ।
वत जेट्ठ पडिक्कमणे, मासं पज्जोसवणकप्पे ॥१९६९॥
कतिहि ठिता अठिता वा, सामायिककप्पसंठिती णियमा ? ।
कतिठाणपतिट्ठो वा, छेदोवट्ठाणकप्पो उ ? ॥१९७०॥
चतुहिं ठिया छहिं अठिया, सामातियसंजया मुणेयव्वा ।
दससु वि णियमा तु ठिता, छेओवट्ठा मुणेतव्वा ॥१९७१॥
सेज्जातरपिंडे या, किंतिकम्मे चेव चाउजामे य ।
पुरिसज्जेट्ठ य तहा, चत्तारि अवट्ठिया कप्पा ॥१९७२॥
आचेलक्कुद्देसिय, रायपिंडे तहा पडिक्कमणे ।
मासं पज्जोसवणाकप्पे तऽणवट्ठिता कप्पा ॥१९७३॥
दसठाणठितो कप्पो, पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स ।
आचेलक्कादीसुं, तेसिं तु परूवणा इणमो ॥१९७४॥ आचेलक्यम्

दुविहा होंति अचेला, संताचेला असंतचेला य ।
तित्थगरऽसंतचेला, संताचेला भवे सेसा ॥१९७५॥
संतेहिं वि चेलेहिं, किह पुण समणा अचेलया होन्ति ? ।

भण्णति सुणसु चोदग !, जह संतेहिं अचेला उ ॥१९७६॥
सिस्सावेढियपोत्ति, णतिसंतरणम्मि णग्गयं बेन्ति ।
जुण्णेहिं णग्गिय म्हि, तुरमालिय ! देहि मे पोत्ती ॥१९७७॥
जुण्णेहिं खंडिएहि य, असव्वतणुपाउएहिं ण य णिच्चं ।
संतेहिं वि णिग्गंथा, अचेलगा होंति चेलेहिं ॥१९७८॥
एवं दुग्गयपहिया, वऽचेलया होंति ते भवे बुद्धी ।
ते खलु असंततीए, धरंति ण तु धम्मसद्धाए ॥१९७९॥
सति लाभम्मि साहू, गेण्हन्तऽमहद्धणाइं ताइं तु ।
ताणि वि खण्डियमादी, धरंन्ति तह धम्मबुद्धीए ॥१९८०॥
आचेलुक्को धम्मो, पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्सा ।
मज्झिमगाण जिणाणं, होति सचेलो अचेलो वा ॥१९८१॥
पडिमाए पाउया वा, णऽतिक्कमंते तु मज्झिमा समणा ।
पुरिमचरिमाण सहणट्ठणा तु भिण्णाणिमो मोत्तुं ॥१९८२॥
णिरुवहयलिंगभेदो, णिक्कारणयो ण कप्पये कातुं ।
किं पुण तं णिरुवहयं ?, भण्णति अहजायलिंगं तु ॥१९८३॥
जम्मं दुविहं होति, मातूकुच्छिम्मि पढम जं जम्मं ।
भवसंसारचउक्के, णिप्फिडितो बितिय पव्वज्जं ॥१९८४॥
तस्स इमे भेदा खलु, खंधदुवारे य समणे पाउरणे ।
गफलद्धंसे पट्टे, लिंगदुवे या इमा भयणा ॥१९८५॥
णिक्कारणयो—

लहुओ लहुओ लहुगा, तिसु चतुगुरुगा य होंति बोद्धव्वा ।
गिहिलिंग अण्णलिंगे, दोसु वि मूलं तु बोद्धव्वं ॥१९८६॥
कुव्विज्ज कारणे पुण, भेदं लिंगस्सिमेहि कज्जेहिं ।
गेलण्ण रोग लोए, सरीरवेयावडियमादी ॥१९८७॥
अहवा इमेहिं कारणेहिं—

आसज्ज खेत्तकप्पं, वासाठाई अभाविए असहू ।
काले अद्धाणम्मि य, सागरि तेणे य पंगुरणं ॥१९८८॥
असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे पवायिदुट्ठ वा ।
आगाढं अण्णलिंगं, कालक्खेवो व गमणं वा ॥१९८९॥
अचेल त्ति गतं ।

संघस्सोह विभागे, समणा समणी य कुल-गणस्सेव । औद्देशिकम्
कडमिह ठिए ण कप्पति, अट्ठियकप्पे जमुद्दिस्स ॥१९९०॥
आयरिए अभिसेगे, भिक्खुम्मि गिलाणगम्मि भयणा उ ।
तिक्खुत्तऽडविपवेसे, तिप्परियट्टे तओ गहणं ॥१९९१॥
उद्देसिय त्ति गतं ।

तित्थगरपडिकुट्ठो, आणा अण्णाय उग्गमो ण सुज्झे । शय्यातरः
अविमुत्ति अलाघवया, दुल्लभसेज्जा ठितुच्छेदो ॥१९९२॥
पुरपच्छिमवज्जेहिं, अवि कम्मं जिणवरेहिं लेसेणं ।
भुत्तं विदेहगेहिं य, ण य सागरियस्स पिण्डो तु ॥१९९३॥
दुविहे गेलण्णम्मी, णिमंतणा दव्वदुल्लभे असिवे ।
ओमोयरिय पयोसे, भए व गहणं अणुण्णातं ॥१९९४॥
तिक्खुत्तो सक्खेत्ते, चउद्दिसिं मग्गिऊण कडजोगी ।
दव्वस्स य दुल्लभया, सागारियसेवणा दव्वे ॥१९९५॥
सेज्जायरे त्ति गयं ।

केरिसयो तू राया ?, भेया पिंडस्स के व ? मि दोसा ? । राजपिण्डः
केरिसयम्मि व कज्जे, कप्पति ? काए व जयणाए ? ॥१९९६॥
मुदिए मुद्धऽभिसित्ते, मुदिओ जो होति जोणिसुद्धो तु ।
अभिसित्तो व परेहिं, सयं व भरहो जहा राया ॥१९९७॥
पढमगभंगे वज्जो, होतु वमा वा वि जे भणिय दोसा ।
सेसेसु होयऽपिंडो, जहिं दोसा तं विवज्जेज्जा ॥१९९८॥
असणादीया चउरो, वत्थे पादे य कंबले चेव ।
पाउंछणए य तहा, अट्ठविहो रायपिंडो तु ॥१९९९॥

अट्ठविह रायपिंडं, अण्णयरायं तु जो पडिग्गाहे ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त विराहणं पावे ॥२०००॥
दोसा इमे ईसरतलवरमाडंविएहिं सत्थवाहेहिं ।
णिन्तेहिं अइन्तेहि य, वाघातो होति साहुस्स ॥२००१॥
ईसर भोइयमादी, तलवरपट्टेण तलवरो होति ।
वेट्ठणबद्धो सेट्ठी, पच्चंतणिवो उ माडंवी ॥२००२॥
जा णिन्तऽइन्त ता अच्छतो तु सुत्तादि-भिक्खपरिहाणी ।
इरिया अमंगलं ति य, पण्हाहणणा इहरहा तु ॥२००३॥
लोभे एसणघातो, संका तेणे णपुंस इत्थी य ।
इच्छंतमणिच्छंते, चातुम्मासा भवे गुरुगा ॥२००४॥
अण्णत्थ एरिसं दुल्लभं ति गेण्हेज्जऽणेसणिज्जं पि ।
अण्णेण वि अवहरिए, संकिज्जति एस तेणो त्ति ॥२००५॥
संका चारिय चोरे, मूलं णिस्संकिए य अणवट्ठो ।
परदारि अहिमरे वा, णवमं णीसंकिते दसमं ॥२००६॥
अलभंता य वियारं, इत्थिणपुंसा बला वि गिण्हेज्जा ।
आयरिय कुल गणे वा, संघे वा कुज्ज पत्थारं ॥२००७॥
अण्णे वि अत्थि दोसा, गोम्मियआइण्णरयणमादी य ।
तण्णीसाए पविसे, तिरिक्खमणुया भवे दुट्ठा ॥२००८॥
गोम्मियगहणा हणणा, रण्णो य णिवेइयम्मि जं पावे ।
आदीणरतणमादी, सत गेण्हेयरो व तण्णीसा ॥२००९॥
चारियचोराभिमरा, कामी व विसंति तत्थ तण्णीसा ।
वारणतरच्छवग्घा, मेच्छा य णरा व घाएज्जा ॥२०१०॥
दुविहे गेलण्णम्मी, णिमंतणा दव्वदुल्लभे असिवे ।
ओमोयरिय पदोसे, भए व गहणं अणुण्णायं ॥२०११॥
तिक्खुत्तो सक्खेत्ते, चउद्दिसिं मग्गितूण कडजोगी ।
दव्वस्स य दुल्लभता, जतणाए कप्पती ताहे ॥२०१२॥

रायपिंडे त्ति गतं ।

कितिकम्मं पि य दुविधं, अब्भुट्ठाणं तहेव वंदणयं । कृतिकर्म
समणेहि य समणीहि य, जहारिहं होति कायव्वं ॥२०१३॥
सव्वाहि संजईहिं, कितिकम्मं संजताण कातव्वं ।
पुरिसुत्तरिओ धम्मो, सव्वजिणाणं पि तित्थम्मि ॥२०१४॥
तुच्छत्तणेण गव्वो, जायइ ण य संकते परिभवेणं ।
अण्णो वि होज्ज दोसो, थियासु मा हुज्जहज्जासु ॥२०१५॥
अवि य हु पुरिसपणीतो, धम्मो पुरिसो य रक्खितुं सत्तो ।
लोगविरुद्धं चेयं, तम्हा समणाण कातव्वं ॥२०१६॥

किइकम्मो त्ति गयं ।

पंचज्जामो धम्मो, पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स । व्रतानि
मज्झिमयाण जिणाणं, चातुज्जामो भवे धम्मो ॥२०१७॥
पुरिमाण दुव्विसोज्झो, चरिमाणं दुरणुपालयो कप्पो ।
मज्झिमयाण जिणाणं, सुविसोज्झो सुरणुपालो य ॥२०१८॥
जड्डत्तणेण हंदी, आइक्खविभागउवणया दुक्खं ।
सुहसमुयदंताण य, तितिक्ख अणुसासणा दुक्खं ॥२०१९॥
पुरिमाणं—
मिच्छत्तगोवियाणं, दुव्वियड्डमतीण ठाणमोलाणं ।
आइक्खितु अइदुक्खं, उवणेउं वा वि दुक्खं तु ॥२०२०॥
दुक्खेहि भच्छियाणं, तणुधितिअबलत्तयो य दुतितिक्खं ।
एमेव दुरणुसासं, माणुक्कडयाय चरिमाणं ॥२०२१॥
एते चेव य ठाणा, सपण्णउज्जुत्तणेण मज्झाणं ।
सुहदुहउभयबलाण य, विमिस्सभावा भवे सुहुमा ॥२०२२॥

वए त्ति गयं ।

पुव्वतरं सामइयं, जस्स कयं जो व तेसु वा ठविओ । पुरुषज्येष्ठः
एस कितिकम्मजेट्ठो, ण जाति-सुययो दुपक्खे वि ॥२०२३॥

सा जेसि तुवट्ठवणा, जेहि य ठाणेहिं पुरिमचरिमाणं ।
पंचायामे धम्मे, आएसतिगं चिमं सुणसु ॥२०२४॥
दस चेव छच्च चतुरो, एते खलु तिण्णि होन्ति आदेसा ।
कतरे हवन्ति दस तू ?, भण्णति सुणसु इमे ते तू ॥२०२५॥
ततो पारंचिया वुत्ता, अणवट्ठप्पा य तिण्णि तु ।
दंसणम्मि य वन्तम्मि, चरित्तम्मि य केवले ॥२०२६॥
अहवा चियत्तकिच्चे, जीवकायं समारभे ।
सेहे य दसमे वुत्ते, जस्सोवट्ठावणा भवे ॥२०२७॥
एते दस तू वुत्ता, अण्णादेसेण होंति छत्तु इमे ।
तिण्णि वि पारंचेकं, अणवट्ठप्पा वि तिण्णेकं ॥२०२८॥
दंसणवन्ते तइए, चरित्तवंते भवे चउत्थं तु ।
पंचम चियत्तकिच्चो, छट्ठो सो होउवट्ठप्पो ॥२०२९॥
एसो बितियाएसो, ततियाएसो इमो मुणेयव्वो ।
चत्तारि व उवट्ठप्पा, कयरे तु ? इमे मुणेतव्वा ॥२०३०॥
पारंची अणुवट्ठा, दंसण चरणे सुते पदिट्ठा तु ।
दंसणचरित्तवंता, तो दोण्णेते भवन्ती तु ॥२०३१॥
चियत्तकिच्चो सेहो य, चत्तारेते हवंतुवट्ठप्पा ।
एते तिण्णादेसा, उवठवणाए मुणेतव्वा ॥२०३२॥
केवलगहणं कसिणं, जति वमती दंसणं चरित्तं वा ।
तो तस्स उवट्ठवणा, देसे वंतम्मि भयणा तु ॥२०३३॥
एमेव य किंचि पदं, सुयं च असुयं च अप्पदोसेणं ।
अविकोविए कहेन्तो, चोइय आउट्ट सुद्धो तु ॥२०३४॥
सो पुण दंसणवंतो, अणभोगेणं त अहव आभोगा ।
अणभोगेणं तहियं, कोयी सड्ढो तु संवेगा ॥२०३५॥
दट्ठूण णिण्हगे तू, एते साहू जहुत्तकारि त्ति ।
णिक्खंतो अणभोगा, दिट्ठो अण्णेहिं साहूहिं ॥२०३६॥

भणिओ य णिण्हगाणं. कीस सगासे तुमं सि णिक्खंतो ?।
तो बेति ण याणामि, एय विसेसं अहं भंते ! ॥२०३७॥
एवमणाभोगेणं, मिच्छत्तगतो पुणो वि सम्मत्तं ।
जो पडिवण्णो सो तू, आलोतियणिन्दितो सुद्धो ॥२०३८॥
सो चेव य परियायो, णत्थि उवट्ठावणा पुणो तस्स ।
तं चिय पच्छित्तं से, जं चिय सम्मं तु पडिवज्जे ॥२०३९॥
जो पुण जाणंतो च्चिय, गतो तु होज्जाहि णिण्हएसुं तु ।
पुणरागतो य सम्मं, तस्स उवट्ठावणा भणिया ॥२०४०॥
छण्हं जीवनिकायाणं, अणपज्झो तु विराहओ ।
आलोतियपडिक्कंतो, सुद्धो हवति संजतो ॥२०४१॥
छण्हं जीवणिकायाणं, अपज्झो तू विराधयो ।
आलोतियपडिक्कंतो, मूलच्छेज्जं तु कारए ॥२०४२॥
खेत्तादिअणप्पज्झो, अणभोगेणं व जो गतो मिच्छं ।
सो तु अपायच्छित्तो, विराहती तस्स दिन्तो तु ॥२०४३॥
जं जो तु समावण्णो, जं पायोग्गं व जस्स वत्थुस्स ।
तं तस्स तु दायव्वं, असरिसदाणा इमं होंति ॥२०४४॥
अप्पच्छित्ते य पच्छित्तं, पच्छित्ते अतिमत्तया ।
धम्मस्साऽऽसायणा तिव्वा, मग्गस्स य विराहणा ॥२०४५॥
उस्सुत्त ववहरेंतो, कम्मं बंधति चिक्कणं ।
संसारं च पवड्ढेति, मोहणिज्जं व कुव्वती ॥२०४६॥
उम्मग्गदेसए मग्गदूसए मग्गविप्पडीवाए ।
परं मोहेण रंजेन्तो, महामोहं पकुव्वती ॥२०४७॥
एवं तु उवट्ठवितो जो पढमयरं तु अहव सामतिए ।
ठवितो सो जेट्ठयरो, कप्पपकप्पट्ठिताणं च ॥२०४८॥
पुरिसजेट्ठे त्ति गतं ॥

सपडिक्कमणो धम्मो, पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स । प्रतिक्रमणम्

मज्झिमगाण जिणाणं, कारणजाए पडिक्कमणं ॥२०४९॥
गमणागमणविहारे, सायं पादो य पुरिमचरिमाणं ।
णियमेण पडिक्कमणं, अतियारो होउ वा मा वा ॥२०५०॥
अतियारस्स तु असती, णणु होति णिरत्थयं पडिक्कमणं ।
भण्णति एवं चोदग !, तत्थ इमं होति णातं तु ॥२०५१॥
जह कोयि डंडिओ तू, रसायणं कारवेति पुत्तस्स ।
तत्थेगो तेगिच्छी, बेती मज्झं तु एरिसयं ॥२०५२॥
जति दोसे होअगतं, अह दोसो णत्थि तो गयो होति ।
बितियस्स हरति दोसं, ण गुणं दोसं व तदभावा ॥२०५३॥
दोसं हंतूण गुणे, करेति गुणमेव दोसरहिए त्ति ।
तइयसमाहिकरस्स तु, रसायणं डंडियसुतस्स ॥२०५४॥
इय सइ दोसं छिंदति, असती दोसम्मि णिज्जरं कुणति ।
कुसलतिगिच्छरसायण, उवणीयमिणं पडिक्कमणं ॥२०५५॥
पडिक्कमणे त्ति गतं ।

मासकल्पः जिणथेरअहालंदे, परिहारिग अज्ज मासकप्पो तु ।
खेत्ते कालसुवस्सयपिंडग्गहणे य णाणत्तं ॥२०५६॥
एतेसिं पंचण्ह वि, अण्णोण्णस्सा चतुप्पएहिं तु ।
खेत्तादीहि विसेसो, जह तह वोच्छं समासेण ॥२०५७॥
णत्थि तु खेत्तं जिणकप्पियाण उडुबद्ध मासकालो तु ।
वासासु चउमासा, वसही अममत्तपरिकम्मा ॥२०५८॥
पिंडो तु अलेवकडो, गहणं तू एसणाहुवरिमाहि ।
तत्थ वि कातुमभिग्गह, पंचण्हं अण्णयरियाए ॥२०५९॥
थेराण अत्थि खेत्तं, तु उग्गहो जाण जोयण सकोसं ।
णगरे पुण वसहीए, कालो उउवद्धे मासो तु ॥२०६०॥
उस्सग्गेण य भणितो, अववाएणं तु होज्ज अहिओ वि ।
एमेव य वासासु वि, चतुमासो होज्ज अहिओ वा ॥२०६१॥

अपमत्त-अपरिकम्मो, उवस्सओ एत्थ भंगया चतुरो ।
उस्सग्गेणं पढमो, तिण्णि तु अववायओ भंगा ॥२०६२॥
भत्तं लेवकडं वा, अलेवकडं वा वि ते तु गेण्हंति ।
सत्तहि व एसणाहिं, मावेक्खो गच्छवासो त्ति ॥२०६३॥
अहलंदियाण गच्छे, अप्पडिबद्धाण जह जिणाणं तु ।
णवरं काले विसेसो, उदुमासो पणग चतुमासो ॥२०६४॥
गच्छे पडिबद्धाणं, अहलंदीणं तु अह पुण विसेसो ।
जो तेसि उग्गहो खलु, सो साऽऽयरियाण आहवति॥२०६५॥
एगवसहीए पणगं, छव्वीहीओ य गाम कुव्वंति ।
दिवसे दिवसे अण्णं, अडंति वीहीं तु णियमेणं ॥२०६६॥
परिहारविसुद्धीणं, जहेव जिणकप्पियाण णवरं तु ।
आयंबिलं तु भत्तं, बोद्धव्वो थेरकप्पो तु ॥२०६७॥
अज्जाण परिग्गहियाण उग्गहो जो तु सो तु आयरिए ।
कालतो दो दो मासा, उदुबद्धे वासि कप्पो तु ॥२०६८॥
सेसं जह थेराणं, पिंडो य उवस्सयो य तह तासिं ।
सो सव्वो वि य दुविहो, जिणकप्पो थेरकप्पो य ॥२०६९॥
जिणकप्पियऽहालंदी, परिहारविसुद्धियाण जिणकप्पो ।
थेराण अज्जियाण य, बोद्धव्वो थेरकप्पो तु ॥२०७०॥
दुविहो उ मासकप्पो, जिणकप्पो चेव थेरकप्पो य ।
णिरणुग्गहो जिणाणं, थेराण अणुग्गहपवत्तो ॥२०७१॥
उदुवासकालऽतीए, जिणकप्पीणं तु गुरुगा गुरुगा य ।
होंति दिणम्मि दिणम्मी, थेराणं ते च्चिय लहू उ ॥२०७२॥
तीसं पदाऽवराहे, पुट्ठो अणुवासियं अणुवसंतो ।
जे तत्थ पदे दोसा, ते तत्थ ततो समावण्णो ॥२०७३॥
पण्णरसुग्गमदोसा, दस एसणदोस एय पणुवीसं ।
संजोयणाइ पंच य, एते तीसं तु अवराहा ॥२०७४॥

एतेहिं दोसेहिं, संपत्तीए वि लग्गती णियमा ।
दिवसे दिवसे सो ऊ, कालातीते वसंतो तु ॥२०७५॥
वासावासपमाणं, आयारउदुप्पमाणियं कप्पं ।
एयं अणुग्गुयंतो, जाणसु अणुवासकप्पो तु ॥२०७६॥
आयारपकप्पम्मी, जह भणितं तीय संवसंतो वि ।
होति अणुवासकप्पो, तह संवसमाण दोसो तु ॥२०७७॥
दुविहे विहारकाले, वासावासे तहेव उदुबद्धे ।
मासातीतेऽणुवही, वासाइंते भवे उवही ॥२०७८॥
उब्बद्धिएसु अट्ठसु, तीतेसुं वास तत्थ ण वि कप्पे ।
घेत्तूणं उवहिं खलु, वासासु तु तीते कप्पति तु ॥२०७९॥
वासउदुअहालंदे, इत्तरिसाहारणोग्गहपुहत्ते ।
संकमणट्ठा दव्वे, गच्छे पुप्फावकिण्णा तु ।।२०८०॥
वासासु चउम्मासो, उउवद्धे मासो लंद पंच दिणा ।
इत्तरिओ रुक्खमूले, वीससणट्ठा ठियाणं तु ॥२०८१॥
साहारणा उ एते, समगठियाणं बहूण गच्छाणं ।
एक्केण परिग्गहिता, सव्वे वोहत्तिया होन्ति ।।२०८२॥
संकमणऽण्णोण्णस्सा, सगासे जति उ ते अहीयंते ।
सुत्तत्थतदुभयाइं, सव्वो अहवा वि पडिपुच्छे ॥२०८३॥
ते पुण मंडलियाए, आवलियाए व तं तु गिण्हेज्जा ।
मंडलियमहिज्जंते, सच्चित्तादी तु जो लाभो ॥२०८४॥
सो तु परंपरएणं, संकमती ताव जाव सट्ठाणं ।
जहियं पुण आवलिया, तहियं पुण ठाति अंतम्मि ।।२०८५॥
ते पुण जहा तु एक्काये, वसहीए अहव पुप्फकिण्णा तु ।
अहवा वि तु संकमणे, दव्वस्सिणमो विही अण्णो ॥२०८६॥
सुत्तत्थतदुभयविसारयाण थोवे अ संभतीभेदे ।
संकमणट्ठा दव्वे, जोगे कप्पे य आवलिया ॥२०८७॥

पुव्वट्ठिनाण खेत्ते, जति आगच्छेज्ज अण्ण आयरिओ ।
बहुसुय बहुआगमिओ, तस्स सगासम्मि जति खेत्ती ॥२०८८॥
किंचि अहिज्जेज्जाही, थोवं खेत्तं च तं जइ हवेज्जा ।
ताहे असंथरंता, दोण्णि वि साहू विवज्जेन्ति ॥२०८९॥
[1]अण्णोण्णस्स सगासे, तेसिं पि य तत्थऽहिज्जमाणाणं ।
आभवणा तह चेव य, जह भणियमणंतरे सुत्ते ॥२०९०॥
एवं णिव्वाघाए, मास चतुम्मासिओ तु थेराणं ।
कप्पो कारणओ पुण, अणुवासो कारणं जाव ॥२०९१॥
एसो तु मासकप्पो, थेरकप्पो य वण्णिओगेणं ।
अहुणा ठियमठियं तू, थेराणं इणमु वोच्छामि ॥२०९२॥
सो थेरकप्पो दुविहो, अट्ठितकप्पो य होति ठितकप्पो ।
[1]एमेव जिणाणं पी, ठितमठिता होति कप्पा तु ॥२०९३॥

मासकप्पेति गतम् ।

पज्जोसवणाकप्पो, होति ठितो अट्ठिओ य थेराणं । पर्युषणाकल्पः
एमेव जिणाणं पी, दुह ठियमठिओ य णातव्वो ॥२०९४॥
चातुम्मासुक्कोसो, सत्तरि राइंदिया जहण्णेणं ।
ठितमट्ठिय एगतरं, कारणवच्चासितण्णयरं ॥२०९५॥
थेराण सत्तरी खलु, वासासु ठितो उ दुण्णि मासो तु ।
वच्चासिओ तु कज्जे, जिणाण णियमट्ठ चतुरो वा ॥२०९६॥
दोसासति मज्झिमया, अच्छंती जाव पुव्वकोडी तु ।
विहरंति य वासासु वि, अकद्दमे पाणरहिए य ॥२०९७॥
भिण्णं पि मासकप्पं, करेंति तणुयं पि कारणं पप्प ।
जिणकप्पिया वि एवं, एमेव महाविदेहे वि ॥२०९८॥
एयं ठियम्मि मेरं, अट्ठियकप्पे य जो पमाएति ।
सो वट्टति पासत्थे, ठाणम्मि तगम्मि वज्जेज्जा ॥२०९९॥

पासत्थसंकिलिट्ठं, ठाणं जिणवुत्त थेरेहि य ।
तारिसं तु गवेसंतो, सो विहारे ण सुज्झति ॥२१००॥
पासत्थसंकिलिट्ठं, ठाणं जिणवुत्त थेरेहि य ।
तारिसं तु विवज्जंतो, सो विहारे तु सुज्झति ॥२१०१॥
जो कप्पठितीमेयं, सद्दहमाणो करेति सट्ठाणे ।
सो तारिसं तु गवेसेज्जा, जतो गुणाणं अपरिहाणी ॥२१०२॥
ठितमठियम्मि दसविहे, ठवणाकप्पे य दुविहमण्णयरे ।
उत्तरगुणकप्पम्मि य, जो सरिकप्पो स संभोगो ॥२१०३॥
ठवणाकप्पो दुविहो, अकप्पठवणा य सेहठवणा य ।
पढमो अकप्पिएणं, आहारादीणि गिण्हावे ॥२१०४॥
अट्ठारसेव पुरिसे, वीसं इत्थीण दस णपुंसे य ।
दिक्खेति जो ण एते, सेहट्ठवणाए सो कप्पो ॥२१०५॥
आहारउवहिसेज्जा, उग्गमउप्पायणेसणासुद्धं ।
जो परिगिण्हति णिययं, उत्तरगुणकप्पिओ स खलु ॥२१०६॥
सरिकप्पे सरिछंदे, तुल्लचरित्ते विसिट्ठतरए वा ।
साहूहिं संथवं कुज्जा, णाणीहिं चरित्तगुत्तेहिं ॥२१०७॥
सरिकप्पे सरिछंदे, तुल्लचरित्ते विसिट्ठतरए वा ।
आइएज्ज भत्तपाणं, सएण लाभेण वा तुस्से ॥२१०८॥
इय सामाइयछेदे, जिणथेराणं ठिती समक्खाता ।
एत्तो णिव्विसमाणे, णिव्विट्ठ यावि वोच्छामि ॥२१०९॥
परिहारकल्पः परिहारकप्पं वोच्छामि, परिहरितव्वं जहा विदू ।
आदी मज्झावसाणे य, आणुपुव्वि जहक्कमं ॥२११०॥
भरहेरवयवासेसु, जदा तित्थगरा भवे ।
पुरिमा पच्छिमा चेव, परिहारी तेसु होन्ति तु ॥२१११॥
मज्झिमाण ण संती तु, तित्थेसुं परिहारिया ।
ण यावि य विदेहेसु, विज्जंतो परिहारिया ॥२११२॥

केवतियकालसंजोगो, गच्छो तु अणुसज्जती ।
तित्थंकरेसु पुरिमेसु, तहा पच्छिमएसु य ॥२११३॥
पुव्वसयसहस्साति, पुरिमस्सऽणुसज्जती ।
जम्हा ण पडिवज्जंति, दोण्ह गच्छा परेण तु ॥२११४॥
देसूणपुव्वकोडीओ, दो सा दोण्ह भवंति तु ।
दो सा एगूणतीसा तु, तेण ऊणा ततो भवे ॥२११५॥
वीसग्गसो य वासाइं, चरिमस्सऽणुसज्जए ।
जाव देसूणगा दोण्णि, सया वासाण होंति तु ॥२११६॥
पव्वज्जा अट्ठवासस्स, उवट्ठा णवमम्मि उ ।
एगूणवीसपरियाए, दिट्ठिवाओ य तस्स तु ॥२११७॥
उद्दिस्सति वरिसेण य, तस्स य सो तु समप्पती ।
णव वीसा य मेलीणा, ऊणतीसा भवंति तु ॥२११८॥
इति एगूणतीसाए, सयमूणं तु पच्छिमे ।
एमो दोस तु एतेणं, ऊणाइं दो सयाणि उ ॥२११९॥
पालनित्ता सयं ऊणं, ठाणं ते तु पच्छिमे ।
काले देसेन्नि अण्णेसिं, इति ऊणा उ वे सता ॥२१२०॥
पडिवज्जंति जिणिंदस्स, पायमूलम्मि जे विऊ ।
ठावयंति उ ते अण्णे, नो तु ठावितठावगा ॥२१२१॥
सव्वे चरित्तमंता य, दंसणे परिणिट्ठिया ।
णवपुव्वी जहण्णेणं, उक्कोस दसपुव्विया ॥२१२२॥
पंचविहे ववहारे, कप्पे ते दुविहम्मि य ।
दसविहे य पच्छित्ते, सव्वे ते परिणिट्ठिता ॥२१२३॥
अत्तणो आउगं सेसं, जाणित्ता ते महामुणी ।
परक्कमं बलं विरियं, पच्चवाए तहेव य ॥२१२४॥
जति जोनपच्चवाया, ण होंति तेसिं तु अण्णतरा ।
तो तं पडिवज्जंती, वाघाएणं तु तेण वी ॥२१२५॥

पडिवज्जंते वीसग्गसो कहं देसूणा दो सया भवंति ?
वीसाए परेण वि एयमग्गं, पव्वज्जा० सिलोगा ३ ।
वाससयाउया मणुस्सा जम्माओ, सेसं तहेव सव्वं ॥
तत्थ जे उसभसामिस्स तित्थे पुव्वसतसहस्सा ते देसूणा दो पुव्वकोडी भवंति । कहं ? अट्ठवासपरियाओ, सिलोगा ३ । ते पुव्वकोडिआउया मणुस्सा जम्माओ ८ पव्वइता, २९वासाए दिट्ठिवाओ व समप्पति, सो उसभसामिकालपडिवण्णो, एसा एगा पुव्वकोडी देसूणा । एयस्स मूले एवं च अण्णो पडिवज्जति तस्स वि [एगा पुव्वकोडी देसूणा । एवं] देसूणाओ दो पुव्वकोडीओ । एतस्स अण्णो मूले ण पडिवज्जंति । उसभसामिस्स आउयं ८४ [लक्खपुव्वाणि ।]
आपुच्छिऊण अरहंते, मग्गं देसिंति ते इमं ।
पमाणाणि य सव्वाणि, मग्गहे य बहुविहे ॥२१२६॥
उवहीगमणप्पमाणाणि, पुरिमाणं च जाणिउं ।
दव्वं खेत्तं च कालं च, भावं अण्णे य पज्जवे ॥२१२७॥
संसट्ठमाइयाणं, सत्तण्हं एसणाण तु ।
आदिल्लाहिं दोहिं तु, अग्गहो गह पंचहिं ॥२१२८॥
तत्थ वि अण्णयरीए, एगीए अभिग्गहं तु कातूणं ।
उवहिणो अग्गहो दोसु, इयरो एगतरीय तु ॥२१२९॥
अइरुग्गयम्मि सूरम्मि, कप्पं देसेन्ति ते इमं ।
आलोइयपडिक्कंता, ठावयंति तयो गणे ॥२१३०॥
सत्तावीसं जहण्णेणं, उक्कोसेणं सहस्ससो ।
णिग्गंथसूरा भगवंतो, सव्वग्गेण वियाहिया ॥२१३१॥
सयग्गसो य उक्कोसा, जहण्णेण ततो गणा ।
गणो य णवगो वुत्तो, एमेया पडिवत्तीओ ॥२१३२॥
एगं कप्पट्ठियं, कुज्जा, चत्तारि पारिहारिया ।
अणुपारिहारिया चेव, चतुरो एतेसि ठावए ॥२१३३॥

ण तेसिं जायते विग्घं, जा मासा दस अट्ठ य ।
ण वेयणा ण वाऽऽयंको, ण वायणे उवद्दवा ॥२१३४॥
अट्ठारसस्सु पुण्णेसुं, होज्जा एते उवद्दवा ।
ऊणिए ऊणिए यावि, गणे मेरा इमा भवे ॥२१३५॥
जत्तिएण गणो ऊणो, तत्तिए तत्थ पक्खिवे ।
एगं दुवे अणेगा वा, एम कप्पे तु ऊणिए ॥२१३६॥
एते अणूणिए कप्पे, उवसंपज्जति जो नहिं ।
एगे दुवे अणेगे वा, तेसिं कप्पो इमो भवे ॥२१३७॥
अच्छंति ता उदिक्खंता, जाव पुण्णा तु ते णव ।
पच्छा पडिवज्जंति, जं कप्पं तेसि अंतिए ॥२१३८॥
पमाण कप्पट्ठितो तत्थ, ववहारं ववहरित्तए ।
अणुपरिहारियाणं पि, पमाणं होति सेव तु ॥२१३९॥
आलोयण कप्पठिए, पच्चक्खाणं तहेव वंदणयं ।
तं च वहंते ते तू, उज्झाणी एव मण्णंति ॥२१४०॥
अणुपरिहारी गोवालगव्वगातीण णिच्चमुज्जुत्ता ।
परिहारियाण मग्गतो, हिंडंती णिच्चमुज्जुत्ता ॥२१४१॥
पडिपुच्छं वायणं चेव, मोत्तूणं णत्थि संकहा ।
आलावो अत्तणिद्देसो, परिहारियस्स कारणे ॥२१४२॥
परिहारियाण उ तवो, वासासुक्कोस मज्झिम जहण्णो ।
वारसम दसम अट्ठम, दसमऽट्ठम छट्ठ सिसिरेसु ॥२१४३॥
अट्ठम छट्ठ चउत्थं, गिम्हे उक्कोस मज्झिम जहण्णो ।
आयंबिलपारणगं, अभिगहिताएसणाए तु ॥२१४४॥
अणुपरिहारीया पुण, णिच्चं पारिंति ते उ आयामे ।
कप्पट्ठिए वि ते च्चिय, आणिति अभिग्गहीताहिं ॥२१४५॥
परिहारिय पत्तेयं, अणुपरिहारीण तह य कप्पठिए ।
पंचण्ह वि तेसिं तू, संभोगेक्को मुणेतव्वो ॥२१४६॥

परिहारिएसु वूढे, अणुपरिहारी ततो वहंती तु ।
कप्पट्ठियो य पच्छा, वहती वूढेसु तेसुं तु ॥२१४७॥
परिहारिया वि छम्मासे, अणुपरिहारिया वि छम्मासे ।
कप्पट्ठितो वि छम्मासे, एते अट्ठारस तु मासा ॥२१४८॥
अणुपरिहारिया चेव, जे य ते परिहारिया ।
अण्णमण्णेसु ठाणेसु, अविरुद्धा भवंति ते ॥२१४९॥
गतेहिं छहिं मासेहिं, णिव्विट्ठा भवंति ते ।
अणुपरिहारिया पच्छा, परिहारं परिहरंति तु ॥२१५०॥
गएहिं छहिं मासेहिं, णिव्विट्ठा भवंति ते ।
वहती कप्पट्ठितो पच्छा, परिहारं अहाविहिं ॥२१५१॥
एतेसिं जे वहन्ती, णिव्विसमाणा हवंति ते णियमा ।
जेहिं वूढं पुण ते सिं, हवंति णिव्विट्ठकाइया ॥२१५२॥
अट्ठारसहि मासेहिं, कप्पो होति समाणितो ।
मूलट्ठवणा एसा, समासेण वियाहिता ॥२१५३॥
एवं समासिए कप्पे, जे व सिं जिणकप्पिया ।
तमेव कप्पं ऊणा वि, पालए जावजीवियं ॥२१५४॥
अट्ठारसहिं पुण्णेहिं, मासेहिं थेरकप्पिया ।
पुण गच्छं णियच्छंति, एसा तेसिं जहाविही ॥२१५५॥
ततिय चउत्था कप्पा, समोअरंते तु बितियकप्पम्मि ।
पंचमछट्ठठितीसुं, हेट्ठिल्लाणं समोयारे ॥२१५६॥
सामाछेदो णिव्विस, णिव्विट्ठ एते जिणथेरे ओयरंति ॥
अहुणा जिणकप्पठिती, सा पुव्वं मासकप्पसुत्तम्मि ।
भणिया स चेव इहं, णवरमसुण्णत्थ भणति इमं ॥२१५७॥
गच्छम्मि य णिम्माया, धीरा जाहे य मुणितपरमत्था ।
अग्गह अभिग्गहे या, उवेंति जिणकप्पिगविहारं ॥२१५८॥
णवपुव्वि जहण्णेणं, उक्कोसेणं तु दस असंपुण्णा ।
चोद्दसपुव्वी तित्थं, तेण तु जिणकप्प ण पवज्जे ॥२१५९॥दारं।

जिनकल्पः

वइरोसभसंघयणा, सुत्तस्सऽत्थो तु होति परमत्थो ।
संसारसंभवो वा णातो तो मुणियपरमत्थो ॥२१६०॥ दारं ।
अग्गहो तनियातीया, पडिमाहिं गहण भत्तपाणस्स ।
दोहिं तु उवरिमाहिं, गेण्हंती वत्थपायाइं ॥२१६१॥ दारं ।
दव्वे अभिग्गहा पुण, रतणावलिमाइगाइ बोद्धव्वा ।
एतेसु विदितभावो, उवेति जिणकप्पियविहारं ॥२१६२॥
दुविहा अतिसेसा वि य, तेसिं इमे वण्णिया समासेणं ।
बाहिर अब्भितरगा, तेसिं विसेसं पवक्खामि ॥२१६३॥
बाहिरओ सरीरस्सा, अतिसेसो तेसिमो तु बोद्धव्वो ।
अच्छिद्दपाणिपाया, वइरोसभसंघतण धीरा ॥२१६४॥
वग्गुलिपक्खसरिसयं, पाणितलं तेसि धीरपुरिसाणं ।
होति खओवसमेणं, लद्धी तेसिं इमाऽऽहंसु ॥२१६५॥
माएज्ज घडसहस्सं, धारेज्ज व सो तु सागरा सव्वे ।
जो एरिसलद्धीए, सो पाणिपडिग्गही होति ॥२१६६॥ दारं।
अब्भितर अतिसेसो, इमो उ तेसिं समासयो भणितो ।
उदही विव अक्खोभा, सूरो इव तेयसा जुत्ता ॥२१६७॥
अव्वावण्णसरीरा, व....गंधा ण होति से सरीरस्स ।
ख....म वि ण कुच्छ तेसिं, परिकम्मं ण वि य कुव्वंति॥२१६८॥
पाणिपडिग्गहिया तू, एरिसया णियमसो मुणेतव्वा ।
अतिसेसे वोच्छामि, अण्णे वि विसेसतो तेसिं ॥२१६९॥
दुविहो तेसऽतिसेसो, णाणातिसयो तहेव सारीरो ।
णाणातिसयो ओही, मणपज्जव तदुभयं चेव ॥२१७०॥
अहवाऽऽभिणिबोहीयं, सुतणाणं चेव णाणअतिसेसो ।
तिवलीअभिण्णवच्चा, एसो सारीर अतिसेसो ॥२१७१॥
रतहरणं मुहपोत्ती, जहण्णमुवगरण पाणिपत्तिस्स ।
उक्कोसं कप्पतियं, सव्वो वि य एस पंचविहो ॥२१७२॥

पडिग्गहधारि जहण्णो, णवहा उक्कोस बारसविकप्पो ।
तेसिं एयाणि चिय, अतिरेगे पायणिज्जोगो ॥२१७३॥
रूढणह णियणमुंडा, दुविहो उवही जहण्णओ तेसिं ।
एमा लिंगा तेसिं, णिव्वाघाएण णेतव्वो ॥२१७४॥
रतहरणं मुहपोत्ती, संखेवेणं तु दुविह उवही तु ।
वाघात विगतलिंगे, अरिसासु व होति कडिपट्टो ॥२१७५॥
सत्त य पडिग्गहम्मी, रतहरणं चेव होति मुहपोत्ती ।
एमो तु णवविकप्पो, उवही पत्तेयबुद्धाणं ॥२१७६॥
एगो तित्थयराणं, णिक्खममाणाण होति उवही तु ।
तेण पर णिरुवही तू, जावज्जीवाए तित्थगरा ॥२१७७॥
एमा जिणकप्पठिती, ठाणासुण्णत्थया समक्खाता ।
वित्थरयो पुण णेया, जह भणितं मासकप्पम्मि ॥२१७८॥
णिज्जुत्तीए ॥

स्थविरकल्पः अहुणा थेरठिती तू, सा वि य भणिता तु पुव्वमेवं तु ।
दारमसुण्णत्थमियं, णवरं संखेवतो वोच्छं ॥२१७९॥
संजमकरणुज्जोया, णिप्फायग णाण-दंसण-चरित्ते ।
दीहो य वुड्ढवासो, वसहीदोसेहि य विमुक्को ॥२१८०॥
दीहो त्ति वुड्ढवासो, थेरा ण तरंति जाहे कातुं जे ।
अब्भुज्जयमरणं वा, अहवा अब्भुज्जयविहारं ॥२१८१॥
दीहं च आउगं तू, वुड्ढावासं तयो वसे ।
उग्गमादीहिं दोसेहिं, विप्पमुक्काए वसहीए ॥२१८२॥
मोत्तुं जिणकप्पठितिं, जा मेरा एस वण्णिता हेट्ठा ।
एसा तु दुपदजुत्ता, होति ठिती थेरकप्पम्मि ॥२१८३॥
दुपदं ती उस्सग्गो, अववाओ चेव होंति दोण्णेते ।
एतेहिं होति जुत्तो, णियमा खलु थेरकप्पो तु ॥२१८४॥
पलंबाओ जाव ठिती, उस्सग्गऽववाइयं करेमाणो ।

अववाए उस्सग्गं, आसायण दीहसंसारो ॥२१८५॥
अह उस्सग्गेऽववायं, आयरमाणो विराहओ होति ।
अववाए पुण पत्ते, उस्सग्गणिसेवओ भइओ ॥२१८६॥
कह होती भतियव्वो ?, संघयणधितिजुतो समग्गो तु ।
एरिसतो अववाए, उस्सग्गणिसेवओ सुद्धो ॥२१८७॥
इयरो उ विराहेई, असमत्थो जेण परिसहे सहितुं ।
धितिसंघतणेहिं तू , एगतरेणं व सो हीणो ॥२१८८॥
इति सामाइयमादी, छव्विह कप्पट्ठिती समक्खाया । दारं ।
बिरियं दारं अहुणा, इणमो वोच्छं समासेणं ॥२१८९॥
परिणत गीतत्था तू , विपक्खभूया अपरिणया होंति ।
कडजोगी कयजोगी, चतुत्थमादीहिं णायव्वा ॥२१९०॥
अकडज्जोग्गा जोग्गवियचतुत्थादीहिं होन्ति णायव्वा ।
धितिसंघयणादीहिं, तरमाणा होंति णायव्वा ॥२१९१॥
धितिसंघयणेणं तू , एगयरजुया उ होंति अतरा उ ।
अहवा दोहि वि जुत्ता, अतरगपुरिसा मुणेयव्वा ॥२१९२॥
एतेषां कल्पस्थितादीनाम् ॥ ॥७१॥८५१॥

ज जह सत्तो बहुतरगुणो व्व तस्साहियं पि देज्जाहि
हीणतरे हीणयरं, झोसेज्ज व सव्वहीणस्स ॥७२॥

कप्पट्ठियमातीणं, पुरिसाणं जाव उभयहा अतरो ।
जो जह सत्तो उ भवे, तस्स तहा होंति दायव्वं ॥२१९३॥
बहुतरगुणसमग्गो तू , धितिसंघतणादि जो तु संपण्णो ।
परिणय कडजोगी वा, अहवा वि हवेज्ज उभयतरो ॥२१९४॥
एयगुणसमग्गस्स तु, जीयमया अहियगं पि देज्जाहि ।
होणस्स तु होणतरं, मुंचेज्ज व सव्वहीणस्स ॥२१९५॥
॥७२॥८५२॥

एत्थ पुण बहुतरा भिक्खुणात्ति अकयकरणाणभिगयाय।
जंतेण जीतमट्ठमभत्तंनमविगतिमादीयं ॥७३॥

जीतयन्त्रविधिः एत्थं इमम्मि जीए, बहुतरया भिक्खुणो भवंती तु।
अकयकरणा उ जे तू, अणभिगया चेव णायव्वा ॥२१९६॥
चस्सद्देण थिराथिर, गहिया तू एत्थ तू समासेणं।
जंतयविहीकमेणं, जीयाभिमएण देज्जाहि ॥२१९७॥
कतकरण अकयकरणा, कयकरणा गच्छवासि इयरे य।
अकयकरणा तु णियमा, णायव्वा गच्छवासी तु ॥२१९८॥
ते अभिगत अणभिगता, अणभिगता थिराऽथिरा व होज्जाहि।
कत अभिगत जं सेवे, अणभिगते अत्थिरं इच्छा ॥२१९९॥
अहवा णिरवेक्खियरा, दुविहा पुरिसा समासतो होंति।
णिरवेक्खो जिणमादी, ते णियमा होंति कतकरणा ॥२२००॥
सावेक्खा होंति तिहा, आयरिय उवज्झ भिक्खुणो चेव।
कतकरणमकतकरणा, आयरिया चेवुवज्झाया ॥२२०१॥
भिक्खू गीयाऽगीया, गीयत्थ थिराऽथिरा य बोद्धव्वा।
कतकरण अकतकरणा, एक्केक्का होन्ति ते दुविहा ॥२२०२॥
अगीया वि थिराऽथिर, कयाऽकया चेव होंति एक्केक्का।
कतकरण अकतकरणा, केरिसया होंति ? सुणसु इमे ॥२२०३॥
छट्ठऽट्ठमाइएहिं, कतकरणा ते तु उभयपरियाए।
अभिगत कतकरणत्तं, जं जोग तवारिहा केवी ॥२२०४॥
णिरवेक्खा एगविहा, सावेक्खाणं तु किं णिमित्तेणं।
तिविहो भेदो तु कतो, आयरियादी ? इमं सुणसु ॥२२०५॥
भण्णइ जुवरायादी, वत्थुविसेसेण दंडो जह लोए।
तह वत्थुविसेसेणं, आयारयादीण आरुवणा ॥२२०६॥
आयरिय-उवज्झाया, दोण्णि वि णियमेण होंति गीयत्था।
गीयत्थमगीयत्था, भिक्खू पुण होंति णातव्वा ॥२२०७॥

कारणमकारणं वा, जयणाऽजयणा व णत्थऽगीयत्थे ।
एतेण कारणेणं, आयरियादी तिविह भेदो ॥२२०८॥
कज्जाऽकज्ज जयाऽजय, अविजाणंतो अगीयो जं सेवे ।
सो होति तस्स दप्पो, गीते दप्पाजने दोसा ॥२२०९॥
अविसिट्ठा आवत्ती, चरिमं सव्वेसि तेण सावेक्खे ।
चरिमं चिय कयकरणे, आयरिए अकए अणवट्ठो ॥२२१०॥
कतकरणउवज्झाए, अणवट्ठो होति मूलमकयम्मि ।
भिक्खूगीयथिरम्मी, कतकरणे मूलमेव भवे ॥२२११॥
अकयथिरम्मी छेदो, अत्थिरकयकरणे होति सो चेव ।
अत्थिरअकते छग्गुरु, अगीतथिरकरणे ते चेव ॥२२१२॥
अगीतथिरे अकते, छल्लहुगा होंति तू मुणेतव्वा ।
अगीयअथिरकयकरण छल्लहू चउगुरू अकते ॥२२१३॥
एसाऽऽदेसो एक्को, अयमण्णो विनियओ तु आदेसो ।
चरिमं चिय आवण्णे, कतकरणगुरुम्मि अणवट्ठो ॥२२१४॥
अकतकरणम्मि मूलं, मूलमुवज्झाए होति कतकरणे ।
अकतकरणम्मि छेदो, इय णेयं अट्ठकंतीए ॥२२१५॥
एमेव य अणवट्ठं, आवण्णे होंति दोण्णि आदेसा ।
णिरवेक्खो ण भणियत्थं, जं दोण्णि ण होंति तस्सेते ॥२२१६॥
अहुणा मूलावण्णो, सव्वं मूलं तु होति णिरवेक्खे ।
मूलं चेव गुरुस्स वि, कतकरणे अकते छेदो तु ॥२२१७॥
कतकरणउवज्झाए, छेदं अकतम्मि होन्ति छग्गुरुगा ।
इय अट्ठोकंतीए, णेयं अयमण्णो आएसो ॥२२१८॥
सावेक्खो त्ति व काउं, गुरुस्स कडजोगिणो भवे छेदो ।
अकतकरणम्मि छग्गुरु, कतकरण उवज्झे छग्गुरुगा ॥२२१९॥
अकते छल्लहुगा तू, इय अट्ठोकंतीए तु णातव्वं ।
अहुणा छग्गुरुगे तू, आढत्तं ठाइ गुरुभिण्णे ॥२२२०॥

छल्लहुयाढत्तम्मी, ठायति लहुए तु भिण्णमासम्मि ।
चतुगुरुआढत्तम्मी, अन्नम्मी ठाइ गुरुवीसे ॥२२२१॥
चतुलहुए वीसाए, गुरुमासे ठाति पण्णरसहिं तु ।
('गुरुमासे ठाति गुरुग पण्णरसे' इति प्रत्यन्तरं)
लहुए लहुपण्णरसे, गुरुभिण्णे ठाति गुरुदसहिं ॥२२२२॥
लहुभिण्णे दसलहुए, गुरुवीसा अंते ठाति गुरुपणए ।
लहुवीसा आढत्तं, अंतम्मी ठाति लहुपणए ॥२२२३॥
पण्णरसहिं गुरुएहिं, अंतम्मी अट्ठमम्मि ठायति तु ।
पण्णरसहिं लहुएहि, अंतम्मी ठाति छट्ठम्मि ॥२२२४॥
दसगुरुए आढत्तं, अंतम्मी ठायती चतुत्थम्मि ।
दसलहुए आढत्तं, ठायति तू अंते आयामे ॥२२२५॥
गुरुपणए आढत्ते, एक्कासणयम्मि अंते ठायइ तू ।
लहुपणए आढत्ते, अंतम्मी ठाति पुरिमड्ढे ॥२२२६॥
अट्ठमभत्ताऽऽढत्तं, अंतम्मी ठायई अ णिव्विगती ।
जंतविहोपत्थारो, समासतो एसमक्खातो ॥२२२७॥
एयं तु अजयणाए, सात्तिक्खाणं तु होति पच्छित्तं ।
अह गीयत्थो सेवे, कारण जतणाए तो सुद्धो ॥२२२८॥
एयं तु कारणम्मी, जतणासेविस्स वण्णियं दाणं ।
अहवा वि इमं अण्णं, आयरियादी जहाक्कमसो ॥२२२९॥
आयरिय उवज्झाए, कतकरणे अकतकरण दुविहा तु ।
भिक्खुम्मि अभिगते या, अणभिगते चेव दुविहो तु ॥२२३०॥
अभिगते कत अकते या, अणभिगते थिरं तहेव अथिरं य ।
थिर कतकरणे अकते, अथिरं कतकरणमकए य ॥२२३१॥
एते सव्वंऽवेगं, आवत्ती पंचराइगाऽऽवण्णा ।
तं पणगं अविसिट्ठं, चउत्थमादीहिं विण्णेयं ॥२२३२॥

आतरिए कतकरणे, तं चिय पणगं तु होति दातव्वं।
अकतकरणे चउत्थं, कयकरणे उवज्झे तं चेव ॥२२३३॥
अकयम्मी आयामं, भिक्खुम्मी अभिगतम्मि कतकरणे।
आयामं दायव्वं, अकयकरणे उ भत्तेकं ॥२२३४॥
भिक्खुम्मी अणभिगते, थिरकयकरणे य एगभत्तं तु।
अकयम्मी पुरिमड्ढं, अणभिगए अत्थिरे कतम्मि ॥२२३५॥
पुरिमड्ढो च्चिय णियमा, अत्थिरअकयम्मि होति णिव्विगतिं।
अहवाऽणभिगय अथिरं, इच्छाए तं च अण्णं वा ॥२२३६॥
एमेव य दसरायं, सव्वे आवण्णमेगमावत्ति।
कतकरणे आयरिए, दसरायं चेव दायव्वं ॥२२३७॥
अकयकरणम्मि पणगं, कतकरणे पणगमेवुवज्झाए।
अकतकरणे चउत्थं, एवं तू अड्ढकंतीए ॥२२३८॥
ता णेयव्व कमेणं, जाव उ अंतम्मि होति पुरिमड्ढं।
इय पण्णरसाऽऽरद्धं, ठायइ एक्कासणगमंते ॥२२३९॥
वीसाऽऽरद्धं ठायति, आयामे भिण्णमासऽभत्तट्ठ।
मासाऽऽरद्धं पणगे, दुमास दसराए ठायइ तु ॥२२४०॥
तेमासे पण्णरसे, चतुमासे ठाति वीसरातम्मि।
पणमासे पणुवीसे, छम्मासे मासिए ठाति ॥२२४१॥
छेदो दोमासीए, मूले तेमासियम्मि ठायति तु।
अणवट्ठ चतुमासे, पारंचिइए तु पणमासे ॥२२४२॥
एए भणिता लहुगा, सव्वे वि नवारिहा समासेणं।
एमेव य गुरुगा वी, णेयव्वा अड्ढकंतीए ॥२२४३॥
एमेव य मीसा वी, अड्ढकंतीए होन्ति णेतव्वा।
एमेव पंचपचर्हि, मासादी सातिरेगादी ॥२२४४॥

जा छम्मासा णेया, तत्थ वि उग्घाय तह अणुग्घाया ।
मीसा वि अ णेतव्वा, अट्ठोक्कंतीए सव्वत्थ ॥२२४५॥
अहवा वी णिव्विगनो, पुरिमेक्कासण तहेव आयामं ।
तत्तो चउत्थ पणगं, दस पण्णर वीस पणुवीसा ॥२२४६॥
मासो लहु गुरु चतु छच्च लहु गुरु च्छेद मूल अणवट्ठो ।
पारंचिए य तत्तो, पणयादीह्रासण तहेव ॥२२४७॥
लहु गुरुग मीसगा वि य, तहेव एत्थं पि होन्ति णायव्वा ।
एवं एयं दाणं, वुड्ढीए होति विण्णेयं ॥२२४८॥
एमेव य समणीणं, णवरं दुगवज्जितं तु कातव्वं ।
अणवट्ठो पारंची, एय दुगं णत्थि समणीणं ॥२२४९॥
अहवा पुरिसा दुविहा, समासतो होन्तिमे उ णातव्वा ।
एगविहारी य तहा, गणबद्धविहारिणो चेव ॥२२५०॥
गच्छाहि णिग्गया जे, पडिमापडिवण्णया य जिणकप्पी ।
जे यावि सयंबुद्धा, इत एगविहारिणो तिविहा ॥२२५१॥
ते णिच्चमप्पमत्ता, जति आवज्जे कहंचि कम्मुदया ।
तक्खणमेव तु तं पट्ठवेन्ति णियमा य सक्खीवा ॥२२५२॥
संघयणधितिसमग्गा, सत्ताहिट्ठियमहन्तजोगधरा ।
सुबहुं पि हु आवण्णा, वहन्ति णिरणुग्गहं सव्वं ॥२२५३॥
आलोयणोवयुत्ता, ते तू आलोयणाए सुज्झंति ।
तेसिं जाव तु मूलं, करेन्ति सतमेव सुज्झंति ॥२२५४॥
अणिगूहियबल-विरिया, जहवादीकारया य ते धीरा ।
उत्तमसद्धसमण्णागया य सुज्झंति ते णियमा ॥२२५५॥
गणपडिबद्धा दुविहा, जिणपडिरूवी य होंति थेरा य ।
जिणपडिरूवी दुविहा, विसुद्धपरिहारऽहालंदो ॥२२५६॥
ते णिच्चमप्पमत्ता, जति आवज्जे कहंचि कम्मुदया ।
तक्खणमेव हु तं पट्ठवेन्ति कप्पट्ठियसगासे ॥२२५७॥

संघयणधितिसमग्गा, मत्ताहिट्ठियमहंतजोगधरा ।
सुबहुं पि हु आवण्णा, वहंति णिरणुग्गहं धीरा ॥२२५८॥
अट्ठविहा पट्ठवणा, तेसिं आलोयणाति मूलंता ।
तं पट्ठवेत्तु धीरा, मुज्झंति विसुज्झचारित्ता ॥२२५९॥
थेरा वि विसुद्धतरा, तेसु वि जति केति किंचि आवज्जे ।
तक्खणमेव हु तं पट्ठवेंति णियमा गुरुसगासे ॥२२६०॥
एत्थ य पट्ठवणं पति, आयरिओ विहिमिणं अजाणंतो ।
छंडेइ य अप्पाणं, तं पि य सीसं ण मोहेति ॥२२६१॥
पुरिसे त्ति गतं दारं, इमं तु पडिसेवणं पवक्खामि ।
सा पुण चतुहा सेवणा, आउट्टियमादिसाहंसु ॥२२६२॥
॥ धूं ३॥७३॥

आउट्टियाय दप्पप्पमायकप्पेहिं वा णिसेविज्जा ।
दव्वं खेत्तं कालं, भावं वाऽऽसेवओ पुरिसो ॥७४॥

आउट्टिया उवेच्चा, दप्पो पुण होति वग्गणादीओ ।
कंदप्पादि पमाओ, अहव कसायादिओ णेओ ॥२२६३॥
इमो—
कसाय विकहा वियडे, इंदिय णिद्द प्पमाय पंचविहो ।
एस पमाओ भणितो, कप्पं तु इमं पवक्खामि ॥२२६४॥
गीयत्थो कडजोगी, उवउत्तो जयणजुत्तो सेवेज्जा ।
गाहापच्छद्धस्स तु, इणमो उ समासतो वोच्छं ॥२२६५॥
दव्वं आहारादी, खेत्तं अद्धाणमादि णातव्वं ।
कालो ओमादीओ, हट्ठगिलाणादि भावो तु ॥२२६६॥
॥ धूंणक ॥७४॥

जं जीयदाणमुत्तं, एयं पातं पमायसहियस्स ।
एत्तो च्चिय ठाणंतरमेगं वड्ढेज्ज दप्पवयो ॥७५॥

जं जीतदाण भणियं, णिव्वीतियमादि अट्ठमं अंते ।
ततियपडिसेवणाए, पमायसहियस्स एयं तु ॥२२६७॥
दप्पपडिसेवणाए, पुरिमड्ढादी तु होति दायव्वं ।
अंते दसमं दिज्जा, आउट्टीए उ वोच्छामि ॥२२६८॥
॥थूंनृ॥७५॥

आउट्टियाए ठाणंतरं व सट्ठाणमेव वा दिज्जा ।
कप्पेण पडिक्कमणं, तदुभयमहवा विणिद्दिट्ठं ॥७६॥

आउट्टियावराहे, एक्कासणमादि अंते बारसमं ।
पाणतिपायवराहे, सट्ठाणं होति मूलं तु ॥२२६९॥
आउट्टिय त्ति गतम ॥
कप्पेण उ सेवाए, तह सुद्धो अहव मिच्छकारं तु ।
अहवा तदुभयमुत्तं, आलोय पडिक्कमाहि त्ति ॥ २२७०॥
कप्पपडिसेवणा गता ॥ थूंफ्री ॥७६॥

आलोयणकालम्मि ।व, संकेस विसोहि भावतो णातुं ।
हीणं वा अहियं वा, तम्मत्तं वा वि देज्जाहि॥७७॥

आलोयणकालम्मि व, गूहति अहवा वि कुव्वती किञ्चि ।
सो संकिलिट्ठचित्तो, तस्सऽहितं दिज्ज ऊणं वा ॥२२७१॥
जो पुण आलोएन्तो, काले संवेगमुवगतो जो उ ।
णिदणगरहादीहिं, विसुद्धचित्तो तु तस्सऽप्पं ॥ २२७२॥
जो पुण आलोएन्तो, ण वि गूहति ण वि य णिंदए जो तु ।
सो मज्झिमपरिणामो, तस्स उ देज्जाहि तम्मत्तं ॥२२७३॥
॥ थूंग्री । ७७॥

इति दव्वादिबहुगुणे, गुरुसेवाए य बहुतरं देज्जा ।
हीणतरे हीणतरं, हीणतरे जाव झोसो त्ति ॥७८॥

इति एस दव्व खेत्ते, काले भावेसु बहुगुणेसु तु ।
गुरुसेवा तु पहाणा, एतेसुं बहुतरं दिज्जा ॥२२७४॥
हीणतरे हीणतरं, ति देज्ज दव्वादिमादिहीणेहिं ।
तह तह हीणं देज्जा, झोसेज्ज व सव्वहीणस्स ॥२२७५॥
॥ धूर्णी ॥ ७८ ॥

झोसिज्जति सुबहुं पि हु, जीएणऽण्णं तवारिहं वहयो ।
वेयावच्चकरस्स य, दिज्जति साणुग्गहतरं वा ॥७९॥

झोसण खवणा मुंचण, एगट्ठा तं तु मुच्चए कस्स ? ।
अण्ण वचंतु वहंते, जह पट्ठविए उ छम्मासे ॥२२७६॥
पंचदिणेहिं गएहिं, पुणरवि जइ सो उ अण्णमावज्ज ।
तो से तं तहिं छुब्भति, एवं झवणा तु तस्स भवे ॥२२७७॥
वेयावच्च करेंतो, जति आवज्जति तु किंचि अण्णतरं ।
तावतितं से दिज्जति, जं णित्थरती तु सो वोढुं ॥२२७८॥
कालं ठावितु दिक्खे, णित्थिण्णे तं तु काहिती सो तु ।
एय तवारिह भणितं (दारं), अहुणा छेदारिहं वोच्छं ॥२२७९॥
॥ धूर्णी ॥ ७९ ॥

तवगव्विओ तवस्स य, असमत्थो तवमसद्दहन्तो य ।
तवसा त जो ण दम्मति, अतिपरिणाम प्पसंगी य॥८० छेदप्रायश्चित्तम्

सुबहुत्तरगुणब्भंसी, छेदावत्तिसु पसज्जमाणो य ।
पासत्थादी जो वि य, जतीण पडितप्पिओ बहुसो॥८१

उक्कोसं तवभूमीं, समतीओ सावसेसचरणो य ।
छेदं पणगादीतं, पावति जा धरति परियाओ ॥८२॥
दारगाहाओ तिण्णि ॥

तवबलिओ देह तवं, अहं समत्थो त्ति गव्विओ एम ।
तवअसमत्थ गिलाणो, बालादी अहव असमत्थो ॥२२८०॥
जो उ ण सद्दहति तवं, अहवा वी जो तवेण ण वि दम्मे ।
अतिपरिणामो जो तू, पुणो पुणो सेवति पसंगी ॥२२८१॥
उत्तरगुण बहुगा तू, पिंडविसोहादिगा उ णेगविहा ।
भंसेति विणासेती, पुणो पुणो जो तु ताइं तु ॥२२८२॥
छेदावत्तीओ वा, पकरेति पगज्जती य जो तेसुं ।
अहुणा पासत्थादी, आदीसद्देणिमाहंसु ॥ २२८३॥
पासत्थोसण्णो वा, कुसील संसत्त अहव णीओ वा ।
वेयावच्चकराइण, जतीण पडितप्पिओ बहुसो ॥२२८४॥
उक्कोसा तवभूमी, आदिजिणिदस्स होति वरिसं तु ।
मज्झिमगाण जिणाणं, अट्ठ उ मासा भवे भूमी ॥२२८५॥
चरिमस्स जिणिंदस्सा, उक्कोसा भूमि होति छम्मासा ।
एयं तू उक्कोसं, समतीओ चरणसेसा य ॥ २२८६॥
एव जहुद्दिट्ठाणं, तवगव्वियमादियाण सव्वेसिं ।
छेदं पणगादीयं, देज्जा जा धरति परियाओ ॥२२८७॥
छेदारिहं गयं ॥ ८२ ॥ ८२ ॥

मूलप्रायश्चित्तम् आउट्टियाय पंचिंदियघाते मेहुणे य दप्पेणं ।
सेसेसुक्कोसाभिक्खसेवणादीसु तीसुं पि ॥८३॥
आउट्ट उवेच्चा तू, पंचिंदि वहेति मिहुण दप्पेणं ।
सेस वय मुसाऽदिन्नं, परिग्गहो चेव णादव्वो ॥२२८८॥
एतेसुक्कोसाणि, पडिसेवयऽभिक्खणं तु मिच्छा तु ।
एतेसिं सव्वेसिं, मूलं तू होति दातव्वं ॥२२८९॥८३॥८३॥
तवगव्वियादिएसु य, मूलुत्तरदोसवतियरगएसुं ।
दंसणचरित्तवन्ते, चियत्तकिच्चे य सेहे य ॥८४॥

तवगव्वियमादीया, जावऽइपरिणाम अतिपसंगि त्ति ।
एत जहुद्दिट्ठाणं, मूलं तू होति णातव्वं ॥२२९०॥
मूलगुण उत्तरगुणे, बहुविह बहुसो य दूसे भंजति वा ।
वतिकरमेयं होती, एगिमजुत्तस्स मूलं तु ॥२२९१॥
'णिच्छयनयस्स चरणायविग्घाये णाणदंमणवहो वि ।
ववहारस्स तु चरणे, हयम्मि भयणा तु सेसाणं ॥२२९२॥
चत्तं जेण दंसणं, चारित्तं वा वि सो तु णातव्वो ।
चत्तकिच्चो वेसो, चियत्तकिच्चो मुणेतव्वो ॥२२९३॥

अहवा—

संजम सकलं किच्चं, जेणं चत्तं स चत्तकिच्चो तु ।
सेहो अणुवट्ठविओ, मूलं एतेसि सव्वेसिं ॥२२९४॥
॥०ण्क॥८४॥

अच्चंतोसण्णेसु य, परलिंगदुवे य मूलकम्मे य ।
भिक्खुम्मि य विहिततवे, अणवट्ठपारंचियं पत्ते ॥८५॥

ओसण्णे पव्वाविय, संविग्गेहिं व जप्पभिति तु ।
ओसण्णयाए विहरिओ, सो भणितऽच्चंतओसण्णो ॥२२९५॥
गिहिलिंग अण्णउत्थिय, परलिंगदुवे य कुणति दप्पेणं ।
गब्भादाणे मादण, दुविहमिहं मूलकम्मं तु ॥२२९६॥
भिक्खणसीला भिक्खू, विहिततवं उवणयं तु णातव्वं ।
तवअणवट्ठं उवणय, पारंचितवं च णातव्वं ॥२२९७॥
अतियारसेवणाए, पत्तं एयं तु होति दुविह तवं ।
एतेसिं सव्वेसिं, दातव्वं होति मूलं तु ॥२२९८॥०नू॥८५॥

छेदेणापरियाएऽणवट्ठपारंचियावसाणे य ।
मूलं मूलावत्तिसु, बहुसो य पसज्जणे भणियं ॥८६॥

छिज्जंते परियाए, जस्स तु छिण्णो हु णिरवसेसो तु ।
तवअणवट्ठे वूढे, पारंचितवावमाणेसु ॥२२९९॥
मूलावत्तिसु एसु, पुणो पुणो सज्जए तु जो समणे ।
सव्वेसु वि एतेसुं, मूलं तू होति दातव्वं ॥२३००॥

मूलारिहं गतम् ॥ ७फ्रा ॥८६॥

अणवट्ठप्पो दुविहो, आसायण तह य होति पडिसेवी ।
आसायणअणवट्ठं, समासयोऽहं इमं वोच्छं ॥२३०१॥
तित्थकरं संघ सुयं, आयरियं गणहरं महिड्डीयं ।
एते आसाएन्ते, पच्छित्ते मग्गणा इणमो ॥२३०२॥
पढम बिति देस सव्वे, णवमं सेसेसु चउगुरू देसे ।
पडिसेवणअणवट्ठं, अहुणा उ इमं पवक्खामि ॥२३०३॥

अनवस्थाप्य-प्रायश्चित्तम्

उक्कोसं बहुसो वा, पउट्ठचित्तो तु तेणियं कुणति ।
पहरति जो य सपक्खे, णिरवेक्खो घोरपरिणामो ॥

उक्कोसं तु विसिट्ठं, पुणो पुणो एय होति बहुगं तु ।
कोहादी व अतीव तु, पउट्ठचित्तो मुणेतव्वो ॥२३०४॥
पडिसेवणअणवट्ठो, होती तिविहो इमो समासेणं ।
साहम्मिय अण्णधम्मियतेण्णे तह हत्थताले य ॥२३०५॥
साहम्मितेण्ण दुविहं, सचित्तं तह य होति अचित्तं ।
अचित्तोवहि भत्त, सचित्त सेहावहारो तु ॥२३०६॥
साहम्मिउवहिहरणं, वावारण झावणा य पत्थवणा ।
तं पुण सेहमसेहो, हरेज्ज अदिट्ठ दिट्ठं वा ॥२३०७॥
सेहो त्ति अगीयत्थो, जो वा गीतो अणिड्डिसंपण्णो ।
उवही पुण वत्थादी, अपरिग्गह एतरो तिविहो ॥२३०८॥
अपरिग्गहितो तहियं, साहम्मी मोत्तु पवसितो जस्स ।
आहरमाणे सोही, होति इमा खेत्तणिप्फण्णा ॥२३०९॥

अण्णोवस्सयबाहिं, णिवेस वाडे य गाममुज्जाणे ।
सीमाए जा णेयं, सव्वत्थ वि अन्तो बहिया वा ॥२३१०॥

एतेसुं तेण्णे तेमासलहुं आइकाउ जा छेदो ।
अट्ठोक्कंती णेयं, अदिट्ठेमा भवे सोही ॥२३११॥

सीमगुरुगादि दिट्ठे, मूलं सेहस्स एयणिट्ठाइं ।
अभिसेयाऽऽयरियाणं, एक्केक्कं ठाणगं वड्ढे ॥२३१२॥

एवं तु वस्सयाओ, साहम्मीणुवहिमवहरंतस्स ।
वावारिए इदाणिं, वोच्छं सगमेव गेण्हन्ते ॥२३१३॥

वावारिया गुरूहिं, वच्चह आणेह निव्विहमुवहिं ति ।
तं लद्धं तत्तो चिय, तुज्झं मज्झे य अत्तट्ठी ॥२३१४॥

लहुओ अत्तट्ठेते, जति पुण आणेत्तु गुरुण न णिवेदे ।
तो होंती चतुलहुगा, अणवट्ठप्पो व आदेसा ॥२३१५॥

वावारियतेण्णेयं, अण्णो पुण सावए णिमन्तेन्ते ।
पडिसिद्धाऽऽयरिएणं, दट्ठूणं तत्थ गंतूणं ॥२३१६॥

तेती झामिय उवही, अहयं च गुरूहि पेसिओ देह ।
तो दिण्णो तेहुवहो, किह पुण सट्ठेहि सो णातो ? ॥२३१७॥

सो तं घेत्तूण गतो, णवरं ते आगता गुरुसगासं ।
पुच्छंति य ते सड्ढा, उवहि पहुत्तो व ण पहुत्तो ? ॥२३१८॥

केवइयं वा दट्ठुं ?, तो बिन्ति ण दिज्झए हु उवहि त्ति ।
केण व णीतो उवही ?, इति सोच्चा पत्तिमप्पत्ति ॥२३१९॥

लहुगा अणुग्गहम्मी, गुरुगा अप्पत्तिए मुणेयव्वा ।
मूलं च तेणसद्दं, वोच्छेयपसज्जणा सेसे ॥२३२०॥

एवं ताव अदज्झंते, अह सच्चं झामितो भवे उवही ।
पेसविओ य गुरूहि, लद्धे तहि अंतरा जो तु ॥२३२१॥

लद्धे अत्तट्टेती, चतुलहुगा अह गुरूण ण णिविदे ।
सो चतुगुरुगा तहियं. अणवट्ठप्पो व आदेसा ॥२३२२॥
सूत्रादेशात् ॥

एवं झामणहेतुं, अवहारो अह इयाणि पत्थवियं ।
आयरियादिण केणति, आयरियाणं तु अण्णेसिं ॥२३२३॥
उक्कोसो सणिजोगो, पडिग्गहो अन्तरा तहिं लद्धो ।
अत्तट्ठेते लहुगा, गुरुगा अदत्तेऽणवट्ठो वा ॥२३२४॥
एवं ता उवहिम्मी. अहुणा भत्तम्मि तेण्ण वोच्छामि ।
जति पविसे असंदिट्टो. ठवणकुले तो भवे लहुगा ॥२३२५॥
अज्ज अहं संदिट्टो, पुट्ठोऽपुट्ठो व साहए एवं ।
पाहुणगिलाणगट्ठा, तं च पलोइंति तो वितियं ॥२३२६॥
मायाणिप्फण्णं तू, एवभणंतस्स होति मासगुरू ।
अहवा आगंतूणं. णालोए तह वि मासगुरुं ॥२३२७॥
कह पुण हरेज्ज णायं, साहूहिं तह य तेहिं सड्ढेहिं ।
जह खलु पविट्ठो अण्णो, ठवणकुलाइं असंदिट्ठो ? ॥२३२८॥
गुरुसंथाडम्मि गए, भणंति गुरुजोग्ग णीयमेत्ताहे ।
णत्थि त्तऽणुग्गहम्मी. लहुगा अप्पत्तिए गुरुगा ॥२३२९॥
वोच्छेद गुरुगिलाणे, गुरुगा लहुगा य खमगपाहुणए ॥
गुरुगो य बालवुड्ढे, सेहे य महोदरे लहुगो ॥२३३०॥
भत्तम्मि भणियमेतं. तेण्णं भणियं च सेयमचित्तं ।
अहुणा सचित्तम्मी. सेह सेहीय वोच्छामि ॥२३३१॥
तं पुण णिज्जंतो वा, अभिहारेन्तो व आसियाएज्जा ।
भिक्खादि पविट्ठे वा, गाम बहि ठवेत्त णिज्जंतो ॥२३३२॥
तं पुण सण्णादिगतो अद्धाणीओ व कोति पासेज्जा ।
वंदियपुट्ठो कोती, भणे अहं पव्वतिउकामो ॥२३३३।
ससहातो असहातो ?, त्ति पुच्छतो भणति नाहं ससहायो ।
सो कत्थ ? मज्झ कज्जे. छाय पिवासस्स वा अडति ॥२३३४॥

तो वेति अण्णपासं. इम भुंजऽणुकंपाए सुद्धो तु ।
धम्मं च पुट्ठऽपुट्ठो, कहेति सुद्धो असढभावो ॥२३३५॥
सढयाए पुण ॰ामो, भत्तं देंतस्स अहव कहयंते ।
आसीआवणहेतुं, सोहि इमेहिं तु ठाणेहिं ॥२३३६॥
भत्ते पण्णवण णिगूहणा य वावार जंपणा चेव ।
पत्थवण सयंहरणे, सेहे अव्वत्त वत्तयं ॥ २३३७ ॥
गुरुओ चतुल्हु चतुगुरु, छल्लहु छग्गुरुग छेदमव्वत्ते
वत्ते भिक्खुणो मूलं, दुग तु अभिसेग आयरिए ॥२३३८॥
एवं ता जो णिज्जति, अहिहारेन्तो पुणोति जो जाति ।
सो वि य तहेव पुट्ठो, भणाइ वच्चामऽमुगमूलं ॥२३३९॥
तह चेव भत्तगाणं, पण्णवणा चेव होंति एत्थं पि ।
सेसा णिगूहणादी, सव्वे वि पया ण संति इहं ॥२३४०॥
एमेव य इत्थं तु, णिज्जंतऽभिधारयंति एमेव ।
वत्त॰व्वत्ताए गमो, दोसा य इमे हरंतस्स ॥२३४१॥
आणायऽणंतसंसारियत्त बोहीय दुल्लभत्तं च ।
साहम्मितेणत्तस्सी, पवत्तछलणा॰हिकरणं च ॥२३४२॥
विनियपयं वोच्छेदे, पुव्वगए कालियाणुओगे य ।
एतेहिं कारणेहिं, कप्पति सेहाऽवहारो तु ॥२३४३॥
एवं तु सो अवहितो, जाहे जातो सयं तु पावयणी ।
कारणजाए य जया होज्जाहो अवहितो तेणं ॥२३४४॥
सो तं चिय धरति गणं, कालगतो गुरुम्मि तं विहारेन्ते ।
जावेक्को णिप्फण्णो, ताहे से अप्पणो इच्छा ॥२३४५॥
अह हरिए णिक्कारणे, ताहे पुच्छिमाण चेव सो जाति ।
अह अब्भुज्जयमरणं, पडिवण्णो गुरुविहारं वा ॥२३४६॥
अण्णम्मि अविज्जंते, आयरियपदाफदे तमेव गणं ।
धारेति जाव अण्णो, णिम्मातो तम्मि गच्छम्मि ॥२३४७॥

सच्चित्ततेण्णमेयं, साहम्मीणं तु एवमक्खातं ।
आभवणं दोसा या, परधम्मियतेण्णे वोच्छामि ॥२३४८॥
परधम्मिया वि दुविहा, लिंगपविट्ठा तहा गिहत्था य ।
तेसिं तिविहं तेण्णं, आहारे उवहि सच्चित्ते ॥२३४९॥
भिक्खूमादीसंखडि, तं लिंगं काउ भुंजए लुद्धो ।
आभोगम्मि उ लहुगा, गुरुगा उड्डमणे होंति ॥२३५०॥
कूरणिमित्तं चेव उ, अजियंता एते एत्थ पव्वइया ।
अविदिण्णदाणगा खलु, पवयणहीला दुरप्पत्ति ॥२३५१॥
गिहवासे वि वरागा, धुवं खु एते अदिट्ठकल्लाणा ।
गलओ णवर ण वलिओ, एतेसिं सत्थुणा चेव ॥२३५२॥
एवं ता आहारे, उवहीतेण्णं पुणो इहं होज्जा ।
जह कोंदि भिच्छुगादी, उवस्सए सोतु उवगरणं ॥२३५३॥
भिक्खादिगतो तं तू, जति गिण्हति चतुलहू भवे तत्थ ।
गिण्हण कड्ढण ववहार पच्छकड तह य णिव्विसए ॥२३५४॥
गिण्हणे गुरुगा छम्मास कड्ढणे छेदो होति ववहारे ।
पच्छाकडम्मि मूलं, णिव्विसयोद्दावणे चरिमं ॥२३५५॥
जम्हा एते दोसा, तम्हा अविदिण्णगं ण घेत्तव्वं ।
उवहीतेण्णं एयं, एत्तो वोच्छामि सच्चित्ते ॥२३५६॥
खुड्डं व खुड्डियं वा, तेणेति अवत्त पुच्छितुं गुरुगा ।
वत्तम्मि णत्थि पुच्छा, खेत्तं थामं च णातूणं २३५७॥
लिंगपविट्ठाणेवं, एमेव तिहा अदिण्ण गिहियाणं ।
गहणादीया दोसा, सविसेसतरा भवे तेसु ॥२३५८॥
आहारे पिट्ठादी, विरल्लियं दट्ठ खुड्डया गेण्हे ।
गेण्हंती दिट्ठा वि य, ता कुसलपरंपरा छुभणा ॥२३५९॥
तहियं होति चतुलहू, अणवट्ठप्पो व होति आदेसा ।
एमेव य उवहिम्मि वि, सुत्तट्ठी वत्थमादीया ॥२३६०॥

णीएहिं तु अविदिण्णं. अप्पत्तवयं पुमं ण दिक्खेन्ति ।
अपरिग्गहमव्वत्तो, कप्पति तु जढो सदोसेहिं ॥२३६१॥
अपरिग्गह णारी पुण. ण भवति तो सा ण कप्पति अदिण्णा ।
सा वि य हु काइ कप्पइ. जह पउमा सुहुमाया वा ॥२३६२॥
'विनियपदं पाऽऽहारे. अद्धाणोमाइएसु कज्जेसु ।
उवहीविवित्तमादिसु, आगाढे गहणमविदिण्णे ॥२३६३॥
मवलोसु नाव पुव्वं, वत्था व गेण्हंति तत्थ अदलेन्ते ।
वलवन्ते दुट्ठेसु पुण, छण्णं पो ताहे गिण्हंति ॥२३६४॥
ताहे परलिंगेण वि, जाति य पुव्वं अदत्ते छण्णम्मि ।
गारत्थीसु वि एवं, आगाढे होति गहणं तु ॥२३६५॥
आहारे उवहिम्मि य, विनियपदे गहणमेतमक्खायं ।
एत्तो सचित्तगहणं, वोच्छामि अदिण्ण बिनियपए ॥२३६६॥
णाऊण य वोच्छेयं, पुव्वगए कालिआणुओगे य ।
उवयुज्जिऊण पुव्वं, होहिंति जुगप्पहाण त्ति ॥२३६७॥
ताहे सुड्डग सुड्डी, हरेज्ज गिहि-अण्णतित्थियाणं वा ।
साहम्मि-अण्णधम्मिय, एयं तेण्णं समक्खातं ॥२३६८॥
गाहापुव्वद्धस्स तु, इति एसा अभिहिता इहं तेण्णा ।
अहुणा पच्छद्धस्स तु. गाहासुत्तं इमाऽऽहंसु ॥२३६९॥
अह एत्तो वोच्छामी, हत्थायालं जहक्कमेणं तु ।
किं पुण हत्थायालं ?, भण्णति इणमो णिसामेहिं ॥२३७०॥
हत्थानाले हत्थालंबे, हत्थायाणे य होति वोद्धव्वे । हस्तताल:
एतेसिं णाणत्तं, वोच्छामि जहाणुपुव्वीए ॥२३७१॥
हत्थेणं जं तालण, हत्थायालं तगं मुणेतव्वं ।
तहियं हवति अ दण्डो, लोइय लोउत्तरो इणमो ॥२३७२॥
उग्गिण्णम्मि य गुरुओ, डंडो पडियम्मि होति भतणा तू ।
एवं खु लोइयाणं, लोउत्तरियं अतो वोच्छं ॥२३७३॥

हत्थेण व पाएण व, अणवट्ठप्पो तु होति उग्गिण्णे ।
पडियम्मि होति भयणा, उद्दवणे होति पारंची ॥२३७४॥
विनियपय खड्ड विणयं, गाहेन्ते अहव बोहिगादीसु ।
सावयभये व घोरे, देज्जाही हत्थतालं तु ॥२३७५॥
विणयग्गाहण खड्डं, कण्णामोड-खड्डुहा-चवेडादी ।
सावेक्खो हत्थतालं, दलाइ मम्माणि रक्खंतो ॥२३७६॥
परपरियावणकरणं, चोदेइ अमायबंधहेउ त्ति ।
तं कह तस्माणुण्णा, तुब्भेहिं कया ? इमं सुणसु ॥२३७७॥
कामं परपरितावो, असातहेतू जिणेहिं पण्णत्तो ।
आयपरहियकरो तू, इच्छिज्जइ दुम्मोले स खलु ॥२३७८॥
सिप्पं णेउणियट्ठा, वाधाते सहंति लोइया गुरुणो ।
ते इहलोगफलाणं, सहुगविरागेन उवमा तु ॥२३७९॥
अहवा वि रोगितस्सा, ओमह चाईहि दिज्जए पुव्वं ।
पच्छा नाडेतु पी, देहहितट्ठाए दिज्जति से ॥२३८०॥
इय भवरोगत्तस्स वि, अणुकूलेण तु मारणा पुव्वं ।
पच्छा पडिकूलेण वि, परलोयहियट्ठ कायव्वा ॥२३८१॥
इहपरलोगे य फलं, विणीतविणयो अणुत्तरं लभति ।
संविग्गाइगुणेहिं, इमेहिं जुत्तो महाभागो ॥२३८२॥
संविग्गो मद्दविओ, असुदी अणुयत्तओ विसेमण्णू ।
उज्जुत्तमपरितंतो, इच्छियमत्थं लभइ साहू ॥२३८३॥
बोहिभयसावयादिसु, गणस्स गणिणो व अवए पत्ते ।
इच्छंति हत्थयालं, कालाइचरं व सज्जं वा ॥२३८४॥
एरिसए आगाढे, बोहियसादीसु जोयमंदेहे ।
जं जस्स तु सामत्थं, सो तु ण हावेति एत्थं तु ॥२३८५॥
कुणमाणो वि हु कडणं, कयकरणो णेव दोसमब्भेति ।
अप्पेण बहुं इच्छति, विसुद्धमालंबणो समणो ॥२३८६॥

आयरियस्स विणासे, गच्छे अहवा वि कुल गणे संघे ।
पंचिंदियवोरमणं, पि कातु णित्थारणं कुज्जा ॥२३८७॥
एवं तु करेन्तेणं, अव्वोच्छित्ती कया उ तित्थम्मि ।
जति वि सरीरावायो, तह वि य आराहओ सो उ ॥२३८८॥
जो पुण सइ सामत्थे, विज्जातिमंतो व अहव सारीरे ।
एरिसए आगाढे, हावेन्तो विराहयो भणितो ॥२३८९॥
एयं हत्थायालं, हत्थालंबं इमं सुणेतव्वं ।
दुक्खेण अभिदुयाणं, जं सत्ताणं परित्ताणं ॥२३९० ॥ हस्तालम्बः
असिवे पुरोवरोहे, एमादीवइससेसु अभिभूता ॥
संजायपच्चया खलु, अण्णेसु य एवमादीसु ॥ २३९१ ॥
मरणभएणऽभिभूए, ते णातुं तेहिं वा वि भणिया तु ।
पडिमं काउं मज्झे, चिट्ठति मंते परिजवेन्तो ॥२३९२॥
एतं हत्थालंबं, हत्थायाणं अयो परं वोच्छं ।
जो अत्थं उप्पाए, णिमित्तमादी इमं णातं ॥२३९३॥ हस्तादानम्
उज्जेणी उस्सण्णं, दो वणिया पुच्छिऊण आयरिअं ।
ववहारं ववहरंतो, तं ताहे तेसि सो साहे ॥२३९४॥
तस्स य भगिणीपुत्तो, भोगहिलासी तु मुंचए लिंगं ।
तो अणुकंपा भणती, किं काहिसि तं विणऽत्थेणं ? ॥२३९५॥
तो वच्च ते वणीए, भणाहि अत्थं पयच्छहा मज्झं ।
तेणाऽऽगंतुं भणिता, तो तेसिं वेति अह इक्को ॥२३९६॥
कत्तो अत्थो अम्हं ?, किं सउणा रूवए इहं हगतो ? ।
वीओ चंगेरि भरेतु णिग्गतो णतुलयाणं तु ॥२३९७॥
गिण्हसु जावइएहिं, कज्जं तो गाहेत तेण जावऽट्ठो ।
वितियम्मि हायणम्मा, किं गिण्हामो ? त्ति ते बेन्ति ॥२३९८॥
भणितो सउणिहयन्तो, तण कट्ठ वत्थ रूत कप्पासे ।
णेहगुलधण्णमादी, अंतो णगरस्स ठावेहि ॥२३९९॥

विनिओ य नहिं भणिओ, सव्वादाणेण गिण्ह तणकट्ठं ।
णगरबहिट्ठा ठावय, गहिए णवरिं च वासासुं ॥२४००॥
ठइएसु गेहेसुं, पलित्ते दट्ठुं ततो उ तं णगरं ।
तणकट्ठाणं पुंजो, अइवमहग्घो तु सो जातो ॥२४०१॥
दट्ठुमिसिरस्स सव्वं, ताहे सो गंतु भणति आयरियं ।
उच्छाइओ अहोऽहं, किह व ण णातं ममं तुब्भे? ॥२४०२॥
किं मउणिया णिमित्तं, हवंति अम्हं? ति भणति णेमित्ती ।
होंति कयाइ तयऽण्णह, रुट्ठं णातुं तयो ग्वामे ॥ २४०३॥
एमादिणिमित्तेहिं, उप्पाएन्तम्मि अन्थयाण भवे ।
सो एरिसयो पुरिसो, अब्भुट्ठेज्जा जइ कयाइ ॥२४०४॥
तस्स तु ण उवट्ठवणा, तम्मिं खेत्तम्मि जाव संचिक्खे ।
एस च्चिय अणवट्ठो, जऽणुवट्ठवणा तहिं खेत्ते ॥२४०५॥
णेतूण अण्णखेत्तं, तस्स उवट्ठावणा तु कायव्वा ।
तहि णोवट्ठा खेत्ते, किं कारण? भण्णती सुणसु ॥२४०६॥
पुव्वब्भासा भेसेज्ज, किंचि गोरव सिणेह भयसो वा ।
ण सहति परिस्सहं पि य, णाणे कंडु व्व कच्छुल्लो ॥२४०७॥
तेण तु तहिं तं थाणे, ण हु देन्तो तस्स भावलिंगं तु ।
देज्जा व कारणम्मी, असिवोमादीसु तप्पहिति ॥ २४०८॥
ण य मुच्चति अन्हातो, तहिं तं पुट्ठो तु भणति वीमरियं ।
अहवा वि उत्तिमट्ठे, देज्जाहो लिंग तन्थेव ॥२४०९॥
एवं ता ओसण्णे, गिहत्थे पुण दव्वभावलिंगाइं ।
दोण्णि वि ण वि दिज्जंती, दिज्जेज्ज व उत्तिमट्ठम्मि ॥२४१०॥
एवं अत्थायाणे, जे पुण सेसा हवंति अणवट्ठा ।
साहम्मि-अण्णधम्मियतेणादी ते उ भयणिज्जा ॥२४११॥
का पुण भयणा एत्थं ?, आहारे उवहितेण अचित्ते ।
लहुगो लहुगा गुरुगा, अणवट्ठप्पो व आदेसा ॥२४१२॥

कह पुण आएसेणं, अणवट्ठो होइमं णिमामेह ।
अणुवरमंतो कीरति, अहवा उस्सण्णदोसो तु ॥२४१३॥
अहवा भिक्खू पावति, एतेसु पदेसु तिविह पच्छित्तं ।
णवमं पुण बोद्धव्वं, अभिसेगे सूरिणो दसमं ॥२४१४॥
तुल्लम्मि वि अवराहे, तुल्लमतुल्लं च दिज्जए दोण्हं ।
पारंचिए वि णवमं, अभिसेगे गुरुम्म पारंची ॥२४१५॥
अहवा अभिक्खसेवी, अणुवरमं पावती गणी णवमं ।
पावति मूलमेव तु, अभिक्खपडिसेविणो सेसा ॥२४१६॥
अन्थाइणे वतितो, अणवट्ठो खेत्तओ समक्खातो ।
गच्छे चेव वसंता, णिज्जूहिज्जंति अवसेसा ॥२४१७॥
अहवा— ॥ ८ ग्रं ॥८७॥

अभिसेओ सव्वेसु य, बहुसो पारंचियावराहेसु ।
अणवट्ठप्पावत्तिसु, पसज्जमाणो अणेगासु ॥८८॥

अभिसेगो उवज्झाओ, पुणो पुणो होति बहुससद्दो ऊ ।
पारंचियावराहे, आवज्जति सव्वसद्दो तु ॥२४१८॥
अणवट्ठप्पावत्तो, उ सेवए णेगसो त्ति बहुसो तु ।
णंतरगाथाए सो, अणवट्ठप्पो त्ति कीरइ तु ॥२४१९॥
जुत्तं तावऽणवट्ठ, दिज्जति अणवट्ठमेव अभिसेगे ।
पारंचियावराहे, पत्ते किह पावती णवमं ? ॥२४२०॥
भण्णति जह णवदसमे, आवण्णस्सावि भिक्खुणो मूलं ।
दिज्जति तहाऽभिसेगे, परं पदं होति णवमं तु ॥२४२१॥
॥ ८ ह्रीं ॥८८॥

कीरति अणवट्ठप्पो, सो लिंगक्खेत्तकालओ तवओ ।
लिंगेण दव्वभावे, भणियो पव्वावणाऽणरिहो॥८९॥

अप्पडिविरयोसण्णो, ण भावलिंगारिहोऽणवट्टप्पो ।
जो जेण जत्थ दूसति, पडिसिद्धो तत्थ सो खेत्ते ।।१०।।
जत्तियमेत्तं कालं, तवसा उ जहण्णएण छम्मासा ।
संवच्छरमुक्कोसं, आसाती जो जिणादीणं ।।११।।
वासं बारस वासा, पडिसेवी कारणे तु सव्वो वि ।
थोवं थोवतरं वा, वहेज्ज मुच्चेज्ज वा सव्वं ।।१२।।
वंदति ण य वंदिज्जति, परिहारतवं सुदुच्चरं चरति ।
संवासो से कप्पति, णालवणादीणि सेसाणि ।।१३।।

परपक्ख सपक्खे वा, ण वि विरयो तेणगादिदोसेहिं ।
अप्पडिविरयो अहवा, हत्थातालादिसु पएसु ।।२४२२।।
ओसन्नमाइया तू, अणुवरया तो सलिंगसहिया उ ।
अणवट्टप्पा ते उ, कायव्वा भावलिंगेणं ।।२४२३।। खेत्ततो गतं।।
कालतो अणवट्टप्पो, अणउवरतदोसो जत्तियं कालं ।
सो अणवट्टो कीरति, जत्तियमेत्तं तयं कालं ।।२४२४।। काले त्ति।।
तवअणवट्टो दुविहो, आसायणयाए हो ति पडिसेवी ।
एक्केक्को वि य दुविहो, जहण्णओ चेव उक्कोसो ।।२४२५।।
तवअणवट्टा ऽऽसायण, जहण्ण छम्मास वरिसमुक्कोसं ।
के पुण आसाएंती ?, जिणमादी जा महिड्ढीयं ।।२४२६।।
पडिसेवी अणवट्टो, जहण्ण वरिसं तु बारमुक्कोसा ।
किं पुण पडिसेवति तू ?, तेण्णादीया पदा सव्वे ।।२४२७।।
कारणमादिपदा तू, उवरिं वोच्छिमु अहुण परिहारं ।
वंदणमादी य पदा, समासतो हं इमं वोच्छं ।।२४२८।।
परिहरणं परिहारो, आलावणमादि दसहि तु पदेहिं ।
सेहादिए वि वंदति, सो पुण ण वि वंदणिज्जो तु ।।२४२९।।

केरिसगुणसंजुत्तो, अणवट्ठो कीरती ? इमं सुणसु ।
संघयण-विरिय-आगम-सुत्तत्थ-विहीए उववेयो ॥२४३०॥
उवरिमतिगसंघयणो, सव्वगुणो केवलं अजियणिद्दो ।
देज्जा से सव्वतवं, अणवट्ठं वा वि पारंची ॥२४३१॥
णवदसपुव्वकतत्थो, सट्ठो इव उग्गमधितिकयकरणो ।
परिणामसमग्गो त्ति य, अणवट्ठप्पं से दायव्वं ॥२४३२॥
एवं तु गुणसमग्गो, चरित्तसेढिं तु णट्ठ भिण्णं वा ।
पोराणियगुणसेढिं, णिरवयवं सो तु पूरेति ॥२४३३॥
सो वंदति सेहादि वि, पग्गहिततवो जहा जिणो चेव ।
विहरति बारस वरिसे, अणवट्टप्पो गणे चेव ॥२४३४॥
तस्स य परिहारतवं, पडिवज्जंतस्स कीरउस्सग्गो ।
संघाडउवणभीए, आसस असमत्थकरणं च ॥२४३५॥
किं कारणमुस्सग्गो ?, भण्णति सेहाण जाणणट्ठाए ।
भयजणणट्ठाय तहा, णिरुवस्सग्गट्ठया चेव ॥२४३६॥उस्सग्गो त्ति
कप्पट्ठितो अहं ते, अणुपरिहारी य एस गीओ ते ।
पुव्वं कतपरिहारो, तस्सऽसतिऽण्णो वि दढदेहो ॥२४३७॥
संघाडो त्ति गतम् ।
एस तवं पडिवज्जति, ण किंचि आलवति मा ण आलवहा ।
अत्तट्ठचिन्तगस्सा, वाघातो भे ण कायव्वो ॥२४३८॥
नाहे य परिहरिज्जति, गच्छेणं सो य परिहरति गच्छं ।
अपरिहरंताऽऽरोवण, दसहिं पएहिं इमेहिं तु ॥२४३९॥
आलावण पडिपुच्छण, परियट्टुट्ठाण वंदणग मत्ते ।
पडिलेहण संघाडग, भत्तदाण संभुंजणे चेव ॥२४४०॥
जा संघाडो ताव तु, लहुओ मासो तु होति गच्छस्स ।
लहुगा य भत्तदाणे, संभुंजणे होन्तऽणुग्घाता ॥२४४१॥
संघाडओ तु जाव उ, गुरुओ मासो दसण्ह तु पयाणं ।

भत्तस्स दाण संभुंजणे य परिहारिए गुरुणा ॥२४४२॥
किंतिकम्मं च पडिच्छति, परिण्ण पडिपुच्छ देंति य गुरू से ।
सो वि य गुरुमुवचिट्ठति, उदन्नमवि पुच्छितो कहते ॥२४४३॥
ठवणे त्ति गतं ॥

एवं तू ठवणाए, ठवियाए भयं तु कस्सतुववज्जे ।
किह नु मए एक्केणं, णित्थरियव्वेत्तिओ कालो ? ॥२४४४॥
ताहे आसासेती, आयरिओ मा हु एव तं बोभे ।
अणुपरिहारी एस य, अहवा कप्पट्ठिती एसा ॥२४४५ ॥
जं किंचि पाडिपुच्छं, तं सव्व मए ममं करेज्जाहि ।
हिंडिहिमी भिक्खं पि य, अणुपरिहारीण तं मद्धि ।२४४६॥
एव भणिओ तु संतो, आसासती तं च ताहे णित्थरति ।
किह पुण होआसासो?, भण्णति इणमो णिसामेहिं ॥२४४७॥
जह कोति अगडपडिओ, जति भण्णति एस हा ! मतोव्वरतो ।
तो मुंचति अंगाइं, पच्छा मरती य सो ताहे ॥२४४८॥
अह पुण भणति एवं, मा बीहसु एस आणिया रज्जू ।
उत्तारिज्जसि एवं, आसासो से हवति ताहे ॥२४४९॥
एवं णदिवुब्भंते, राया रुट्ठो व कासती होज्जा ।
सो वि जति विणट्ठो सि, त्ति भण्णए तो विराएज्जा ॥२४५०॥
अह भण्णति मा बीभे, राया असमिक्खिए अकज्जे वा ।
ण वि किंचि करेइ त्ती, सोइज्जेहिमि व आससति ॥२४५१॥
एवासासो तस्स वि, होती आसासियस्स संतस्स ।
इय पडिवण्णो सो ऊ, वहइ हु उग्गं तवोकम्मं ॥२४५२॥
आसासो त्ति गतम् ॥

तो उग्गेण तवेणं, सो जाहे खामदुब्बलसरीरो ।
ण तरेज्जुट्ठाणादी, काउं ताहे इमं भणति ॥२४५३॥

उट्ठेज्ज णिसीएज्जं, भिक्खं हिंडिज्ज भंडगं पेहे ।
कुवितपितबंधवो विय, तुसिणीओ संगाढो तो कारे ॥२४५४॥
विनियपय अण्णगच्छा, पेसेज्जा वंदणं अयाणंतो ।
गेलण्णे उभयस्स व. कुज्जा करणिज्ज जयणाए ॥२४५५॥
गच्छिल्लया गुरुस्स उ, गुरु अणुपरिहारिए समप्पेंति ।
अणुपरिहारी परिहारियस्स देन्तेस जयणा तु ॥२४५६॥
सो वा करेज्ज तेसिं. आगाढ परंपरेण एमेव ।
गुरुणो एगागिस्स व, अण्णऽसतीए करेज्जाहि ॥२४५७॥
ताहे णित्थिण्णतवो, कुलादिकज्जे व तप्पतो जो तु ।
उवठावण तस्स भवे, केयी गिहिवेस कातूणं ॥२४५८॥
गिहिवेसमकाऊणं, उवट्ठवेन्ते उ होंति चउगुरुगा ।
आणादिणो य दोसा, पावइ अहवा इमे दोसे ॥२४५९॥
वरणेवत्थं एगे, ण्हाणविवज्जमवरं जुवलमेत्तं ।
परिसामज्झे धम्मं, सुणेज्ज कहणा पुणो दिक्खा ॥२४६०॥
किं तस्स तु गिहिवेसं ?, किं वरणेवत्थ ? किं व जुयलं तु ? ।
किं वा परिसामज्झे, धम्मो से कहिज्जए तस्स ? ॥२४६१॥
ओभासिओ ण कुव्वति, पुणो वि सो तारिसं अनोयारं ।
होंति भयं सेहाण य. गिहिभूए धम्मया चेव ॥२४६२॥
अणवट्ठप्पे त्ति गतम् ॥ ९३ ॥९३॥

तित्थगर पवयण सुतं, आयरियं गणहरं महिड्ढीयं । पाराञ्चिक-प्रायश्चित्तम्
आसाएन्तो बहुसो, आभिणिवेसेण पारंची ॥९४॥

किह पुण आसाएतो ?, अवण्णवायाइ वयइ जं तेसिं ।
केरिसओ तु अवण्णो ?, भण्णइ इणमो णिसामेहि ॥२४६३॥ आशातना-पाराञ्चिकः
पाहुडियं उवजीवति, जाणंतो किं व भुंजए भोगे ? ।
अजुत्तं च इत्थितित्थं, अतिकक्खड देसिया चरिया ॥२४६४॥

अण्णं व एवमादी, अवि पडिमासु वि तिलोगमहियाणं ।
जति भणति कीस कीरति, मल्लालंकारमादीयं ? ॥२४६५॥
जो वि पडिरूविविणयो, तं सव्वं अवितहं अकुव्वंतो ।
वंदणथुइमादीयं, तित्थगरामायणा एसा ॥ २४६६ ॥

तित्थगरे त्ति गतम् ॥

अक्कोसतज्जणादिसु, संघमहिक्खिवइ संघपडिणीए ।
अण्णे वि अत्थि संघा, सियालणंतिकढंकादी ॥ २४६७॥

पवयणे त्ति गतम् ॥

काया वया य ते च्चिय, ते चेव पमाय अप्पमाया य ।
मोक्खाहिगारियाणं,जोतिसविज्जाहि किं व पुणो ? ॥२४६८॥

सुते त्ति गतं ।

इड्ढिरससातगरुया, परोवदेसुज्जया जहा मंखा ।
अत्तट्ठपोसणरया, आयरिया जह दिया चेव ॥२४६९॥
अब्भुज्जयं विहारं, देसेंति परेसि सतमुदासीणा ।
उवजीवंति य इड्ढिं, णीसंगा मो त्ति य भणंति ॥ २४७०॥

आयरिए त्ति गतम् ।

गणहर एव महिड्ढी, महातवस्सी व वादिमादी वा ।
तित्थगरपढमसीसा, आदिग्गहणेण गहिता वा ॥२४७१॥
सा दुह देसे सव्वे, देसम्मी एगदेसमादीया ।
जं वयति सव्व देसो, सव्वंमि वा वि सव्वंसो ॥२४७२॥
तित्थकरं संघं वा, देसेणं वा वि अहव सव्वेणं ।
आसाएन्ते चरिमं, सेसेसु चतुगुरू देसे ॥२४७३॥
सव्वे वाऽऽसाएन्तो, पावति पारंचितं तु सो ठाणं ।
एत्थं पुण सचरित्ती, देसे सव्वे य अचरित्तो ॥२४७४॥
तित्थगरपढमसीसं, एक्कं वी सादयंतो पारंची ।
अत्थस्सेव जिणिंदो, पभवो सुत्तस्स सो जेणं ॥२४७५॥

आसायणपारंची, एसेसो वण्णितो समासेणं । दारं ।
पडिसेवणपारंची, एत्तो वोच्छं समासेणं ॥२४७६॥

॥ मूलं ॥ ९४ ॥

जो य सलिंगे दुट्ठो, कसायविसएहिं रायवहओ य । प्रतिसेवना-पारञ्चिकः
रायग्गमहिसिपडिसेवओ य बहुसो पगासो य ॥९५॥

पडिसेवणपारंची, तिविहसो वण्णिओ तु सुत्तम्मि ।
दुट्ठादीहिं पदेहिं, समासओ हं पवक्खामि ॥२४७७॥
दुट्ठो य पमत्तो या, अण्णोण्णासेवणापमत्तो उ ।
एतेसि विभागं तू, वोच्छामि जहक्कमेणेव ॥२४७८॥
दुविहो य होति दुट्ठो, कसायदुट्ठो य विसयदुट्ठो य ।
दुविहो कसायदुट्ठो, सपक्खपरपक्खचतुभंगो ॥२४७९॥ कषायदुष्टः
सासवणाले मुहणंतए य उल्लुगच्छि सिहरिणी चेव ।
एते सपक्खदुट्ठा, एतेसि परूवणा इणमो ॥२४८०॥
सासवणाले लद्धं, गुरु छंदिय खइय मच्छिरए कोहो ।
खामण अणुवसमन्ते, गणी ठवेत्तऽण्णहि परिण्णा ॥२४८१॥
पुच्छंतमणक्खाए, सोच्चऽण्णयो गंतु कत्थ से सरीरं ? ।
गुरु पुव्वकहित दाइय, पडियरणं दन्तभंजणया ॥२४८२॥
मुहणंतगमालोयण, आणियसुक्कोस गहित गुरुणा य ।
कुविएण णिसी गंतुं, गलए लइओ य पासुत्तो ॥२४८३॥
सम्मूढणियरेण वि, गलए लइओ उ तो मता दो वि ।
अण्णो पुण सिव्वंतो, अत्थमिए गुरुहिं अह भणितो ॥२४८४॥
अत्थमियम्मि वि सिव्वसि, उल्लुगसरिच्छच्छि तो वदे रुसितो ।
तुह उक्खणामि अच्छी, खामिज्जंतो वि ण वि पसिए॥२४८५॥
तो ठविय गणि गच्छे, भत्तपरिण्णं करेंति अण्णगणे ।
जह पढमो णवरि इहं, उल्लुअच्छीउ त्ति होंकेति ॥२४८६॥

अत्रगो वि णिहारिणीए, छंदिय सव्वाइयं तो उग्गिरणा ।
तत्थेव तू परिण्णा, ण गच्छती णवर अण्णत्थ ॥२४८७॥

जम्हा एते दोसा, तम्हा ण वि गेण्हियव्वयं गुरुणा ।
एगस्सेव तु सव्वं, अण्णायायारसीलस्स ॥२४८८॥

गहणम्मि विही इणमो, जति गहिया मत्तगा तु सव्वेहिं ।
तेसि णिमंतेन्ताणं, अल्लाहि पज्जत्तमो वेंति ॥२४८९॥

णिब्बन्धे थोवथोवं, सव्वेसि गेण्हए ण एगस्स ।
सव्वेसि पि ण गेण्हति, विनियाएसेण गहियं पि ॥२४९०॥

गुरुभत्तिमं जो य मणाणुकूलो, सो गिण्हती णिस्समणिस्सयो वा।
तस्सेव सो गेण्हति णेतरंमि, अलब्भमाणम्मि व थोव थोवं ॥
॥ २४९१ ॥

सति लाभम्मि व गेण्हति, इतेरंमि जाणितूण णिब्बंधं ।
भुंजति य मात्तसेसं, जाणति उव्वयारभणियं च ॥२४९२॥

गुरुसंसट्ठुव्वरियं, बालादसतीए मण्डलि जाति ।
जो अण्णायरमत्तग, गिल्लाणभुत्तुव्वरितते वि ॥२४९३॥

सेसाणं संसट्ठं, न छुब्भई मंडलीपडिग्गहए ।
पत्ते गहितं छुब्भइ, उब्भामण लंभ मोत्तूणं ॥२४९४॥

पाहुणगट्ठा व तयं, थेरेतु अविवाहट्टं विगिंचंति ।
इति गहणभुंजणविही, अविहीगहणेण दोसेते ॥२४९५॥

एते सपक्खदुट्ठा, परपक्खे उदायिमारगादीया ।
परपक्खसपक्खम्मि य, पालक्कादी मुणेतव्वा ॥२४९६॥

पालक्को तु पुरोहितो, खंदगपमुहाण जेण पंच सया ।
पुव्वि विराहियेणं, जंते पीलाविता जतिणो ॥२४९७॥

मुणिसुव्वयतित्थम्मी, वाएण परातिओ स पुव्विं तु ।
खंदगरण्णो ताहे, पावो स पओसमावण्णो ॥२४९८॥

परपक्खो परपक्खे, रायादी अभमरा जहा केति ।
बहपरिणया व बहगा, भणिता चत्तारि दुट्ठते ॥२४९९॥
एतेसि चतुण्हं पी, पच्छित्तमहाविहिं पवक्खामि ।
जे सामवणालादी, लिंगविवेगो भवे तेसिं ॥२५००॥
जो वि सपक्खो रायादियाण बहपरिणयो व बहगो वा ।
सो लिंगतो पारंची, जो विय परिवट्टए तं तु ॥२५०१॥
सण्णी व असण्णी वा, जो परपक्खे सपक्खे दुट्ठो तु ।
तस्स णिसिद्धं लिंगं, अइसेसी वा वि से देज्जा ॥२५०२॥
परपक्खो परपक्खे, रायामादीपदुट्ठो जो वि भवे ।
तस्स सदेसे ण कप्पति, कप्पइ अण्णम्मि उवसंते ॥२५०३।
एसो कसायदुट्ठो (दारं), विसयपदुट्ठं इदाणि वोच्छामि । विषयदुष्टः
तस्स वि सपक्खपरपक्खयो य चतुभंगो तह नेव ॥२५०४॥
संजति कप्पट्ठिए पढमो, सेज्जातरि अण्णतित्थिणी वीओ ।
परपक्खे संजतीए, उभयपरो होति उ चतुत्थो ॥२५०५॥
लिंगेण लिंगिणीए, संपत्ति जति णिगच्छती पावो ।
णिरयाउगं णिबंधइ, आसायण ओ अवोही य ॥२५०६॥
लिंगेण लिंगिणीए, संपत्ति जो णिगच्छती पावो ।
सव्वजिणाणऽज्जातो, संघो आसादितो तेणं । २५०७॥
पावाणं पावयरो, दट्ठूण ण वट्टए हु साहूणं ।
जो जिणपुंगवमुद्दं, णमिऊण नमेव धरिसेति ॥२५०८॥
संसारमणवयग्गं, जातिजरामरणवेयणापउरं ।
पावमलपडलछन्ना, भमंति मुद्दाधरिसणेणं ॥२५०९॥
एसो पढमगभंगो, पारंचियमेत्थ होति पच्छितं ।
वितियगभंगम्मि तहा, अणुवरयस्सो भवे चरिमं ॥२५१०॥
जत्थुप्पज्जति दोसो, कीरति पारंचिओ स तम्हा उ ।
सो पुण सेवि असेवी, गीयमगीयो व एमेव ॥२५११॥

वसहि णिवेसण वाडग, साही नह गाम देस रज्जे य ।
कुल गण संघे णिज्जूहणाए पारंचिओ होति ॥२५१२॥
उवसंतो वि समाणो, वारिज्जति तेसु तेसु ठाणेसु ।
हंदि हु पुणो वि दोसं, तट्ठाणाऽऽसेवणा कुणति ॥२५१३॥
जेसु विहरंति ताओ, वारिज्जति गवर तेसु ठाणेसु ।
पढमगभंगे ताइं, सेसेसु वि ताइं ठाणाइं ॥२५१४॥
इत्थं पुण अधिगारो, पढमगभंगेण उभयदुट्ठेण ।
उच्चारियसरिसाइं, सेसाइं विकोवणट्ठाए ॥२५१५॥

पुव्वद्धं गतस ।

इति एस अभिहिओ तू, उभयपदुट्ठो य रायवहगो य ।
रायग्गमहिसिपडिसेवओ उ अहुणा इमो होति ॥२५१६॥
रायस्स महादेवी, अहवा जा जस्स होति इट्ठा तु ।
सा तस्स होति अग्गा, अग्ग पहाण त्ति एगट्ठा ॥२५१७॥
तं पडिसेवति जो तू, पुणो पुणो होति बहुससद्दो उ ।
लोगपगासो अहवा, सो पावति चरिमठाणं तु ॥२५१८॥
चसद्दा अण्णाण वि, जा इट्ठा सा हु तेसि होअग्गा ।
जुवरायादीआणं, तेसि पि जहेव राइस्स ॥२५१९॥
इयरमहिलासु चरिमं, ण विज्जती कीस ? एव चोएति ।
भण्णइ बहुआऽऽवाया, इतरासुं अप्पणो चेव ॥२५२०॥
रायस्स अग्गमहिसीए अप्पणो कुल गणे व संघे वा ॥
पत्थाराई दोसा, पागतमहिलासु तस्सेव ॥२५२१॥
वतलोवो सरीरे वा, दोसा ण हु कुलगणादिपत्थारो ।
एतेण कारणेणं, इतरासु ण होति चरिमपदं ॥२५२२॥

दुट्ठपारंचिए त्ति गतं ।

प्रमत्तपाराञ्चिकः

दुट्ठसो पारंची, भणितो अहुणा पमत्त वोच्छामि ।
सो कलुस विकह विकडे, इंदिय णिद्दा य पंचविहे ॥२५२३॥

कोहाति चउह कलुसा, विकहा पुण इत्थिमादिया चउहा ।
पुव्वब्भासा वियडं, इंदिय सोयादिए पणगं ॥२५२४॥
पोग्गल मोदग फरुसग, दंते वडसालभंजणे चेव ॥
थीणद्धीआहरणा, वोच्छामि विभागमेतेसिं ॥२५२५॥

॥ ? नू ॥९५॥

थीणद्धिमहादोसा, अण्णोण्णासेवणापसत्तो य ।
चरिमट्ठाणावत्तिसु, बहुसो य पमज्जए जो उ ॥९६॥

जह उदअम्मि घए वा, थीणम्मि णोवलब्भए किंचि । 　स्त्यानर्द्धिनिद्राप्रमत्तपाराञ्चिकः
इद्धं चित्तं भणगति, तं थीणं तेण थीणद्धी ॥२५२६॥
पिसितासि पुव्वमहियं, विविंचियं दिस्स तत्थ णिसि गंतु ।
अण्णं हंतुं खायति, उवस्सतं सेसयं णेति ॥२५२७॥
मोदगभत्तमलद्धुं, भंतु कवाडे घरस्स णिसि खाइ ।
भाणं च भरेतूणं, आगओ आवासए वियडे ॥२५२८॥
अवरो वि फरुसमुंडो, मत्तियपिंडे व छिंदिउं सीसे ।
एगन्ते पक्खिवति (य विविंचति प्र०), पासुत्ताणं वियडणा य ॥
अवरो विवाडिओ मत्तहत्थिणा पुरकवाड भंतूणं ।
तस्सुक्खणितु दन्ते, वसही बाहिं वियडणा य ॥२५३०॥
उब्भामग वडसालेण घट्टिओ कोइ पुव्व वणहत्थी ।
वडसालभंजणाऽऽणण, उम्मग्गाऽऽलोयण पभाए ॥२५३१॥
तस्सोदयकालम्मि, हवती जं केसवस्स अद्धबलं ।
ण वि देंति अणतिसेसी, लिंगं अवि केवली होज्जा ॥२५३२॥
णातम्मि पण्णविज्जति, मुय लिंगं णत्थि तुज्झ चारित्तं ।
देसवय दंसणं वा, गिण्हसु इच्छन्ते रमणिज्जं ॥२५३३॥
अह णेच्छति तो संघो, लिंगं हरई ण हरति मि एगो ।
मा गच्छेज्ज पदोसं, छड्डेत्तऽसत्तीए पासुत्तं ॥२५३४॥

णिद्दपमत्तो एसो, पारंची लिंगतो समक्खातो (दारं) ।
कुणमाण अण्णमण्णं, पारंचीयं अतो वोच्छं ॥२५३५॥

अन्यो ऽन्य-पाराञ्चिकः
करणं तु अण्णमण्णे, समणाण ण कप्पती सुविहियाणं ।
किह करण अण्णमण्णे ?, भण्णति इणमो णिसामेहि ॥२५३६॥
आसयपोसयसेवी, केई पुरिसा दुवेदगा होन्ति ।
तेसिं लिंगविवेगो, कातव्वो होति णियमेणं ॥२५३७॥

अण्णोण्णसेवणे त्ति गतम् ॥

चरिमं अंतं भण्णति, तं पुण पारंचियं ति णातव्वं ।
पारंचियावराहे, पुणो पुणो सज्जए जो तु ॥२५३८॥
थीणद्धिमादियाणं, सोहिं वोच्छं पुणो वि सव्वेसिं ।
लिंगादीणं कमसो, एत्थ इमा होंति गाहाओ ॥२५३९॥

॥ ॥१६॥

सो कीरति पारंची, लिंगाओ खेत्तकालओ तवतो ।
संपागडपडिसेवी, लिंगाओ थीणगिद्धी य ॥१७॥
वसहिणिवेसणवाडगसाहिणिओयपुरदेसरज्जाओ
खेत्ताओ पारंची, कुलगणसंघालयाओ वा ॥१८॥
जत्थुप्पण्णो दोसो, उप्पज्जिस्सति व जत्थ णाऊणं ।
तत्तो तत्तो कीरति, खेत्ताओ खेत्तपारंची ॥१९॥
जत्तियमेत्तं कालं, तवसा पारंचियस्स उ स एव ।
कालो दुविगप्पस्स वि, अणवट्ठप्पस्स जोऽभिहितो ॥१०॥

क्षेत्रादि-पाराञ्चिकः
आसातण पडिसेवण, दुह अणवट्ठम्मि जो भवे कालो ।
पारंचिए वि सो चेव होति उक्कोसग जहण्णो ॥२५४०॥
पारंचिया उ एते, तिण्णि वि सामण्णयो विणिद्दिट्ठा ।
एत्तो जो जारिसतो, विसेसमेतेसि वोच्छामि ॥२५४१॥

दुट्ठे य पमत्ते या, अण्णोण्णासेवणापसत्ते य ।
एतेसिं तिण्हं पी, विसेसमेत्तो पवक्खामि ॥२५४२॥
तहियं तु विसयदुट्ठो, सपक्खपरपक्खतो व जो होज्जा ।
सो कीरति पारंची, खेत्तेणं तू ण लिंगेणं ॥२५४३॥
अणुवरमंतो कीरति, सेसो णियमेण लिंगपारंची ।
खेत्तेण य लिंगेण य, पारंचो अभिहिता एते ॥२५४४॥
किं एते चिय भेया, पारंचीए उयाहु अण्णे वि ? ।
भण्णति तवपारंची, अण्णो वि हु केरिसो स खलु ? ॥२५४५॥
इंदियपमायदोसा, जो तू अवगाहमुत्तमं पत्तो ।
सब्भावसमाउट्टो, जइ य गुणा से इमे होंति ॥२५४६॥
वइरोसहसंघतणो, धितीय जो वज्जकुड्डसामाणो ।
णवमस्स ततियवत्थुं, सुत्तऽत्थेहिं च जोऽहीओ ॥२५४७॥
खुड्डगसीहनवादीहिं भावितो जो य इंदियकसाए ।
णिग्घेत्तुण समत्थो, पवयणसारं अभिगतत्थो ॥२५४८॥
णिज्जूहितस्स असुभो, तिलतुसमेत्तो वि जस्स ण य भावो ।
णिज्जूहणाए अरिहो, सेसे णिज्जूहणा णत्थि ॥२५४९॥
एयगुणसंपउत्तो, पावति पारंचियं तु सो ठाणं ।
एयगुणविप्पमुक्के, तारिसयम्मी भवे मूलं ॥२५५०॥
पारंचियं तु पावति, आसाएन्तो तहेव पडिसेवी ।
एक्केक्को होति दुहा, जहण्ण उक्कोसओ चेव ॥२५५१॥
आसायणो जहण्णो, छम्मासुक्कोस बारस तु मासा ।
वासं बारसवासा, पडिसेवी कारणे भतिओ ॥२५५२॥
जति होज्जा आयरिओ, तो गणणिक्खेवमित्तिरिं कातुं ।
गंतूणं अण्णगणे, दव्वादिसुभे विगडणा तू ॥२५५३॥

॥ ९७०॥१००॥

एगागी खेत्तबहिं, कुणति तवं सुविपुलं महासत्तो।
अवलोवणमायरिओ, पतिदिणमेगो कुणति तस्स १०१

ओलोयणं गवेसणमायरिओ कुणति णिच्चकालं पि।
खेत्तबहिचिट्ठियस्सा, इमेण विहिणा पवक्खामि ॥२५५४॥
उभयम्मि दातूण स पाडिपुच्छं, वोढुं सरीरस्स य वट्टमाणिं।
आसासतित्ताण तवोकिलंतं, तमेव गच्छं पुणरेन्ति थेरा॥२५५५
असहू सुत्तं दाउं, दो वि अदाउं व गच्छति पदे वि।
संघाडो से भत्तं, पाणं चाऽऽणेति मग्गेणं ॥२५५६॥
पारंचितस्स तहियं, तं वहमाणस्स होज्ज गेलण्णं।
ताहे से पडिकम्मं, तेहिं पयत्तेण कायव्वं ॥२५५७॥
आहरति भत्तपाणं, उव्वत्तणमाइयं पि से कुणति।
सतमेव गणाहिवई, वेयावच्चं जहत्थामं ॥२५५८॥
जो उ उवेहं कुज्जा, आयरिओ केणती पमाएणं।
आरोवण तस्स भवे, गिलाणसुत्तम्मि जा भणिया ॥२५५९॥
अह पुण ण तरेज्ज गुरू, गंतुं गेलण्णमादिहिं तहियं।
कालुण्हे दुब्बलो वा, कुलादिकज्जेण वऽण्णेण ॥२५६०॥
अभिसेयं तो पेसे, अण्णं गीयं व जो तहिं जोग्गो।
पुट्ठो व अपुट्ठो वा, सो वि य दीवेति तं कज्जं ॥२५६१॥
सो य समत्थो होज्जा, संपाडेतुमिह तस्स कज्जस्स।
खीरादिलद्धिजुत्तो, विज्जादिगअतिसएहिं च ॥२५६२॥
जाणंता माहप्पं, सतमेव गुरू वदंति तं जोग्गं।
अत्थि मम एत्थ विसतो, अजाणए ते व सो वेति ॥२५६३॥
अच्छउ महाणुभावो, जहासुहं गुणसयागरो संघो।
गुरुयं पि इमं कज्जं, मं पप्प भविस्सए लहुयं ॥२५६४॥
अभिहाणहेतुकुसलो, बहुसु अणिराइओ विदुसभासु।
गंतूण रायभवणं, भणाइमं रायदारिट्ठं ॥२५६५॥

पडिहाररूवी ! भण रायरूवी, तमिच्छए संजतरूवि दट्ठुं ।
णिवेयनित्ताण सपत्थिवस्स, जहिं णिवो तत्थ तयं पवेसे ॥२५६६॥
तं पूयनित्ताण सुहासणत्थं, पुच्छिसु राया गतकोउहल्लो ।
पण्हे उराले असुए कयाइं, स यावि आइक्खति पत्थिवस्स ॥
२५६७ ॥
जाग्गिमया मक्कादीण आयरक्खाण नारिमो एसो ।
तुह राय! दारपालो, नं पि य चक्कीण पडिरूवी ॥२५६८॥
अट्ठारसमीलसहस्सधारया होन्ति साहुणो अहयं ।
तं पनि पडिरूविनं, अतियारणिसेवणापत्तो ॥२५६९॥
णिज्जूढो मि णरीसर !, खेत्ते वि जतीण अच्छिउं ण लभे ।
अतियारस्स विसोहिं, पकरेमि पमायमूलस्स ॥२५७०॥
धम्मकहा आउट्टाण पुच्छणं दीवणा य कज्जस्स ।
किं पुण हवेज्ज कज्जं ?, इमेहिं होज्जाहि एगतरं ॥२५७१॥
वायपरायणकुविओ, चेनियदव्व संजतीगहणे ।
णिव्विसयादि चतुण्ह वि, कज्जाण हवेज्ज एगतरं ॥२५७२॥
संघो ण लभति कज्जं, लद्धं कज्जं महाणुभावेणं ।
तुब्भेंति विसज्जेमी, संविग्गसंघो त्ति पूएति ॥२५७३॥
भणति य राया संघं, तुब्भं कज्जं करेमि अहमेयं ।
तुब्भे वि कुणह मज्झं, एयस्सेयं विसज्जेह ॥२५७४॥
अब्भत्थितो सयं वा, रण्णा संघो विसज्जए तुट्ठो ।
आदी मज्झऽवसाणे, सो यावि हवेज्ज सोहीए ॥२५७५॥
देसं व देसदेसं, सव्वं व वहेज्ज अहव मुच्चेज्जा ।
छब्भागो से देसो, दसभागो देसदेसो तु ॥२५७६॥
छम्मासपरं बारसमासाणं बारसण्ह य समाणं ।
एक्के दो दो मासा, चउवीसा होंति छब्भागो ॥२५७७॥